इस पंचांग की अधिक मान्यता देख, इसी माफिक अन्य पंचांग बने हैं, अतः पंचांग लेते समय "पं. भवानीशंकरजी" का शुद्ध चित्र अवश्य

श्रीसूर्याय नमः

श्रीसरस्वत्यै नमः

श्रीगणेशाय नमः

श्रीविष्णवे नमः



स्वस्तिश्रीजोधपुरनगरीयषट्पलभोपरि सुसंस्कारित ग्रहगणितानुसार
श्रीमन्मुकुटमणीनां श्री १०८ श्रीविक्रमराज्यातीत शुभ संवत् २०३९
राष्ट्रीयशकः १९०४, ईस्वी सन् १९८२–८३, हिजरी सन् १४०२–३
卐 नीमचनगरस्थराजज्योतिर्विभिः पंडितवर्यभवानीशंकररविशंकरमहोदयैः 卐
प्रकाशितं भवानीशंकरीयं निर्णयसागरचण्डमार्त्तण्डपंचांग शास्त्रसम्मतं
❊ भारतीय स्वातंत्र्य संवत् ३५-३६ 卐 जैन महावीर संवत् २५०८–९ ❊





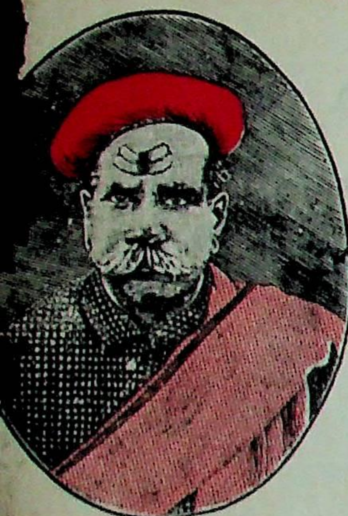
...की
...र्भाशय
...सेवन करे तो
बनकर सांसारिक
... हेतु ३० तोला
...६०तोला(८४)रु.
अग्निमुख ३) या
... आते हैं, योग्य
...ी है, पूरी दवा
...ी है, तदर्थ ध्यान रखें

जयति स विक्रमार्को यन्नाम्ना चलति संवतो गणना

निर्णयसागरपंचांगकार्यालय, नीमच (म. प्र.)

...पंचांगं हि तदीयं मान्यतमं भारते

पंडितवर्य भवानीशंकर शर्मा राजज्योतिषी



प्रारम्भिक विज्ञापना

प्रिय ग्राहक महाशय ! सृष्टि रचना के साथ श्री ब्रह्मदेव ने मनुष्यों के लिये धर्मादि व्यवस्था वर्णन की। उस वर्णित ग्रंथ का सन्नाम "वेद" है, और वेदोक्त धर्म ही मनुष्य को कर्तव्य है। वेद में धर्मादि साधन के लिये काल तंत्र (समय) का कथन किया गया और उस समय के ज्ञान हेतु उन्हीं ब्रह्मदेव ने 'वेदांग" रूपक ज्योतिष काल-शास्त्र का निर्माण किया। कहा भी है **"विनैतदखिलं श्रौत स्मार्त्त कर्म न सिध्यति। तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा"** यह ज्योतिर्विज्ञान सिद्धांत+संहिता+होरा नामक ३ स्कंधों में विस्तृत वर्णित है। परन्तु कालज्ञान सिद्धान्त-संभाग से होता है। सिद्धांत के बहुविध ग्रन्थ हैं, इनसे सम्प्रति भिन्न-भिन्न प्रकार की गणना से पंचांग निर्माण किये जाते हैं, फलाशय तथ्य भी पृथक-पृथक प्रकार से प्रकाशित होते हैं। इस पृथकता से जन-साधारण में विभ्रम भी हो जाता है, परन्तु हमारा **"निर्णयसागरचण्डमार्त्तण्डपंचांग"** शततुल्य वर्षों से सारगर्भित तथ्ययुक्त योग्य गणितागत कालांश निर्णय करके प्रकाशित होता है। तथा जन-समाज के धर्मादिक काल साधन में वर्षों से प्रामाणिक सत्य अनुभवागत चरितार्थ हुआ है। यह विषय सर्वसाधारण जनवर्ग को भली प्रकार से विदित है। हमारे इस लोकप्रिय पंचांग की अधिक मान्यता तथा बिक्री को देखकर ईर्ष्या विदग्ध कतिपयजन विभिन्न प्रकार की विभ्रामक धारणा प्रस्तुत कर, स्वयं को निष्णात शुद्ध सम्पन्न पंचांग से उद्घोषित करते हैं. यह उनकी व्यक्तिगत समझ है। नीतिवचन है कि– **"खलो मृगयते दोषं गुणपूर्णेषु वस्तुषु"** पुनरपि– **"क्रमेलक: केलिवनं प्रविश्य निरीक्षते कण्टकजालमेव"**। हमें इससे आपत्ति नहीं। क्योंकि हमारे पंचांग के ग्राहकगण इन वार्ताओं से विभ्रमित विचलित होने वाले नहीं। कारण यह कि स्वयं वर्षों से हमारे पंचांग को अनुभव में लेते आये हैं, तथा पंचांग विषयक तथ्य के विज्ञ एवं मर्मज्ञ हैं। हमारा यह जोधपुरी 'चण्डू' संज्ञक पंचांग भारतीय जोधपुर अक्षांश २६-१८ उत्तर तथा रेखांश ७३-४ पूर्व स्थितिवत् सर्वलोकोपयुक्त नीति-रीति से निर्मित होता है। यह पंचांग भारतवर्ष में ही क्या ? भारत से बाह्य अन्य पश्चिमी राष्ट्रों में भी विभिन्न जनसमुदाय, धर्माचार्य, धर्मसंघ, पंडितजनों आदि से व्यवहार में लाया जाता है, यह इस पंचांग की शुद्धता एवं लोकप्रियता का सुप्रत्यक्ष प्रमाण है। इस पंचांग में युगानुकूल व्यवस्था से हिन्दु-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई-जैन-बौद्ध सभी वर्ग सम्प्रदाय के व्रत, पर्वोत्सव हेतु शास्त्र-सम्मत नीति-रीति से निर्णय किया गया है। तथा जन उपयुक्त विविध गणित-फलित विषय उपकरण एवं आवश्यकीय सार्थक मुहूर्त्तादिक विषयों से परिपूर्ण किया गया है। हमें आशा है कि हमारे मान्य ग्राहकवर्य आजकल की नवीन-प्राचीन गणित रचना एवं असली-नकली छाप इत्यादिक विज्ञापना संकेतों से भ्रमित नहीं होंगे तथा वर्षों से व्यवहार सिद्ध निर्णयसागर' पंचांग को ग्रहण कर पूर्वानुसार सद्-सहयोग प्रदान करते रहेंगे। शुभमिति

सर्वसाधारण हेतु पंचांग अवलोकन विधि–

[पंच]ांगविधान ✿ परिभाषा सूत्र ✿ पंचांग के ५ अंग होने हैं अत: "पंचांग" कहलाता है, [...] **तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योग: करणमेव च। एतै: पंचभिरंगै: संयुतं पंचांग मुच्यते"** तिथि १ [...]२ नक्षत्र ३ योग ४ करण ५ ये पांच विभाग है। (१) **तिथियों की संज्ञा–** प्रतिपदा [...], तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, [...]चतुर्दशी और पूर्णिमा ये १५ शुक्लपक्षीय तथा पुन: प्रतिपदा से चतुर्दशी व अमावस्या [...]कृष्णपक्ष की तिथियां है। **पक्षसंज्ञा–** १ चन्द्रमास में २ पक्ष होते हैं, पहला [...] १५ तिथि तक पुन: कृष्ण पक्ष १ से ३० तिथि तक। (२) **वारों का विज्ञान** [...] द्वितीय सूर्योदय के पूर्व समय को वार का प्रमाण कहा गया है। ७ वारों की [...]य-सोम-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि आदि चरितार्थ होती है। **क्षय-वृद्धि–** १ तिथि [...]२ सूर्योदय काल में स्पर्श करे, तो वह वृद्धि तिथि होती है तथा १ तिथि का मान [...] द्वितीय सूर्योदय पूर्व ही पूर्ण हो जावे, तो क्षय तिथि बनती है (३) [...]श्विनी, भरणी कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य आश्लेषा, [...] उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, [...]ढ, श्रवण धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती ये २७ नक्षत्र क्रमश: चलते हैं। इनमें अभिजित् नक्षत्र का मान भी यह कि उत्तराषाढ़ का चतुर्थ चरण+श्रवण का १५वां भाग समझें। (४) **योगों के नाम–** विष्कुम्भ, प्रीति, आयुष्मान, सौभाग्य, शोभन, अतिगण्ड, सुकर्मा, धृति, शूल, गंड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतिपात, वरियान, परिघ, शिव, सिद्धि, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्म, ऐन्द्र, वैधृति, ये२७योग हैं। (५) **करणों के नाम–** बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर वणिज, विष्टी ये ७ चल संज्ञक तथा शकुनि, चतुष्पद, नाग, किंस्तुघ्न ये स्थिर संज्ञककरण हैं। प्रतिमासों के पृष्ठों पर इन सभी पंचांग उपकरणों के नाम प्रथमाक्षर से संकेत करके लिखे रहते हैं। तथा घटिपलात्मक रूप में इन सभी के समाप्तिकाल का मान लिखा रहता है। इनसे आगे दि. दिनमान, र. उ रवि उदय, र अ. रवि अस्त, फिर क्रमश: बं. बंगला तारीख, ई. अंग्रेजी तारीख, मु मुस्लिम तारीख, भ. भारतीय शाके संवत तारीखों का कोष्ठ क्रमश:। तदग्रे दैनिक चंद्रस्पष्ट कोष्ठ तथा प्रात: रवि स्पष्ट गति कोष्ठ एवं तदग्रे नित्य के ग्रहचार, व्रतोत्सव का उल्लेख है। **समय परिवर्तन २॥ घटि=१ घंटा या ६० मि.।१ घटि=२४ मिनिट।३० पल=१२ मिनिट।१५ पल=६मिनिट ७॥ पल=३ मिनिट।२॥ पल=१ मिनिट।१ पल=२४ सैकण्ड।२॥ विपल=१ सैकण्ड।६० विपल =१ पल।६० पल=१ घटि।६० घटि =१ दिन। एवं गुणन भाजन से घण्टा मिनिट प्राप्त होते हैं।**

पं. श्री रविशंकर शर्मा

卐 **वर्षफलाभिमुखम्** 卐 **श्रीगणेशाय नमोनमः** 卐

卐 **श्रीत्रिभुवनभास्कराय नमोनमः** 卐 **स्वस्तिश्री भारत हृदय** सम्राट श्री राष्ट्रपति महोदयाः ।। येषां सुपल्लवितं प्रजातंत्रीय विजयराज्ये ज्योतिः विद्वद्वर्य श्रीभवानीशंकर रविशंकर महोदयैः सम्यक् प्रकाशितं विनिर्मितञ्च विविधविषयाऽलंकृतं निर्णयसागरीयं पंचांगं सर्वत्र परमादरणीयम् ।। अथास्मिन् विक्रमाब्दे सृष्टितोगताब्दाः १९५५८८५०८३ एवं चतुर्युगमानेषु कृतयुगप्रमाणं १७२८००० अस्यां वेलायां श्रीविष्णुमत्स्यकच्छपवराहनृसिंहाऽवतारः, त्रेतायुगप्रमाणं १२९६००० युगेऽस्मिन्श्रीवामनपरशुरामश्रीरामचन्द्राऽवतारः द्वापरयुगप्रमाणं ८६४००० अस्मिन् युगे श्रीकृष्णबलरामयोःअवतारः, कलियुगप्रमाणं४३२०००तन्मध्ये अहिंसानायक श्रीबुद्धावतारोऽभवत् तथा च कल्किअवतारः कलियुगस्य ८२१वर्षाऽवशेषकाले स्यात् । सम्प्रति गतकलिवर्षाणि ५०८३ भोग्यकलियुगवर्षाणि ४२६९१७ तथा च विविधकालांशविषयेरामरावणयुद्धतोगताब्दाः ८८०१२४, श्रीकृष्णावतारतोगताब्दाः ५२०८,कुरुपाण्डवयुद्धतोगताब्दाः५०८३ एवं श्रीविक्रमादित्यराज्यात् संवत्२०३९राष्ट्रीयशाके१९०४वर्षेऽस्मिन् राजागुरु,उपराजाशुक्रः१, मंत्रीमंगलः२, पूर्वअन्नाधिपसस्येश शुक्रः३, पश्चादन्नाधिपधान्येशबुधः४, मेघेशचन्द्रः ५, रसेशसूर्यः ६, नीरसेशशुक्रः७, फलेशचन्द्रः८, धनेशगुरुः९, दुर्गेशचन्द्रः१०, एते वर्षमध्येदशाधिकारिणः ।। इत्थं बार्हस्पत्यमानेन प्रभवादिषष्ट्यब्दानां मध्ये ब्रह्मविंशतिकायां श्रीयुवानामाख्य संवत्सरः संख्या ९, कार्त्तिक शुक्लतः श्रीधाता संवत्सर संख्या १० स्यात् ।। वर्षनाम चैत्रः,मेघनामपुष्करः,रोहिणीनिवासतटे, समयनिवासरजकगृहे, संवतवाहनगजःउपवाहन अश्वः, संवतविश्वा१८,कृष्णारोहिणी १४,स्तम्भ२जलतृणयोः, सोमवतीअमावस्या३,सोमवतीपंचमी२,अंगारकीय चतुर्थी३,बुधाष्टमी२, रविवारीयसप्तमी३ रविवारीयदशमी३, ग्रहणद्वयसूर्यचन्द्रयोः पौष अमावस सूर्यस्य पौष पूर्णिमा चंद्रस्य, शनिदृष्टिः दक्षिणे, उत्पत्तिविश्वा ८७, खपतिविश्वा१०४, अगस्त्यःसिंहाऽर्कस्यसप्तांऽशे उदयंस्यात् तथा बुधोदयः भाद्रपदे, संवतमुहूर्त्ताः४०५, संवतदिनानि३८४, क्षयतिथय२०, वृद्धितिथयः१४, पूर्णिमाघट्यः४४६।४५, अमावस्याघट्यः३९७।२०, अनयोरन्तरम्४९।२५, सौभाग्यपंचमी घटि६०।०, ❊ वर्षमध्येविश्वादयः ❊ वर्षाविश्वा५, धान्य१५,तृण१३, शीत१७,तेज५, वायु१३, वृद्धि१५, क्षय१५, विग्रह११,क्षुधा३,तृष्णा१३,निद्रा१५, आलस्य७, उद्यम९, शांति१३, क्रोध५, दंभ५, लोभ३, मैथुन१५, रसनिष्पत्ति९, फलनिष्पत्ति १३, उत्साह११, उग्र९, पाप१, पुण्य१७, व्याधि११. व्याधिनाश३. आचार१५, अनाचार१७, मरण११, जन्म१७ देशोपद्रव३. देशस्वास्थ्य५ चोरभय९,चोरभयनाश१७,उद्भिज(वृक्षलताबेलादि)३,जरायुज(मनुष्य गौ आदि पशु)३,अण्डज(पक्षी एवं विषजीव)३,स्वेदज(जूं खटमल मच्छर कीट)३. ❊ विश्वाप्रमाणे पूर्णविश्वा २० भवति अनुपातेन फलादेशः ❊ इत्थं वर्षान्तर्गते सौरमण्डलीय ग्रहजनित शुभाऽशुभं वर्षफलाऽभिमुखं अनुभूयते ।। बालवृन्दधेनुप्रजाया भाग्यं सततं सबलं प्रबलमस्ति ❊ धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा । धर्मेयत्नः सदा कार्यो [illegible]

द्वादशराशिनवग्रहादि तिथिवारमासनक्षत्रादि स्पष्टीकरण चक्रम्

राशि	मास	तिथि	वार	नक्षत्र	योग	करण	प्र.	ल.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	[illegible]
मेष	कार्ति.	नंदा	रवि.	मघा	विष्कुं.	बव.	१	१	१	५	२	६	७	३	८	
वृषभ	मार्ग.	पूर्णा	शनि.	हस्त.	शुक्ल.	शकुनी	४	२	५	९	६	१०	१०	७	१२	
मिथुन	आषाढ़	भद्रा	चन्द्र.	स्वाती	परि.	चतुष्प	३	४	९	१	१०	२	३	११	४	
कर्क	पौष	भद्रा	बुध.	अनु.	व्याघा.	नाग.	१	७	२	६	३	७	८	४	९	
सिंह	ज्येष्ठ	जया	शनि.	मूल	धृति.	बव.	१	१०	६	१०	७	११	१२	८		
कन्या	भाद्र.	पूर्णा	शनि.	श्रव.	शूल	कौल.	१	१२	१०	२	११	३	४	१२	५	
तुला	माघ	रिक्ता	गुरु.	शत	शूल	तैति.	४	६	३	७	४	८	९	५	१०	६	६
वृश्चिक	आश्वि	नंदा	शुक्र.	रेव.	व्यती	गर.	१	८	७	११	८	१२	१	९	२	१०	२
धनु	श्रावण	जया	शुक्र.	भर.	वरी	तैतिल.	१	९	४	८	५	९	१०	६	११	७	१०
मकर	वैशाख	रिक्ता	मंगल.	रोहि.	वैधृति	शकुनि	४	११	८	१२	९	१	२	१०	३	११	११
कुम्भ	चैत्र	जया	गुरु.	आर्द्रा.	गंड	किंस्तुघ्न	३	३	११	३	१२	४	५	१	६	२	५
मीन	फाल्गु.	पूर्णा	शुक्र.	आश्ले.	वैधृति	चतुष्प	४	५	१२	४	१	५	६	२	७	३	[illegible]

संतान प्राप्ति के लिये आयुर्वेदशास्त्र में महर्षि अश्विनीकुमारों का कहा हुआ

महाफलघृत

नाम्ना फलघृतं ह्येतदश्विभ्यां परिकीर्तितम्, पुत्रान् जनयते वीरान् सुमेधान् प्रियदर्शनान्

इस महाफलघृत से स्त्री-पुरुषों में क्रियाशक्ति बढ़ती है. एवं सुन्दर, मेधावी सन्तान की प्राप्ति होती है । वन्ध्यादोष, मृतवत्सादोष, प्रदर तथा माहवारी विकार दूर होकर गर्भाशय सार्थक होता है । सन्तान कामना हेतु वर्षों से प्रसिद्ध है ❊ इसको पुरुष भी सेवन करे तो वीर्यदोष एवं शुक्राणु की निर्बलता व कमी दूर होकर गर्भधारण योग्य शुक्र बनकर सांसारिक सुख क्षमता बढ़ती है । मूल्य १ शीशी १०तोला-आधापाव १४)रु. ❊ १ जीव हेतु ३० तोला का योग्य कोर्स १ मास का ४२)रु. ❊ स्त्री-पुरुष दोनों हेतु १मास का कोर्स ६०तोला८४)रु. का सूचना → इसी महाफल सेवन दिनों में सेवन योग्य अनुपान का चूर्ण अग्निमूल्य ३) या ६)रु. का पृथक से साथ आवेगा । दोनों योगों का सेवन विधि पत्र साथ ही आ[illegible], योग्य तथा स्त्री-पुरुष कोर्स आर्डर-पत्र के साथ२०)रु. पेशगी मनिआर्डर भेजना जरूरी है, पूरी दवा की कीमत आर्डर-पत्र के साथ ही आने से डाक खर्च में भारी बचत होती है, तदर्थ ध्यान रखें

पता-वैद्य भवानीशंकर रविशंकर शर्मा, मु. पो.- नीमच (म. प्र.)

卐 **वर्षफलाशयसूत्रावली** 卐 **श्रीशंवन्दे** स जयति सिंधुरवदनो देवोयत्पादपंकजस्मरणम् । वासरमणिरिवतमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम् आदित्यो मंत्र संयुक्त आदित्यो भुवनेश्वरः । आदित्यान्नापरो देवो आदित्यः परमेश्वरः ।

संवत्सरफलं महर्घं जायते धान्यं घृतं तैलं तथैव च । प्रजानां जायते वृद्धिर्युवायुवतिनन्दनः ।। धातावत्सरफलं– धातृवर्षेऽखिलाक्ष्मेशाः सदा युद्धपरायणाः । सम्पूर्णा धरणी भाति सहस्रयार्घवृष्टिभिः ।। १ राजा गुरु तस्यफलं– [illegible] वर्षति सर्वभूतले, पयोधराः कामदुधाश्च धेनवः । सर्वत्रलोका बहुदानतत्पराः,पराभवो [illegible] नन्दनम् ।। उपराजाशुक्रतस्यफलं– शुक्रस्यराज्ये बहुधान्यसम्पदो, वृक्षाः फलाढ्याः [illegible]तयः । प्रभूततोयं मधुरान्नपाचनं,प्रसन्नदैन्यं सजलं भुवस्तलम् ।। २मंत्रीमंगलस्तस्यफलं– [illegible]तः स्याद् गुरुदेवनिन्दा, भूमावतीसार गदस्य भूमा । धूमाकुला भूजंननंत्ररोगाः, कुजे भवेन्मंत्रिणि युद्धयोगः ।। ३ सस्येश (पूर्वअन्नाधिपः) शुक्रतस्यफलं–रोगैर्मुक्तं जगत्सर्वं भयमुक्ता भवेन्मही । पच्यन्ते सर्वधान्यानि यत्र सस्याधिपः कविः ।। ४ धान्येश (पश्चावन्नाधिपः) बुधस्तस्यफलं– धान्येश्वरे चन्द्रसुते राजानः प्रीतिमाश्रिताः । क्वचित् क्वचिदवृष्टिः स्यात् सस्यं निष्पद्यते क्वचित् ।। ५मेघेशचन्द्रस्तस्यफलं–चन्द्रेमेघाधिपतौ सस्यद्विजसौख्यवृद्धिरतुला स्यात । सम्पूर्णजला पृथिवी विद्वज्जनसम्प्रवृद्धिश्च ।। ६ रसेश सूर्यस्तस्यफलं– चन्दनकुंकुमगुग्गुल-तिल-तैलैरण्डतैलमुख्यानि । प्रचुराणि रसान्यतुलं रसनाथे भास्करे सततं ।। ७नीरसेशशुक्रस्तस्यफलं– कर्पूरागरुगन्धानां हेममौक्तिकवाससाम् । अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो भृगुर्यदि ।। ८ फलेश चन्द्रस्तस्यफलं– यदि विधुः फलपो द्रुमराशयः फलयुता व्रतिभिः कुसुमैर्युताः । द्विजमुखा वरभोगसमन्विता नृपतयो नयनाटनतत्पराः ।।९धनेशगुरुस्तस्यफलं–सुमनसां च गुरुर्द्रविणाधिपो वणिजवृत्तिपराः सुखभाजनाः । फलितपुष्पितभूमिरुहाः सदा विविधद्रव्ययुता भुवि मानवा ।।१०दुर्गेशचन्द्रस्तस्यफलं– गढपतिर्मृगलांछनको यदा नृपसुराज्यविलासितपौरजाः । बहुधनेक्षुजगोरसभोगिनो नरवरा नरवर्णितविग्रहा. ।। वर्षनामचंद्रस्तस्यफलं– चंद्राब्दे भूभुजः स्वस्थाः स्त्रीपु बालप्रजा भवेत् । अल्पवृष्टिः सस्यसम्पत् प्रजानां व्याधितो भयम् ।। मेघनामपुष्करःफलं– पुष्करो मन्दवृष्टिश्च ।। रोहिणीनिवासतटे– तटेवृष्टिः सुशोभना ।। समयनिवासरजकगृहे– रजकेवृष्टिरुत्तमाः ।। स्तंभचत्वारेषु– जलतृणयोः, वायु तथा अन्नस्य न्यूनता ।।श्रीरस्तु।। काले वर्षन्तु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी देशोऽयं क्षोभरहितो सुप्रजाः सन्तु निर्भयाः ।। अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तुपौत्रिणः । अधनाः सधनाः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।। शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरताः भवन्तु भूतगणा । दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ।।

कुमार मुहूर्त १-६-११-५-१० तिथि मंगल, बुध, सोम, शुक्रवार तथा अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, हस्त, विशाखा, मूल, श्रवण, पूर्वाभाद्रपद इनमें से किसी भी दिन इन [illegible] तिथि + वार + नक्षत्र के योग से " कुमार योग " बनता है । **राज मुहूर्त** १५-[illegible]-२-३-१२ तिथियां, रवि, मंगल, बुध, शुक्रवार तथा भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा अनुराधा, पूर्वाषाढ़ धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद, इनमे से कोई भी तिथि, वार, नक्षत्र आने से "राजयोग" होता है, दोनों उपरोक्त मुहूर्त शुभ फलद एवं सिद्धिकारक हैं ।

卐 भैरव भवानी वाक्यम् 卐







आद्य सनातन शक्ति हो ! जीव जगत प्रतिपाल । संसर्पाऽधिमास के वर्ष में कहो भुवन के हाल ।।
सुनो देव ! इस वर्ष के अधिनायक गुरुराज । न्याय नीति की न्यूनता,सचिव भौम का साज ।।
हिंसा द्वन्द विवाद की, रचना बहु विध संग । क्षयाधिमास के वर्ष में, सहज बने यह रंग ।।
युवा धाता वत्सर अभी,धरणी पर धन धान्य । देश-देशान्तर की मति, द्वन्द युद्ध की मान्य ।।
धान्य सस्य नायक बने, बुध भृगुराज महान । हरित-श्वेत क्रांति चले, जन-जन होय सुजान ।।
जन विग्रह भूमि चलन, आंधी पवन सुदक्ष । वाक्य भवानी यों कहें, तेरा दिन का पक्ष ।।
धन नायक गुरु देवता, दुर्गाधिप श्री सोम । अस्त्र शस्त्र के पक्ष में, व्यय विशेष से होम ।।
शनि भौम की युति चले, विविध मास के संग । अग्निकांड नैतिक पतन, अर्थ तंत्र से जंग ।।
रोहिणी वास तट में बना, पुष्कर नामक गाज । मन्दवृष्टि वा कहीं सबल, गौ प्रजा का राज ।।
धर्म कर्म मे दृढ रहो, भारत वसुधा देख । विज्ञ भवानी सुत कहे, ग्रहगति ज्योतिर्लेख ।।

लाभ-खर्च विवेक २०३९ विक्रमाब्दे एवं सनाब्द १९८२-८३

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धन	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	११	५	८	२	५	८	५	११	१४	२	२	१४
खर्च	५	१४	११	११	५	११	१४	५	११	८	८	११

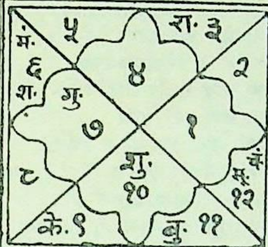
लाभ-खर्च विवेक लाभ-खर्च के दोनों अंकों का योग करें, १ घटावें तथा ८ का भाग देवें । यदि शेष १ रहे तो वर्ष में लाभ, २ में सुख-शान्ति, ३ में क्लेश, ४ में रोग-शोक, ५ में अपयश, ६ में मानयश, ७ में विजय-लाभ, ८ या ० शेष रहते हानि, विवाद समझें । इसमें भी विशेषकर अपनी जन्म-राशि से गोचर दिन दशा का मनन करना भी योग्य है

卐 अभिजित् मुहूर्त्त 卐

वार	र	च.	मं	बु.	गु	शु.	श.
अं	२०	१६	१५	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible] शुद्धि के अभाव होनेपर गोधूलि लग्न की तरह इस अभिजित् मुहूर्त्त कालांश का व्यवहार सर्वत्र लोकप्रिय है । परन्तु बुधवार के दिन इसका निषेध है । वारों के नीचे जो अंगुल संख्या है, उतने ही अंगुल का शंकु समतल भूमि पर रखें । मध्याह्नकाल में छाया शंकु मूल में आवे तब यह मुहूर्त्त १ घटि आसन्न होता है । **गणितागत नियम**– इष्ट दिन के दिनमान में १५ का भाग देने से १ मुहूर्त्त [illegible] मुहूर्त्त मान ही अभिजित संज्ञक है ।

卐 वर्ष लग्नम् ३।१४ 卐



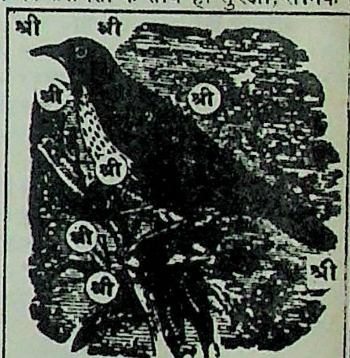
राष्ट्रभाषायां वर्षराजावलीफलश्रुतिः

卐 नववर्षसाधना 卐प्राप्तेनूतनवत्सरेप्रतिगृहेकर्यात् ध्वजारोपणं । स्नानं मंगलमाचरेत् द्विजवरैः सार्धं सुपूजोत्सवम् । देवानां गुरुयोषितां च शिशवोऽलंकार वस्त्रादिभिः । संपूज्यो गणकः फलं च श्रुणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम् ॥ सरस्वतीं च दवज्ञं पूजयित्वा विनायकं । दैवज्ञमुखतो भक्त्या श्रृणु वर्षफलं सदा ॐ यं शैवाः समुपासते शिव इति, ब्रह्मेति वेदान्तिनो । बौद्धा बुद्ध इति प्रमाण पटवःकर्तेति नैयायिकाः ॥ अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः । सोऽयं वो विदधातु वांछितफलं त्रैलोक्यनाथो रविः卐यह नूतन विक्रमाब्द राष्ट्र वैभव-विकास-श्रीवर्धन एवं वैज्ञानिक सार्थकता अणुशक्ति सह विविध आरक्षणसैन्य शक्ति तथा जल-थल-नभ सेना-यान-वाहन और आर्थिक-सामाजिक-राजनैतिक नैसर्गिक अभिवृद्धि चरण नियामक से "बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय" सूत्रानुसार सुसार्थकता प्रदान करे, परंतु तात्कालिक दिनमान ग्रह चलन-कलन का फलाशय अनुपातिक विषमता-न्यूनता का उपलक्षक प्रतीत हुआ है । यह सत्र युवा+धाता संवत्सर नामक ब्रह्मविंशति(नवनिर्माण-सृजनयुग) कालांश से चरितार्थ है । युवक-युवतियों की अभिवृद्धि,विविध तंत्र उद्योग नीति नियम से अर्थ-तंत्र में सुधारकसूत्र, कार्य-धंधा नियोजन हेतु अभिनव गति साथ ही देश-देशान्तर के अधिनायक भौतिकवाद,शक्तिवाद,स्वार्थनिष्ठा,भू-संभाग आधिपत्य पक्ष को वृद्धिगत रखने की मनोवृत्ति विशेष बढे । सैनिक हलचल, अणुशस्त्र गति,हिंसा-विवाद-विग्रहतत्व को प्रश्रय देने की वृत्ति से चरितार्थ बन पावे । असामाजिकतत्व वृद्धि, जन-अशांति, प्रांतीयवर्गीय उपद्रव, युवाजन आक्रोश, श्रमिक असहयोग आदि क्रियाओं में अनुपातिक वृद्धि प्रतीत होवे । वर्षलग्न+वषश लग्न तथा वार्षिक ग्रहजनित सुयोग-कुयोग की मीमांसा से संहिता प्रतिफल यह कि शनि + मंगल की युति विशेषकर है । यथा—यमारयोः पवनहुताशजं भयं तथा शुभाऽवलोकितं नैव । कार्त्तिकमासे १३दिन का पक्ष है प्रतिफल-एकत्रपक्षे द्वितिथिप्रपाते, महर्घमन्नं जनमध्यवैरम् । तत्पक्षनाशे मरणं नृपाणां, मास क्षये मुस्लिमराष्ट्रभिरुपद्रवः । मार्गशीर्ष मास से वर्षान्तपर्यन्त शुक्लपक्षीय तिथि क्षय क्रमशः तदर्थफलं— मार्गशीर्षादिमासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः । छत्रभंगं प्रजापीड़ा दुर्भिक्षं च समादिशेत् । साथ ही क्षयमास की गणनावश— क्षयमासो भवेद्यस्मिन्तस्मिन्वर्षेति विग्रहम् । दुर्भिक्षं वायवा पीड़ा छत्रभंगं करोति वा । अक्टुम्ब.-नव.मास में श.+गु की युति बनी तत्फल यदा जीव युतो मंदो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः । तदा प्रजा विनश्यंति भूयश्चान्नपरिक्षयः । एक ही पक्षान्तर से २ ग्रहण परिपूर्ण हैं । यदैकमासे ग्रहणं जायते चन्द्रसूर्ययोः । शस्त्रकोपैः क्षयं यान्ति, तदा भूपाः परस्परम् । लोकोक्ति भी है यथा एक पक्ष में मढुलीं दोय ग्रहण हुवंत । महि डोले विघ्न पड़े आई शाख गमन्त । इत्यादि वर्ष में कुयोग विशेष, सुयोग न्यून बने हैं । सनाब्द १९८२–८३ का कालांश निजराष्ट्रनायक ही को क्या ? विश्वनायकों के सन्मुख भी चुनौतिपूर्ण दिखता है । आर्थिक-राजनैतिक-सामाजिक आपदा ही क्या देवदोष, प्राकृतिक आपदा की भी उत्पत्ति होना सा लगता है । एवं ज्योतिर्विज्ञान का संकेत जन-जन एवं जन-नायक, सभी राष्ट्रनायकों को रीति-नीति विवेक एवं शांति सन्मार्ग से क्रियाशील रहने हेतु अधिसूचना प्रदान करता है । सर्वधर्म सम्मत वचन **"वसुधैव कुटुम्बकम्— यत्र विश्वं भवत्येकनीड़म्—बहुजनहिताय-बहुजन सुखाय"** इत्यादि वचन परिपालक राष्ट्र वा नागरिक महती विपदा कालांश में भी **"सप्तऋषि अमरत्व ध्रुव न्याय"** गरिमा से आरक्षण संरक्षण विजय वैजयन्ती का वरणत्व उत्तरोत्तर प्राप्त करते हैं, अस्तु । वर्षराजावली अनुसार वर्ष के राजा गुरु उपराजा शुक्र का प्रतिफल शांत नीति,न्याय,सिद्धांत एवं मित्रतत्वीय

卐 वर्षेश लग्नम् ९।६ 卐



रचनासूत्र का उपलक्षक बना है । मंत्री मंगल का वर्चस्व भारतीय नीति-रीति के सशक्त प्रस्तार के साथ ही विषम अकल्पित विपदा,प्राकृतिक प्रकोपजनित व्यय प्रभार राष्ट्र हेतु प्रदान करता है । सस्यधान्य नायक शुक्र-बुध का अधिकार अन्न-खाद्यान्न रसवर्गीय पदार्थ के समकल सामान आपूर्त्ति का परिचायक है । रसेश नीरसेश सूर्य शुक्र का प्रतिफल भू-गर्भीय सम्पदा, जंगलात के द्रव्य-वस्तु तथा प्राकृतिक सम्पदा के दोहन हेतु अपूर्व गति शक्ति की सूचना देते हैं । धनेश गुरु एवं दुर्गेश चन्द्र का कालांश राष्ट्रीय आर्थिक तंत्र की सक्षमता के साथ ही सुरक्षा, सैनिक अभिवृद्धि चलन-कलन, अस्त्र-शस्त्र तथा वैज्ञानिक अभिवृद्धि हेतु व्यय विशेष का सूचक । फलेश मेघेश चन्द्र साग-सब्जी,फल-फसलों के परिपाक में उत्पादन क्षमता तथा विविध कूपखनन,नहर,बांध,सिंचाईयोजना में वृद्धि,राष्ट्रीय विकास चलन-कलन हेतु अपूर्व शक्ति-नायककी उत्पत्ति । रोहिणी वासतट का तथा मेघनाम पुष्करका प्रतिफल कहीं विशेषतम कहीं न्यूनतम वर्षा मानसून की गति, एवं सुयोग-कुयोग मिश्रित संहिता-फल विदित होता है, मूलतया कुयोगजनित प्रभाव विशेषकर । व्यापार-व्यवसाय में स्थिर गति का रुख नहीं रहे, तात्कालिक अंश लांभांश लेने की मनोवृत्ति रखना ही उचित है । मसूर, मिर्च, गुड़, नमक, सूत, कपास,चना,हल्दी,मेंहदी,तंबाकू जीरा,लहसन, जूट-सण सोंठ,सरसों,मेथी,तुवर,मूंग का कारोबार प्रायः लाभद रहे । व्यापार तंत्र में यह वर्ष स्मरणीय रूपरेखा देगा, भारतीय राजनीति तंत्र में अभिनव रचना गति । ॥ श्रीरस्तु ॥ **स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेण महीं महीपाः । गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकास्समस्ता सुखिनो भवन्तु ॥**



फलाशय

चोंच दुःख पाखां मरण,कंठा मिलन समाज ।
उदर सुप्रेरक पूंछ धन, मस्तक होवे काज ॥
शुभ लक्षण पावा परे, घर में मंगलाचार ।
भवानीशंकर सुत कहे,पक्षी शकुन विचार ॥

स्वस्तिश्री विक्रमाब्द २०३९ शाके १९०४ रेखाभिः सहिता विवाहलग्नोपनयनादि विविधमुहूर्त्ताश्च

मांगलिक शुभ विवाह मुहूर्त्त

वैशाखकृष्णपक्षे

८ शुक्रे उषायां लग्नं गोरजे+वृश्चिक रेखा ६ऽ।।ऽऽऽ।। ला. रा.यु रा.अं.पं. ता. १६-४-८२लग्न८रात्रि९।८से११।२५तक।

वैशाखशुक्लपक्षे

३ चन्द्रे रोहिण्यां दिवा. लग्नं ४ रात्रौ ८ रेखा१०।।।।।।।।।। ८ ल.चं.७पू. तारीख २६-४-८२. दिवा ल. ४ प्रातः११।१९ से १।३८, ल. ८ रात्रि ८।२८ से १०।४५ तक।

३ चन्द्रे मृगशिरायां लग्नं १० रेखा ८।।।।।।ऽऽ।। तारीख २६-४-८२ ल. १० रात्रि १२।५० से २।३५ तक।

४ भौमे मृगशिरायां लग्नं गोरजे रेखा ९।।।।।ऽ।।। नृ. पं. तारीख २७-४-१९८२ ई।

९ शनौ मघायां लग्नं गोधूलिः रेखा७।।।।ऽऽ।ऽ।ता १-५-८२ गणितागत क्रांत्याऽभावः।

१० सूर्ये मघायां दिवा लग्नं २।४ रेखा७।।।।ऽऽ।ऽ।ऽ।तारीख २-५-८२ गणितागत क्रांत्याऽभावः ल. २ प्रातः ६।४६ से ८।४२ ल. ४ दिवा १०।५५ से १।१४ तक।

१४ गुरौ स्वात्यां लग्नं १० रेखा ६ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ।। ला. बु. यु. गु. नृ.पं. ता. ६-५-८२ ल. १० रात्रि १२।१० से १।५५ तक।

ज्येष्ठशुक्लपक्षे

७ शनौ मघायां दिवा लग्नं ४ रेखा ७।।।।ऽऽऽ।। नृ. पं. ता. २९-५-१९८२ ई. ल. प्रातः ९।९ से ११।२८।

१२ गुरौ स्वात्यां दिवा लग्नं ४।५ रेखा ७ऽ।ऽ।ऽ।।।। ला.सू. यु.चं.गु.या.शु. ता. ३-६-८२ ल. दिवा ८।५०से१।२६ तक।

१४ शनौ अनुराधाभे दिवा ल. ४।५ रेखा ८।।।।ऽ।ऽ।।अ.पं. तारीख ५-६-८२ लग्न प्रातः ८।४२ से १।८ तक।

आषाढशुक्लपक्षे

५ शुक्रे मघायां ल. दि ४ रेखा८।।।।।ऽऽ।। तारीख२५-६-८२ रात्रौ मृत्यु. पं. प्रातः ७।२७ से ९।४२ तक।

७ सूर्ये उफायां लग्नं १० रात्रौ रेखा ८ऽ।।।ऽ।।। ल.अं.२४ यां. तारीख२७-६-८२ लग्न रात्रि ८।४६ से १०।३१ तक।

१० बुधे स्वात्यां दि.ल.४।५ रेखा८ऽ।ऽ।।।।।।ला. मं. यु. गु. ता.३०-६-८२ लग्न प्रातः ७।४ से ११।४० तक।

१० बुधे स्वात्यां लग्नं गोरजे+१० रेखा ७ऽ।ऽ।।ऽ।।।। ला.मं. यु.गु.चो.पं ता.३०-६-८२ ल.१० रात्रि८।३५से१०।२०तक।

११ गुरौ स्वात्यां दि ल. ४।५ रेखा७ऽ।ऽ।।ऽ।।।। ला.मं.यु.गु. चो. पं. तारीख १-७-८२ लग्न प्रातः ७ से ११।३६ तक।

पौषकृष्णपक्षे (वृश्चिकार्के)

६ चन्द्रे मघायां लग्नं ६ रेखा ७।ऽ।।ऽऽ।।। अं. पं. तारीख ६-१२-८२ लग्न रात्रि १।१२ से ३।२७ तक।

८ बुधे उफायां लग्नं दिवा१२+गोरजे+५ रेखा ७।।।।ऽऽऽ।। तारीख ८-१२-८२ दिवा लग्न १।१५ से २।३८, गोधूलि-प्रदोषे, ल. ५ रात्रि १०।४७ से १।४ तक।

अग्रीममासेषु शुद्धविवाहमुहूर्त्तानामऽभावः

यज्ञोपवीतमुहूर्त्ताः

चैत्रशुक्लपक्षे

१२ चन्द्रे पूफायां अभिजिति

वैशाखशुक्लपक्षे

३ चन्द्रे रोहिण्यां अभिजिति

११ चन्द्रे पूफायां अभिजिति

ज्येष्ठशुक्लपक्षे

५ गुरौ पुष्ये अभिजिति

१२ गुरौ स्वात्यां घ.१५/१२या.

आषाढकृष्णपक्षे

४ शुक्रे श्रवणे अभिजिति

आषाढशुक्लपक्षे

५ शुक्रे सार्प्ये घ ३/२१या.

श्रावणशुक्लपक्षे

१० शुक्रे अनुराधायां अभि.

भाद्रपदकृष्णपक्षे

२ शुक्रे धनिष्ठायां अभि.

भाद्रपदशुक्लपक्षे

११ चन्द्रे उषायां घ २१/१उ.

गृह-निर्माण मुहूर्त्ताः

वैशाखशुक्लपक्षे

१३ बुधे हस्ते ल. ५ घटि १७/१७ उ. शु पादवेधाऽभावः

ज्येष्ठशुक्लपक्षे

११ बुधे चित्रायां घ.१८/३०उ.

१२ गुरौ स्वात्यां घ [illegible]

नवगृहप्रवेशमुहूर्त्ताः

ज्येष्ठशुक्लपक्षे

११ बुधे चित्रायां घ.१८/३०उप.

१२गुरौ स्वात्यां घ.१५/१२या.जीर्णे

आषाढकृष्णपक्षे

९ बुधे रेवत्यां घ १०/३७उ अभि.

प्रगतिशील कालगति

युगधर्मानुसार भौतिक प्रगति का कालचक्र निरंतर प्रतिक्षण गतिशील है। संप्रति अर्थतंत्र तथा समयाऽभाव स्थिति से आंशिक शुभ मुहूर्त्तों के निर्धा-रण सम्पादन में भी मनुजों [illegible] दिया गया है।

नव-निर्माण के इस युग में भवन निर्माण तथा प्रवेश निवास आदि मुहूर्त्तों की अधिक आवश्यकता बनती है। एवं सम्पूर्ण शास्त्र-दृष्टि तथा सर्वांग पक्ष शोधन अनुसार मुहूर्त्त निर्णय न्यून ही बन पाते हैं। तदर्थं पंचांग शुद्धि तथा अमृत-सर्वार्थं सिद्धि मुहूर्त्त वेला रवियोग विशेष दिवस आदि से भी पृथक मुहूर्त्त निर्णय करना शास्त्र सम्मत है, लिखित मुहूर्त्तों के अलावा शुद्ध कालांश शोधन हेतु पत्र-व्यवहार कर लेना चाहिये। प्राथमिक श्रम-शुल्क ५)५० का मनिआर्डर भी साथ ही भेजें। सभी प्रकार के मुहूर्त्त ज्ञान हेतु सरल हिन्दी भाषा की 'मुहूर्त्त विज्ञान-ज्योतिष बोध' मू. ८) की प्राप्त है, चाहें तो पत्र देकर मंगा लेवें। पता—निर्णयसागर पंचांग कार्यालय, मुकाम-पोस्ट, नीमच (म. प्र.)

देवप्राणप्रतिष्ठामुहूर्त्ताः

"जलाशयकूपोद्यानहेतुरपि"

वैशाखकृष्णपक्षे

८ शुक्रे उषायां अभिजिति

९ रवौ धनिष्ठायां अभिजिति

वैशाखशुक्लपक्षे

३ चन्द्रे रोहिण्यां अभिजिति

८ शुक्रे पुष्ये अभिजिति

ज्येष्ठकृष्णपक्षे

६ शुक्रे उषायां अभिजिति

८ सूर्ये धनिष्ठायां अभि.

ज्येष्ठशुक्लपक्षे

१ चन्द्रे मृगशिरायां अभि.

५ गुरौ पुष्ये अभि.

१२ गुरौ स्वात्यां घ १५/१२या.

१५सूर्ये अनुराधा घ.४/१४उ १०/३८या.

आषाढकृष्णपक्षे

४ शुक्रे श्रवणे घ.०/५४उ.अभि.

६ सूर्ये शतभिषा घ ९/२२या.

९ बुधे रेवत्यां अभि.

आषाढशुक्लपक्षे

१० बुधे स्वात्यां ल. सिंहः

द्विरागमनमुहूर्त्ताः

वैशाखकृष्णपक्षे

६ बुधे मूले घ.१७/९उ.

८ शुक्रे उषायां

१० चन्द्रे धनि.शत घ.६/४३उ.

१२ बुधे उभायां घ.१४/४१उ.

वैशाखशुक्लपक्षे

३ चन्द्रे रोहिण्यां

६ गुरौ पुनर्वसु भे

१३ बुधे हस्ते

ज्येष्ठकृष्णपक्षे

५ गुरौ उषायां घ.१७/११उ.

६ शुक्रे उषायां श्रवणे ३१/५१या.

पौषकृष्णपक्षे

१ बुधे रोहिण्यां

२ गुरौ मृगशिरायां

अग्रीममासेषु धनाऽर्कमलमासः तदग्रे लुप्तमासः पुनश्चाऽधिक-फाल्गुनमासवशात् मुहूर्त्तानामभावः।

卐 विवाहलग्नादिविषये 卐

आपका लोकप्रिय निर्णयसागरपंचांग भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत में गणमान्य है। गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, मद्रास आदि दिवा लग्न काल मान्यता वाले संभाग में भी सुप्रचलित है। तदर्थ विवा लग्न मुहूर्त्तशोधन प्रांतीय जन-सुविधा-मान्यता दृष्टि तथा उन प्रांतीय विद्वानों के आग्रह से प्रस्तुत किये हैं। यथा शास्त्र-वचन– ★ प्रमाणं ग्रामवचनं विवाहादौ तथात्यये। यतःपरंपरा-यातं धर्मं वदन्ति ते खलु ❀ इससे अन्य प्रांतीयजन एवं विद्वान्गण अन्यथा नहीं समझेंगे।

संप्रति युगधर्मानुसार हमारे पंचांग से अन्य पंचांगों के लग्नादिक मुहूर्त्तक्रम देखते हमारेपंचांग के ग्राहकगणों का शंकाशील होना सहज है। परन्तु हमारे इस 'निर्णयसागरीयपंचांग' में पीयूष+चिन्तामणि+मार्त्तण्ड+गणपति+प्रकाश आदि मुहूर्त्त ग्रंथ प्रमाणों से शास्त्र निर्णय लिया जाता है। तथा जिनमें दोष अपवाद तथा परिहार वचनों का निर्वाह नहीं है, उन्हें मान्य नहीं किया है। अतः अपवादयुक्त सामान्य विवाह लग्नादिक की मीमांसा-स्पष्टता निम्नानुसार प्रस्तुत है।

❀ साक्षेपविवाहलग्नादि ❀

वैशाखकृष्णपक्षे

६ बुधे मूललग्नेराहुवेधः
१२ गुरौ उषायां लग्ने क्षीणेन्दुः

वैशाखशुक्लपक्षे

२ रवौ रोहिण्यां लग्नाऽभावः
४ भौमे मृगे दिवा ल.भद्राल.अ.
११ चन्द्रे उफायां भौमयुतिः
१२ भौमे हस्ते लग्नं चन्द्रयुतिः सितवेधः तथा च मृत्युबाणः।
१३बुधे हस्ते दिवा सितवेधचं.युतिः
१५ शुक्रे स्वात्यां व्यतिपातः

ज्येष्ठकृष्णपक्षे

१ शनौ अनुराधायां ल. सूर्यवेधः
१ रवौ अनुराधाभे ल. सूर्यवेधः
३ भौमे मूल लग्ने राहुवेधः
५ गुरौ उषायांमृत्युअग्निपंचकं
६ शुक्रे उषायां दिवा मासांतदोषः
१० भौमे उभायां शनिवेधः
११ बुधे उभायां शनिवेधस्तदग्रे रेवत्यां लग्ने भौमवेधः।
१२गुरौरेवत्यां दिवाक्षीणेंदुःमं.वेधः

ज्येष्ठशुक्लपक्षे

१ चन्द्रे रोहिण्यां मृगशिरायां लग्ने दिवा रात्रौ च क्षयाहः।
६ शुक्रे मघायां लग्नाभावः
७ शनौ मघायां भद्रालग्नाऽभावः
८ रवौ उफायां लग्ने भौमयुतिः
९ चन्द्रे हस्तलग्ने शनियुतिः
१० भौमे हस्तलग्ने शनियुतिः
११ बुधे स्वात्यां लग्नाऽभावः मेषलग्ने तु लग्नेश षष्ठस्थदोषः
१२ गुरौ स्वात्यां मृत्युबाणः
१४ शनौ अनुराधायां भद्रा

आषाढकृष्णपक्षे

१ चंद्रे मूललग्ने राहोर्वेधः
२ भौमे दिवा मूललग्ने राहोर्वेधः
३बुधेउषायां ल. सूर्यवेधः घ. २२उभद्रा घ.४९उ.क्रांतिः
४गुरौउषायां सूर्यवेधःदग्धादयः
७चंद्रे उभायांशनिभौमयोर्वेधः
८भौमेउभायांरविनिरंशंश.मं.वे.
९ बुधे रेवत्यां मृत्युबाणः
१३शनौ रोहिण्यां क्षीणेन्दुः

आषाढशुक्लपक्षे

५ शुक्रे मघालग्ने मृत्युबाणः
८ चंद्रे हस्तल.मं.श.युतिः

पौषकृष्णे-वृश्चिकाऽर्के

१ बुधे रोहिणीमृगयोक्षीणेन्दुः
२गुरौमृगशिरायांदिवाभौमवेधः
९गुरौ हस्त ल.दग्धाभद्रादयः
११शनौस्वात्यां ल.शनियुतिः
१३शुक्रे अनुराधाभे क्षीणेंदुः

卐 देशाचारकुलाचारानुसारेण विवाहमुहूर्त्ताः 卐

देशाचारः कुलाचारः जात्याचारो विशेषतः। कर्त्तव्यो विबुधा तत्र सारासारं विचार्य च॥ देशाचारास्तावदादौ विचिन्त्यो देशेऽदेशे या स्थितिः सैव कार्या॥ इत्यादि श्लोक वचनानुसार सिंधी-पंजाबी-काश्मीर प्रांतीय पंडित समाज एवं इन प्रांतीय हमारे "निर्णयसागरीय पंचांग" अनुरागीजनवर्ग सुविधार्थ विवाहलग्नादि मुहूर्त्त वेला प्रस्तुत है। ❀ ❀ ❀

आषाढशुक्लपक्षे

१२ शुक्रे अनुराधाभे लग्नं १०।२ रेखा ७SSS।।।।।।। ला. सू. यु. चं. तारीख २–७–८२ ल. १० रात्रि ८।२७ से १०।१२ तथा ल. २ रात्रि २।४३ से ४।३९ तक।

१३ शनौ अनुराधाभे दिवा लग्नं ४।५ रेखा ६SSS।।S।।।। ता ३–७–८२ लग्न प्रातः ६।५२ से ११।२८ तक।

श्रावणकृष्णपक्षे

६ चन्द्रे उषायां लग्नं गोरजे ल.१०अं.१८या.रेखा८।।।।।SS।।। रो पं. ता. १२–७–८२ ल. १० रात्रि ७।४७ से।

७ भौमे उभायां दिवा लग्नं ९ अं. ५ उ. रेखा ८।।।।।SS।।। रो. पं. तारीख १३–७–८२ ल. प्रातः ८।३१ से १०।४८।

७ भौमे रेवत्यां लग्नं गोरजे रेखा ९S।।।।।।।।। ला बु. ता १३–७–८२।

श्रावणशुक्लपक्षे

४ शनौ उफायां लग्नं २ रेखा ८।।।।।।SS।। ता. २४-७–८२ लग्न २ रात्रि १।२० से ३।१६ तक।

८ बुधे स्वात्यां लग्नं ५ दिवा रेखा ७।S।।।S।S।। अ. पं. ता. २८–७–८२ ल. ५ प्रातः ७।३२ से ९।४९ तक।

११ शनौ मूले लग्नं २ अं. १२ उ. रेखा ९S।।।।।।।।। ला. सू. तारीख ३१–७–८२ ल. रात्रि १२।५२ से २।४८ तक।

१४ भौमे उषायां दिवा ल. ५ रात्रौ २ अं. १४ या. रेखा ६S।।।S।SS।। ला श.या.शु.लग्न २ रे. ५ अल्प ता. ३-८-८२ ल. ५ प्रातः ७।९ से ९।२६ ल. २ रात्रि १२।४१ से।

भाद्रपदकृष्णपक्षे

३ रवौ उभायां लग्नं २ रेखा ६S।।।S।SS।। ला. बु. या. च. तारीख ८–८–८२ लग्न रात्रि १२।२१ से २।१७ तक।

४ चन्द्रे उभाया दिवालग्नं ८ रेखा ६S।।।SSS।।। ला बु. या. चं.नृ.पं ता.९–८–८२ लग्न दिवा १।३५ से ३।५२ तक।

४ चन्द्रे रेवत्यां लग्नं २ रेखा ८।।।।।S।S।। नृ. पं. तारीख ९–८–८२ ल. रात्रि १२।१७ से २।१३ तक।

१० शनौ रोहिण्यां दिवा लग्नं ५ रेखा ८S।।।।।।S।। ला. शु. तारीख १४–८–८२ ल प्रातः ६।२५ से ८।४२ तक।

भाद्रपदशुक्लपक्षे

२ शुक्रे उफायां लग्नं ४ रेखा ८।।S।।।S।। यु. बु. तारीख २०–८–८२ ल. रात्रि ३।४३ से ६।२ तक।

३ शनौ उफायां दिवा लग्नं ८ रेखा ७।।S।।SS।।। यु.बु.नृ.पं. तारीख २१–८–८२ ल. दिवा १२।४८ से ३।५ तक।

३ शनौ हस्ते लग्नं २।४ रेखा ८।S।।।S।।।। नृ. पं. तारीख २१–८–८२ ल. २ रात्रि ११।३० से १।२६ ल. ४ रात्रि ३।३९ से ५।५८ तक।

४ रवौ हस्ते दिवा लग्नं ८ रेखा ९।S।।।।S।।। ता.२२-८-८२ लग्न दिवा १२।४४ से ३।१ तक।

८ गुरौ अनुराधाभे लग्नं २।४ रेखा ९।।।।।।।S।। ल. २ चं. ७ पू. तारीख २६–८–८२ लग्न २ रात्रि ११।१०से१।१६ ल. ४ रात्रि ३।१९ से ५।३८ तक।

११ चन्द्रे उषायां लग्नं २।४ रेखा ७S।।।।SS।।। ला.श. नृ. पं. तारीख ३०–८–८२ लग्न २ रात्रि १०।५४ से १२।५० ल. ४ रात्रि ३।३ से ५।२२ तक।

❀ **सूचना संकेत→** १. इस वर्ष से जोधपुर के सूर्योदय सूर्यास्त का समय स्टैण्डर्ड घंटा-मिनिट में दिया गया है, पहले देशी समय (लोकल टाइम) में दिया जाता था। पंचांग अनुरागीजन समयान्तर-समीकरण हेतु ध्यान देंगें ❀

२. ❀ **पुरुषोत्तम कथामहात्म्य–** फाल्गुन अधिमास में पठन श्रवण योग्य भाषा टीका अनुवाद में प्राप्त हैं, म. १०) मात्र आज ही ५) पेशगी मनिआर्डर भेजकर मंगा लेवें

❊ क्षयाधिमास-विषयक ❊

ॐ शास्त्रीय सन्मार्ग-धर्मशास्त्रीय वचन विशिष्ट ॐ

इस वर्ष के क्षयाधिमास विषय को लेकर विद्वानो मे मतभेद बना है। गणितागत तथ्य तो सभी का समान है, परन्तु धर्मशास्त्रीय वचनों के विभेद से व्रत-पर्वादिक हेतु मतमतांतर है। निर्णयसागरीय पंचांग अपनी निर्णायक भूमिका में सदा से शास्त्रसम्मतसन्मार्ग पर दृढ़रहा है पक्ष कभी भी दो सत्य नहीं होते है, एक ही सत्य शाश्वत रहता है, हमने शाश्वत सत्य-मार्ग जो कि व्यवहारिक-तार्किक-नीति-रीतियुक्त है। उसी का समर्थन करते व्रत-पर्व-मासादिक का निर्णय किया है। आशा है हमारे पंचांग के अनुरागीजन बौद्धिक विवेक का अवलम्बन रखते क्रियाशील रहेंगे। ज्योतिर्गणित साधना के उपरान्त विशिष्ट धर्म-ग्रन्थों के वचनानुसार व्रतोत्सव-पर्वादिक निर्णय कार्य सम्पन्न किया जाता है। इन धर्म-ग्रंथों में बहुत से शास्त्र है, परन्तु धर्मसिन्धु+निर्णयसिन्धु+काल-माधव+पुरुषार्थ चिन्तामणि+जयसिंहकल्पद्रुम+स्मृतिकौस्तुभ आदि ग्रन्थ आसेतु हिमाचल से कन्याकुमारी पर्यंत सर्व-मान्य है। यह विषय भली प्रकार सभी जानते हैं। इन धर्म-ग्रन्थों की मान्यतानुसार क्षयाधिमास पक्ष में विवेचना यह है कि— मासद्वयेऽब्द मध्ये तु संक्रान्तिर्न यदा भवेत्। प्राकृतस्तत्र पूर्वं स्यादधिमासस्तथोत्तरः ॥१॥ एकस्मिन् वत्सरे स्यातां द्वौ-मासावधिमासकौ। पूर्वमासस्तु संसर्पः परतस्त्वधिको भवेत् ॥२॥ मासप्रधानाऽखिलमेव कर्म मुक्त्वाऽखिलं कर्म न कार्य-मात्र। यज्ञोपवासव्रतबंध यात्रा विवाहकर्मादि विनाशयेति ॥३॥ एवं महर्षि वसिष्ठ वाक्यानि ॥ धर्मसिन्धु ग्रन्थ का वचन आदेश- क्षयमासात्पूर्वोऽधिमासः संसर्प संज्ञ सर्वकर्मार्हः शुभकर्माणि न त्याज्यः। तथा च अहंस्पति संज्ञः क्षयमासा-त्तुत्तर भाव्यधिमासश्च सर्वकर्मसु वर्ज्यः। एवमेव सर्वसम्मत निर्णयसिन्धु का वचन विशेष— तत्र चैत्रात्पूर्वसंक्रान्तद्वये पूर्वो-नाधिकः किंतु पर इत्यर्थः यथा घटकन्यागते सूर्ये वृश्चिके वाथ सर्वदा। मकरे वाथ कुंभे वा नाधिमासो विधीयते ॥ पुनरपि स्पष्टता—तुलाकन्यागतेसूर्येक्षयमासपूर्वभाव्यधिमासस्य कालाधिपत्यभावनिषेधार्थं न त्वधिकमासस्य। संसर्पे नाधि-मासिकम् कालस्यानाधिक्यात् ॥ कालमाधवग्रंथ मे भी स्प[illegible]

व्याख्या— क्षयमासात् प्राचीनो योऽसंक्रांतः स संसर्पः। सम्यक् सर्पतीति संसर्पः। संक्रांतिरहितयोर्द्वयोर्मासयोर्यः पूर्वोऽसंक्रांतः स प्राकृतः शुद्धः कर्मार्हः इत्यर्थः। इत्यादि धर्मवचनों का सारांश सरलार्थ यह कि कालचक्र के विशेष नियम से १४१ वर्ष के बाद अथवा कभी १९ वष बाद जो क्षयमास प्राप्त होता है, उसमें क्षयमास से पूर्व तथा बाद में २ अधिमास गणना से प्राप्त होते हैं। इसमें प्राकृतिक अधिमास तीसरे वर्ष वाले तथा इस विशेष वर्षान्तर १४१-१९वर्षीय अधिमास की संज्ञा मान्यता स्थिति में शास्त्रकारों ने मान्य-अमान्य का विशेष वचन निदश प्रदान किया है। यह कि इस स्थिति में क्षयमास से पूर्व वाला अधिमास संसर्प-प्राकृत संज्ञक संज्ञा विशेष से युक्त शुद्ध, तथा क्षयमास के बाद होने वाला अधिमास-मल-मास संज्ञा का माना जावे। क्षय से पूर्व वाले अधिमास को ३० तिथि का शुद्ध ही मान्य किया है यथा—

यां तिथिं समनुप्राप्य तुलां गच्छति भास्करः।
तथैव सर्वं संक्रान्तिर्यावन्मेषं न गच्छति ॥

अब कतिपय पंचांगकारों ने उपरोक्त सभी वचन विशेष का ध्यान नहीं रखते, सामान्य तीसरे वर्ष आने वाले अधिमास समान नियम मानते व्रत-पर्व लगा दिये तो यह उनकी प्रज्ञा बौद्धिक गति का ही मार्ग है। मौलिक नियमसे भी कभीकोई क्षय तिथि होने पर उसके व्रतादि पूर्व तिथि में मान्य होते हैं। एवमेव क्षयमास का समावेशपूर्व अधिमास में होवे तभी लुप्त क्षयमास के व्रतादिक क्रमशः मान्य होंगे। अन्यथा उस पौषक्षय मास के व्रतादि कहां जावेंगे। तदर्थ ही शास्त्रकारों ने क्षय से पूर्व वाले अधिमास को संसर्प-शुद्ध प्राकृत संज्ञा विशेष अनुसंधान तथा व्यवहार से प्रदान की है।

मूलतया सभी व्रतोत्सव धर्मकृत्यादि हेतु ३ प्रकार के वचनों से कालनिर्णय होता है। प्रथम १ मुख्यवचन द्वितीय २ मुख्य से अतिरिक्त वचन, तृतीय ३ मुख्य तथा मुख्य अतिरिक्त वचनविशेषसंज्ञक। यथा मुख्य वचन यह कि प्रति तीसरेवर्ष जो अधिमास आवे उसमें व्रतोत्सव नहीं करे। मुख्य अतिरिक्त वचन यह कि पूर्वोक्त अधिमास व्रतादि निषेध समय में भी 'गंगादशहरा' अधिमास—को मलमास में ही करें, शुद्धमास में नहीं। इस उपरान्त मुख्य तथा अतिरिक्त वचनों के बाद [illegible] जाता है कि जिस वर्ष क्षयमास आवे उसमें क्षय से पूर्ववाला अधिमास-मलमास नहीं मानते 'संसर्प-संज्ञा' का प्राकृत शुद्ध मानते व्रतादिक करे। क्षय के बाद वाले अधिमास को मलमास तुल्य माने। इत्यादि मौलिक बौद्धिक गति से भी क्षयाधिमास विषय में स्पष्टता बन पाती है। फिर भी किन्हीं पंचांगकारों ने अपनी निजबुद्धि का प्रयोग करके, या किन्ही एकाध चन्द अव्यवहारिक वचनों की मान्यता रखते प्रमुख व्यवहारिक धर्मशास्त्र वचनों की अवज्ञा करके क्षय से पूर्व वाले अधिमास को मलमास मानते शारदीय नवरात्रि से आगे पौष मास से पूर्व तक सभी व्रतपर्वादि में एक१मास का अन्तर बना लिया। यह ज्योतिष जगत हेतु उपहासक गति ही है। हमारा कथन यह भी कि जबकि वर्ष के सभी व्रत-पर्वादि तो पूर्वोक्त धर्मग्रन्थों के अनुसार निर्णय किये जाते हैं तथा क्षयाधिमास प्रकरण को लेकर पूर्वोक्त धर्मसिन्धु-निर्णय सिन्धु ग्रन्थ वचनों की अवहेलना की जावे? यह भी क्या न्याय संगत क्रिया है? तनिक विचारने-समझने की बात है।

जो विद्वान् रवि संक्रांति अभाववश आश्विन को अधिमास मानते मांगलिक काम्य व्रतादि हेतु निषेध करते हैं। वे सर्वकाम्य "महाशिवरात्रिव्रत" को अहंस्पति क्षयमास कालांश मकर-कुम्भ सक्रांति द्वययुक्त मास में कैसे कर रहे हैं। जबकि क्षयमासवश काम्य व्रतादि नहीं होने चाहिये। परंतु व्रतोत्सवादि हेतु यह नियामक नही, मूलतत्व वचन तो यह कि "व्रतोत्सवा नित्याः"।

तदर्थ ही क्षयमास से पूर्ववर्त्ति अधिमास आश्विन को संसर्पसंज्ञक-अधिमास विशेष की वचन संज्ञा शास्त्रकारों ने प्रदान की है। तभी तो विलुप्त पौष क्षय मास के व्रतादिकों का समावेश क्रमशः बन पावेगा। ॐ विशेष यह भी कि इसी हमारे शास्त्रीय मत की मन्तव्यता अनुसार तार्किक व्यवहारिक गति समझकर भारतसरकार की 'राष्ट्रीय पंचांग' समिति ने भी राष्ट्रीय अवकाश व्रतपर्वादि हेतु मान्य किये हैं। हमारा लक्ष्य किसी भी पंचांगकार की निंदास्तुति हेतु नही। अपितु बहुमतीय व्यवहार अनुगम्य युक्तियुक्त प्रबल शास्त्रवचनों की सम्पुष्टि हेतु ही है। कतिपय विद्वान् बहुमतीय पंचांग गणना अनुसार क्रियाशील होने को तत्पर है परन्तु बहुमत राजतन्त्र संचालन क्रिया हेतु युगानुकूल है न कि धर्मशास्त्रीय नियामकहेतु, धर्मशास्त्रीयवचन तो स्वतंत्र शाश्वत रहे हैं तथा रहेंगे। नीतिशील विद्वानगण स्वयं निज विवेक से वस्तुतः स्थिति का विचार करते नित्य नैमित्तिककाम्य कर्मों का सम्पादन करेंगे, यह विनति।

[illegible]— निर्णयसागरपंचांग कार्यालय, नीमच (म. प्र.)



पद्मालयां पद्मकरां, पद्मपत्रनिभेक्षणाम् ।
वन्दे पद्ममुखीं देवीं, पद्मनाभप्रियाम् ॥
ॐ सर्वज्ञे सर्व वरदे, सर्वदुष्ट भयंकरी ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तु ते ॥
जयति कञ्जपत्राक्षि, जयति श्रीपति प्रिये ।
जयमातर्महालक्ष्मी, संसारार्णव तारिणि ॥
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्ति-मुक्ति प्रदायिनी । मंत्रपूते सदा देवी महालक्ष्मी नमोस्तु ते ॥
नमोस्तु ते महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते । शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोस्तु ते ॥

श्री विधान यंत्रराज

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

श्रीमहालक्ष्मीपूजा इस पर्व का सभी वर्ग सम्प्रदाय द्वारा समायोजन होता है, पूजा-अर्चना विधान तथा बही वसना आदि हेतु मांगलिक मुहूर्त्तशोधन का क्रम हमारे **निर्णयसागरीय** पंचांग अनुरागीजन हेतु प्रस्तुत है । 卐 **बही खाते निर्माण या लाने हेतु मुहूर्त्त** 卐 (१) संसर्प आश्विन शुक्ला ३ सोमवार रवियोग ता. २०–९–८२शुभवेला प्रातः९।३०से११ अथवा लाभ अमृत साय ३।३६ से ६।० तक (२)आसोज सुदी ५ बुध रवियोग ता.२२–९–८२सायं लाभ ५।० से ६।३० तथा अमृत सिद्धियोग ११।५० से सायं तक (३)आसोज सुदी९रविवार रवियोग प्रातः ९।३० से १२।३० (४) आसोज सुदी १० सोम ता.२७–९–८२रवियोग प्रातः ९।३० से ११ तथा सायं ३।३६ से ६।० (५) आसोज सुदी१३ शुक्र ता.१–१०–८२रवियोग प्रातः ८ से ११ तथा १२।३० से २ (६) संसर्प कार्त्तिक बदी६ शुक्र ता.८–१०–८२रवियोग प्रातः ८ से ११ तथा १२।३० से २ (७) कार्त्तिक बदी ९ सोम ता.११–१०–८२ पुष्य नक्षत्र सुयोग सिद्धियोग प्रातः ९।३०से११तथा सायं ३।३६से६।० 卐**धन त्रयोदशी कुबेर पूजा**卐 संवत् २०३९ कार्त्तिक बदी १२ गुरुवार ता. १४–१०–८२ श्री कुबेर एवं धनपूजन दीपदान गोधूलि सायं ६।० वेला **महालक्ष्मीपूजादीपोत्सवः** कार्त्तिक कृष्णा३० शनिवार ता. १६–१०–८२ गादी स्थापना, स्याही भरना, कलम-दवात संवारने हेतु प्रातः शुभ ८।१३ से ९।४३, लाभ-अमृत दिवा १।३७ से ४।३७ 卐 **श्रीपूजनमुहूर्त्त** 卐 गोधूलि प्रदोष वेला तथा वृषभ स्थिर लग्न सायं ७।४८ से ९।४४ तक । रात्रि सिंह लग्न वेला २।१६ से ४।३३ तक 卐 **श्रीरोकड़मिलाव-श्रीनावाकार्यारंभ–** कार्त्तिक शुक्ला १ रवि ता. १७–१०–८२ प्रातः लाभ अमृत ९।४३से१२।४३ तक पुनः दिवा २।१३ से ३।४३तक शुभ वेला । ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरांतकारी भानु शशिभूमिसुतोबुधश्च । गुरुश्च शुक्रःशनि राहुकेतवः सर्वेग्रहाः शांतिकरा भवंतु ।

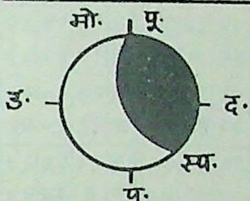
सूचना संकेत महालक्ष्मी पूजा पद्धति तथा उपासना हेतु साथ ही नित्य-कर्म उपयुक्त स्तोत्र. संध्या. विविध पाठ संग्रहयुक्त सचित्र सरल भाषा टीका में पुस्तक प्राप्त है २ भाग मूल्य९)रु. मात्र, मनिआर्डर भेजकर मंगा लेवें इससे डाक पोस्ट खर्च आधा ही लगता है । पता–**निर्णयसागर पंचांग कार्या.,नीमच (म.प्र.)**

卐 **पंचामृत विधान** 卐 पंचामृत पूजा, अर्चना, देव-स्नान आदि हेतु प्रयोग में लिया ही जाता है । ये ५द्रव्य भी मात्रा अनुपान से लेकर मिश्रण करना चाहिये तभी शास्त्रोक्त विधि से निर्मित होता है । यथा दूध से आधा दही इससे आधा घी इससे आधी मिश्री या शकर इससे आधा शहद लेना चाहिये ।

खण्डग्रास सूर्यग्रहण

सं. २०३९ पोष कृष्ण पक्ष ३० बुधवार एवं दिनांक १५ दिसंबर सन् १९८२ ई. । (१)

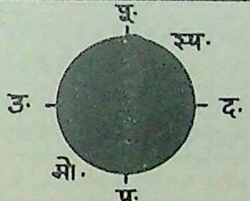
समय	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्व
घटि	२१	२४	२६	५
पल	२६	२७	४८	२२
घन्टा	३	४	५	२
मिनिट	१	१४	१०	९



खग्रास चन्द्रग्रहण

सं. २०३९ पोष शुक्ल पक्ष १५ गुरुवार एवं दिनांक ३० दिसंबर सन्१९८२ई.ग्रस्तोदयप्रारूप ।(२)

समय	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्व
घटि	२२	२६	३०	८
पल	१६	२२	२८	१२
घन्टा	३	५	६	३
मिनिट	२१	०	३८	१७



(१) सूर्यग्रहणस्पष्टता-प्रतिफल– यह सूर्यग्रहण भारत भू-भाग में दिक् दिशा स्थान भेद से न्यूनाधिक स्वल्पान्तर से प्रतीत होगा । इस ग्रहण का सूतक मंगलवार रात्रि ३।० से मान्य होगा । ग्रहण प्रारम्भ दिवा ३ घं. १ मि. से तथा मोक्ष शुद्धि सायं ५ घं. १०मि. पर । मकर, मेष,सिंह,कन्या, राशि हेतु ग्रहण दर्शन शुभ लाभद तथा अन्य सभी राशि वालों हेतु दर्शननेष्ट फलदायी नहीं । मासफलानुसार काश्मीर मद्रास,पंजाब संभाग अयोध्या,सिंधप्रांत हेतु प्रभार । ब्राह्मण-क्षत्रिय वर्ग पर भी शुभद नहीं । चांवल,सोना,तांबा, धान्य, पीतल में उन्नत गति लाल रंग के पदार्थ तथा सुपारी, सूत-कपास का कार्य लाभद । चिकित्सा व्यवसायी, औषध, कंद-मूल, फल, मंत्री वर्ग कुलीन, धनवान, सेनानायक, तस्करी कार्यकर्ता वर्ग पर नेष्ट फल । कृषि सम्पदा के बिकास में देवदोष, रसवर्गीय पदार्थ में उन्नत गति । संहिता शास्त्र के वचन अनुसार "रविग्रहाच्च पक्षांते यदि चन्द्रग्रहो भवेत् । तदा दर्शनिनो पूजा धर्मवृद्धिमहोदयः"रविग्रहण के बाद चंद्र ग्रहण हो तो राष्ट्रहित में एक नवीन रचना का सूत्रपात होता है, विवेकी सद्पुरुषों का विकास मानमर्यादा का स्तंभ बनता है । इस प्रकार का फलाशय भी वर्णित है ।

(२) चन्द्रग्रहणस्पष्टता-प्रतिफल– पोष शुक्ला पूर्णिमा का चन्द्रग्रहण सर्वत्र ग्रस्तोदय प्रारूप का दृश्य होगा । इसका सूतक यम नियम बुधवार रात्रि४।२१से मान्य होगा । ग्रहण प्रारम्भ दिवा ३घं.२१मि.तथा मोक्ष शुद्धि सायं ६।३८ पर । सिंह, वृश्चिक, मीन, मेष, राशि हेतु ग्रहण-दर्शन शुभ लाभद तथा अन्य सभी राशि वालों हेतु दर्शन नेष्ट । कामासक्त, तस्कर, मांत्रिकविद्यावेत्ता, सभ्य भद्रपुरुष,कटुऔषध निर्माता तथा सिंधदेश वालों हेतु प्रभारक नेष्टफल । पीली,लाल एवं सुगन्धी वस्तु का कार्य लाभद । धान्य, गल्ला, सूत, कपास, तेलबाना, तिलहन कार्य में भी लाभांश, खेत-खलिहान पक्ष हेतु कुयोगद । संहिता शास्त्रानुसार–यद्येकमासे ग्रहणं भवेच्च शशि सूर्ययोः । राजयुद्धं तदा ज्ञेयं क्षयं याति वसुंधरा" सूत्र अनुसार राष्ट्रनायक, अधिशासी-शासक वर्ग पर प्रभार ।

अन्य ग्रहण सूचना–इस वर्ष आषाढ़-श्रावण मास में सूर्य-चंद्र ग्रहण भारत भू-भाग से बाहर होंगे, इनकी मान्यता भारते नैव ।

लग्नपत्रं अयनांशाः २३ चरखण्डानि ६०।४८।२० अक्षप्रभा ६।० अजमेर जोधपुर ग्वालियर कानपुरेऽपि.

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
०	३७	१४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६
वृषभ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८
१	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९
मिथुन.	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
२	४१	५१	१	११	२१	३१	४२	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११
कर्क.	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९
३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५
सिंह.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५
४	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०
कन्या.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१
५	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१८
तुला.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६
६	१८	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२
७	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४५
धनु.	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८
८	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४९	५९	८	१८
मकर.	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३
९	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	१९	२७	३६	४४	५२	१	९
कुम्भ.	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७
१०	२३	३१	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२
मीन.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०
११	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०

अंशाः	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष.	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२
वृषभ.	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१
मिथुन.	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	२३	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३
कर्क.	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९
सिंह.	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
४	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९
कन्या.	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
५	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७
तुला.	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
६	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२
वृश्चिक	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
७	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२५	३६
धनु.	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०
मकर.	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
९	१८	२६	३४	४३	५१	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५
कुम्भ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	२०	२७	३४	४१	४८	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१
मीन.	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
११	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९

लग्नसारिणीविधि–सूर्य के राशि अंश अनुसार सारिणि से फलांक ग्रहण करें, ऊपर अंश तथा बाईं तरफ राशि है। इष्ट घटी पलों में इस फलांक को जोड़ें, इस योग फल से न्यून कोष्टकांक सारिणी में देखें, लग्न का राशि अंश विदित होगा **दिनमान**– सूर्य राशि अंश मुजब फलांक लेवें, तथा इससे सप्तम राशि के फलांक में से घटा देवें यह दिनमान होगा। दिनमान में ५ का भाग देने से मध्यम सूर्यास्त समय होगा उसको १२ में से घटाने पर मध्यम सूर्योदय शेष रहेगा। इसमें स्टैण्डर्ड समयान्तर फल तथा वेलान्तर संस्कार करने से स्टैण्डर्ड सूर्योदय बनेगा।

भूशयनगणनाक्रम सूर्य जिस नक्षत्र में रहे उससे ५,७,९,१२,१९,२६ इन दिन नक्षत्रों में पृथ्वी शयनशील होती है। इन नक्षत्रों में क्रमशः ४,८,५, ३,६,७ घटी कालांश मात्र में भूशयन, शेष घटियों में असुप्त, इनमें कूपतड़ाग, बीजवपन, हल चलाना, खनन कर्म नेष्ट। **भूशयनेमतान्तरम्**– सूर्य संक्रान्ति से ५,७,११,९,१५,२०,२२,२३,२८, दिनों में धरती शयनदोष, कतिपय विद्वान ५,७,९,१५, २१,२४ दिन मात्र में ही भूशयन मानते हैं।

चोरी गत वस्तु अभिज्ञान

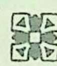
अंधलो.	रो.	पु.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	मिले, पूर्वे
मंदलो.	मृ.	आ.	ह	ऽनु.	उ	श.	अ.	प्राप्ति, दक्षिणे
मध्यलो.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	प्राप्ति पश्चिमे
सुलो.	पु.	पू.	स्वा	मू.	श्र.	उ.	कृ.	कुयोग उत्तरे

गृहारंभे वृषभ चक्रं–सूर्य नक्षत्रतः ७ नेष्ट, ११ श्रेष्ठ, १०नेष्ट **गृहप्रवेशे कलशचक्रं**-सूर्यनक्षत्रतः ५ नेष्ट, ८ श्रेष्ठ, ८ नेष्ट, ६ श्रेष्ठ **काष्ठादिस्थापने**– सूर्यनक्षत्रतः ६शुभ, ६नेष्ट, ४शुभ, ८नेष्ट, ४ श्रेष्ट। **विशेष**– गृह-निर्माण, गृह-प्रवेश, कूप-खनन भूमि एवं जल विचार हेतु वास्तुरत्नावली पुस्तक भाषा टीका सह मूल्य ६) रु. की मंगा लेवें।

पता– निर्णयसागरपंचांग कार्यालय, नीमच (म. प्र.)



अथ विनानतं दशम भावस्य स्पष्ट सारणीयम्



नतन स्पष्ट के राशि अंश तुल्य सम सूत्र में जो फल होवें वही दशम स्पष्ट है तथा दशम भाव राशि फलांकों में ६ राशि योग से चतुर्थ भाव स्पष्ट होगा । शेष क्रिया जातक ग्रन्थानुसार ।

अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
राशि-मेष ०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
	२३	२४	२५	२५	२६	२७	२८	२८	२९	०	०	१	२	३	३	४	५	६	६	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१५
	५६	३७	१८	५९	४०	२१	२	४३	२४	५	४०	२९	१५	२	४६	३६	२३	१०	५७	४४	३१	१८	५	७	४२	३२	२४	२४	६	५६
	२९	५६	२६	३८	४३	४२	४७	५२	२७	५२	११	५९	२६	३	३८	४९	१०	४६	४६	४८	४०	५१	१	१४	५०	४३	४८	५०	१	४८
वृषभ १	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	४३	२३	२९	१९	१०	१	५२	४२	३३	२४	१८	६	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२४	२३	३५	४१
	३९	२१	६	२४	४२	२४	६	५४	४४	३०	१८	२	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	३४	३०	४०	१७
मिथुन २	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
	१५	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२९	०	१	२	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०
	४६	५२	५७	३	९	१५	२०	२९	३१	२७	४१	५१	५	९	३२	४६	०	१४	२८	४१	५५	९	२३	३७	५१	४	१८	३२	४६	०
	४८	४२	५८	२	२७	३	३७	१३	५१	२४	२०	२३	१२	८	५३	३७	३८	२४	१०	५५	५५	४०	२९	१७	५	५७	४२	२७	२१	१३
कर्क ३	११	११	११	११	११	११	११	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२१	२२	२३	२४	२६	२७	२८	२९	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२६
	१४	२७	४१	५५	९	२३	३६	५०	४	१८	३२	४७	२	१६	३१	४५	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५०	०
	०	४५	३६	२३	१६	२४	४१	२९	५३	१९	७	५१	२२	४१	१५	४२	१३	३५	३९	५२	६	१९	३५	४८	१२	१६	२९	४३	५६	१२
सिंह ४	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	२७	२८	२९	०	१	२	४	५	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४२	५६	२०	३५	४४	३५	४४	१०	१२	१४	१६	१८	२७	३०	३२	३४	२६	३८	४०	५२
	२५	३९	५२	६	१९	३३	४८	२	१६	३०	५४	३२	५	८	१२	१२	१९	२०	१५	४	८	९	१०	१५	५५	७	२	५	८	१
कन्या ५	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	२९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	३८	४१	४३	४५	४७	५०	५२	५४	५९	५९	१	३	५	७	१०	१२	१४	१६	१८	२१	२३	१५	२७	३०	३२	३५	३७	४०	४२	४३
	२	८	१०	१२	१	०	५	८	३	७	१३	२१	३५	५२	८	१	०	७	१४	२२	३०	३२	१	५	८	९	१०	२५	५०	५९
तुला ६	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४
	०	०	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२६	२७	२८	२९	०	१	३
	४५	४८	५०	५२	५४	५६	५९	१	२	५	८	१५	२३	२१	४२	५०	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	९	१७	२४	३३	४२	५२	१
	७	५	८	१३	१५	१९	२२	२	५	१४	३८	५५	१७	१२	३	०	१	८	१५	२२	८	९	३५	४२	५६	२	८	५	३	७
वृश्चिक ७	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५
	४	५	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१८	१९	२०	२२	२३	२४	२५	२७	२८	२९	०	२	३	४	५	६	८	९
	१०	१९	२९	३८	४३	५३	३	२०	३५	४९	४	१६	३०	४४	५८	१२	२५	३८	५५	७	१९	३४	४८	२	१६	३०	४३	५३	११	२५
	७	५	३	२	०	१	५	१३	२५	३५	४५	८	३	१०	१	२	५	३	५७	१२	२५	१८	२१	७	४	५	३	१	१५	५
धनु ८	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
	१०	११	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	१	२	३	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	३९	५३	६	२०	३४	४८	२	१५	२९	४३	५७	११	१४	१९	२७	३०	३६	४२	४७	५३	५८	४	१०	१५	२१	२६	३२	३४	३६	३७
	१४	१	५	३	१५	२२	११	३	२९	१०	१५	२५	४८	३७	३७	३७	४२	३	४	४	३	१५	१२	२०	३०	५	८	३	४५	०
मकर ९	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११
	३८	३९	४८	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५२	४०	१	१	५२	४३	३३	२४	१५	६	५७	४६	३८	२९	२०	१०	७
	१	२	५	२	१	०	३	१	५०	२२	११	८	१५	३०	३२	४०	४५	५०	७	३	४	९	१३	२१	२७	३५	४०	४५	५०	५०
कुम्भ १०	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
	११	१२	१३	१४	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९	२०	२१	२१	२२	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२७	२७	२८	२९	२९	०	१	२	२
	४६	५	२२	९	५६	४३	३०	२१	१४	५१	३८	२४	५	४६	३८	२९	१६	५९	१२	५६	३४	१५	५६	३७	१८	५९	४०	२१	३०	३
	५१	३२	३२	३३	३०	२२	७	५	९	१०	१२	८	३	१५	२७	३७	४८	५९	१	२	३	५	८	१०	१२	५	३०	१२	१६	४
मीन ११	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९	१०	१०	११	१२	१२	१३	१४	१५	१५	१६	१७	१७	१८	१९	१९	२०	२१	२१	२२	१२
	२४	५	४९	२८	९	५०	३२	१२	५३	३४	१५	५६	२७	१३	५९	४०	२०	४०	३५	२४	५	४६	२८	९	५७	३१	१२	५३	४५	१५
	३९	१२	५	३	०	८	७	६	१	५	३	४२	४७	३२	२६	१२	४२	३५	१	३	८	५	७	३	५३	५९	१	५	३	४

卐 विक्रमाब्द २०३९ सनाब्द ८२-८३ ई. दिनमान राशिफलम् 卐

मेष– दिनमान समय गति नेष्ट नहीं,नव-कार्य-योजना,लाभांश, विकास पथ गतिमान फिर भी नवम्बर मास से दैनिक क्रियाकलापों में सतर्कता रखना चाहिये । शरीर सुख, क्रियाशक्ति, मनोबल हेतु प्रतिफल ठीक,मांगलिककार्य सुयोग, आकस्मिक व्यय योग, विविध रूप से आवक, नव-निर्माण गति,भूमि वर्गसे लाभ,मित्र-बान्धव सुख,नव-सम्पर्क पक्ष में सुयोग । राज्यपक्ष तथा भाग्यविकास हेतु मनोनीत प्रगति, मंगसर मास से अर्थ-तंत्रहेतु सतर्कता रखें, छात्र-शिक्षा पक्ष हेतु विशेषता से क्रियाशील रहें अन्यथा परिणाम अनुकूल नहीं । यह वर्ष स्त्री-सुख हेतु न्यून ।

वृषभ– गोचरपथ दिनदशा योगद लाभद, सार्थक गति प्रदायक । शरीर सुख-सुविधा अनुकूल, कार्य-व्यवसाय-धंधा से प्रतिफल उत्तम,उत्तरोत्तर सुधार गति । मित्र-बान्धव-परिवार पक्ष से सहयोग, मांगलिक कार्यों का समाधान । नव-निर्माण मनोनीत स्थान न्यास, भूमि लाभ, भाग्य विकास, राज्य पक्ष आदि हेतु सुफलद योग । नवीन कार्यों के श्रीगणेश तथा नव-संपर्क गति के चांस प्राय: बनें, बने-चले विवाद, रकम अवरोध आदि में सुधार, दिनदशा अनुकूल वातावरण की परिचायक ।दीपावली बाद से सफलता सूत्र हेतु विशेष गतिविधी ।

मिथुन– ग्रहगति का परिचलन विशेष योगद नहीं, दीपावली तक नीति-रीति विवेक से क्रियारत रहना ही योग्य है । तदुपरान्त उत्तरोत्तर सुयोग सुधार की गति स्पष्ट है । विगत वर्ष अपेक्षा ग्रहजनित प्रदूषण न्यून होने से रोजी-रोजगार, कार्य-व्यवसाय मे वातावरण ठीक बनेगा । उन्नत कार्य, विशेष संपर्क तथा उदार मनोवृत्ति से बचाव रखें, शरीर सुख मानसिक सन्तुलन, राज्य पक्ष एवं भाग्य विकास गति दृष्टि से प्रतिफल मध्यम, परन्तु वर्ष मध्य भाग से उत्तम । शनिवार का व्रत करना हितकर कुयोग नाशक, यात्रा प्रवास योग विशेष ।

कर्क– दिनदशा ग्रह चलन-कलन का तंत्र शुभ-अशुभ दोनोंवर्ग से प्राप्त है,तदर्थ नीति-रीति विवेक से क्रियारत रहना ही उचित है । दीपावली बाद से दिनमान में कुचक्र गति का चलन, वर्ष का कालांश विविधस्वरूप प्रतिफल प्रतीत करावें, उतार-चढाव, सम-विषम उभय विध स्थिति बनें ।भाग्यविकाससामान्य अर्थतंत्र एवं राज्य पक्षहेतुनित्यकार्जीवनक्रम व्यवस्थितरखें। मान-सम्मान हेतु सतर्कता से क्रियाशील रहना उचित है । संरक्षण हेतु सिद्ध शनि-मुद्रिका धारण उचित है । साथ ही बृहस्पितवार का व्रताचरण कुयोगनाशक है ।

सिंह– गोचर ग्रहपथ विगत वर्ष अपेक्षा सुधार की स्थिति का है, परन्तु विशेष उन्नत लाभांश, कार्य-योजना, नव-सम्पर्क, व्यवहार आदि दृष्टि से आपको सामान्य वातावरण का लक्ष्य रखना योग्य है । शनिजनित विबाधा दीपावली से दूर होकर गुरुजनित कुयोग की स्थिति बन पावेगी । तदर्थ यह वर्ष सामान्य ही समझें, नीति-रीति विवेक से कालांश निर्धारण करने की क्षमता बनावें । सम्पूर्ण वर्ष गुरुवार का व्रत रखना अरिष्ट निवारक समझें ।

कन्या– दिनदशा ग्रहगति का चलन-कलन उन्नत फलद वर्ग का नहीं बने-चले कार्य के संचालन में ही लक्ष्य रखें, अभिनव विकास प्रगति, अर्थ लाभ आदि हेतु सुयोग विशेष नहीं विबाधा, अवरोध, अपवाद का प्रतिफल रहे, शरीर सुख न्यून, मानसिक तन्त्र में श्राम, मित्र-बान्धव सहयोग की न्यूनता । मनोबल साहस का पक्ष ठीक रहेगा,फिर भी वर्षफलाशय मध्यम ।

तुला– दिनदशा गोचरपथ का प्रतिफल पूर्णतया शुभद नहीं, मनोनीत कार्य सफलता, विकास, भाग्य गति, लाभांश हेतु दिनमान शुद्ध नहीं । श्रमसाधना उपरान्त भी फलाशय न्यून । शरीर सुख आरोग्य लाभ सामान्य, कारोबार-धंधा में न्यूनता, मित्र-बान्धव-आप्तजनों से सहयोग की कमी, मानसिक विकार, ऋण प्रभार, व्ययगति विशेष, मार्गशीर्षमास से फिर भी सुधार सुआशा, विशेष उन्नत कार्य योजना से बचाव रखें, सिद्ध शनि-मुद्रिका धारण तथा गुरुवार व्रताचरण श्रेयस्कर है । आकस्मिक व्यय कुयोग, यात्रा प्रवास योग विशेषकर ।

वृश्चिक– ग्रहयोग दशापथ का प्रतिफल सामान्य,कुयोग-सुयोग दोनों का वर्चस्व है अपने कार्य क्रियाकलापों में नीति-रीति विवेक से क्रियारत रहने का अभ्यास रखें । दीपावली बाद से दिनमान अनुकूल नहीं रहे, उन्नत कार्य लाभांश से बचाव रखावें, अपवाद-अपयश की अनभूति,आकस्मिक व्यय कुयोग उदार मनोवृत्ति नहीं रखें, धन के व्यवहार में स्पष्टता रखें । सिद्ध शनि-मुद्रिका धारण आरक्षण हेतुयोग्य । मनोबल, साहस का प्रतिफल ठीक प्राप्तहोगा ।

धन– दिनदशा योगानुयोग से वर्ष प्रतिफल सुयोगद, नव-सम्पर्क, कार्य-योजना विकास, लाभ-आमद दृष्टिसे अनुकूल वातावरण । मार्गशीर्ष मास से दिनमान में न्यूनता, आर्थिक लेन-देन में सतर्कता रखें, उदार मनोवृत्ति नहीं रखें । शरीर सुख, कार्य-व्यवसाय, परिवार पक्ष, मित्र-बान्धव वर्ग से सुखद प्रतिफल । कार्य प्रगति मनोनीत स्थान न्यास एवं राज्यपक्ष से सुखद वातावरण, वर्ष फलाशय हीन वर्ग का नहीं । गुरुवार व्रताचरण अरिष्टनाशक ।

मकर– ग्रहगोचर दशापथ का प्रभाव ठीक, विगत समय अपेक्षा नवगति, कार्य-विकास योजना,नव-संम्पर्क भाग्य प्रगति,मनोनीत स्थान न्यास, राज्यपक्ष से सार्थक अनुकूल वातावरण, शरीर सुख ठीक कारोबार-रोजगार से लाभांश उत्तम । मांगलिक कार्य सुयोग, व्यय सुयोग, नव-निर्माण गति, मित्र-बान्धव तथा परिवार पक्ष से सुखद वातावरण, दीपावली बाद से सुयोग लाभांश विशेष, वर्षफलाशय योगद शुभद । आकस्मिक शुभ संवाद सुगति ।

कुम्भ– दिनदशा का कालांश विगतवर्ष अपेक्षा सुधार का कारक,दीपावली बाद से विशेष शुभद गति नव-प्रगति,भाग्य एवं राज्यपक्ष से सुखद वातावरण । परन्तु दीपावली पूर्व नीति-रीति विवेक शांत मनस्थिति से क्रियारत रहें । मांगलिक कार्य सुयोग, उद्योग-कारोबार में सुधार, लाभांश सुखद । शरीर सुख मध्यम, मित्र-बान्धव सहयोगी वर्ग से अनुकूल वातावरण के चांस । मनोनीत स्थान न्यास प्रमोशन, कार्य-प्रगति, नवम्बर मास से सुयोग विशेष,कुयोगों का उत्तरोत्तर नाश । नव-निर्माण, अच्छे वर्ग से सम्पर्क योग विशेषकर ।

मीन– गोचर ग्रह न्यास का प्रतिफल सुखद नहीं, सुयोग्य न्यून कुयोग विशेष, कार्य-व्यवसाय, आर्थिक तंत्र, मेल-मिलाप, योजना प्रगति हेतु अनुकूल वातावरण नहीं रहे । बने-चले कार्य का निर्वाह ठीक-ठीक होता रहे,यही साधना रखावें । स्त्री पक्ष से त्रास, शरीर सुख सामान्य, बौद्धिक गति न्यून, कारोबार से लाभांश अल्प, श्रम-साधना अनुकूल प्रतिफल नहीं । मार्गशीर्षमास पूर्व विशेष सतर्कता से रहें । आरक्षण हेतु सिद्ध शनि-मुद्रिका धारण योग्य ।

बुध



१ मूंग	ईशान्यांबाणा
२ नीलवस्त्र	कारमंडल अ-
३ सुवर्ण	गुल ४ मगध-
४ कांस्य	देश आत्रेय
५ कस्तूरी	गोत्रपीतवर्ण
६ आज्य	कन्या-युग्मका
७ पञ्चरत्न	स्वामी जप
८ दासी	
९ हस्ती	४०००

शुक्र



१ चित्राम्बर	पूर्वे पञ्चकोण
२ श्वेताश्व	मंडलअंगुल ९
३ धेनु	वृष-तुलाका
४ हीरा	स्वामी
५ रौप्य	भोजकटदेश
६ सुवर्ण	भार्गवसगोत्र
७ तंदुल	श्वेतवर्ण
८ सुगंध.	जप
९ घृत	१६०००

चंद्र



१ वंशपात्र	आग्नेय्यांचतु-
२ तंदुल	रस्रमंडलअं-
३ कर्पूर	गुल ४ यमु-
४ मौक्तिक	नातीर देश
५ श्वेतवस्त्र	आत्रेयसगोत्र
६ वृषभ	श्वेतवर्ण
७ रौप्य	कर्कका स्वामी
८ घृतकुम्भ	जप
९ शंख	११०००

गुरु



१ शर्करा	उत्तरेदीर्घ-
२ हलद	चतुरस्रमंडल
३ अश्व	अंगुल ६
४ पीतवस्त्र	सिन्धुदेशोद्भव
५ पीतधान्य	आंगिरसगोत्र
६ पुष्कराज	पीतवर्ण
७ लवण	धनु-मीनका
८ कांचन	स्वामी जप
९ पीतपुष्प	१९०००

रवि



१ माणिक्य	मध्ये वर्तुल-
२ गेहूं	मंडल अंगु०
३ धेनु	१२ कलिंगदे-
४ रक्तवस्त्र	शोद्भवकाश्य-
५ गुड	पगोत्र रक्त-
६ हेम	वर्ण सिंहका
७ ताम्र	स्वामी
८ रक्तचंदन	जप
९ रक्तकमल	७०००

मंगल



१ प्रवाल	दक्षिणे
२ गेहूं	त्रिकोणमंडल
३ मसूर	अंगुल ३ अ-
४ लालवृष	वंतिदेशोद्भव
५ गुड	भारद्वाज गोत्र
६ सुवर्ण	रक्तवर्ण
७ रक्तवस्त्र	वृश्चिकमेषका
८ कण्हेरपु.	स्वामी जप
९ ताम्र	१००००

केतु



१ वैडूर्य	वायव्ये ध्व-
२ तिल	जाकारमंडल
३ कंबल	अंगुल ६
४ कस्तूरी	अवन्ति देश
५ शस्त्र	जैमिनि गोत्र
६ कृष्णव.	धूम्रवर्ण
७ तैल	जप
८ कृष्णपु.	१७०००
९ छाग.	

शनि



१ माष	पश्चिमे धनु-
२ तिल	षाकार मंडल
३ तैल	अंगुल २ सौ-
४ कुलित्थ	राष्ट्र देश
५ महिषी	काश्यपगोत्र
६ लोह	मकर-कुम्भका
७ श्यामधेनु	स्वामी कृष्ण-
८ इन्द्रनील	वर्ण जप
९ श्यामवस्त्र	२३०००

राहु



१ गेहूं	नैर्ऋत्यांशूर्पा-
२ रत्न	कारमंडल
३ अश्व	अंगुल १२
४ नीलवस्त्र	गाठिनादेश
५ कंबल	पैठीनस गोत्र
६ तिल	कृष्णवर्ण
७ तैल	जप
८ लोह	१८०००
९ अभ्रक	

अथ मुहूर्त्तचिंतामणिमार्त्तण्डगणपतीत्यादिमतेन आवश्यककतिपयमुहूर्त्ताः

मुहूर्त्तनाम	नक्षत्रादिकम्	तिथि	वार
रवीदर्शन	श्रव. धनि. शत. मृग. रेव. चित्रा अनु. हस्त. अश्वि. पुष्य. रोहि. उत्तरा ३ स्वाति. माघ, मार्ग. वैशा. आश्विन, ज्येष्ठ, फाल्गुन मास तथा शुक्ल पक्ष शुभ ।	शुभ	च.बु. गु.शु.
रजःस्नान शीघ्रगर्भा.	हस्त स्वा.अश्वि.मृग.अनु. धनि उत्तरा३, रोहि. ज्येष्ठा। मृग. रेव. स्वा. हस्त. अश्वि. रोहिणी शीघ्र गर्भ योग ।	शुभ	शुभ
सीमंत कर्म पुंसवन	मृग पुष्य. मूल. श्रव. पुन हस्त. । उत्तरा ३ रेवती रोहि. । गर्भमासत: ३-६-८ मास विष्णु पूजा ।	शुभ	र.गु. म.
जातकर्म नामकर्म	जन्मत: ११-१२दिने,मृग रेव.चित्रा.अनु. उत्तरा३रोहि. हस्त. अश्वि. पुष्य. स्वा. पुन. श्रव. धन. शत.	शुभ	शुभ
सूतिका	उत्तरात्रय ३ रोहि. रेव. मृग. हस्त. स्वा. अश्वि. अनु.	शुभ	र.म.गु.
पालने में शयन	मृ. रेव. चित्रा. अनु. ह. अभि. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३ रोहि. । सूर्यभाद्‌गणना आरोग्य ५, मृत्यु ५, देहकष्ट ५, व्याधि५, अन्तिम सौख्य ७ । ३२.१२.१६,१८,१० दिन	शुभ	शुभ
जलपूजन	श्र. पुन. पुष्य. मृग. हस्त. मूल. अनु. (शु.+गु. अस्त चैत्र+पौष अधिमास निषेध)	शुभ	शुभ
अन्नप्राशन	शिशु जन्मत: ६, ८, १० मासे। कन्या प्रति ५, ७ विषम मासे, शुक्लपक्षे, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३ ह. चि.स्वा. अ. अभि. श्र. ध. रे. (मीन, मेष, वृश्चिक लग्न एवं जन्मराशि नक्षत्र निषेध)	२,३,५ ७,१०, १३,१५	शुभ
कर्णवेध	श्रव. धनि पुन. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. मृग. रेव. चि. अनु. (देवशयन, चैत्र, पौष, जन्ममास तथा समवर्ष निषेध) जन्मत: ६-७ मास शुभ	शुभ	शुभ
जडूला उतारना	मृग. रेव. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. ह. अश्वि. पुष्य. ज्येष्ठा, चैत्रहीन, उत्तरायणे ३, ५, ७ वर्षे	शुभ	शुभ
विद्यारंभः	५ वर्षे, अश्वि. मृ. आर्द्रा पुन. पु. श्ले. पूर्वा. ३ हस्त. चि. स्वा. मू. श्र. ध. शत. अनध्याय वर्जित दिन तथा कुम्भ रवि निषेध । १-८ तिथि नैव ।	२,३,५ ६,१० ११,१२	सू.बु. गु.शु.
चूड़ा पहनना	अश्वि. ह. चि. स्वा. वि अनु. धनि. रे. कृ. ३ रोहि. [illegible] नेष्ट ३ ने. ५ श्रे. ३ ने. २ श्रे. ७ ने. २ श्रे. १ श्रे. ३ ने. १	शुभ	[illegible] बु.शु.

मुहूर्त्तनाम	नक्षत्रादिकम्	तिथि	वार
कन्या वरण	पूर्वा. ३ उत्तरा ३, श्र. अनु. स्वा. धनि. कृ. रो. रे. मू. मृग. मघा हस्त एवं वैवाहिक नक्षत्र, शुभद ।	शुभ	मगल त्याग
वर वरण	पूर्वा ३, उत्तरा ३ कृतिका रोहिणी	शुभ	शुभ
वधू प्रवेश	विवाहत: २,४,५,६,७,८,९,१०,१२,१४,१६ दिने । एवं विषम मास तथा वर्षों में। हस्त. चि. रोहि. मृग. अश्वि. रेवती. मघा. पुन. धनि. श्रव. उ. ३ मूल. अनु. तथा स्थिर लग्न मान्य है ।	शुभ	शुभ
द्विरागमन मुकलावा	मेष. वृश्चि. कुम्भ के सूर्ये, मूल ह. चि. रो. मृ. अश्वि. पुष्य. उ. ३, श्र. ध. पुन. रे. स्वा. अनु. २-३-६-७-१२ लग्ने विवाहत: १-३-५ वर्षे, दीपावली विजयादशमी अनूभ. शुभ ।	शुभ	शुभ
गंधर्व विवाह	अश्वि. कृ. आर्द्रा पुन. श्ले. ज्ये. धनि. शत. इन नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्रास्त का विचार नही ।	शुभ	सू. मं. श.
दूकान शुभारम्भ	उत्तरा ३, रोहि. मृ. चि. रेव. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि., चन्द्रलग्ने, कुम्भ लग्ने निषेध ।	शुभ	मंगल त्याग
क्रय खरीद	शुक्लपक्ष की ११ से कृष्णपक्ष की ५ तक, रेवती, अश्वि. स्वा. श्रव. शत चित्रा.	शुभ	शुभ
विक्रय बेचान	पूर्वा ३, विशा. कृति. श्ले. भरणी शुभद, रिक्ता तिथि अमा. निषेध, कुम्भ लग्न निषेध ।	शुभ	शुभ
बहीखाता व्यवस्था	मृग. पुन. पुष्य. उत्तरा ३, हस्त. चि. अनु. श्रव. रेव. चर तथा द्विस्व भाव लग्ने ।	शुभ	शुभ
नोकर रखना	हस्त. अभि. अश्वि. पुष्य, मृग. रे. चि. अनु. राशि+नक्षत्रयोनि मैत्री आदि वर्ग वैर चिन्तनीयम् ।	शुभ	शुभ
ऋण का लेन देन	मगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तयुक्त रविवार को ऋण नहीं लेवें । मंगल को चुकावें तथा बुधवार को धन नहीं देवें ।		
सोमवती स्नान	[illegible] तथा शेष नक्षत्रों में अशुभ चन्द्र स्थिति रहते ।	अशुभ	चं.शु. त्याग

कृषिकर्म विषये—

हल चलाना कृषि कर्म— मूल. विशा. मघा. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. उत्तरा ३ रोहि. मृग. चित्रा. रे. अनु.। सूर्यनक्षत्रत: गणना— ३ने. ३श्रे. ३ने. ५श्रे. ३ ने. ५ श्रे. ३ ने. २ श्रे. । वार तिथि शुभ ।

बीज बावनी— हल चालक नक्षत्रों में से श्रव. शत. पुन. विशा. छोड़ देवें । तथा शेष नक्षत्रों में बीज बोवें । राहु-नक्षत्रत:गणना- ८ ने. ३ श्रे. १ने. ३श्रे. १ने. ३श्रे. ४ने. । तिथि शुभ लेवें । वार- र. चं. बु. गु. शु. श. ।

दंगो सीटा तोड़ना— फसल कटाई में मूल. ज्ये. आर्द्रा. श्ले. पूभा. हस्त. कृ. श्र. ध. मृ. स्वा. मघा. उ. ३, पूपा. भ. पुष्य स्थिर लग्ने । वार+तिथि शुभ ।

ट्रक, मोटर, इंजन, गाड़ी, विविध यान— हस्त. अश्वि. पुष्य. अभि. रेव. धनि. मृग. स्वा. शत. पुन., चर लग्ने+चर नक्षत्रे । वार तिथि शुभ ।

संकेत— विशेष मुहूर्त्त विषय ज्ञान के लिये मुहूर्त्त प्रकाश ग्रंथ मू. ९) रु. अथवा मुहूर्त्त गणपति मू. ११) रु. दोनों भाषा टीका में हैं, इच्छानुसार मंगा लेवें ।

पता— निर्णयसागरपंचांग कार्यालय, नीमच (म. प्र.)

योगाः	ति	चैत्र शुक्ल पक्षः संवत् २०३९ शाकः १९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
नव-रात्रि	१	शु	१८	३२	रे	४४	११	ब्र	८	५८	ब	१८	३२	३०/२२	६।४१	६।५०	१३	२६	२९	५	मे. ४४/११	[illegible]	[illegible]
सिजारा	२	श	१३	१	अ	४०	१६	ऐ	१/४३	५३/५३	कौ	१३	१	२६	६।४०	६।५०	१४	२७	१	६	मेष	[illegible]	[illegible]
गणगौर	३	र	७	८	भ	३६	१	वि	४६	०	ग	७	८	३०	६।३९	६।५१	१५	२८	२	७	वृ. ५०/१	[illegible]	[illegible]
स्थिर	४	चं	१	३	कृ	३१	५२	प्री	३८	२५	वि	१	३	३४	६।३७	६।५१	१६	२९	३	८	वृषभ	[illegible]	[illegible]
क्षय	५	चं	५५	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मातंग	६	मं	४९	२२	रो	२७	५४	आ	३०	४९	कौ	२२	१२	३८	६।३६	६।५१	१७	३०	४	९	मि. १६/५	[illegible]	[illegible]
अमृत	७	बु	४४	०	मृ	२४	१६	सौ	२३	३४	ग	१६	४१	४२	६।३५	६।५२	१८	३१	५	१०	मिथुन	[illegible]	[illegible]
कांण	८	गु	३८	५३	आ	२०	५६	शो	१६	२९	वि	११	२६	४६	६।३४	६।५२	१९	१	६	११	मिथुन	[illegible]	[illegible]
श्रीराम	९	शु	३४	२६	पु	१८	६	अ	१०	२	बा	७	१०	५०	६।३३	६।५३	२०	२	७	१२	क. ३/१९	[illegible]	[illegible]
मित्र	१०	श	३०	२१	पु	१५	५१	सु	३/५१	[illegible]	तै	२	५३	५४	६।३२	६।५४	२१	३	८	१३	कर्क	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	र	२६	५१	श्ले	१३	३२	शु	५३	४	वि	२६	५१	५८	६।३१	६।५४	२२	४	९	१४	सिं १३/३२	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१२	चं	२४	६	म	१२	४०	गं	४८	३९	बा	२४	६	३१/१	६।३०	६।५५	२३	५	१०	१५	सिंह	[illegible]	[illegible]
धूम्र	१३	मं	२२	१३	पू	१२	५०	वृ	४५	८	तै	२२	१३	५	६।२९	६।५५	२४	६	११	१६	क. ३६/५०	[illegible]	[illegible]
प्रवर्ध	१४	बु	२१	२५	उ	१३	५२	ध्रु	४२	२५	ब	२१	२५	९	६।२८	६।५६	२५	७	१२	१७	कन्या	[illegible]	[illegible]
पूर्णिमा	१५	गु	२१	३८	ह	१५	५७	व्या	४०	५६	ब	२१	३८	३१/१३	६।२७	६।५६	२६	८	१३	१८	तु. ४७/३७	[illegible]	[illegible]

मार्च-अप्रेल १९८२ वसंत ऋतुः रवि उत्तरा.-उत्तर गोले

चैत्रीयनवरात्रि प्रा. घटस्थापना-कल्पादि चंद्रदर्शनं गौतमजयंति †

जमादिलआखिरमा.६मुस.मत्स्यजयंति

भ. ३/३ ३/५ उ.गणगौरीव्रतं मन्वादि दमनकचतुर्थीमीनेबुधः १/२ ६/८ ग १/३ ५/३

भ १/३ या.श्रीपंचमी कल्पादि बुधास्तः पूर्वे ३/१ ०/१

†झूलेलालज.चेतीचंदसर्वा.अमृत ४/१ ४/१ यापंचक ४/१ ४/१ या

स्कन्दषष्ठी उभायां बुधः १/६ ४ ग. १/४ १/७ ४

भ. ४/० ४ उ.नवपदऔलीप्रा.जैनरेवतीरविः १/१ ५/० कुंभेशुक्रः २/३ ६ ग. २ ६/५ £

भ. १/२ १/६ या.दुर्गाष्टमीपूजा अशोकाष्टमी अप्रेल मा.४ता.३०सर्वा. २/१ ०/६ उ.

श्रीरामनवमीव्रतंसर्वे.सर्वार्थ १/६ ८ या. £ सर्वा. ३/१ ५/६ या.

भ. ५/३ ८/६ उ.

भ. ३/५ ६/१ या.कामदा११व्रतंसर्वे:लक्ष्मीकांतदोलोत्सव

प्रदोषव्रतं हरिद्मनोत्सवः

श्रीमहावीरजयंतिजैनरेवतीबुधः १/१ ०/७ ग. १/३ २/० २ शतभिषाशुक्रः ५/७ ६/५ ग १/२ ९/८

भ. २/२ १/४ या. ५/३ १/१ या.पूर्णिमाव्रतंसर्वा. १/१ ३/२ उ.

श्रीहनुमानजयंतिमन्वादिवैशा.स्नानप्रा.नवपदऔलीसिद्धायात्राजैन

※ गोचरग्रहाः ※

१ शु.११
सू. १२ बु.
२ १०
चं.
३ रा. के. ९
४ मं. ६ श. ८
५ गु. ७

अ.१चैत्रशु.८गुरौ०।०ग.३५१

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	५	११	६	१०	५	२	८
१७	१६	६	१४	०	२६	२४	२४
२४	३	४२	५४	५५	४	४७	४७
९	९	५८	१९	२	५८	५७	५७
५९/११	३/१ ५/२ +	११४/४७	६/१ २ +	५७/२९	४/३ ३ +	३/११	३/११

※ मासफल श्रुतिः ※

चैत्रशुक्लाप्रतिपदि सुभिक्षं शुक्रवारतः, चैत्रशुक्लेप्रतिपदि रेवतीतः बहुलं जलम् । नवदिन कहिये नवरता, शुक्ल चैत्र के मास । मेघ गाज औ बिजली, जानो गर्भ विनास ॥ मधु मासस्य सप्तम्यां शुक्लायां यदि वर्षति । वर्षाकाले तदा मेघा न वर्षतिजलं बहु ॥ चैत्रबदी में तिथिबढ़े, तथा सुदी घटजाय । पैदावारी कम रहे, देवदोष बनजाय ॥ शनिभौम का योग है, कन्या तत्व ले सङ्ग । अग्नि कोप वायु प्रबल, सचिव द्वन्द कुरङ्ग ॥ आम आमलो सुरजणो मोरसरी झड़ जाय । ऊनाली झोलो लगे कार्तिक साख न थाय ॥ प्रातः चैत्र वैशाख में,वन पक्षी ध्वनिघोर । सरवरे बोल सुहावने श्रावण वर्षे नीर ॥ शकुन—चैत्र सुदी में रोहिणी के दिन वर्षा, आषाढ़े वर्षा विबाधा एवं आर्द्रा दिने वर्षा श्रावणे विबाधा, पुष्य दिने वर्षा भाद्रपदे विबाधा, एवमेव चित्रा दिने वर्षा आश्विने वर्षा दिबाधा । सुदी ५, ७, ९, ११, १३, १५ तिथि में मेघ गाज बिजली तीव्रवायु प्रवाह वर्षा, भावी वर्षा ऋतुकाल में खण्डशः न्यून वर्षाकारक सूत्र अनुभव में लेवें ।

अ.२चैत्रशु.१५गुरौ०।०ग.३५८

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	५	११	६	१०	५	२	८
२४	१३	२०	१३	७	२५	२४	२४
१७	२६	२४	५९	५०	३२	२५	२५
३५	२५	५	२०	४७	१४	४२	४२
५८/५७	३/३ ३/३ +	१२२/३०	६/१ ८ +	५९/२८	४/५ ० +	३/११	३/११

※ गोचरग्रहाः ※

१ ११ शु.
सू. १२ बु.
२ १०
रा.
३ ९ के.
४ मं. श. ६ चं. ८
५ गु. ७

योगाः	ति.	वैशाख कृष्ण पक्षः सं. २०३९ शाकः १९०४													दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.गतिः	
मूमल	१	शु	२२	३०	चि	१९	१८	ह	४०	७	कौ	२२	३०	[illegible]	६।२६	६।५६	२७	९	१४	१९	तुला	[illegible]	[illegible]
सिद्धि	२	श	२५	४०	स्वा	२३	५३	व	४०	२५	ग	२५	४०	२१	६।२५	६।५७	२८	१०	१५	२०	तुला	[illegible]	[illegible]
चौथव्रत	३	र	३१	७	वि	२९	५५	सि	४१	४१	वि	३१	७	२४	६।२३	६।५७	२९	११	१६	२१	वृ. [illegible]	[illegible]	[illegible]
मानस	४	चं	३६	३९	अ	३६	४३	व्य	४३	३२	व	३	५४	२८	६।२२	६।५८	३०	१२	१७	२२	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
मुद्गर	५	मं	४२	३९	ज्ये	४४	२०	व	४५	५८	कौ	९	२९	३३	६।२१	६।५८	३१	१३	१८	२३	ध. [illegible]	[illegible]	[illegible]
ध्वज	६	बु	४९	२	मू	५१	५०	प	४८	२०	ग	१५	५०	३६	६।२०	६।५९	१	१४	१९	२४	धन	[illegible]	[illegible]
प्रजा.प.	७	गु	५५	१६	पू	५९	१८	शि	५०	२६	वि	२२	८	४०	६।१९	६।५९	२	१५	२०	२५	धन	[illegible]	[illegible]
आनन्द	८	शु	६०	०	उ	६०	०	सि	५१	५७	वा	२७	५१	४३	६।१८	७।०	३	१६	२१	२६	म. [illegible]	[illegible]	[illegible]
राक्षस	८	श	०	२६	उ	५	५५	सा	५२	३३	कौ	०	२६	४७	६।१८	७।०	४	१७	२२	२७	मकर	[illegible]	[illegible]
गद	९	र	४	३४	श्र	१०	५२	शु	५१	२०	ग	४	३४	५०	६।१७	७।१	५	१८	२३	२८	कुं. [illegible]	[illegible]	[illegible]
शुभ	१०	चं	६	४३	ध	१३	५८	शु	४८	५२	वि	६	४३	५४	६।१६	७।१	६	१९	२४	२९	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	मं	६	५३	श	१५	१५	ब्र	४४	४९	वा	६	५३	५७	६।१५	७।२	७	२०	२५	३०	मी. [illegible]	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१२	बु	५	१५	पू	१४	४१	ऐ	३९	१९	तै	५	१५	[illegible]	६।१४	७।२	८	२१	२६	१	मीन	[illegible]	[illegible]
छत्र	१३	गु	१	३३	उ	१२	५	वै	३२	२४	व	१	३३	४	६।१३	७।३	९	२२	२७	२	मीन	[illegible]	[illegible]
क्षय	१४	गु	५६	१९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अमावस	३०	शु	४९	३०	रे	८	२०	वि	२४	१९	च	२२	२४	[illegible]	६।१२	७।३	१०	२३	२८	३	मे. [illegible]	[illegible]	[illegible]

अप्रेल १९८२ वसंत + ग्रीष्म ऋतु र. उ. उ. गो. (अ. चैत्रक्.)

गुडफ्राईडे

भ. [illegible] उ. सर्वार्थ [illegible] या.

भ. [illegible] या. **वैशाखी चतुर्थीव्रतं** चन्द्रो. ९घं. ३७मि. इस्टरसन्डे

अश्विन्यां मेषे बुधः [illegible] ग. [illegible] सर्वार्थ [illegible] या.

अश्विन्यांमेषेचाऽर्कः [illegible] वक्री स्वाति गुरुः [illegible] ग. [illegible]

भ. [illegible] उ. बंगलावैशाख प्रा. फसली १३८९ प्रा. ‡

भ. [illegible] या. ‡ **दलितदिवस वैशाखीपंजाब खालसा ज.**

शीतलापूजा बूढ़ाबासोड़ा

सर्वार्थ [illegible] उ.

भ. [illegible] उ. भरण्यां बुधः [illegible] ग. [illegible] पंचक [illegible] उ.

भ. [illegible] या. पूभायां शुक्रः [illegible] ग. [illegible] * वक्री उफायां भौमः [illegible] ग. [illegible]

वरुथिनी ११ व्रतंसर्वे. श्रीवल्लभाचार्यजयं वृषेभानुः [illegible] ग्रीष्मऋतुप्रा. *

प्रदोषव्रतं राष्ट्रीयवैशाख प्रा.

भ. [illegible] उ. [illegible] या. सर्वार्थ [illegible] उ.

† बुधोदयः पश्चिमायाम् [illegible]

देवपितृकार्ये अमावस्या अमृत [illegible] या. तदग्रेमर्वार्थ-पंचक [illegible] या. †

※ गोचरग्रहाः ※

२ ‍ १२ शु. ‍ रा. ३ ‍ बु. १ सू. ‍ ११ ‍ ४ ‍ १० ‍ गु. ‍ चं. ‍ के. ९ ‍ ५ ‍ ७ ‍ मं. ६ श. ‍ ८

अ. ३ वैशाखकृ. ८ शनौ ०।० ग. १

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	५	०	६	१०	५	२	८
३	१०	९	१२	१७	२४	२३	२३
६	२९	११	५५	१९	५०	५७	५७
३५	१०	१६	५३	२३	३३	१३	१३
५८	[illegible]	१२५	[illegible]	६३	[illegible]	३	३
३८	+	१०	+	३१	+	११	११

※ अथ मेष संक्रान्ति फलम् ※

वैशा.कृ.५ भौम मषेऽर्कः प्र.वा.३न.४वा.ना. महोदरी तस्करी कार्य-व्यापार वृद्धि, अनैतिक कार्य विकास,नक्ष.ना. राक्षसी हरिजन दलितवर्ग विकास,गति३या.व्या. नृत्यकर्त्ता, संगीत वर्ग प्रभार,पूर्वे ग.,वा.दृ.गरकरणे उपविष्टा मध्यमफलं,वाहन गज उपवाह, गर्दभ यातायात विकास,वाहन यात्रा उत्थान, रक्त-वस्त्र, धनुषायुध, लोहपात्र, दुग्धभक्षण, गोरोचन लेपन पशुजाति, बिल्वपुष्प, मुकुटभूषण,श्वेतकंचुकी, प्रौढाऽवस्था मु.३०लोहामशीनरी कलपुर्जे, लालरक्तपदार्थमेंमुख्यी,धान्य दालबानामम,पशु आहार,दूध, मेदा,मावा, घी,सूत,नैलबाना, चांदी,दाणा, विशेष गति । मिलो.पू.व.र.रा.द.मल पानाले ।

अ. ४ वैशाखकृ. ३० शुक्रे ०।० ग. ८

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	५	०	६	१०	५	२	८
८	९	२१	१२	२३	२४	२३	२३
५७	१६	३१	१०	४५	२१	३८	३८
५०	४०	३५	११	७	२२	८	८
५८	[illegible]	११६	[illegible]	६४	४	३	३
२२	+	१९	+	५२	२३	११	११

※ गोचरग्रहाः ※

२ ‍ १२ चं. ‍ रा. ३ ‍ सू. १ बु. ‍ ११ शु. ‍ ४ ‍ १० ‍ गु. ७ ‍ के. ९ ‍ ५ ‍ ६ ‍ मं. श. ‍ ८

卐 **अभिजितमुहूर्त्त**– मुहूर्त्ततालिका में प्रायः 'अभिजित्समयेकार्यम्' लिखा रहता है, उसके समय ज्ञानहेतु मौलिक सूत्र इष्टदिन के दिनमान के आधे को सूर्योदय काल में जोड़ें यह योगफल मध्यान्हकाल होगा, योगफल से मध्यम मानतः २४ मिनिट पूर्व तथा २४ मिनिट बाद 'अभिजितमुहूर्त्त' का समय रहता है। परन्तु बुधवार के दिन अभिजित् मुहूर्त्त का निषेध

योगाः	ति.	वैशाखशुक्लपक्षः सं.२०३९ शाकः १९०४													दि. र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु	भा	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
सौम्य	१	श	४१	५२	अ	[illegible]	[illegible]	प्री	१५	२०	कि	१५	११	३२/१०	६।११	७।३	११	२४	२९	४	मेष	[illegible]	[illegible]
धूम्र	२	र	३३	४३	कृ	५१	१७	आ	६/७	[illegible]	वा	७	४७	१४	६।१०	७।४	१२	२५	३०	५	वृ. १०/५३	[illegible]	[illegible]
अक्षय	३	चं	२६	१५	रो	४५	३२	शो	४७	३७	तै	०	४	१७	६।१०	७।४	१३	२६	१	६	वृषभ	[illegible]	[illegible]
राक्षस	४	मं	१८	४५	मृ	४०	१	अ	३९	१	वि	१८	४५	२०	६।९	७।५	१४	२७	२	७	मि १२/४६	[illegible]	[illegible]
मूसल	५	बु	११	२६	आ	३५	३२	सु	३१	१९	वा	११	२६	२३	६।८	७।५	१५	२८	३	८	मिथुन	[illegible]	[illegible]
सिद्धि	६	गु	५	१०	पु	३१	५४	धृ	२३	५४	तै	५	१०	२६	६।७	७।५	१६	२९	४	९	क. १७/४०	[illegible]	[illegible]
क्षय	७	गु	५९	३९	०	०	०	शू	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
उत्पात	८	शु	५६	८	पु	२९	१९	०	१७	३६	वि	२७	५४	३०	६।६	७।६	१७	३०	५	१०	कर्क	[illegible]	[illegible]
मानस	९	श	५३	८	श्ले	२७	५६	गं	१२	११	वा	२४	३८	३३	६।५	७।७	१८	१	६	११	सिं २७/५६	[illegible]	[illegible]
मुद्गर	१०	र	५१	२०	म	२७	४२	वृ	७	३६	तै	२२	१४	३६	६।५	७।७	१९	२	७	१२	सिंह	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	चं	५०	३१	पू	२८	२१	ध्रु	३	५५	व	२०	५६	३९	६।४	७।८	२०	३	८	१३	क. ४३/४०	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	१२	मं	५१	७	उ	३०	१४	व्या	१/१४	[illegible]	व	२०	४९	४२	६।४	७।८	२१	४	९	१४	कन्या	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१३	बु	५२	२२	ह	३२	५८	व	५८	१९	कौ	२१	४४	४५	६।३	७।९	२२	५	१०	१५	कन्या	[illegible]	[illegible]
नृसिंह	१४	गु	५४	५९	चि	३७	८	सि	५८	१९	ग	२३	४१	४८	६।२	७।१०	२३	६	११	१६	तु. [illegible]	[illegible]	[illegible]
पूर्णिमा	१५	शु	५८	४०	स्वा	४२	१०	व्य	५८	५३	वि	२६	४९	[illegible]	६।२	७।१०	२४	७	१२	१७	तुला	[illegible]	[illegible]

अप्रेल-मई १९८२ ग्रीष्मऋतु प्रा. रवि उत्तरा-उत्तर गोले

‡ कल्पादि वर्षीतपपारणा **जैन मेला ख्वाजासा.** अजमेर मर्वा. [illegible] या. *

चन्द्रदर्शनं शिवाजीज. कृतिकाबुधः [illegible] ग. [illegible] * तदग्रे अमृत

भ. [illegible] उ. रज्जब मा. ७ मुम. **अक्षयतृतीया त्रेतायुगादि परशुरामज.** [illegible]

भ. [illegible] या. **सूरदासज.** भरण्यां रविः [illegible] वृषे बुधः [illegible] ग. [illegible]

श्रीआद्यशंकराचार्यंज. मीने शुक्रः [illegible] ग. [illegible] £

भ. [illegible] उ. **श्रीरामानुजाचार्यंज. श्रीगङ्गासप्तमी** $

£ पुन. १ राहु पूषा. ३ केतुः [illegible] $ सर्वा. [illegible] तदग्रे अमृत

भ. [illegible] या. अगस्त्यास्तः [illegible]

जानकीनवमी विश्वमजदूरदि., मईमा. ५ ता. ३१ उभायां शुक्रः [illegible] ग. [illegible]

महावीरस्वामीकेवलज्ञान

भ. [illegible] उ. [illegible] या. **मोहिनी ११ व्रतं** स्मा. भाग. रोहिणी बुधः [illegible] ग. [illegible]

मोहिनी ११ व्रतं निम्बा. **श्रीराधाद्वादशी**

प्रदोषव्रतं सर्वा. [illegible] या.

भ. [illegible] उ. **श्रीनृसिंहजयंती** † **देवदानीयात्रा** मांभर

भ. [illegible] या. **श्रीबुद्धज. पूर्णिमाव्रतं** कूर्मज., कविरवीन्द्रज. वैशा. स्नानपू. †

※ गोचरग्रहाः ※

बु. २ | १२ शु. | ३ रा. | १ सू. | ११ | ४ चं. | १० | गु | के. | ५ | ७ | ९ | ६ श. | मं. | ८

अ. ५ वैशाख शु. ८ शुक्रे ०।० ग. १५

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	५	१	६	११	५	२	८
१५	७	४	११	१	२३	२३	२३
४६	५७	१८	१५	२६	५४	१५	१५
८	१९	४९	२५	६	३	५३	५३
५८	[illegible]	९८	[illegible]	६६	[illegible]	३	३
१४	+	२२	+	३५	+	११	११

※ मासफलश्रुति. ※

वैशाखस्य चतुर्दश्यां वारोचेत् गुरु भार्गवो । तदा निष्पद्यते धान्यं विपुलं पृथ्वी तले । अमावस्यां च वैशाखे रेवत्यां च सुभिक्षता, मध्यमा चाश्विनी स्मृता ॥ अक्षय तृतीया मध्ये सुभिक्षायैव रोहिणी । आखातीज को मध्यान्हकाल में जल-पूर्णपात्र में रविबिम्ब देखें, सूर्य लालरङ्ग का दिखे तो विवाद विग्रह, नील व पीत रङ्ग का दिखे तो रोग शोक, श्वेतरङ्ग का दिखे तो सुभिक्षतथा धुंधला देखें तो कृषिविनाश परीक्षणीय, सुदी ५ को बुधवार आंधी तपन वायु वेग ऋतु प्रकोपक । वैशाखे काक पक्षी उत्तम वृक्ष पर घोंसला बनावे तो शुभ, शुष्क व कण्टक वृक्ष पर बनावे तो दुर्भिक्ष सूचक । सुदी १ को भरणी घासचारा अधिक पैदा करे । गुड़, कपास, सूत, चांदी मोती, शक्कर, लहसन में तेजी । स्टील-पात्र, पीतल तांबा, कांसी, इमारती लकड़ी सुपारी, जूट, बारदान, हल्दी, चाय, सोना में [illegible] । इस मास में आगजनी आंधी-तूफान कुयोग विशेष ।

अ. ६ वैशा. शु. १५ शुक्रे ०।० ग. २२

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	५	१	६	११	५	२	८
२२	७	१३	१०	९	२३	२२	२२
३३	४	५८	२३	१२	२६	५३	५३
७	५५	५	३३	३८	२८	३८	३८
५८	[illegible]	६४	[illegible]	६७	[illegible]	३	३
२	+	३१	+	१०	+	११	११

※ गोचरग्रहाः ※

बु. २ | १२ शु. | ३ रा. | सू. १ | ११ | ४ | १० | ५ | गु. ७ च. | के. ९ | ६ श. | मं. | ८

योगाः	ति.	ज्येष्ठ कृष्णपक्षः सं.२०३९ शाकः १९०४												वि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
शुभ	१	श	६०	०	वि	४८	१०	व	६०	०	बा	३१	५	३२/५४	६।१	७।१०	२५	८	१३	१८	वृ. ३१/५०	[illegible]	[illegible]
मृत्यु	१	र	३	५९	अ	५४	४५	व	०	१४	कौ	३	५९	५७	६।०	७।११	२६	९	१४	१९	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]
पद्म	२	चं	९	४४	ज्ये	६०	०	प	१	५८	ग	९	४४	३३/०	५।५९	७।११	२७	१०	१५	२०	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]
चौथ व्र.	३	मं	१५	२	ज्ये	२	८	शि	४	१६	वि	१५	२	३	५।५८	७।१२	२८	११	१६	२१	ध. २/८	[illegible]	[illegible]
ध्वज	४	बु	२१	१	मू	९	४१	सि	६	४७	बा	२१	१	६	५।५८	७।१२	२९	१२	१७	२२	धन	[illegible]	[illegible]
प्रजाप.	५	गु	२६	४८	पू	१७	११	सा	९	१३	तै	२६	४८	९	५।५७	७।१३	३०	१३	१८	२३	म. ३४/२	[illegible]	[illegible]
आनन्द	६	शु	३१	५५	उ	२४	११	शु	११	१५	व	३१	५५	१२	५।५७	७।१३	१	१४	१९	२४	मकर	[illegible]	[illegible]
स्थिर	७	श	३६	३५	श्र	३०	१९	शु	१२	२३	वि	४	१५	१५	५।५६	७।१४	२	१५	२०	२५	मकर	[illegible]	[illegible]
मातंग	८	र	४०	४४	ध	३४	५९	ब्र	१२	४०	बा	८	४०	१८	५।५५	७।१५	३	१६	२१	२६	कुं. २/३९	[illegible]	[illegible]
अमृत	९	चं	४१	५८	श	३७	५७	ऐ	११	२९	तै	११	१८	२१	५।५५	७।१५	४	१७	२२	२७	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
काण	१०	मं	४१	१८	पू	३८	५०	वै	८	५२	व	११	३८	२४	५।५४	७।१६	५	१८	२३	२८	मी. २३/३७	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	बु	३८	२९	उ	३७	३७	वि	४/४०	५६/४१	व	९	५०	२६	५।५४	७।१६	६	१९	२४	२९	मीन	[illegible]	[illegible]
मित्र	१२	गु	३३	३७	रे	३४	३०	प्रा	५१	१६	कौ	६	२	२९	५।५३	७।१७	७	२०	२५	३०	मे. ३४/३०	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१३	शु	२७	३	अ	२९	३७	सौ	४२	३३	ग	०	२०	३१	५।५३	७।१७	८	२१	२६	३१	मेष	[illegible]	[illegible]
ध्वांक्ष	१४	श	१९	१	भ	२२	३१	शो	३२	५२	श	१९	१	३४	५।५२	७।१८	९	२२	२७	१	वृ. ३६/२	[illegible]	[illegible]
अमावस	३०	र	१०	१	कृ	१६	३६	अ	२२	३९	ना	१०	१	३३/३६	५।५२	७।१८	१०	२३	२८	२	वृषभ	[illegible]	[illegible]

मई १९८२ ग्रीष्म-ऋतुः रवि-उत्तरा उ.गोले (अ.वैशाख क्र.)

जिनवरव्रत प्रा. जैन वक्री हस्ते ८ शनिः ४३/२८ ग. ३/४५

श्री नारद जयन्ती वीणादानम्

भ. ४२/५३ उ. मार्गीभौमः २९/५५ रा. /६ । ५३/४७ वक्रीस्वात्यां १ गुरुः ६/४४ ग. ७/३४

भ. १५/२ या. **चतुर्थीव्रतं** कृतिकायां रविः १५/२६

रेवत्यां शुक्रः ४४/२१ ग. ६९/०

भ. ३१/५५ उ. **बंगज्येष्ठप्रा. वृषभेऽर्कः** ४२/४१ मर्वार्थ २५/११ उ.

भ. ५/१५ या. सर्वार्थसिद्धिः ३९/१९ या.

श्रीदादूदयालपुण्यः पंचक २/३९ उ.

भ. ११/३८ उ. ४१/१८ या. सर्वार्थ ३८/५० उ.

अपरा ११ व्रतं सर्वे.

प्रदोषव्रत पंचक ३४/३० या. सर्वा. ३४/३० या.

भ. २७/३ उ. ५३/२ या. वक्रीबुधः १२/८ रा. १/२१ । १३/३७ सर्वा. ३१/३६ या. मिथुनेभानुः २२/२७

पितृकार्येऽमावस्या राष्ट्रीयज्येष्ठ प्रा. मअराज मुस.

देवकार्येऽमावस्या **शनिजयंती वटपूजाभावुका** ३० बुधास्तः पश्चिमे ६/३५

❋ गोचरग्रहाः ❋

३ रा. | १ | ४ | २ सू. बु. | १२ शु. | ५ | ११ | शं. ६ मं. | ८ | १० चं. | गु. ७ | ९ के.

अ.७ज्येष्ट कृ.८सूर्ये०।०ग.३१

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	५	१	६	११	५	२	८
१	६	२१	९	१९	२२	२२	२२
१४	५९	११	२३	१६	५४	२५	२५
३९	५५	१४	११	८	०	१	१
५७	४/८	१५	६/४८	६९	३/७	३	३
४८	मा	१५	+	०	+	११	११

❋ अथ वृषभ संक्रान्ति फलम् ❋

ज्ये.कृ.६शुके वृषेऽर्कःप्र.वा.४न.४वा.ना.मिश्रा पशुधनविकास योजना, पशुनस्ल सुधार,न.ना.महोदरी अनैतिककार्यविकास, तस्कर व्यापार योग, रा.२या.व्या.उ. गमनं,ई.दृ.विष्टिकरणे उपविष्टा सामान्य फलद,वाहनअश्व उपवाहनसिंह यातायात वृद्धि,विविधराहतकार्ययोजना,वाहनयात्रा सुविधा,कृष्णवस्त्र, कुंतायुध,पत्रपाल, चित्राभक्षण, जवादिलेप,विप्रजाति,दूर्वा-पुष्प,गुंजाभूषण,नीलकंचुकी,वृद्धावस्था,मु.३० तम्बाकू,बीड़ी, पान,मेंहदी,कत्था,सुपारी,उड़द,तैल,मशीनरीकलपुर्जे,श्रृङ्गार सामानतेज । अनाज, दालवाना सम,स्त्रीवर्ग रोग, अ.गजनी कुयोग, सितो.पू.व.उ.रा.प.मूल पाता. विवाह अग्निकोणे ।

अ.८ज्येष्ट कृ.३०सूर्ये०।०ग.३८

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	५	१	६	११	५	२	८
७	७	२१	८	२७	२२	२२	२२
५८	२७	६	३७	१३	३५	२	२
३०	५	९	२२	४५	३३	४६	४६
५७	१०	५/१६	६/०	६९	२/२८	३	३
३९	३६	+	+	४८	+	११	११

❋ गोचरग्रहाः ❋

रा. ३ | १ | ४ | बु. २ सू. चं. | १२ शु. | ५ | ११ | शा. ६ मं. | ८ | १० | ७ गु. | ९ के.

अन्मतमयेपादविवेक मूलजन्मार्थफल 卐 [illegible] में

लोहपाव समझें । जिस शिशु का जन्म मूलनक्षत्र के १चरणे पितृ कष्ट,२चरणे मातृ-कष्ट,३चरणे अर्थ-हानि,४चरणे शुभ,अन्येषु शांतितःशुभः शुभत्व तथा आश्लेषा जन्म नक्षत्र में मूल नक्षत्र से विपरीत चरण क्रम से फल समझें ।

योगाः	ति	ज्येष्ठ शुक्लपक्षः संवत् २०३९ शाकः १९०४											दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	सु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
प्रवर्ध	१	घं	०	३३	रो	९	१४	सु	१२	२९	ब	०	३३	३३/३८	५१५२	७११९	११	२४	२९	३	मि ३५/३४	[illegible]	[illegible]
क्षय	२	घं	५१	४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
राक्षस	३	मं	४२	११	मृ	१/५३	५५/२०	धृ	२/२३	५२/७	तै	१६	४०	४०	५१५२	७१२०	१२	२५	१	४	मिथुन	[illegible]	[illegible]
गद	४	बु	३४	१	पु	४९	४४	गं	४३	०	ब	८	११	४२	५१५२	७१२०	१३	२६	२	५	क. २६/१८	[illegible]	[illegible]
शुभ	५	गु	२७	१४	पु	४५	२८	वृ	३५	२३	ब	०	३७	४४	५१५१	७१२१	१४	२७	३	६	कर्क	[illegible]	[illegible]
मृत्यु	६	शु	२१	४९	श्ले	४२	३८	ध्रु	२८	४९	तै	२१	४९	४५	५१५१	७१२१	१५	२८	४	७	सिं ५२/३८	[illegible]	[illegible]
पद्म	७	श	१८	११	म	४१	२८	व्या	२३	२४	ब	१८	११	४६	५१५१	७१२१	१६	२९	५	८	सिंह	[illegible]	[illegible]
छत्र	८	र	१५	५५	पू	४१	४९	ह	१९	२६	ब	१५	५५	४८	५१५१	७१२२	१७	३०	६	९	क. ५६/२१	[illegible]	[illegible]
श्रीवत्स	९	चं	१५	२२	उ	४३	५७	व	१६	३९	कौ	१५	२२	४९	५१५०	७१२२	१८	३१	७	१०	कन्या	[illegible]	[illegible]
सौम्य	१०	मं	१६	२०	ह	४७	२२	सि	१५	९	ग	१६	२०	५०	५१५०	७१२२	१९	१	८	११	कन्या	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	बु	१८	३०	चि	५१	५०	व्य	१४	३५	वि	१८	३०	५२	५१५०	७१२३	२०	२	९	१२	तु. १०/३५	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१२	गु	२२	१३	स्वा	५७	२१	व	१५	१२	बा	२२	१३	५३	५१५०	७१२४	२१	३	१०	१३	तुला	[illegible]	[illegible]
मातंग	१३	शु	२६	१९	वि	६०	०	प	१६	४	तै	२६	१९	५४	५१५०	७१२४	२२	४	११	१४	वृ. ४७/०	[illegible]	[illegible]
शुभ	१४	श	३१	२३	वि	३	४४	शि	१७	४७	ब	३१	२३	५६	५१५०	७१२५	२३	५	१२	१५	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]
पूर्णिमा	१५	र	३७	५	अ	१०	३८	सि	१९	४०	वि	४	१४	३३/१७	५१५०	७१२५	२४	६	१३	१६	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]

मई-जून सन् १९८२ ग्रीष्म ऋतुः रवि उत्तरा.-उत्तर गोले

चन्द्रदर्शनं करिदिनं सर्वा.अमृत ९/१४ उ.

£ अश्विनी मेषे च शुक्रः ३३/२५ ग ६९/४८

शाबानमा.८मुस.रंभाव्रतं राणाप्रतापजयंती रोहिण्यांरविः ५६/५ £

भ. ८/११ उ. ३४/१ या. बलिदान गुरुअर्जुनदेव

श्रुतिपंचमी जैन नेहरुपुण्य सर्वा.अमृत ४१/२८ या.

भ. १८/११ उ. ४७/३ या.

सर्वार्थि ४१/४० उ.

श्री महेशनवमी माहेश्वरीवंशे

भ. ४७/२५ उ.जूनमा.६ता.३०गङ्गादशहरा रामेश्वरप्रत्तिष्ठा, †

भ. १८/३० या.निर्जला११व्रतं सर्वे. † वटुकभैरव ज.

प्रदोषव्रतम्

वटसावित्रीव्रत प्रा. ‡ श्रुति५पर्व जैन

भ. ३१/२३ उ.हस्ते भौमः १८/५४ ग. १० भरण्यां शुक्रः ३७/१० ग. ५१

भ. ४/१४ या. कबीरज. पूर्णिमाव्रतं मन्वादि वटसावित्रीव्रतपूर्ण ‡

※ गोचरग्रहाः ※



अ.९ज्येष्ट शु.८सूर्ये०।०ग.४५

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	५	१	६	०	५	२	८
१४	८	१८	८	५	२२	२१	२१
४१	५८	४६	०	१७	१९	४०	४०
४१	२	४६	५	४३	४०	३०	३०
५७	१६	२४/३	४/५३	७०	१/५२	३	३
३१	१८	+	+	३२	+	११	११

※ मासफल श्रुतिः ※

ज्येष्ठबदी के पक्षमें,श्रवण धनिष्ठा जान। मेघ गाज विद्युत गति,ऊत्तमवर्षा मान। ज्येष्ठसुदी७को बादलगाज एवंदक्षिण वायुकाप्रवाह तिलहन,बाणा,तिल तथा सभीतेलकीखरीदहेतु योग्य,भावी४मासमेंलाभ। ज्येष्ठे शुक्ले द्वितीयायां तृतीयायां प्रजायते। नक्षत्रार्द्रा तदावृष्टिर्महादुर्भिक्षकारिणी॥ जेठबदी १२को रेवतीनक्षत्र अशांतिकारक, जनअसंतोष,ऋतु प्रकोप, आदि व्याधिचलन। चारोंपाये रोहिणीतपे ज्येष्ठ के मास। चारमासमें जानिये अतिघनपावस आस॥ गलीरोहिणीखंच करे दिवस बहत्तर जाण। रेली गलीजे एक फल कहे नन्द निर्वाण॥ सुगंधीपदार्थ,मादकद्रव्य,कागज,रङ्गरसायन,वाहन कलपुर्जें, पेट्रोल-डीजल रबर तथा खनिज पदार्थ में सुधार। तम्बाकू, बारदान-जूट, सरसों. आलू, चणा, मेथी, हल्दी,तुवर में उठाव तेजी।

अ.१०ज्ये.शु.१५सूर्ये०।०ग.५२

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	५	१	६	०	५	२	८
२१	१०	१५	७	१३	२२	२१	२१
२३	१५	१०	२९	२२	९	१८	१८
५३	४१	३८	४३	४८	२४	१५	१५
५७	१९	२७/२२	३/५८	७१	१/११	३	३
२४	९	+	+	५	+	११	११

※ गोचरग्रहाः ※



मेघगाजसह आंशिक मानसून,आगजनी,तेजआंधी तपन ऋतुप्रकोप विशेष,बदी२से७तथा१२से३०सुदी४से६ एवं १२से१५ में विशेष गति। सत्ताश्वदलपर प्रमार, सचिव विग्रह। इसमासमें५शनिवार पशुजनपीड़ा देवदोषसूचक।

योगाः	ति.	आषाढ़कृष्ण पक्षः सं. २०३९ शाकः १९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प	
पद्म	१	चं	४३	१७	ज्ये	१७	५९	सा	२२	४	बा	१०	११	३३	५१५०	७१२६	२५	७	१४	१७	ध. १९५७	[illegible]	[illegible]
छत्र	२	मं	४९	२८	मू	२५	३९	शु	२४	२९	तै	१६	२३	५९	५१५०	७१२६	२६	८	१५	१८	धन	[illegible]	[illegible]
श्रीवत्स	३	बु	५५	२३	पू	३२	५२	शु	२६	४९	व	२२	२६	३४	५१५०	७१२६	२७	९	१६	१९	म. ४९०	[illegible]	[illegible]
चौथव्रत	४	गु	६०	०	उ	४०	१	ब्र	२९	८	व	२८	८	२	५१५०	७१२६	२८	१०	१७	२०	मकर	[illegible]	[illegible]
धूम्र	४	शु	०	५४	श्र	५६	३१	ऐ	३०	४१	बा	०	५४	३	५१५०	७१२७	२९	११	१८	२१	मकर	[illegible]	[illegible]
प्रवर्ध	५	श	५	२६	ध	५१	५२	वै	३१	३५	तै	५	२६	५	५१५०	७१२७	३०	१२	१९	२२	कुं. ११९	[illegible]	[illegible]
राक्षस	६	र	९	२२	श	५६	१	वि	३१	२९	व	९	२२	६	५१५०	७१२८	३१	१३	२०	२३	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
मूसल	७	चं	११	३२	पू	५८	४०	प्री	३०	१३	व	११	३२	७	५१५०	७१२८	३२	१४	२१	२४	मी. ४३०	[illegible]	[illegible]
सिद्धि	८	मं	१२	०	उ	५९	२०	आ	२७	३१	कौ	१२	०	८	५१४९	७१२९	१	१५	२२	२५	मीन	[illegible]	[illegible]
उत्पात	९	बु	१०	३७	रे	५८	२५	सौ	२३	२२	ग	१०	३७	१०	५१४९	७१२९	२	१६	२३	२६	मे. ५२९	[illegible]	[illegible]
मानस	१०	गु	७	९	अ	५५	१०	शो	१७	३७	वि	७	९	११	५१४९	७१२९	३	१७	२४	२७	मेष	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	शु	२	७	भ	५०	११	अ	१०	१४	बा	२	७	१२	५१४९	७१३०	४	१८	२५	२८	मेष	[illegible]	[illegible]
क्षय	१२	शु	५५	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प्र. व्रत	१३	श	४६	५०	कृ	४३	५२	सु	४१	२४	ग	२०	५५	१३	५१४९	७१३०	५	१९	२६	२९	वृ. ३३७	[illegible]	[illegible]
प्रजा.प.	१४	र	३७	२१	रो	३६	४२	शू	४१	२६	वि	१२	५	१४	५१४९	७१३१	६	२०	२७	३०	वृषभ	[illegible]	[illegible]
सोमवती	३०	चं	२७	२६	मृ	२८	५७	गं	३०	३८	च	२	२३	१५४	५१४९	७१३१	७	२१	२८	३१	मि. २४४	[illegible]	[illegible]

गतिः | जून सन् १९८२ ग्रीष्मऋतु रवि-उत्तरा-द.,उ.गो.(अ.ज्येष्ठकृ.)

शबेबरात मुस.
मृगशिरायां रविः ११३
भ.२२२६उ.२५५३या.
चतुर्थी व्रतम्
सर्वार्थ४३६१या.बुधोदयः पूर्वे५१०
पंचक११९१उ.
भ.२९२उ.२४०७या.
मिथुनेऽर्कः५५९०
बंगला आषाढ़प्रा.सर्वार्थ२१०९या.मार्गीबुधः३११रा.११३।११२
भ.५३३८उ.पंचक२५५८या.
भ.९या.कृतिकायांशुक्रः३१८५ग.४७३१ सर्वार्थ११०५या.
योगिनी११व्रतंसर्वे.,लक्ष्मीबाईपुण्यझांसीमार्गीशनिः †
† ४२३५रा.२५२।१०८ ‡ वा.अश्व वर्षा.ने.कर्केभानुः२४७३**वर्षा ऋतुप्रा.** *
भ.५४०६उ.**प्रदोषव्रतं** सर्वार्थ-अमृत५४२३उ.
भ.५१२या.वृषभेशुक्रः४१०ग.१७२ * **दक्षिणायन** प्रा.सर्वा.अमृत५३७८या.
देवपितृकार्ये**सोमवती अमा.**आर्द्रायांरविः४५२६सं.स्त्री.स्त्री.चं.चं. ‡

※ गोचरग्रहा ※

४ | बु. २ | शु. | ५ | सू. | ३ | रा. | शा. | १२ | ६ | मं. | चं. | गु. | ७ | के. ९ | ११ | ८ | १० | १

अ.११आषा.कृ.८मं.०।०ग.६१

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	५	१	६	०	५	२	८
०	१३	१३	७	२३	२२	२०	२०
०	७	३	२	५८	२	४९	४९
४	१९	१३	२८	०	१	३९	३९
५७	२३	२१२	११२	७१	२४०	३	३
१८	२८	+	+	४३	+	११	११

※ अथ मिथुन संक्रान्ति फलम् ※

आषाढ़कृ.७चन्द्रेमिथुनेऽर्कःप्र.वा.४न.५वा.ना.ध्वांक्षीव्यापार-विकाम, वैश्यलाभद, उद्योगवृद्धि,न.ना.नन्दाविद्वान,साहित्यकारों कासम्मान,विज्ञानललितकलाओंका उत्थान,रा. ४या. ध्या.पशुपालकोंकोकष्ट,पशुधनहीनता,उ.गमनं,दिशा.दृ.,कौलवकरणे उत्तिष्ठातेजीप्रद,वाहनवराह उपवाहनवृषभयातायात म.गं.अवरोध, ऋतुकोप,संचारहानि, हरितवस्त्र, खड्गायुध, ताम्रपात्र,निक्षान्नभक्षण,रक्तचंदनलेपन, सर्पजाति,बकुलपुष्प, मुक्ताभूषण, हरितकंचुकी,गताऽनकावस्था मु.४५रंगरसायन, तांबा, बिजलीसामान, मेंहदी, मूंग, मोती, विषपदार्थ तेज। मितोदय पू.वउ.रा.पा. मूल स्वर्ग, विवाहस्तंभ अग्निकोणे।

अ.१२आषा.कृ.३०चं.०।०ग.६७

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	५	१	६	१	५	२	८
५	१५	१४	६	१	२२	२०	२०
४३	१६	१०	५१	९	१	३०	३०
४९	२५	८	२७	५५	४	३४	३४
५७	२५	२४	५०९	७२	१०८	३	३
१४	२४	४७	+	१	मा	११	११

※ गोचरग्रहाः ※

४ | बु. २ शु. | चं. | ५ | सू. ३ | १ | शा. | रा. | ६ | मं. | १२ | गु. | ७ | के. ९ | ११ | ८ | १०

卐 आषाढ़ीपूर्णिमावायुप्रवाहफलम्– सूर्यास्तकाले पूर्वदिशाका वायुप्रवाह शुभ,आग्नेयकोणका रोगशोक कारक,दक्षिणका राष्ट्रचिंता,नैऋत्यका अल्पवर्षा,पश्चिमकावर्षाकारक वायव्यकाफसलन्यून, उत्तरकासुभिक्षप्रद, ईशानका सुभिक्षप्रद, पूर्णिमाको वायुप्रवाह मेघशुभ, वषनिष्ट। बादलगाजसे शीतकालमेंमावठा। विशेषज्ञानार्थ 'वर्षप्रबोध मेघमाला' मू. १०) मंगावें।

योगाः	ति.	आषाढ़शुक्लपक्षः सं.२०३९शाकः१९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं.	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
चर	१	सं	१७	८	आ	२०	५८	वृ	१९	४५	व	१७	८	[illegible]	५१४९	७।३१	८	२२	२९	१	मिथुन	[illegible]	[illegible]
गद्	२	बु	७	३१	पु	१३	३४	ध्रु	[illegible]	[illegible]	कौ	७	३१	१५	५१५०	७।३२	९	२३	१	२	क. २०	[illegible]	[illegible]
क्षय	३	बु	५८	५४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
शुभ	४	गु	५१	३७	पु	७	२२	ह	५१	१०	व	२५	१९	१४	५१५०	७।३२	१०	२४	२	३	कर्क	[illegible]	[illegible]
मृत्यु	५	शु	४६	१३	श्ले	[illegible]	[illegible]	व	४४	१३	व	१८	४५	१३	५१५०	७।३१	११	२५	३	४	सिं २१	[illegible]	[illegible]
लूवक	६	श	४२	२४	पू	५८	९	सि	३८	४९	कौ	१४	१९	१२	५१५१	७।३२	१२	२६	४	५	सिंह	[illegible]	[illegible]
मित्र	७	र	४१	२	उ	५९	०	व्य	३४	४६	ग	११	४४	१०	५१५१	७।३१	१३	२७	५	६	कं. १३ २२	[illegible]	[illegible]
वज्र	८	चं	४०	२८	ह	६०	०	व	३२	२४	वि	१०	४५	९	५१५२	७।३२	१४	२८	६	७	कन्या	[illegible]	[illegible]
सौम्य	९	मं	४२	१४	ह	१	५२	प	३१	२९	बा	११	२१	८	५१५३	७।३२	१५	२९	७	८	तु. ३४	[illegible]	[illegible]
कालदं	१०	बु	४६	१९	चि	६	८	शि	३२	१	तै	१४	१६	७	५१५३	७।३२	१६	३०	८	९	तुला	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	गु	५१	३१	स्वा	११	४३	सि	३३	७	व	१९	१५	६	५१५३	७।३२	१७	१	९	१०	तुला	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	१२	शु	५७	२४	वि	१८	११	सा	३५	८	व	२४	२७	५	५१५४	७।३२	१८	२	१०	११	वृ. ३४	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१३	श	६०	०	अ	२५	४१	शु	३७	१९	कौ	३०	५०	३	५१५४	७।३१	१९	३	११	१२	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
कांण	१३	र	३	४७	ज्ये	३२	५२	शु	३९	४६	तै	३	४७	२	५१५५	७।३२	२०	४	१२	१३	ध. ५२	[illegible]	[illegible]
लूवक	१४	चं	९	५८	मू	४०	१६	ब्र	४२	१०	व	९	५८	१	५१५५	७।३१	२१	५	१३	१४	धन	[illegible]	[illegible]
पूर्णिमा	१५	मं	१५	४९	पू	४७	४६	ऐ	४४	२१	व	१५	४९	[illegible]	५१५५	७।३१	२२	६	१४	१५	धन	[illegible]	[illegible]

जून-जुलाई सन्१९८२वर्षाऋतुःरविः दक्षिणा-उत्तर गोले

चन्द्रदर्शनं राष्ट्रीयआषाढ़प्रा.

रमजानमा.९मुस.पाकरोजेप्रा.श्रीजगन्नाथरथयात्रापुरी

‡ चातुर्मासिप्रा.विष्णुशयनोत्सवजिनदत्तसूरीज.अजमेरदादा.मेला †

भ.२५/१९उ.५१/३७या.सर्वार्थे-अमृत७/२२या. † मृगशिराबुधः१/६°ग.६/३६

£ रविः५/३८सं.स्त्री.पु.चं.चं.वा.चातकवर्षा.यो.मिथुनेबुधः३/२८ग.५/४६

मार्गीगुरुः२६/० रा.६।४७

भ.४१/२उ.महावीरस्वामी गर्भ.जैनसर्वार्थे१/०या.

भ.१/४५°या. रोहिण्यांशुक्रः३/२५ग.७/३१

भडुलीनवमी

बैंकअर्धलेखाबंदीआर्द्रायां४राहुःपूफायां२केतुः३/४५

भ.१/१५उ.५/३१या.जुलाईमा.७ता.३१देवशयनी११व्रतस्मा.भाग ‡

देवशयनी११व्रतनिम्बा.सर्वा.१/१९उ.

प्रदोषव्रतं हरिवास राऽभावः

विवेकानन्दपुण्यः सर्वा.३/५२उ.

भ.५/८उ.४/५३या.पूर्णिमाव्रतंवायुपरीक्षाप्रदोषेजैनचातुर्मासप्रा.पुनर्वसौ£

गुरुपूर्णिमाव्यासपूजाकोकिलाव्रतंशिवशयनोत्सवःसन्या.चातुर्मासप्रा.

❊ गोचरग्रहाः ❊

४ सू. बु.२शु. १
५ रा. ३ श. चं. १२
६ मं. ७ गु. ९ के. ११
८ १०

अ.१३आषाढ़शु.८चं.०।०ग.७४।

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	५	१	६	१	५	२	८
१२	१८	१९	६	९	२२	२०	२०
२४	५	५७	४७	२८	५	८	८
२८	५८	५२	२७	२७	५०	१९	१९
५७	२७	६०	१०/७	७१	१	३	३
९	४१	३६	मा	३९	५	११	११

❊ मासफलश्रुति. ❊

एकमबदी आषाढ़की, गाज बिजलीजान। गाजेबरसेओजहां, वहांवहां हो हान॥ आषाढ़ी द्वितीया दिवस, नक्षत्रमूल का संग। देवदोष फसलाहनन,ऋतुकोप का रंग॥ आषाढ़ीबदी पंचमी नहि बादल नहि बीज। करसा हानि जानजो,धरणी न नाखो बीज॥ बदी अष्टमी षाढ़ को गाज बीज बरसंत। चौमासा वर्षे सही,आनन्द मानो सन्त॥ सोमवतीआषाढ़की मृगशिर का जो साज। धरा धान्य,धन नीपजे, नौ प्रजा का राज॥ आषाढ़ सुदी७ को वर्षाहोना शुभ, अन्यथा भादवेमें शुष्कता और सूत-कपास में पौष-फाल्गुन मध्य अच्छी तेजी बने। आषाढ़शुक्ल नवमी निशा ढके जो बादलचंद। शीत-काल वर्षा बहुत, प्रजा होत आनन्द॥ तुयर सरसों, लहसन, सौंठ, सुपारी, नमक, जूट, दाणा,हल्दी, चणातथा पशु आहार में नवीन गति गुरखो, धान्य, तिलहन, धातवादि स्थिर गति। बदी ४ से ८ तथा १२ से ३० सुदी २ से ७ तथा १३ से १५ मानसून गति, कृषि बीज वमन, नव-नदियों का वेग। आषाढ़सुदी१४को वर्षाहोतो भादबाबदी११सेसुदी४तकवर्षा।

अ.१४आषा.शु.१५मं.०।०ग.८२

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	५	२	६	१	५	२	८
२०	२१	०	६	१८	२२	१९	१९
२	३५	३४	५४	४७	१६	४२	४२
१	५०	३०	१	२६	१६	५३	५३
५७	३०	९५	१	७२	१	३	३
७	७	४६	४३	४०	४९	११	११

❊ गोचरग्रहाः ❊

४ सू. शु.२
५ बु.३ मं. रा. १
६ श. १२
७ गु. ९ के. चं. ११
८ १०

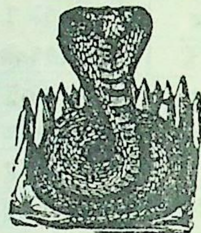
योगाः	ति. १४	श्रावण कृष्ण पक्षः सं.२०३९ शाकः१९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
वज्र	१	बु	२१	३८	उ	५४	३७	वै	४६	२१	कौ	२१	३८	३३/३८	५।५६	७।३१	२३	७	१५	१६	म. ४/२९	[illegible]	[illegible]
ध्वज	२	गु	२६	४२	श्र	६०	०	वि	४७	५१	ग	२६	४२	५७	५।५६	७।३१	२४	८	१६	१७	मकर	[illegible]	[illegible]
चौथ व्र.	३	शु	३०	५४	श्र	०	४१	प्री	४८	४०	वि	३०	५४	५६	५।५७	७।३१	२५	९	१७	१८	कुं. ३३/२२	[illegible]	[illegible]
प्रवर्ध	४	श	३४	१९	ध	६	३	आ	४८	४९	व	२	३६	५४	५।५७	७।३१	२६	१०	१८	१९	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
नाग पं.	५	र	३६	३२	श	१०	२९	सौ	४८	२	कौ	५	२५	५३	५।५७	७।३०	२७	११	१९	२०	मी १६/३७	[illegible]	[illegible]
मूसल	६	चं	३७	३१	पू	१३	५१	शो	४६	१५	ग	७	२	५२	५।५८	७।३१	२८	१२	२०	२१	मीन	[illegible]	[illegible]
सिद्धि	७	मं	३७	७	उ	१५	४४	अ	४३	२६	वि	७	१९	५०	५।५८	७।३०	२९	१३	२१	२२	मीन	[illegible]	[illegible]
उत्पात	८	बु	३५	२४	रे	१६	१०	सु	३९	८	वा	६	१३	४९	५।५९	७।३१	३०	१४	२२	२३	मे. १६/१०	[illegible]	[illegible]
मानस	९	गु	३१	४१	अ	१५	१०	धृ	३३	३९	तै	३	२९	४८	५।५९	७।३०	३१	१५	२३	२४	मेष	[illegible]	[illegible]
मुद्गर	१०	शु	२६	३५	भ	१२	१६	शू	२६	५०	वि	२६	३५	४६	६।०	७।३०	१	१६	२४	२५	वृ. २६/१५	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	श	१९	५०	कृ	८	१३	गं	१८	५८	बा	१९	५०	४५	६।०	७।३०	२	१७	२५	२६	वृषभ	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१२	र	११	५७	रो	[illegible]	[illegible]	वृ	[illegible]	[illegible]	तै	११	५७	४४	६।०	७।३०	३	१८	२६	२७	मि २१/१४	[illegible]	[illegible]
कालदं.	१३	चं	३	१	आ	४८	३५	व्या	४९	११	व	३	१	४२	६।१	७।३०	४	१९	२७	२८	मिथुन	[illegible]	[illegible]
क्षय	१४	चं	५२	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
हरियाली	३०	मं	४३	४०	पु	४०	५९	ह	३८	५८	च	१८	३५	३३/४१	६।१	७।२९	५	२०	२८	२९	क. ३७/५३	[illegible]	[illegible]

जुलाई१९८२वर्षा-ऋतुः रवि-दक्षिणा उ.गोले (अ.आषाढ़ कृ.)

† मृगशिरायांशुक्रः ४५/२५ग. ७२/४० चित्रायांभौमः २७/१२ग. ३०/७

भ. ५८/४८उ.

भ. ३०/५४या.चतुर्थीव्रतंपंचक ३३/२२उ.सर्वा. ४०/४१या.आर्द्रायांबुधः ४१/०ग. ०५/४६ †



नागपंचमी मरुस्थलेबंगेऽपि

भ. ३७/३१उ. बुधास्तः पूर्वस्यां ५५/५

भ. ७०/१९या. सर्वार्थ १५/४४या.

पंचक १६/१०या.

भ. ५०/८उ. सर्वार्थ १५/१०या.मिथुनेशुक्रः २०/३ग. ७३/१३

भ. ३५/३५या.बंगलाश्रावण प्रा.शबेकदर मुस.कर्केऽर्कः २७/२पुनर्वसौबुधः £

कामिका११व्रतं सर्वे. सर्वार्थ+अमृत ८/१३उ.



प्रदोषव्रतम् £ १६/५०ग. ११३/३४

भ ३/१उ. २८/१४या.पुष्येरविः ५६/१०सं.स्त्री.चं.चं.वा.गज वर्षा.म.

‡ आर्द्रायां शुक्रः ५४/४०ग. ७३/१०

देवपितृकार्ये **हरियालीअमावस्या** लक्ष्मीपौलयात्रा त्रिपुष्करे ‡

❊ गोचरग्रहाः ❊

४ | गु. २ | सू. | ५ | बु. ३ रा. | १ | ६ श. | मं. | १२ | चं. | ७ | गु. | ९ के. | ११ | ८ | १०

अ.१५श्रावणकृ.८बु.०।०ग.९०							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	५	२	६	१	५	२	८
२७	२५	१५	७	२८	२२	२९	२९
३९	२८	४०	१२	२२	२३	१७	१७
४६	४०	४९	१६	०	९	२७	२७
५७	३२	११३	३	७३	२	३	३
११	४	३४	१८	१३	३३	११	११

❊ अथ कर्क संक्रान्ति फलम् ❊

श्राव.कृ.१०शुक्रे कर्केऽर्कः प्र. वा. ५न.५वा.ना. मिश्रा पशुधन विकास योजना, पशुचिकित्सा लाभ, न.ना.मिश्रा.पशुपालकों को राहत, चौपायावर्ग की वृद्धि, अप.व्या व्यापारी वर्ग को कष्ट, उद्योग-धन्धा गति सम, नैऋ. दृ. बवकरणे उपविष्टा, सामान्य फल, वाहन सिंह उपवाहन गज यातायात अवरोध, संचार सम्पर्कभङ्ग,प्राकृतिक प्रकोप,जन-धन क्षति,श्वेतवस्त्र, भुशुण्डायुध, स्वर्णपात्र, अन्नभक्षण, मृगमद ले.देवजाति,पुन्नाग-पुष्प,पिरोजाभूषण,विचित्रकंचु,बालाऽवस्था मु.३०दाणा,घी, शक्कर,कागज,खोपरा,कपूर,श्रीफल,सोना तेज। लोहमशीनरी धान्य, दालबाना सम गति। सितो.पू.व.उ.रा.प.मूल भूमौ।

अ.१६श्रावणकृ.३०मं.०।०ग.९६							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	५	२	६	२	५	२	८
३	२८	२७	७	५	२२	१८	१८
२३	२८	७	३१	३३	४९	५८	५८
२२	०	४८	४७	२	५१	२३	२३
५७	३३	१२४	४	७३	३	३	३
१४	३१	०	१७	१९	६	११	११

❊ गोचरग्रहाः ❊

५ | श. ३ शु. | चं. | बु. | मं. ६ | श. | ४ | सू. | २ | ७ गु. | १ | ८ | १० | १२ | के. ९ | ११

卐 रोगिणां मरण-जीवन विचार–ज्येष्ठाआश्लेषा,शतभिषा,आर्द्रा,तीनों पूर्वा, भरणी,विशाखा,धनिष्ठाकृतिका नक्षत्र तथा शनि मंगल रविवार एवं ४-९-१४-१२-६तिथि इनमें बीमार हुवे मनुष्य को दुःखरोग अधिक [illegible] इन तीनों नक्षत्र वार-तिथिमेंएकभीकम होतोचिन्तानकरें। दशा उपदशाविचारभी जरूरी है। महामृत्युंजयपाठतुलादानतःशांतिउपाय।

योगाः	ति. १५	श्रावणशुक्लपक्षः:सं.२०३९शाकः१९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु	भा	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
मातंग	१	बु	३४	१७	पु	३३	३९	व	२८	३५	कि	८	५८	[illegible]	६।११	७।२९	६	२१	२९	३०	कर्क	[illegible]	[illegible]
सिजारा	२	गु	२६	२	श्ले	२७	३५	सि	१८	५९	वा	०	९	३७	६।११	७।२८	७	२२	३०	३१	सिं २६/३५	[illegible]	[illegible]
तीज	३	शु	१९	८	म	२३	४५	व्य	१०	३१	ग	१९	८	३५	६।१२	७।२८	८	२३	१	१	सिंहं	[illegible]	[illegible]
लूंबक	४	श	१४	५	पू	२०	३९	व	३/८	५७/२२	वि	१४	५	३२	६।१२	७।२७	९	२४	२	२	क. ३४/२२	[illegible]	[illegible]
मित्र	५	र	१०	५९	उ	१८	३१	शि	५३	४३	दा	१०	५९	३०	६।१३	७।२७	१०	२५	३	३	कन्या	[illegible]	[illegible]
वज्र	६	चं	१०	१५	ह	१९	४४	सि	५१	३२	तै	१०	१५	२७	६।१३	७।२६	११	२६	४	४	तु. ५१/१६	[illegible]	[illegible]
ध्वांक्ष	७	मं	११	२०	चि	२२	४९	सा	५१	३	व	११	२०	२४	६।१४	७।२६	१२	२७	५	५	तुला	[illegible]	[illegible]
धूम्र	८	बु	१४	३३	स्वा	२७	३५	शु	५१	३५	व	१४	३३	२१	६।१५	७।२५	१३	२८	६	६	तुला	[illegible]	[illegible]
प्रवर्ध	९	गु	१९	५	वि	३३	४६	शु	५३	१०	कौ	१९	५	१९	६।१५	७।२५	१४	२९	७	७	वृ. १९/१३	[illegible]	[illegible]
राक्षस	१०	शु	२४	५५	अ	४०	५५	ब्र	५५	३१	ग	२४	५५	१६	६।१६	७।२४	१५	३०	८	८	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	श	३०	५४	ज्ये	४८	३८	ऐ	५७	५६	वि	३०	५४	१३	६।१६	७।२३	१६	३१	९	९	ध. ४८/३८	[illegible]	[illegible]
सिद्धि	१२	र	३७	१९	मू	५६	१४	वै	६०	०	व	४	७	१०	६।१७	७।२३	१७	१	१०	१०	धन	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१३	चं	४३	१५	पू	६०	०	वै	०	३४	कौ	१०	१७	७	६।१७	७।२२	१८	२	११	११	धन	[illegible]	[illegible]
मित्र	१४	मं	४८	३५	पू	३	२८	वि	२	५६	ग	१५	५५	४	६।१८	७।२२	१९	३	१२	१२	म. २/९	[illegible]	[illegible]
पूर्णिमा	१५	बु	५३	१२	उ	१०	११	प्री	४	३४	वि	२०	५३	३३/१	६।१९	७।२१	२०	४	१३	१३	मकर	[illegible]	[illegible]

जुलाई-अगस्त सन् १९८२ वर्षाऋतुःरविः दक्षिणा-उत्तर गोले

नक्तव्रतारंभः कर्केबुधः २३/१३ ग. १२/०४

चंद्रदर्शनं,सिजारापुष्येबुधः ५१/५८ग. १२/०४ तुलायांभौमः ४४/४७ग. ३३/३१

भ. ४६/३६ उ. शिब्यालमा. १०मुस. मधुश्रवातीजवरदचतुर्थीव्रतराष्ट्रीय †

भ. १४/५ या. क्षमणतप.प्रा.जैन † श्रावणप्रा.श्रीतिलकज.,ईदुलफितर ‡

नागपंचमीदेशाचारेऋगश्रावणीकर्म सर्वा. १६/३१ या. ‡ ईद सिंहेभानुः ४८

वर्णषष्ठी

भ. ११/२० उ. ४२/५६ या. श्रीतुलसीजयंती शीतलापूजा सिध

दुर्गाष्टमी सिध चित्रा१शनिः ४१/५० ग. ५३/१

आश्लेषायांबुधः १४/४० ग. १२/४३ सर्वा. ३३/४६ उ.

भ. ५६/५४ उ. कल्कीजयंती



भ. ३०/५४ या. पवित्रा११व्रतंसर्वे.पुनर्वसौशुक्रः ५१/८ ग. ७३/४४ £ सर्वा. ५६/१४ या.

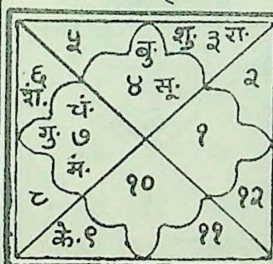
विष्णुपवित्रार्पणंअगस्तमासदता. ३१दधिभक्षणव्रतारंभःतिलकपुण्य £

सोमप्रदोषव्रतं आश्लेषायांरविः ५३/२० सं.स्त्री.चं.चं.वा.मंडूकवर्षा.शुः

भ. ४८/३५ उ. स्वात्यां भौमः ५०/५८ ग. ३५/५४

भ. २०/५३ या. गायत्रीजयंती पूर्णिमाव्रतंयजुःश्रावणीरक्षाबंधनंघ. २०/५३ उ.

※ गोचरग्रहाः ※



अ.१७श्रावणशु.८बु.०।०ग.१०४।

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	६	३	६	२	५	२	८
११	२	१४	८	१५	२३	१८	१८
१	४९	६	८	१५	१७	३२	३२
५१	१८	५१	२१	२५	१९	५७	५७
५७	३४	१२३	५	७३	३	३	३
२०	५४	४	३४	३२	५१	११	११

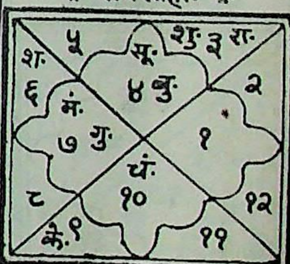
※ मासफलश्रुति. ※

श्रावणपहिले पक्षमें अश्विनीप्यालीजाय । वेववोष्दुर्भिक्ष हो, धरणीकष्ट बनाय ॥ श्रावणबदीमें कृतिकारोहिणी तथासुदी चित्रा-स्वा-विशा.मेंवर्षाहोना सुभिक्षकारक अन्यथाफसलों में न्यूनता । श्रावणकृष्ण कीचीच में, बरसेआधीरात । मासद्वय वर्षाभली कहेभयानी बात ॥ श्रावणकृष्णाचतुर्थी औरपंचमी जोय । गाजे वर्षे दमवमे, सही अमाना होय ॥ श्रावण सुनो पूनमविधान । ऋक्षश्रवण हो उसदिन निधान ॥ अल्पबूंद से कहियेसुकाल । बहुहोववर्षामिध्यव दुकाल ॥ सोना चाय,गुड़, शक्कर,चांवल,आलू,अजवान,मेथी, चना,मसूर, हल्दी,तम्बाकू, मादकद्रव्य,चमड़ा,सूत,ऊन,सुगन्धीद्रव्यमें सुरखी । धान्य,लोह, मशीनरी-कलपुर्जे,तिलहन स्थिरगति । भृङ्गारिकसामान, खनिजपदार्थ,पेट्रोल-डीजल, उर्वरकखाद,रसायन विशेष गति । राष्ट्रीय अकल्पित

अ.१८श्रावणशु.१५बु.०।०ग.१११

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	६	३	६	२	५	२	८
१७	६	२८	८	२३	२३	१८	१८
४३	४५	०	४८	४३	४४	१०	१०
४२	२४	३४	३७	१८	५१	४१	४१
५७	३५	११५	६	७३	४	३	३
२५	५४	२५	३७	४४	२९	११	११

※ गोचरग्रहाः ※



व्यय प्रभार, बदी ३ से ७ तथा १२ से ३० सुदी २ से ५ तथा ९ से १३ मध्य मानसून गति । मेघ गाज, प्राकृतिक प्रकोप, जन-धन क्षति, शकुन— किसी मास की पूर्णिमा को मेघवर्षाकाहोना घी,गेहूं,धान्य में तेजीकर्त्तासमझें ।

योगाः	ति. १५	भाद्रपद कृष्ण पक्षः सं.२०३९ शाकः १९०४										वि.			र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.गतिः	
ध्वज	१	गु	५६	४८	श्र	१५	४८	प्रा	५	३८	वा	२५	०	३२/५८	६।१०	७।२१	२१	५	१४	१४	कुं. ४८/१६	[illegible]	[illegible]
प्रजा.प.	२	शु	५९	२६	ध	२०	४३	सौ	६	११	तै	२८	७	५५	६।१०	७।२०	२२	६	१५	१५	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
आनन्द	३	श	६०	०	श	२४	३१	शो	५	४७	व	३०	१८	५२	६।११	७।२०	२३	७	१६	१६	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
चौथव्रत	३	र	१	११	पू	२७	२८	अ	४	३७	वि	१	११	४९	६।११	७।१९	२४	८	१७	१७	मी. ११/४४	[illegible]	[illegible]
गद्	४	चं	१	२०	उ	२९	१५	सु	२/३७	५९/४६	वा	१	२०	४६	६।१२	७।१८	२५	९	१८	१८	मीन	[illegible]	[illegible]
शुभ	५	मं	०	३८	रे	३०	१०	शू	५५	४४	तै	०	३८	४३	६।१२	७।१७	२६	१०	१९	१९	मे. ३०/१०	[illegible]	[illegible]
क्षय	६	मं	५९	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मृत्यु	७	बु	५६	२०	अ	२९	५३	गं	५१	२४	वि	२७	४१	४०	६।१२	७।१६	२७	११	२०	२०	मेष	[illegible]	[illegible]
जन्माष्ट.	८	गु	५२	३२	भ	२८	१९	वृ	४५	५६	वा	२४	२६	३७	६।१३	७।१६	२८	१२	२१	२१	वृ. ४२/४८	[illegible]	[illegible]
गोगा ९	९	शु	४७	३२	कृ	२५	५१	ध्रु	३९	३८	तै	२०	२	३४	६।१३	७।१५	२९	१३	२२	२२	वृषभ	[illegible]	[illegible]
श्रीवत्स	१०	श	४१	३८	रो	२२	२५	व्या	३२	२०	व	१४	३५	३१	६।१४	७।१४	३०	१४	२३	२३	मि ५०/१०	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	र	३४	३८	मृ	१७	५४	ह	२४	१७	व	८	८	२८	६।१४	७।१३	३१	१५	२४	२४	मिथुन	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१२	चं	२६	५७	आ	१२	२८	व	१५	३४	कौ	०	१७	२५	६।१४	७।१२	३२	१६	२५	२५	क. ५२/५५	[illegible]	[illegible]
स्थिर	१३	मं	१८	३०	पु	६	२५	सि	६/११	५६/१२	व	१८	३०	२२	६।१५	७।१२	१	१७	२६	२६	कर्क	[illegible]	[illegible]
मातंग	१४	बु	१०	१३	पु	०/११	५४/८	व	४७	१३	श	०	१३	१९	३।१५	७।११	२	१८	२७	२७	सिं ५४/८	[illegible]	[illegible]
अमावस	३०	गु	२	१८	म	४८	४७	प	३८	२५	ना	२	१८	३२/१६	६।१६	७।१०	३	१९	२८	२८	सिंह	[illegible]	[illegible]

अगस्त सन्१९८२ वर्षाऋतुः रवि-दक्षिणा-उ.गो.(अ.श्रावणकृ.)

मघासिंहेबुधः२३ग.२१५पंचक४८१६उ.
बुधोदयपश्चिमे४८४६
भ.१५०८उ. † श्रमणतपपूर्ण जैन सर्वार्थि२३७८उ.
भ.११या.कज्जलीतृतीयाव्रतंसातूतीज,चतुर्थीव्रतंचन्द्रो९।४०मि. †
कर्कशुक्रः५१३१ग.५७३७
भ.५२९उ.चंदनषष्ठीव्रतंचंद्रो.१०।३१मि.हलषष्ठीपंचक१३०या. £
£ अमृत१३०उ. ‡ सिंहेऽर्कः१४५९सं.स्त्री.स्त्री.चं.चं.वा.महिषवर्षा.सम.
भ.४३१९या. पुष्येशुक्रः३५४ग.५७३७ ✻ पयुर्षणपर्वारंभःजैन
श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतं दूर्वा८ पूफायांबुधः३१०ग.१०५
गोगानवमी स्वात्यां२गुरुः२५४ग.५७२
भ.३१४५उ.३४२१या. सर्वा.अमृत२३२५य।.
अजा११व्रतंसर्वेस्वतंत्रतादिवस३६प्रा. ✻
सोमप्रदोषव्रतं गोवत्सपूजा बछबारस
भ.३१०८उ.२४१४या. बंगभाद्रपद प्रा.
पितृकार्येकुशग्रहणीपिठोरीअमावस्याकल्पसूत्रपठनजैनमघायां ‡
देवकार्येअमावस्या सतिपूजा अग्र.वशे श्रीवीरजन्मोत्सव जैन

✻ गोचरग्रहाः ✻

श. ५ बु. सू. श. ३
६ ४ शु. २
मं. ७ गु. चं. १
८ १० १२
के. ९ ११

अ.१९भाद्रप.कृ.८गु.०।०ग.११९

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	६	४	६	३	५	२	८
२५	११	१२	९	३	२४	१७	१७
२३	२७	२६	४५	२७	२१	४५	४५
५४	३	२०	४	१९	२९	१४	१४
५७	३७	१०५	७	७३	४	३	३
३४	१२	०	५२	५७	५८	११	११

✻ अथ सिंह संक्रान्ति फलम् ✻

भाद्र.कृ.१२चंद्रेसिंहेऽर्कः प्र.वा.४न.५वा.ना.ध्वांक्षीवैश्यव्यापारी वर्गलाभद,उद्योगधंधाविकास,न.ना.महोदरी तस्करीकार्यतेज, अनैतिकक्रियावृद्धि, रा.३या.व्या. सिनेमा चलचित्र,संगीतज्ञ, नर्तकवर्गपरप्रभारखेद,पूर्वे.ग.ईशा.दृ.गरकरणे उपविष्टामध्यं-फलं,वाहनगज उपवाहनगर्दभ,यातायातसुधार,नवमार्गयोजना गति,रक्तवस्त्र,धनुषायुध, लोहपात्र,दुग्धभक्ष-गोरोचनले.पशु-जा.बिल्वपुष्प,मुकुटभू.श्वेत कंचु,प्रोढ़ाऽवस्था, मु.४५इस्पात, मशीनरी,कलपुर्जे,धात्वादि,शकर,घी,दाणा,सूत,कपास,सोडा मेदाउछल,तिलहन धान्य,दालआनास्थिरगति, प्राकृतिकप्रकोप गतिविशेष, राष्ट्रीय प्रभार । मित्रो.पू.व.पू.रा.उ.मलं स्वर्गे ।

अ.२०भाद्र.कृ.३०गु.०।०ग.१२६

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	६	४	६	३	५	२	८
२	१५	२३	१०	११	२४	१७	१७
७	४१	४४	३६	५९	५६	२२	२२
३५	३९	४८	१७	३५	४३	५८	५८
५७	३८	९३	८	७४	५	३	३
४१	४	२६	४०	१	२४	११	११

✻ गोचरग्रहाः ✻

६ श. बु. शु. ४
मं. ७ चं. ५ रा. ३
गु. सू.
८ २
९ ११ १
के. १० १२

卐इन्द्रधनुषफल–वर्षाहोनेपरइन्द्रधनुष होतोवर्षाबन्द तथापहले होतोवर्षाकरे । पश्चिम दिशाकाधनुषवर्षाकरे । पूर्वकाधनुष पहलेवर्षा न होवेतो वर्षाकर्त्ता, बरसते दिखे सो बंध होवे । सूर्यास्त कालेपूर्वका शीघ्रवर्षा,उत्तरदिशाका अचानकवर्षा दक्षिण [illegible] वर्षाकारक । शु.र.च.म.गुरुवारका धनुष४-५दिन में वर्षाकारक बने ।

योगाः	ति १५	भाद्रपद शुक्लपक्षःसंवत्२०३९ शाकः १९०४											दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
क्षय	१	गु	५५	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
सिद्धि	२	शु	४९	२७	पू	४४	४५	शि	३०	४०	बा	२२	२१	३२/१३	६।१६	७।९	४	२०	२९	२९	क. ५९/८	[illegible]
हरिताल	३	श	४५	३२	उ	४२	१९	सि	२३	४७	तै	१७	२९	१०	६।१६	७।८	५	२१	१	३०	कन्या	[illegible]
चौथव्रत	४	र	४३	४३	ह	४१	४७	सा	१८	३५	व	१४	३७	६	६।१७	७।७	६	२२	२	३१	कन्या	[illegible]
ऋषिपं.	५	चं	४३	५२	चि	४३	४	शु	१४	४०	व	१३	४७	३	६।१७	७।६	७	२३	३	१	तु. १२/२५	[illegible]
ध्वज	६	मं	४५	५२	स्वा	४६	५९	शु	१३	८	कौ	१४	५२	०	६।१८	७।६	८	२४	४	२	तुला	[illegible]
प्रजा.प.	७	बु	४९	५२	वि	५२	१९	ब्र	१२	३९	ग	१७	५२	३१/५६	६।१८	७।५	९	२५	५	३	वृ. ३५/५०	[illegible]
आनन्द	८	गु	५५	१९	अ	५९	१	ऐ	१३	१८	वि	२२	३५	५२	६।१९	७।४	१०	२६	६	४	वृश्चि.	[illegible]
चर	९	शु	६०	०	ज्ये	६०	०	वै	१५	७	वा	२८	१६	४९	६।१९	७।३	११	२७	७	५	वृश्चि.	[illegible]
मूसल	९	श	१	१२	ज्ये	६	५	वि	१७	२१	कौ	१	१२	४५	६।२०	७।२	१२	२८	८	६	ध. ६/५	[illegible]
सिद्धि	१०	र	७	१४	मू	१३	४६	प्री	१९	५८	ग	७	१४	४१	६।२०	७।१	१३	२९	९	७	धन	[illegible]
ए. व्रत	११	चं	१३	३५	पू	२१	१	आ	२२	८	वि	१३	३५	३७	६।२१	७।०	१४	३०	१०	८	म. ३६/४५	[illegible]
प्र. व्रत	१२	मं	१९	१०	उ	२७	५८	सौ	२४	११	बा	१९	१०	३३	६।२२	६।५९	१५	३१	११	९	मकर	[illegible]
छत्र	१३	बु	२३	२४	श्र	३३	४१	शो	२५	१३	तै	२३	२४	२९	६।२२	६।५८	१६	१	१२	१०	मकर	[illegible]
अनन्त	१४	गु	२६	४०	ध	३८	३	अ	२५	११	व	२६	४०	२५	६।२३	६।५७	१७	२	१३	११	कुं. ५/६	[illegible]
पूर्णिमा	१५	शु	२८	१३	श	४१	२०	सु	२४	१८	व	२८	१३	३१/२१	६।२३	६।५५	१८	३	१४	१२	कुम्भ	[illegible]

अगस्त-सितंबर१९८२वर्षा+शरदऋतुःप्रा.रवि-दक्षिणा-उ.गोले

† अमृत ४४।१७ या. आश्ले.शुक्रः ५४।१२ ग. ७।३४
चन्द्रदर्शनंतैलाधरतप.जैनउफायांबुधः ५।३२ ग. ९।२३
जिल्कादमा.११मुस.हरितालिकाव्रतं वराहज.
भ. १।३ ४।७ उ. ४।४ ३।३ या.श्रीगणेशज.पर्युषणपूर्णजैनसर्वा.†
ऋषिपंचमीव्रतंराष्ट्री.भाद्रपदप्रा.कन्यायांबुधः १।१ ०।० ग. ६।४ १।७ कन्या £
सूर्यषष्ठीलोलार्क६अगस्त्योदयः ५।८ ३ £ भानुः ३।३ ६।७ शरदऋतुप्रा.
भ. ४।५ ९।२ उ.मुक्ताभरण७व्रतंविशा.भौमः ५।३ ४।८ ग. ३।० ९ सर्वा.अमृत ५।१ २।९ उ.
भ. २।३ २।५ या.दधिचिजयंतीराधा८लक्ष्मीव्रतप्रा.सर्वा. ५।१ ० या.
श्रीचन्द्रनवमी
सुगंधधूप१०जैन ‡ सू.चं.वा.जंबूक वर्षा.स.हस्तेबुधः ३।२ ९।० ग. ५।१ ९।६
भ. ४।३ ०।४ उ.तेजादशमीमेलारामदेवजी लक्ष्मीव्रतपू.सर्वा. १।४ ३।६ या.
भ. १।३ ३।५ या.जलझूलणी११व्रतंसर्वे.फूलडोलपूफायांरविः ३।५ ५।२ सं.स्त्री.पु. ‡
प्रदोषव्रतंहरिवासराऽभावःवामनज.दधिभक्षणव्रतपू.
सितंबरमा.९ता.३०आर्द्रा३राहुःपूफा.१केतुः ३।९
भ. २।४ ६।० उ. ५।२ ६।६ या.अनंतचतुर्दशी पूर्णिमाव्रतं पंचक. ५।६ उ.मघायांसिंहे *
संध्यापूजाश्राद्धपक्षप्रा.पूर्णिमाश्राद्ध * शुक्रः ४।१ ०।७ ग. ७।१ ५।२

※ गोचरग्रहाः ※

शु. ४ | ६ बु. | मं. ७ | ५ सू. | गु. | रा. ३ | ८ चं. | २ | ९ के. | ११ | १ | १० | १२ | श

अ.२१भाद्रपदशु.८गु.०।०ग.१३३।

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	६	५	६	३	५	२	८
८	२०	३	११	२०	२५	१७	१७
५२	३	५१	३६	३४	३५	०	०
२३	२९	१२	३२	२८	३६	४१	४१
५७	३९	८१	९	७४	५	३	३
५०	०	४७	२९	३	५१	११	११

※ मासफल श्रुतिः ※

अगस्त्य ऊगे मेह न मंडे । जो मंडे तो धारनखंडे ॥ चित्रा स्वातिविशाखड़ी, मावसुदीका अङ्क । मेघगाज बरखानहीं, तो पावस ऋतुमंद ॥ प्रथमायां तिथौ भाद्रेगुरौ श्रवण संयुते अभंगं जायतेवर्षं धनधान्यादि सम्पदाः ॥ भादवासुदी ४,५, ७,८,१५को बादल बिजलीगाज के लक्षणहोतो आगे बहुवर्षा होवे । भाद्रे च शुक्ल पंचम्यां जलं दत्ते न चेद्घनः । दैव-कोपस्तदा ज्ञेयो सज्जनोऽपिचदुर्जनः ॥ भादवा की संक्रान्ति दिवसपर मेघवर्षा, प्राणियोंमें अनेकरोगशोक होवे । अनाज गल्ला,दलहन, तिलहन में आंशिक उठाव सुधार, वाहन यंत्र मशीनरी लोहसामान,कागज,कपूर, साबूदाना,चांदी,भू-गर्भीय पदार्थखनिजसम्पदामेंतेजी । गुरुभौमकासाथहो या समसप्तकयोग । अल्प मेघवायुप्रबल, पीड़ापशुजनरोग ॥ बदी ३से६तथा १२से३०सुदी२से७ तथा११से१४में खंडशःमानसूनगति मेघगाजप्रवर्षण,ऋतुजनितप्रकोप । राष्ट्रीयस्तरपरप्रभार,व्ययकुयोग । मावससे अधिके नखत सस्ताकरेअनाज । हीननखत मावसघनी,तब तेजीकाराज ॥ गु.मं.की युति न्यूनाधिकवर्षासूचकसमझें ।

अ.२२भाद्र.शु.१५शु.०।०ग.१४१।

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	६	५	६	४	५	२	८
१६	२५	१३	१२	०	२६	१६	१६
३६	११	२८	५१	२४	२३	३५	३५
३२	९	१५	६	२३	२६	१४	१४
५८	३९	५९	१०	७४	६	३	३
४	४९	१६	२१	१२	१६	११	११

※ गोचरग्रहाः ※

बु. ६ | श. | ४ | मं. ७ | सू. ५ शु. | गु. | रा. ३ | ८ | २ | चं. ११ | ९ के. | १ | १० | १२

योगाः	ति.	आश्विन कृष्णपक्षः सं. २०३९शाकः१९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
कालदं.	१	श	२८	३७	पू	४३	२०	धृ	२३	१	कौ	२८	३७	[illegible]	६।२३	६।५४	१९	४	१५	१३	मी [illegible]	[illegible]	[illegible]
स्थिर	२	र	२७	५६	उ	४४	९	शू	१९	४०	ग	२७	५६	१३	६।२४	७।५३	२०	५	१६	१४	मीन	[illegible]	[illegible]
चौथ व्र.	३	चं	२६	७	रे	४४	१०	गं	१५	२९	वि	२६	७	९	६।२४	७।५२	२१	६	१७	१५	मे. [illegible]	[illegible]	[illegible]
अमृत	४	मं	२४	१०	अ	४३	१९	वृ	११	४१	वा	२४	१०	५	६।२४	७।५०	२२	७	१८	१६	मेष	[illegible]	[illegible]
कांण	५	बु	२०	१९	भ	४१	४३	ध्रु	६	३९	तै	२०	१९	१	६।२५	७।४९	२३	८	१९	१७	वृ. [illegible]	[illegible]	[illegible]
लूंवक	६	गु	१६	१९	कृ	३९	३१	व्या	[illegible]	[illegible]	व	१६	१९	[illegible]	६।२५	७।४८	२४	९	२०	१८	वृषभ	[illegible]	[illegible]
मित्र	७	शु	११	५९	रो	३६	४६	ह	४८	३४	व	११	५९	५२	६।२६	७।४७	२५	१०	२१	१९	वृषभ	[illegible]	[illegible]
वज्र	८	श	७	७	मृ	३३	४७	सि	४१	४७	कौ	७	७	४८	६।२६	७।४६	२६	११	२२	२०	मि [illegible]	[illegible]	[illegible]
ध्वांक्ष	९	र	१	४३	आ	३०	०	व्य	३४	२६	ग	१	४३	४४	६।२७	७।४५	२७	१२	२३	२१	मिथुन	[illegible]	[illegible]
क्षय	१०	र	५५	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ए. व्रत	११	चं	४९	२५	पु	२५	५८	व	२६	४४	व	२२	३८	४०	६।२७	७।४३	२८	१३	२४	२२	क. [illegible]	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	१२	मं	४३	५	पु	२१	३१	प	१८	३९	कौ	१५	४५	३६	६।२८	७।४२	२९	१४	२५	२३	कर्क	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१३	बु	३६	४७	श्ले	१७	६	शि	१०	४४	ग	९	५६	३२	६।२८	७।४१	३०	१५	२६	२४	सिं [illegible]	[illegible]	[illegible]
मूसल	१४	गु	३०	५७	म	१२	४७	सि	[illegible]	[illegible]	वि	३	५०	२८	६।२९	६।४०	३१	१६	२७	२५	सिंह	[illegible]	[illegible]
अमावस	३०	शु	२५	५१	पू	९	२६	शु	४८	५९	ना	२५	५१	[illegible]	६।२९	६।३९	१	१७	२८	२६	क. [illegible]	[illegible]	[illegible]

सितंबर१९८२शरद-ऋतुःरवि-दक्षिणा उ.गोले (अ.भाद्रपदकृ.)

प्रतिपदाश्राद्ध †स्वात्यां३गुरुः ४८/१९ग.१०/२१ सर्वार्थि४४/९या.

भ.५७/१उ.द्वितीयाश्राद्धशिक्षकदिवसचित्रायां२शनिः३८/३७ग.३/१६ †

भ.२६/७या.तृतीयाश्राद्धपंचक४४/१०या.**चतुर्थीव्रतं**

चतुर्थीश्राद्ध अमृतयोग४३/१९या.



पंचमीश्राद्ध सर्वा.४१/४३उ. ‡ अनुराधायांभौमः३१/४२ग.४१/४

भ.१६/१९उ.४४/९या.षष्ठीश्राद्ध घटि१६उप.सप्तमीश्राद्ध

घटि१२या.७,अष्टमीश्राद्ध**जीवित्पुत्रिकाव्रतं**वृश्चिकेभौमः१०/२४ग.४०/३४

सौभाग्यवतीनवमीश्राद्ध **मातृनवमी**विनोवाज.

भ.२८/४६उ.५५/५०या.दशमीश्राद्ध ⊕ वक्रीबुधः२०/१४रा.५/२३।४०/११



£ ३६/५४ग.७४/२१सं.स्त्री.स्त्री.सू.चं.वा.चातकवर्षायो.सर्वा.२५/२८उ.

इंदिरा११व्रतंस्मा.भाग.एकादशीश्राद्धउफायांरवि.८१/१२पूफायांशुक्र £

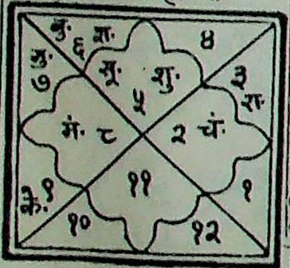
इंदिरा११व्रतंनिम्बा.द्वादशीसन्यासीनांश्राद्ध सर्वा.३१/३१उ.

भ.३६/४७उ.**प्रदोषव्रत**त्रयोदशीश्राद्धकलियुगादिचित्राबुधः३४/१९ग.३३/३० ‡.

भ.५३/०या **शस्त्रादीनाह** तस्यचतुदर्शीश्राद्धकन्यायामर्कः४६/३३

सर्वपितृअमावस्याबङ्गआश्विनप्रा.**विश्वकर्मापूजा**श्रमदिवस ⊕

※ गोचरग्रहाः ※



अ.२३आश्विव.कृ.८श.०।०ग.१४९

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	७	५	६	४	५	२	८
२४	०	२०	१४	१०	२७	१६	१६
२२	२७	४६	१२	१७	१४	९	९
३०	२०	४८	३५	५७	०	४७	४७
५८	४०	३३	११	७४	६	३	३
१९	३४	३०	६	२४	३२	११	११

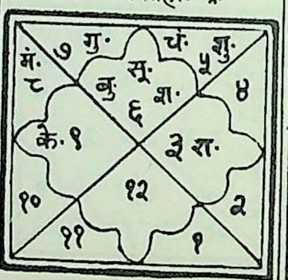
※ अथ कन्या संक्रान्ति फलम् ※

प्र.आश्वि. कृ.१४ गुरो कन्यायामर्कः प्र.वा.४न.५वा.ना.नन्दा वैज्ञानिकप्रगति, अनुसंधानगति, साहित्यविकास, विद्वानोंको सुलाभ,न.ना. घोरादलितहीनवर्गकल्याणयोजना, लाभांश,रा. श्या.ब्या.संगीतज्ञएवं नृत्यकारोंकीपीड़ा,चलचित्रप्रभाव,पू.ग. आग्ने.दृ. चतुष्पदकरणे सुप्ता नेष्टफलदेवकोप, वाहनमेषउप-वाहनमहिषयातायातअवरोध, संचारअव्यवस्था, जनधनक्षति, कंबलवस्त्र,अंकुशायुध,करपाल,मधु.भ.सिंदूरले.वैश्यजा.मोगरा पुष्प,नीलभू., चर्मकंचु, अतिवन्ध्याऽवस्था मु.३०सूत,कपास, ऊन,चमड़ा,शकर,गुड़,चाय,खनिजपदार्थतेज,धान्य,दालबाना, तिलहनसमधात्वानिमेमधार। सितो.पू.व.उ.रा.उ.मूलस्वर्गे।

अ.२४आश्वि.कृ.३०शु.०।०ग.१५५

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	७	५	६	४	५	२	८
०	४	२३	१५	१५	२७	१५	१५
१३	२७	३९	१७	४१	५३	५०	५०
१८	९	१५	१०	५३	३०	४१	४१
५८	४१	२	११	७४	६	३	३
२९	४	४६	३५	२४	४७	११	११

※ गोचरग्रहाः ※



卐 अथ भद्रापरिहार— कुंभ,मीन,कर्क,सिंह राशिके चन्द्र रहते भद्रा पूर्ण अशुभ तथा शेष समय की अशुभ नहीं। पुनः शुक्लपक्षे ४-११ तिथि एवं कृष्णपक्ष में ३-१०तिथि वाली भद्रा दिनमें शुभ तथा शुक्लपक्षे ८-१५तिथि तथा कृष्णपक्षे ७-१४ तिथिमें रात्रि में भद्रा शुभ। विशेषकर भद्रा व्यतीपात आदि कुयोग मध्याह्नकाल के बाद नेष्ट नहीं शास्त्र वचन है।

योगाः	ति.	संसर्प आश्विन शु.पक्षः सं.२०३९शाकः१९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
नवरात्र	१	श	२२	६	उ	६	५२	शु	४३	३८	व	२२	६	३/०	६।३०	६।३८	२	१८	२९	२७	कन्या	[illegible]	[illegible]
मानस	२	र	२०	४	ह	५	५६	ब्र	४०	९	कौ	२०	४	१७	६।३०	६।३७	३	१९	१	२८	तु. ३६/१५	[illegible]	[illegible]
मुद्गर	३	चं	१९	४३	चि	६	३५	ऐ	३८	२४	ग	१९	४३	१३	६।३१	६।३६	४	२०	२	२९	तुला	[illegible]	[illegible]
ध्वज	४	मं	२१	३८	स्वा	९	५	वै	३७	२२	वि	२१	३८	९	६।३१	६।३५	५	२१	३	३०	वृ. ५६/१६	[illegible]	[illegible]
प्रजापति	५	बु	२५	१	वि	१३	२२	वि	३८	४	वा	२५	१	५	६।३१	६।३३	६	२२	४	३१	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]
आनन्द	६	गु	३०	८	अ	१९	७	प्री	३९	३८	तै	३०	८	१	६।३२	६।३२	७	२३	५	१	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]
चर	७	शु	३५	५४	ज्ये	२५	५४	आ	४१	३९	ग	२	४६	२९/५७	६।३२	६।३१	८	२४	६	२	ध. २५/५४	[illegible]	[illegible]
दुर्गापूजा	८	श	४१	५९	मू	३३	२२	सौ	४३	५६	वि	८	५१	५३	६।३३	६।३०	९	२५	७	३	धन	[illegible]	[illegible]
दुर्गा नव.	९	र	४८	१७	पू	४०	४७	शो	४६	४१	बा	१५	८	५०	६।३३	६।२९	१०	२६	८	४	म. ५७/३६	[illegible]	[illegible]
विजया	१०	चं	५३	५२	उ	४८	२	अ	४८	६	तै	२१	४	४६	६।३४	६।२८	११	२७	९	५	मकर	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	मं	५८	१८	श्र	५४	५	सु	४८	५०	व	२६	५	४२	६।३४	६।२७	१२	२८	१०	६	मकर	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	१२	बु	६०	०	ध	५८	५२	धृ	४८	३३	व	२९	४७	३८	६।३४	६।२५	१३	२९	११	७	कुं. २६/२८	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१२	गु	१	१७	श	६०	०	शू	४६	५६	बा	१	१७	३४	६।३४	६।२४	१४	३०	१२	८	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
सौम्य	१३	शु	२	२७	श	२	११	गं	४३	५२	तै	२	२७	३०	६।३५	६।२३	१५	१	१३	९	मी. ४८/१४	[illegible]	[illegible]
शरद	१४	श	२	११	पू	२	३७	वृ	३९	३५	व	२	११	२६	६।३५	६।२२	१६	२	१४	१०	मीन	[illegible]	[illegible]
पूर्णिमा	१५	र	०	२३	उ	३	४०	ध्रु	३५	०	व	०	२३	२९/२२	६।३६	६।२१	१७	३	१५	११	मीन	[illegible]	[illegible]

सितंबर-अक्टू.१९८२ शरद-ऋतुःरवि-दक्षिणा-उ.दक्षिण गोले

चंद्रदर्शनं नवरात्रि प्रा. घट स्था. श्रीअग्रसेनज. मातामहश्राद्धम् †
जिल्हजमा.१२मुस.सर्वा.अमृत.५/६या.
भ.५/४ ०/०उ. † संसर्पोऽधिमासःव्रतकर्मादिसम्मतःप्राकृतःशुद्धः
भ.२/२ १/८या. £ रविः५/३ ०/९सं.स्त्री.पु.सू.चं.वा.गजवर्षायो. ‡ बकराईद
उपाङ्गललिताव्रतंसर्वा.अमंत१/२ ३/२उ.वक्रीहस्तेबुधः२/२ ३/२ग.४/४ ७
राष्ट्रीयआश्विनप्रा.सर्वा.१/७ ९या.तुलायांभानुः३/४ ०/१रविदक्षिणगोले
भ.३/४ ५/४उ.नवपदऔलीप्रा.उफायांशुक्रः१/१ ४/६ग.७/२ ४/६स्वाति४गुरुः१/४ ५/२ग.१/१ २/१
भ..८/१या महादुर्गाष्टमीपूजासरस्वतीआवाहनं बुधास्तप.१/१ ०/६
श्रीदुर्गानवमीसरस्व.पूजासर्वा.४/४ ०/७उ.कन्याशुक्रः५/१ ५/२ग.७/२ ४/६हस्तेः £
विजयादशमीदशहरा सरस्व.बलि.रावणमेला शमीपूजासर्वा.४/२ ८उ.
भ.२/५ ६उ.५/१ ८/८या.पाशांकुशां११व्रतंस्मा.भा.सरस्व.विसर्ज.ईदुज्जुहा ‡
पाशाकुशां११व्रतंनिम्व.राष्ट्रभाषादिवसपंचक३/२ ६/८उ.
प्रदोषव्रतम् * नवपदऔली पू॰जेन. गांधीजयंती
अक्टूम्बरमा.१०ता.३१अस्तंशनिःप.३/४ ०/९
भ.१/१ २/२उ.३/१ १/७या.शरदपूर्णिमाव्रतंकोजागरीव्रतं *
श्रीवाल्मीकिजयंतीसर्वा.४/४ ३/०या. कृषककभूमिपूजा कार्त्तिकस्नानप्रा.

※ गोचरग्रहाः ※

गु.७ | सू. | ५ शु.
मं.८ | बु. ६ श. | ४
चं.९ के. | ३ रा.
१० | १२ | २
११ | १

अ.२५संसर्पआश्वि.शु.८श.०।०ग.१६३

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	७	५	६	४	५	२	८
८	९	२१	१६	२७	२८	१५	१५
२	५६	२१	४९	३६	४८	२५	२५
३५	२४	४६	१	४७	८	१४	१४
५८	४१	४७/४	१२	७४	७	३	३
४५	४८	+	११	२६	२	११	११

※संसर्पअधिमासविधान※

संसर्प विशिष्ट संज्ञा का अधिमास, अधिमास होने पर भी निर्णयसिंधु,धर्मसिंधु धर्मशास्त्रवचनानुसार व्रतकर्मादि सम्मत शुद्धमानाहै,केवल मांगलिक विवाहादिक मुहूर्त्तादि हेतुनिषेध है। इस अधिमास निमित्त स्नान-दान कथा-श्रवण का भी नियम नहीं है। यथा- "संसर्पे नाधिमासिकम्, कालस्याना-धिक्यात्" संसर्पत्वान्मलमासत्वाभावाच्च पुरुषोत्तममासवत् किमपि दानादिकं व्रतोद्यापनं कथाश्रवणं दीपस्थापनं स्नानं अपूपदानादिकं तयोर्न कर्त्तव्यं परन्तु क्षयमासात्परेयोऽधिकः फाल्गुनः एव तस्य मलमासत्वात् पुरुषोत्तम अधिमास योग्यं विधानं कर्त्तव्यं। इति धर्म शास्त्रकाराणां वचनैर्ज्ञायते एवं स्पष्टमेतद् ॥ कतिपय पंचाङ्गों में इन सर्वमान्य धर्मसिन्धु-निर्णयसिंधु आदि प्रमुख धर्मकाल निर्णायक आर्ष ग्रन्थ वचनों की अवज्ञा करके क्षयसेपूर्ववर्त्ति इसआश्विन अधिमासको अधिक-मलमासतुल्यमाना जबकि★संसर्प★शब्दकाप्रयोग धर्म-ग्रन्थों ने माना है। एवं भावी क्षयमाससे पहलेवाला अधिमास होकरभी संसर्प शुद्धव्रतकर्मादि सम्मत आश्विनमासशुद्ध है।

अ.२६संसर्पआश्वि.शु.१५र.०।०ग.१७१

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	७	५	६	५	५	२	८
१५	१५	१४	१८	७	२९	१४	१४
५४	३०	२५	१९	३७	४५	५९	५९
८	२४	५९	६	५९	१	४६	४६
५९	४२	३०/११	१२	७४	७	३	३
२	२८	+	३५	२९	११	११	११

※ गोचरग्रहाः ※

गु.७ | सू. | ५
मं.८ | बु. ६ शु. श. | ४
के.९ | ३ रा.
१० | १२ चं. | २
११ | १

योगाः	ति	संसर्पकार्तिक कृ.पक्षः सं.२०३९शाकः१९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
क्षय	१	र	५७	४९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मातंग	२	चं	५३	१६	रे	२	३४	व्या	२८	५६	तै	२५	२०	[illegible]	६।३६	६।२०	१८	४	१६	१२	मे. २/३४	[illegible]	[illegible]
अमृत	३	मं	४८	२६	अ	०/१७	५७/२२	ह	२१	५५	व	२०	२१	१५	६।३७	६।१९	१९	५	१७	१३	मेष	[illegible]	[illegible]
चौथव्रत	४	बु	४३	१३	कृ	५४	७	व	१४	२९	व	१५	२१	११	६।३८	६।१८	२०	६	१८	१४	वृ. ११/३२	[illegible]	[illegible]
उत्पात	५	गु	३७	५६	रो	५०	३७	सि	०/१	[illegible]	कौ	१०	३४	७	६।३८	६।१६	२१	७	१९	१५	वृषभ	[illegible]	[illegible]
मानस	६	शु	३२	३८	मृ	४७	४	व	५२	४	ग	५	१७	२	६।३८	६।१५	२२	८	२०	१६	मि. १९/१०	[illegible]	[illegible]
मुद्गर	७	श	२७	२०	आ	४३	३६	प	४४	५३	व	२७	२०	[illegible]	६।३९	६।१४	२३	९	२१	१७	मिथुन	[illegible]	[illegible]
ध्वज	८	र	२२	१६	पु	४०	१९	शि	३८	२४	कौ	२२	१६	५४	६।३९	६।१३	२४	१०	२२	१८	क. २६/८	[illegible]	[illegible]
प्रजाप.	९	चं	१७	७	पु	३७	५	सि	३२	१४	ग	१७	७	५०	६।४०	६।१२	२५	११	२३	१९	कर्क	[illegible]	[illegible]
आनन्द	१०	मं	१२	१७	श्ले	३४	९	सा	२६	११	वि	१२	१७	४६	६।४१	६।११	२६	१२	२४	२०	सि. ३४/९	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	बु	७	४७	म	३१	३७	शु	२०	१९	बा	७	४७	४२	६।४१	६।१०	२७	१३	२५	२१	सिंह	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१२	गु	३	४७	पू	२९	३४	शु	१४	३५	तै	३	४७	३८	६।४२	६।९	२८	१४	२६	२२	क. ४४/१३	[illegible]	[illegible]
शुभ	१३	शु	०	२८	उ	२८	१०	ब्र	९	२	व	०	२८	३४	६।४२	६।८	२९	१५	२७	२३	कन्या	[illegible]	[illegible]
क्षय	१४	शु	५७	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दीपावली	३०	श	५६	४६	ह	२७	४९	ऐ	[illegible]	[illegible]	च	२७	१९	[illegible]	६।४३	६।७	३०	१६	२८	२४	तु. [illegible]	[illegible]	[illegible]

अक्टुम्बर सन् १९८२ शरदऋतुः रवि-दक्षिणा, दक्षिण-गोले

द्वि.आश्वि.कृ.पक्ष परश्चसंसर्पअधिमासःप्राकृतःनित्यव्रतकर्मादिहेतु †

हस्तेशुक्रः ५४/२२ग. ७४/२९ज्येष्ठायांभौमः ३९/५०ग. ४२/२८पंचक २/३४या.

भ. २०/२१उ. ४९/२६या.चित्रायां३तुलायांशनिः ५/३ग. ७/११अमृत ०/१७या.

करकचतुर्थीव्रतंचंद्रो.८घं.५५मि.वक्रीउफायांबुधः ४/७ग. ५०/११सर्वा. ५/७या

पद्मप्रभुज.जैन † धर्मशास्त्रसम्मतःका.कृ.पक्षः

भ. ३२/३८उ. ५९/५९या.बुधोदयःपूर्वे ३९/२७

अहोईअष्टमी चन्द्रोदये सर्वा. ४०/१०उ. £ मंडूकवर्षा.यो.

अहोईअष्टमीउदये चित्रायांरवि: ३१/४०सं.स्त्री.स्त्री.सू.चं.वा. £

भ. ४४/४२उ. **पुष्यनक्षत्रसर्वा.सि.** ३/५७या.मार्गीबुधः २१/[illegible]ग. [illegible] ‡

भ. १२/१७या.सर्वा.सि. ३४/०या. ‡ विशाखागुरुः ०/५ग. १३/१

रमा११व्रतंसर्वे. शुक्रास्तः पूर्वे ४०/१२ताराअस्त. ★

प्रदोषव्रतं धनत्रयोदशी श्रीधन्वन्तरीज.

भ. ०/२८उ. २०/५०या.**रूपचतुर्दशी नरक** १४हस्तेबुधः ३४/१० *

* ग. ४५/२६चित्रायांशुक्रः ३९/४८ग. ७४/३२ ✠ **महावीरनिर्वाण**

श्रीमहालक्ष्मीपूजा दीपोत्सवःदेवपितृकार्येऽमावस्या ✠

❊ गोचरग्रहाः ❊

गु. ७ श. | सू. बु. ६ शु. | ५ | मं. ८ | ४ | के. ९ | चं. ३ रा. | १० | १२ | २ | ११ | १

अ.२७सं.कार्त्ति.कृ.८र.०।०ग.१७८

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	७	५	६	५	६	२	८
२२	२०	८	१९	१६	०	१४	१४
४८	३०	१०	४४	२२	३६	३७	३७
४०	०	४४	५१	१०	१४	३०	३०
५९	४२	१३/४१	१३	७४	७	३	३
१६	५०	+	१	३२	१७	११	११

❊ संसर्पअधिमासविधान श्रुतिः ❊

क्षयमाससे पहलेहोनेवाले अधिमासकोधर्मशास्त्रमें संसर्पशुद्धः प्राकृत संज्ञा दी है। अतः द्वितीय आश्विन पक्ष नहीं रखते, नित्यकर्म उपयुक्तव्रतादि हेतु क्रमशः कार्त्तिकमास आया है। गुरुशुक्र का अस्तहो या तिथीकी क्षयवृद्धिबने,अथवा क्षयमास वालेवर्षमें क्षयसेपूर्वका अधिमास होवे। धर्मशास्त्रीय नियम से उपरोक्तस्थिति बननेपर नित्यके व्रतोत्सवकर्मादि का हनन नहींहोताहै,अपितु नित्यस्थान न्यासपद्धतिसेही मान्यहोतेआये हैं। केवल इस स्थिति में विवाहादिक, मांगलिक मुहूर्त्तों के प्रसाधन हेतु ही समयशुद्धि नहींरहती है, साथही गणितागत तर्क भी है कि क्रमशः अधिवेशनके बढ़ते रहने पर ही प्रति तीसरेवर्ष १अधिकमलमास बनजाता है,अब यदि आश्विन अधिक होवेतो क्षयमास केबाद यकायकइतना नित्यका अधिशेष नहीं बन सकता, कि शीघ्र ही एक अधिकमास और बने, जबकि नियम यह है कि [illegible] बाद अधिमास बनता है। तदर्थ ही धर्मशास्त्रियों ने क्षय से पूर्ववर्त्ति को ★ संसर्प ★ संज्ञा विशेष प्रदान की है।

अ.२८सं.कार्त्ति.कृ.३०श.०।०ग.१८४

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	७	५	६	५	६	२	८
२८	२४	१०	२१	२३	१	१४	१४
४५	४७	२०	३	४६	१९	१८	१८
८	३२	०	५१	२२	१२	२५	२५
५९	४३	४६/२६	१३	७४	७	३	३
२७	१५	मा.	१५	३०	२०	११	११

❊ गोचरग्रहाः ❊

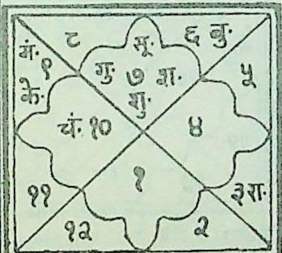
गु. ७ श. | सू. बु. ६ शु. चं. | ५ | मं. ८ | ४ | के. ९ | ३ रा. | १० | १२ | २ | ११ | १

योगाः	ति. १६	कार्त्तिक शुक्ल पक्षः सं.२०३९शाकः१९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.गतिः	
पद्म	१	र	५६	४९	चि	२८	४९	वि	५६	३२	कि	२६	४७	२८/२७	६।४३	६।६	१	१७	२९	२५	तुला	[illegible]	[illegible]
छत्र	२	चं	५८	३०	स्वा	३१	३	प्री	५५	१९	वा	२७	३९	२३	६।४४	६।५	२	१८	३०	२६	तुला	[illegible]	[illegible]
श्रीवत्स	३	मं	६०	०	वि	३४	५२	आ	५४	४१	तै.	२९	३९	१९	६।४४	६।४	३	१९	१	२७	वृ. १६/५५	[illegible]	[illegible]
सौम्य	३	बु	१	४९	अ	३९	५९	सौ	५४	५८	ग	१	४९	१५	६।४५	६।३	४	२०	२	२८	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]
कालदं	४	गु	५	३२	ज्ये	४६	२३	शो	५६	२२	वि	५	३२	११	६।४६	६।२	५	२१	३	२९	ध. ४६/२३	[illegible]	[illegible]
स्थिर	५	शु	१०	५५	मू	५३	३२	अ	५८	२५	वा	१०	५५	७	६।४६	६।१	६	२२	४	३०	धन	[illegible]	[illegible]
मातंग	६	श	१७	१४	पू	६०	०	सु	६०	०	तै	१७	१४	३	६।४७	६।०	७	२३	५	१	धन	[illegible]	[illegible]
शुभ	७	र	२३	३३	पू	१	११	सु	०	४७	व	२३	३३	०	६।४७	५।५९	८	२४	६	२	म. १६/३२	[illegible]	[illegible]
मृत्यु	८	चं	२९	२५	उ	८	३४	धृ	३	२	व	२९	२५	२६/५७	६।४८	५।५९	९	२५	७	३	मकर	[illegible]	[illegible]
लुंबक	९	मं	३४	३२	श्र	१५	२५	शू	४	५९	वा	१	५७	५४	६।४८	५।५८	१०	२६	८	४	कुं. ४८/६	[illegible]	[illegible]
मित्र	१०	बु	३८	४	ध	२०	४८	गं	५	५४	तै	६	१८	५०	६।४९	५।५७	११	२७	९	५	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	गु	३९	५८	श	२५	०	वृ	५	४६	व	९	१	४७	६।५०	५।५७	१२	२८	१०	६	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
ध्वांक्ष	१२	शु	४१	१३	पू	२७	८	ध्रु	४	१०	व	१०	३८	४४	६।५०	५।५६	१३	२९	११	७	मी. ११/३६	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१३	श	३९	१५	उ	२७	२३	व्या	१/१४	५६/३९	कौ	१०	१४	४१	६।५१	५।५५	१४	३०	१२	८	मीन	[illegible]	[illegible]
प्रवर्ध	१४	र	३५	२८	रे	२५	५३	व	५०	२९	ग	७	२१	३७	६।५१	५।५४	१५	३१	१३	९	मे. २५/१३	[illegible]	[illegible]
पूर्णिमा	१५	चं	३०	१६	अ	२२	५३	सि	४३	२१	वि	२	५२	२७/३४	६।५२	५।५४	१६	१	१४	१०	मेष	[illegible]	[illegible]

अक्टुम्बर-नवंबरसन्१९८२शरद+हेमंतऋतुः रवि-दक्षिणा-द.गो.

अन्नकूट गोवर्धनपूजा,वंगकार्त्तिकप्रा.तुलायामर्कः १/२ १/६ सं.२०३९गुज.†
चंद्रदर्शनं यमद्वितीयाभाईदूज,द्वि.आश्वि.शु.प.संसर्पत्वादकार्त्ति.शु.£
मोहर्रममा.१मुस हिज.१४०३प्रा. A ◡ £ व्रतावौधर्मशास्त्रसम्मत
भ.३/४ ३/०उ.तुलायांशुक्रः५/५ ०/३ग.७/३ ४/६सर्वा.अमृत३/५ ९/२या. † व्यापारे,पटेलज.
भ.५/३ २या. ‡ १/३ २ग.४/४ ३/१स्वात्यांरविः५/२ ७/८सं.स्त्री.पु सू.चं.वा.मूषक ⊕
सौभाग्यपंचमी जैन ⊕वर्षा.यो.वृश्चिकेभानुः४/३ १/१ हेमंतऋतुःप्रा.
सूर्यषष्ठीडालाछठरा.कार्त्ति.प्रा.चौमासीअष्टा.जैनमूलेघनेचभौमः‡
भ.३/३ ३/३उ.५/२ ६/९या.सहस्त्राऽर्जुनज.कल्पादिसर्वा.१/१उ.
गोपाष्टमी मेंहदीरातमुस.सर्वा.६/३ ४उ. A संवत्स.१०धाताप्रा.१/२ ३/८
अक्षयआंवला९कृतयु.पंचक४/६ ८उ.चित्राबुधः७/३ ३स्वातिशुक्रः१/१ २/९ ⊖
कत्लरातमुस. ※ भीष्मपंचकव्रतप्रा. ताजियामुस.
भ.९/१उ.३/५ ९/८या.देवप्रबोधिनी११व्रतंसर्वे.चातुर्मासपू. तुलसीविवाह ※
मन्वा.बुधास्तःपू.४/२ ५/५ *नवम्बरमा.११ता.३०मन्वादिचित्रा४शनिः३/३ ६/३
प्रबोधव्रतं जैनदिवा.चौथज.तुलाबुधः५/४ ७ग.९/२ ६/२ ⊖विशा.२गुरुः४/२ ३/०
भ.३/२ ५/८उ.वैकुण्ठ१४सर्वा.३/५ ५/३उ.पंचक२/५ ५/३या.गुर्वस्तःप.२/० १
भ.५ २/२या.पूर्णिमाव्रतंनिम्बार्कज.नानकज.कार्त्तिकस्ना.पू.पुष्कर मेला*

※ गोचरग्रहा ※



अ.२९कार्त्तिकशु.८चं.०।०ग.१९३

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	८	५	६	६	६	२	८
७	१	२१	२२	५	२	१३	१३
४२	२६	३९	५६	९	२५	४९	४९
१०	२०	४०	४९	५०	८	४८	४८
५९	४३	८९	१३	७४	७	३	३
४३	४१	३२	२७	३६	२०	११	११

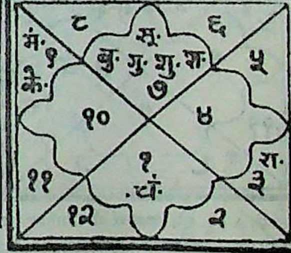
※ अथ तुला संक्रान्ति फलम् ※

कार्त्ति.प्र. १रवौतुलायामर्कःप्र.वा.४न.४वा.ना.घोरा हरिजन दलितवर्गउत्थान,गृहसुखलाभ,नक्ष.ना.मंदा.राष्ट्रहितमेंविविध योजना, राष्ट्रनायक प्रभार-खेद, मध्या.व्या. दक्षि.ग.वाय.दृ. किस्तु क.उत्ति.मंदीधारक,वाहन,कुक्कुटउप.वा.वानरप्राकृतिक प्रकोप,जन-धनहानि,सचिवगण परप्रभार,श्याम व.बाणायुद्ध, काष्टपात्र,शर्कराभ.कपूरले. संक्रान्ति, जपापुष्प,स्वर्णभू.पांडु-कंच,प्रवा.अव.मु.३०धात्वादि तथा लोहा, सोना,कपास,दाणा उन्नत,धान्य,दालें,तिलहन स्थिरगति । शुक्रास्त पूर्वं वत्स पूर्वं राहु उत्तरे मूलं भूमौ । कालसर्पयोगः अशुभकारी । ५ ग्रहों कीयुति ऋतुप्रकोप की परिचायकबने दक्षिणभारतेविशेषता।

अ.३०कार्त्तिकशु.१५चं.०।०ग.२००

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	८	६	६	६	६	२	८
१४	६	३	२४	१३	३	१३	१३
४१	३८	४	२८	५६	१५	२७	२७
४७	५०	२४	२४	१७	३५	३१	३१
५९	४४	९६	१३	७४	७	३	३
५९	३	४८	३२	३२	१५	११	११

※ गोचरग्रहाः ※



卐 गर्भस्थ जीवप्रश्न– गर्भ-जीव पुत्र या कन्या इस हेतु प्रश्न दिन के तिथि,वार,नक्षत्र,घात एवं समयाधार सं... उक्त भाग देवें । शेष २-४-६ रहे तो कन्या अथवा १-३-५-७ शेष पुत्र जन्म । इसी प्रकार के अन्य प्रश्नफल ज्ञान हेतु "प्रश्न-विचार" पुस्तक सैट मूल्य ५) रु. का मंगा लेवें । निर्णयसागर पंचाङ्ग कार्यालय, नीमच छावनी (म. प्र.)

योगाः	ति.	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः सं. २०३९ शाकः१९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु	भा	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
मूसल	१	मं	२३	५९	भ	१८	४१	व्य	३५	२७	कौ	२३	१९	३/३ ७/०	६।५३	५।५३	१७	२	१५	११	वृ. ३२/२६	[illegible]	[illegible]
सिद्धि	२	बु	१७	७	कृ	१३	४४	व	२६	५४	ग	१७	७	२७	६।५४	५।५३	१८	३	१६	१२	वृषभ	[illegible]	[illegible]
घोष व.	३	गु	१०	३	रो	८	३४	प	१८	११	वि	१०	३	२४	६।५४	५।५२	१९	४	१७	१३	मि. ३/५ १/९	[illegible]	[illegible]
मानस	४	शु	३	३	मृ	३/२६	१८/३१	शि	९	३१	बा	३	३	२१	६।५५	५।५१	२०	५	१८	१४	मिथुन	[illegible]	[illegible]
क्षय	५	शु	५६	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
छत्र	६	श	५०	३५	पु	५४	२३	सि	०/५४	१२/१७	ग	२३	३१	१७	६।५५	५।५०	२१	६	१९	१५	क. ४०/२६	[illegible]	[illegible]
श्रीवत्स	७	र	४५	१३	पु	५०	४४	शु	४५	४५	त्रि	१७	५३	१४	६।५६	५।५०	२२	७	२०	१६	कर्क	[illegible]	[illegible]
सौम्य	८	चं	४०	५०	श्ले	४७	५९	शु	३९	१	बा	१३	१	११	६।५७	५।४९	२३	८	२१	१७	सिं. ४७/१९	[illegible]	[illegible]
कालदं.	९	मं	३७	९	म	४५	५८	ब्र	३२	४४	तै	८	२९	८	६।५८	५।४९	२४	९	२२	१८	सिंह	[illegible]	[illegible]
स्थिर	१०	बु	३४	२२	पू	४४	५०	ऐ	२७	१७	व	५	४५	५	६।५८	५।४८	२५	१०	२३	१९	क. १९/४७	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	गु	३२	२९	उ	४४	३८	बै	२२	३१	ब	३	२६	१	६।५९	५।४७	२६	११	२४	२०	कन्या	[illegible]	[illegible]
अमृत	१२	शु	३१	३७	ह	४५	३३	वि	१८	३२	कौ	२	३	२६/५८	७।०	५।४७	२७	१२	२५	२१	कन्या	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१३	श	३१	४४	चि	४७	३१	प्री	१५	२१	ग	१	४०	५५	७।०	५।४६	२८	१३	२६	२२	तु. १६/३२	[illegible]	[illegible]
लुंबक	१४	र	३२	४७	स्वा	५०	२०	आ	१३	१०	वि	२	१६	५२	७।१	५।४६	२९	१४	२७	२३	तुला	[illegible]	[illegible]
सोमवती	३०	चं	३५	३६	वि	५४	१७	सौ	११	४८	च	४	१२	२५/४८	७।२	५।४५	३०	१५	२८	२४	वृ. ३८/१८	[illegible]	[illegible]

नवम्बर सन् १९८२ हेमंतऋतुः रविः दक्षिणायणे-दक्षिण-गोले

सर्वार्थे १८/४१ उ. कार्त्तिककृ. पक्षःपरन्तु नित्यमासव्रतादौ मार्ग. कृष्णपक्षः

भ. ४३/३५ उ सर्वार्थे ५/० या. स्वात्यांबुधः १३/३५ ग. ९५/४८ आर्द्रा२राहुः †

भ. १/३ ०या. **चतुर्थीव्रतम्** † मूले४केतुः ३१/४१

सुविधानाथजन्म + दीक्षाजैनविशाखायांशुक्रः ५६/१३ ग. ७४/३८ उदयंशनिः £

£ पूर्वे ३/२ ०

भ. ५०/३५ उ. विशाखायां रविः १७/५१

भ. १७/५३ या. सर्वार्थसिद्धिः १०/४४ या.

श्रीकालभैरवाष्टमी भैरवउत्पत्तिः

पूषायां भौमः ५६/२६ ग. ४४/२७

भ. ५/४६ उ. ३४/२२ या. श्रीमहावीरस्वामीदीक्षाजैनविशायां३गुरुः ५६/१९ ग. १३/३६

उत्पत्ति११व्रतंसर्वे. पद्मप्रभुमोक्षजैन विशाखायांबुधः १७/३१ ग. ९९/२३

म. मालवीय पुण्यः

भ. ३१/४४ उ. **शनिप्रदोषव्रतं**सर्वार्थे ४७/३१ उ. वृश्चिकेशुक्रः ४६/३६ ग. ७४/३८

भ. २/१६ या. **बालदिवस** नेहरूजन्मदिवस

देवपितृकार्ये **सोमवती अमावस्या पुण्यः** सर्वार्थे १४/१७ उ.

✻ गोचरग्रहाः ✻

मं. ९ के.
८
सू. बु. शु. गु. श.
७
६
५
१०
४ चं.
११
१
३ रा.
१२
२

अ.३१मार्गशीर्षकृ ८चं.०।०ग.२०७।

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	८	६	६	६	६	२	८
२१	११	१४	२५	२२	४	१३	१३
४२	५२	३२	५९	४३	५	५	५
१३	१२	२०	३५	५६	४९	१४	१४
६०	४४	९९	१३	७४	७	३	३
१३	२७	२३	३६	३८	६	११	११

✻ मासफलश्रुतिः ✻

मंगसर बादलबिजली, जिननक्षत्रहोय। नखतआषाढ़ीबरसते, वाक्य भवानीजोय ॥ मृगशिरबदि आठेदिन बरसे, सो मेघा भर श्रावणबरसे। मंगसरसुदी आठेदिन बरसे, सो मेघा भर श्रावणबरसे ॥ मार्गशुक्ला एकादश्यां शनिवारो यदाभवेत्। जलशोषं प्रजा नाशं सस्ता द्वन्द्वं विनिर्दिशेत् ॥ गुरु शुक्रोदय-श्चास्तो यदा वै मार्ग मास के। देशान्तरं च गच्छंति तदा क्षुत्पीड़िता जनाः ॥ मंगसर कृष्णा चतुर्दशी स्वाति नखत कुजोग। अल्पवृष्टि श्रावणबने, कहे भवानी जोग ॥ चारपांच ग्रहयोग हैं, तुलातत्व से सकृत। वृष्टि अथवा रक्तसे धरणी भोगे रकृ ॥ समसप्तक शनि गुरु रहें, अथवा हो इक ठोर। प्रजानाश अरु अन्न में, महर्घता का जोर ॥ बदी ३से८ तथा १२से३० एवं सुदी ८से१५ मध्य ऋतु विषम गति, मेघ [illegible] शीतलहर गति। पशु एवं [illegible] में सांसर्गिक व्याधि, भूमि स्खलन, जन-धन [illegible], व्यापार-व्यवसाय में अस्थिर भाव गति विशेष। ★ शकुन— मंगसर चौदस मावसा, मेघ बने आकाश। महंगा भावों में बिके, गल्ला चारा घास ॥

अ.३२मार्गशीर्षकृ ३०चं ०।०ग.२१४

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	८	६	६	७	६	२	८
२८	१७	२५	२७	१	४	१२	१२
४५	९	५३	३३	३१	५४	४२	४२
३७	४७	५३	८	१९	२०	५८	५८
६०	४४	१००	१३	७४	६	३	३
२६	४५	३१	३८	३८	५५	११	११

✻ गोचरग्रहाः ✻

मं. ९ के.
शु. ८
सू. चं. बु. गु. श.
७
६
५
१०
४
११
१
३ रा.
१२
२

योगाः	ति.	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः सं.२०३९ शाकः१९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
वज्र	१	सं	३९	२	अ	५९	२७	शो	११	१३	कि	७	१४	२६/४६	७।३	५।४५	१	१६	२९	२५	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]
ध्वांक्ष	२	बु	४४	१	ज्ये	६०	०	अ	११	२२	वा	११	३२	४३	७।४	५।४५	२	१७	३०	२६	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]
काल दं.	३	गु	४९	५०	ज्ये	५	५१	सु	१२	४१	तै	१६	५६	४०	७।४	५।४४	३	१८	१	२७	ध. ५/१	[illegible]	[illegible]
स्थिर	४	शु	५६	४	मू	१२	४०	धृ	१	४७	व	२२	५७	३७	७।५	५।४४	४	१९	२	२८	धन	[illegible]	[illegible]
मातंग	५	श	६०	०	पू	२०	१९	शू	१६	५८	व	२९	१६	३४	७।५	५।४३	५	२०	३	२९	म. ३७/१४	[illegible]	[illegible]
अमृत	५	र	२	२९	उ	२८	१	गं	१८	५९	वा	२	२९	३१	७।६	५।४३	६	२१	४	३०	मकर	[illegible]	[illegible]
सिद्धि	६	चं	८	५५	श्र	३५	२६	वृ	२१	११	तै	८	५५	२८	७।७	५।४२	७	२२	५	१	मकर	[illegible]	[illegible]
उत्पात्	७	मं	१४	३१	ध	४१	५२	ध्रु	२२	५८	व	१४	३१	२६	७।८	५।४२	८	२३	६	२	कुं. ३/९	[illegible]	[illegible]
मानस	८	बु	१८	५३	श	४६	५९	व्या	२३	४३	व	१८	५३	२४	७।९	५।४२	९	२४	७	३	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
मुद्गर	९	गु	२१	४९	पू	५०	२५	ह	२३	१९	कौ	२१	४९	२२	७।९	५।४२	१०	२५	८	४	मी. ३४/४०	[illegible]	[illegible]
ध्वज	१०	शु	२२	५१	उ	५२	८	व	२१	२३	ग	२२	५१	२०	७।१०	५।४२	११	२६	९	५	मीन	[illegible]	[illegible]
ऐ. व्रत	११	श.	२१	४३	रे	५१	३९	प्र	१७	४१	वि	२१	४३	१९	७।१०	५।४२	१२	२७	१०	६	मे. ५१/३१	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१२	र.	१८	२२	अ	४९	१३	ऐ	१२	३२	वा	१८	२२	१७	७।११	५।४२	१३	२८	११	७	मेष	[illegible]	[illegible]
चर	१३	चं.	१३	१५	भ	४५	६	व	४४	१७/०	तै	१३	१५	१६	७।१२	५।४२	१४	२९	१२	८	वृ. [illegible]	[illegible]	[illegible]
गद	१४	मं	६	३५	कृ	३९	२४	श	४८	४	व	६	३५	२५/१४	७।१२	५।४२	१५	३०	१३	९	वृषभ	[illegible]	[illegible]
क्षय	१५	मं	५८	३६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

नवम्बर सन् १९८२ हेमंत-ऋतुः रवि-दक्षिणा-दक्षिण गोले

बंगलामार्गशीर्षमा.प्रा.वृश्चिकेऽर्कः १३/३अनुराधाशुक्रः २७/१२ग.७४/३८कार्त्तिक*

चन्द्रदर्शनं वृश्चिकेबुधः २५/५२ग.१०/३१

सफर मास. २ मुस. † बुधः २४/३०ग.९९/३९

भ २२/४७उ.१६/४या. इन्दिरागांधीज.अनुराधायांरविः ३३/१२अनुराधायां †

नागपूजा दक्षिणे * शु.पक्षःपरन्तुनित्यमासव्रतादौमार्ग.शुक्लः

स्कन्दषष्ठी सर्वार्थ २८/१या.

चम्पाषष्ठी राष्ट्रीयमार्गशीर्षमा.प्रा धनुषिभानुः ३४/९सर्वा.३५/२६या.

भ.१४/३१उ.४६/४२या. सूर्यसप्तमी नरसीमेहताजयंती पंचक ८/३९उ.

£ ५१/३९या.ज्येष्ठाशुक्रः १/४९ग.७४/३२उषायांभीमः २३/६ग.४५/१५

कल्पादिजैनदिवाकरचौथ.पुण्यःवृश्चिकेगुरुः ५७/५१ग.१३/३२उदयंगुरुःपूर्वे ४२/०

भ.५३/१८उ. अरनाथजन्म+पुण्य जैन सर्वार्थ-अमृत ५२/८उ.

भ ३१/४३या. मोक्षदा११व्रतं सर्वे श्रीगीताजयंती मौन११जैन पंचक £

प्रदोषव्रतं ज्येष्ठाबुधः ९/२ग.९८/३४सर्वा.५९/१३या.

पिशाचमोचनश्राद्ध

भ.६५/३उ.३२/२६या.श्रीदत्तज. पूर्णिमाव्रतं ‡

‡ संभवनाथजयंतीजैनसर्वार्थसिद्धि ३०/२४या.

※ गोचरग्रहाः ※

मं. ९ के.	गु. श. ७
१०	बु. सू. ८ शु.
चं. ११	६
१२	५
१	२
३ रा.	४

अ.३३मार्ग शु.८बु.०।०ग २२३।

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	८	७	६	७	६	२	८
७	२४	१०	२९	१२	५	१२	१२
५०	०	३९	३३	४८	५४	१४	१४
४३	११	२२	२५	२३	२५	२०	२०
६०	४४	९९	१३	७४	६	३	३
४२	५९	३९	३२	३२	३५	११	११

※ अथवृश्चिकसंक्रान्तिफलम् ※

मार्ग.शु.१भौमेवृश्चिकेऽर्कःप्र.वा.३न.४वारना.महोदरीअनैतिक कार्य,हिंसा,तस्कर-व्यापारतेज,नक्षत्रना.मंदाकिनीराष्ट्रविकास मूल,शासकीयगतिक्रमतेज,मंत्रीगणहेतुसुयोग । मंध्या.ध्वा.महा-पुरुषखेद,विद्वान,साहित्य,संगीतकलानायकों को कष्ट,पश्चिम.ग. वाय.दृ.बवकरणेऽश्रविष्टा वाहनसिंहउरवा.गज यातायातसंचार अवरोध,प्राकृतिकप्रकोप,जनधनहानिश्वेतवस्त्र,मशङायुध,स्वर्ण पाल,अन्न.भ.कस्तू.लेप.देवजाति, पुन्नागपुष्प, चिरोंजाभ.चित्र कंचु,बालाऽवस्था मु.३०कपास,सूत,ऊन, लहसन,चांदी,सोना, धात्वादिअनाज,दालदाना,कागजउन्नतभावगति,तेलदाना,रक्त-रसायन स्थिरभाव । सितास्त पू.व.द.रा.पू.मूलपाताले ।

अ.३४मार्ग शु.१४मं.०।०ग.२२९

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	८	७	७	७	६	२	८
१३	२८	१९	०	२०	६	११	११
५५	३८	४२	५१	२१	३३	५५	५५
२४	२१	१४	५८	१५	१	१५	१५
६०	४५	९८	१३	७४	६	३	३
४९	१५	३४	३०	३२	२३	११	११

※ गोचरग्रहाः ※

मं. ९ के.	७ प्ला.
१०	बु. सू. ८ शु. गु.
११	६
१२	५
१	२ चं.
३ रा.	४

卐 पशुगमनाऽगमप्रश्नफल— ... विचरण

सप्तमे घर आवेगा, दूसरे-तीसरे गणनागंत नहीं मिले । विशेष विविध प्रश्नफल ज्ञानार्थ सुगम पुस्तक "प्रश्न-विचार" सरस भाषा मूल्य ५) रु. को मंगावें । पता— निर्णयसागर पंचाङ्ग कार्यालय, नीमच छावनी (म. प्र.)

योगाः	तिं.१५	पौष कृष्ण पक्षः सं. २०३९ शाकः १९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.गतिः	
शुभ	१	बु	५०	१९	रो	३२	४९	स	३८	३८	वा	२४	२७	[illegible]	७११३	५१४२	१६	१	१४	१०	मि. [illegible]	[illegible]	[illegible]
मृत्यु	२	गु	४१	२७	मृ	२६	१	सा	२८	२३	तै	१५	५३	११	७११४	५१४२	१७	२	१५	११	मिथुन	[illegible]	[illegible]
पद्म	३	शु	३२	५२	आ	१९	१८	शु	१८	११	व	७	१०	१०	७११४	५१४२	१८	३	१६	१२	क. [illegible]	[illegible]	[illegible]
पौष व्रत	४	श	२५	८	पु	१२	५७	शु	८	२०	वा	२५	८	९	७११५	५१४३	१९	४	१७	१३	कर्क	[illegible]	[illegible]
श्रीवत्स	५	र	१८	६	पु	७	४२	ब्र	[illegible]	[illegible]	तै	१८	६	७	७११६	५१४३	२०	५	१८	१४	कर्क	[illegible]	[illegible]
सौम्य	६	च	१२	३८	श्ले	३	२९	वै	४३	४७	व	१२	३८	६	७११७	५१४३	२१	६	१९	१५	सिं. [illegible]	[illegible]	[illegible]
काल दं.	७	मं	८	१६	म	[illegible]	[illegible]	वि	३७	४४	व	८	१६	५	७११७	५१४३	२२	७	२०	१६	सिंह	[illegible]	[illegible]
प्रवर्ध	८	बु	५	३५	उ	५८	४९	प्री	३२	४९	कौ	५	३५	३	७११८	५१४३	२३	८	२१	१७	क. [illegible]	[illegible]	[illegible]
राक्षस	९	गु	३	५५	ह	५९	५४	आ	२८	५६	ग	३	५५	२	७११८	५१४३	२४	९	२२	१८	कन्या	[illegible]	[illegible]
मूसल	१०	शु	३	५५	चि	६०	०	सौ	२६	९	वि	३	५५	०	७११९	५१४३	२५	१०	२३	१९	तु. [illegible]	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	श	४	५६	चि	२	२९	शो	२४	२१	बा	४	५६	[illegible]	७१२०	५१४४	२६	११	२४	२०	तुला	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१२	र	७	२०	स्वा	५	५६	अ	२३	३७	तै	७	२०	५७	७१२१	५१४४	२७	१२	२५	२१	वृ. [illegible]	[illegible]	[illegible]
मित्र	१३	चं	११	३	वि	११	१	सु	२३	४१	व	११	३	५६	७१२२	५१४४	२८	१३	२६	२२	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]
वज्र	१४	म	१५	१४	अ	१६	३२	धृ	२४	१६	श	१५	१४	५४	७१२२	५१४४	२९	१४	२७	२३	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]
अमावस	३०	बु	२०	५६	ज्ये	२२	१०	शू	२५	४०	ना	२०	५६	[illegible]	७१२३	५१४५	३०	१५	२८	२४	ध. [illegible]	[illegible]	[illegible]

दिसम्बर सन् १९८२ ई. हेमंतऋतुः रवि-दक्षिणा- दक्षिण-गोले

दिसंबरमा.१२ता.३१सर्वा.६०या.मार्ग.कृ.पक्षःपरंनित्यमासव्रतादौ †

ज्येष्ठायांरविः४२३३ शुक्रोदयःपश्चिमे१२४ताराउदित ★



भ.५६०उ.५३२या.सर्वा.११९८उ.

चतुर्थीव्रतं † पौ.कृ.पक्षःमकरेभौमः४१८७ग.४१५५स्वात्यां१शनिः५४८ग.२६३



सर्वार्थसिद्धिःयोग.४७२या.

भ.१३२८उ.४२०७या. मूले धने च बुधः३३५३ग.७२९१

चेहल्लमचालीसामुस.मूले धने च शुक्रः३२९८ग.७२४९

£ ६४७ग.९४३२सरदारपटेलपुण्यःआखिरबुधमुस.

भ.३५३५उ.

भ.५३५या.श्रीपार्श्वनाथजयंतीजैन

सफला११व्रतंसर्वे.अनुराधायां१गुरुः१९५ग.१२३०सर्वार्थसि.२२९उ.

प्रदोषव्रतं

भ.१३१उ.४८३या. चन्द्रप्रभुज.जैनसर्वार्थ११उ.बुधोदयःपश्चिमे१३०४

श्रवणेभौमः३४८५ग.४२५९

देवपितृकार्यअमावस्या, सूर्यग्रहणंमूलेधनेचाऽर्कः४३५पूषायांबुधः £

❋ गोचरग्रहा ❋

के. ९ गु. | शु. ७ | १० मं. | सू. ८ गु. | ६ | ११ | चं. ५ | १२ | २ | ४ | १ | रा. ३

अ.३५पौषकृ.८बु.०।०ग.२३७।

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	९	८	७	८	६	२	८
२२	४	२	२	०	७	११	११
२	४९	१७	३६	२५	२१	२९	२९
३३	७	०	३८	३०	५०	४७	४७
६०	४५	९७	१३	७४	५	३	३
५६	२३	२१	२०	२९	५५	११	११

❋ अथ धन संक्रान्ति फलम् ❋

पौषकृष्ण३०बुधेधनुष्यर्कः प्र.वा.२न.३वारनाम मंदाकिनीदेशहितकार्यगति, मंत्रीमण्डलीय अभिनव रचनासूत्र, नक्षत्र नाम राक्षसी,हरिजन,आदिवासी,अल्पसंख्यकोंहेतुविकासगति,राशि३या.ध्या.संगीतकार-नृत्यकार-चलचित्रसिनेमा। पक्षमें विबाधा प्रभार,पूर्वगम. आग्ने.दृष्टिःकिस्तु.करणे उत्तिष्ठा मंदीधारक, वाहनकुक्कुट उपवाहनवानर,जनधनक्षति,पीड़ा विवाद-विग्रह अशांति,प्राकृतिकप्रकोप,देवकोप, श्यामवस्त्र,बाणायुध,काष्टपात्र,शर्कराभक्षण,कर्पूरलेपन, संकरजाति,जपा.पुष्प,स्वर्णभूष. पाण्डुकचु. प्रद्रा. अवस्थामु.३० कागज, मोती, चांदी, सोना-धात्वादि,उड़द,गुड़उन्नत। मितो.प.व.द.रा.पू.मलममो।

|अ.३६पौषकृ.३०बु.०।०ग.२४४

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	९	८	७	८	६	२	८
२९	१०	१३	४	९	८	११	११
९	१६	९	६	१३	१	७	७
५०	७	२५	२५	२१	२	३०	३०
६१	४५	९३	१३	७४	५	३	३
०	२९	४२	११	२६	३१	११	११

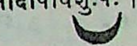
❋ गोचरग्रहाः ❋

के. ९ शु. बु. | शा. ७ | मं. १० | चं. गु. ८ सू. | ६ | ११ | ५ | १२ | २ | ४ | १ | रा. ३

卐 अथ यात्रा प्रश्न फलम्— यात्रा के दिन के तिथि, नक्षत्र तथा वारों की संख्या जोड़ कर तीन स्थान पर अलग-अलग ७-८-३ से भाग देवें। यदि तीनों स्थानों पर कोई अङ्क आवे तो यात्रा शुभ होगी, परन्तु प्रथम स्थान पर ० [illegible] तो विशेष विग्रह, दूसरी जगह ० रहते कष्ट, धन हानि समझें।

योगाः	ति.	पौष शुक्ल पक्षः सं. २०३९ शाकः १९०४										दि.			र.उ.	र.अ.	बं.	इं	सु	भा	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
धूम्र	१	गु	२६	२०	मू	२९	५८	गं	२७	१३	व	२६	२०	[illegible]	७।२४	५।४४	१	१६	२९	२५	धन	[illegible]	[illegible]
प्रबर्ध	२	शु	३३	५	पू	३७	२९	वृ	२९	२३	कौ	३३	५	५०	७।२५	५।४५	२	१७	३०	२६	म. १४/२४	[illegible]	[illegible]
राक्षस	३	श	३९	३४	उ	४५	९	ध्रु	३१	५०	तै	६	१९	४९	७।२५	५।४५	३	१८	१	२७	मकर	[illegible]	[illegible]
गद	४	र	४६	१३	श्र	५२	४८	व्या	३३	५६	व	१२	५३	४७	७।२६	५।४५	४	१९	२	२८	मकर	[illegible]	[illegible]
शुभ	५	चं	५२	४	ध	५९	४९	ह	३५	५६	व	१०	८	४६	७।२७	५।४५	५	२०	३	२९	कुं. २६/१२	[illegible]	[illegible]
मृत्यु।	६	मं	५७	७	श	६०	०	व	३७	२८	कौ	२४	३५	४५	७।२८	५।४६	६	२१	४	३०	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
मानस	७	बु	६०	०	श	५	५३	सि	३७	५६	ग	२८	५९	४४	७।२८	५।४६	७	२२	५	१	मी. १४/२१	[illegible]	[illegible]
मुद्गर	७	गु	०	५२	पू	१०	३५	व्य	३७	१५	व	०	५२	४५	७।२९	५।४७	८	२३	६	२	मीन	[illegible]	[illegible]
ध्वज	८	शु	२	५५	उ	१३	५२	व	३५	१२	व	२	५५	४६	७।२९	५।४७	९	२४	७	३	मीन	[illegible]	[illegible]
प्रजापति	९	श	३	७	रे	१६	२	प	३१	३१	कौ	३	७	४७	७।२९	५।४८	१०	२५	८	४	मे. १६/२	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	१०	र	१	१५	अ	१४	२५	शि	२६	१०	ग	१	१५	४८	७।३०	५।४९	११	२६	९	५	मेष	[illegible]	[illegible]
क्षय	११	र	५७	२९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ए. व्रत	१२	चं	५१	३५	भ	११	४६	सि	१९	२९	व	२४	३२	५०	७।३०	५।५०	१२	२७	१०	६	वृ. ३/३	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१३	मं	४४	१०	कृ	७	१०	सा	१०	५९	कौ	१७	५२	५१	७।३०	५।५०	१३	२८	११	७	वृषभ	[illegible]	[illegible]
शुभ	१४	बु	३५	३२	रो	[illegible]	[illegible]	शु	[illegible]	[illegible]	ग	९	५१	५२	७।३०	५।५१	१४	२९	१२	८	मि. २९/२८	[illegible]	[illegible]
पूर्णिमा	१५	गु	२६	१५	आ	४६	१३	ब्र	४०	८	वि	०	५३	[illegible]	७।३०	५।५२	१५	३०	१३	९	मिथुन	[illegible]	[illegible]

दिसम्बर सन्१९८२ हेमंत+शिशिरऋतुः रविः दक्षिणा-उ.द.-गोले



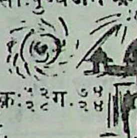
बंगलापौषमा.प्रा.मार्गशीर्षशु.प.परन्तु नित्यमासव्रतादौपौषशु.प. † चन्द्रदर्शनं † धर्मशास्त्रसम्मतः



रविउलअव्वलमा.३मुस.श्रीयतेन्द्रसूरीश्वरपुण्यजैनत्रि.सर्वा. उ.£
भ. उ. या. £ पूषायांशुक्रः ग.
पंचक उ. ⊖ रविउत्तरायणेप्रवृत्तिः
‡ जन्म+पुण्यजैनत्रि.मकरेभानुः शिशिरशीतऋतुप्रारंभः ⊖
राष्ट्रीयपौषमास.प्रा.गुरुगोविन्दसिंहज.श्रीगुरुराजेन्द्रसूरीश्वर ‡

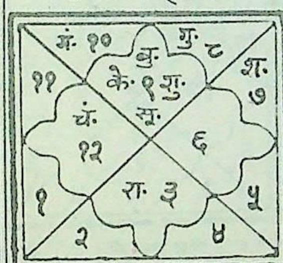


भ. उ. या.उषायांबुधः ग.
सर्वार्थ-अमृतसिद्धिः उ.
बड़ादिन ईसाजयंतीमा.मालवीयज.पंचक या.
भ. उ. या.पुत्रदा११व्रतंस्मा.आचार्यजिनानन्दसा.पुण्यजैन ❊



❊ सर्वार्थसि. या.मकरेबुधः ग.
पुत्रदा११व्रतंभाग.नि.अनुराधायांगुरुः ग.
प्रदोषव्रतंसर्वार्थसि. या.पूषायांरविः उषायांशुक्रः ग.
भ. उ.बारहवफातमोहम्मदसा.ज.ईदसर्वा. या.
भ. या.पूर्णिमाव्रतंशाकंभरीज.माघस्नानप्रा.चन्द्रग्रहणंसर्वा. उ.

❊ गोचरग्रहाः ❊



अ.३७पौषशु ८गु.०।०ग.२५३

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	९	८	७	८	६	२	८
८	१७	२६	५	२०	८	११	१०
१९	१३	४१	५९	३०	४८	३८	३८
४६	५६	५०	१५	१०	४५	५३	५३
६१	४५	८५	१२	७४	४	३	३
५	३७	४०	३७	२६	५७	११	११

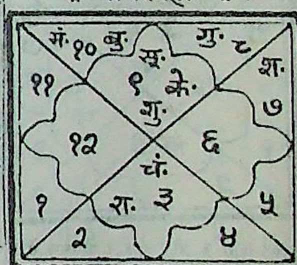
❊ विविधमासफलश्रुतिः ❊

शनिमंगल दिन आवे दीवाली । मरेरङ्क जीवे मण्डशाली ॥ दीपमालिका पवन विचार, अमावस चौदस ततसार । मधि मिले तब दीपक जोय । दीप बुझे तह दुर्भिक्ष होय ॥ दीपमालिका नीके जोय, निश्चय रात्रि निवारै होय । कार्तिक पूनम निर्मल चढ अभ्र धरीदे सो सतिमंद ॥ गणितागतपौष मास में मूल से लेकर भरणी नक्षत्र तक ११ दिनों में मेघ, गाज, बादल हो तो भावी वर्ष में क्रमशः मूल से आर्द्रायां रवि कालांश में वर्षा मेघ-गाज सुखदहोवे.एवं पौषे पूर्वाषाढ़ से पुनर्वसु रवि कालांश में वर्षा इत्यादि क्रमशः अपने नगर ग्राममें उपलक्षण शकुन देख भावी प्रतिफल का अनुभवलेना चाहिये । पौष सुदी ४,५,६,७,८,९ तिथि में मेघ गाज वर्षाकाल में बहुत वर्षा करे । पौष सुदी १४ को मेघ बिजली आषाढ़ बदी १४ में वर्षाकारक तथा पूर्णिमा को ये लक्षण हो तो श्रावण अमा. को बहु वर्षा करे । पौष बदी अमा. का मेघ गाज चौमासा हेतु शुभ । विशेष शकुन ज्ञानार्थ 'वर्षप्रबोध मेघमाला' मू. १०) मंगावें । पंचाङ्गकर्त्ता, नीमच (म. प्र.)

अ.३८पौषशु १५गु.०।०ग.२५९

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	९	९	७	८	६	२	८
१४	२१	४	७	२८	९	१०	१०
२६	५७	५	१०	३	१५	१९	१९
४७	४२	३७	३४	४४	३६	४९	४९
६१	४५	६३	१२	७४	४	३	३
६	४२	१५	१६	२४	२८	११	११

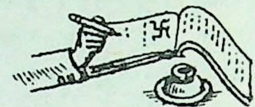
❊ गोचरग्रहाः ❊



योगाः	ति.	माघ कृष्ण पक्षः सं. २०३९ शाकः १९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
लुंबक	१	शु	१६	२८	पु	३८	४८	ऐ	२८	५६	को	१६	२८	२५/१५	७।३०	५।५२	१६	३१	१४	१०	क. ३५/४०	[illegible]	[illegible]
मित्र	२	श	७	१	पु	३२	०	वै	१८	०	ग	७	१	५७	७।३०	५।५३	१७	१	१५	११	कर्क	[illegible]	[illegible]
क्षय	३	श	५८	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
चौथव्रत	४	र	५०	३५	श्ले	२५	४५	वि	७/५	५६/५५	व	२४	२०	५८	७।३१	५।५४	१८	२	१६	१२	सिं. ३५/४५	[illegible]	[illegible]
ध्वांक्ष	५	चं	४४	३१	म	१९	४३	प्रा	५१	२	को	१७	३२	२६/०	७।३१	५।५५	१९	३	१७	१३	सिंह	[illegible]	[illegible]
धूम्र	६	मं	४०	२८	पू	१६	१६	सौ	४४	५०	ग	१२	२६	१	७।३१	५।५५	२०	४	१८	१४	क. ३०/२२	[illegible]	[illegible]
प्रवर्ध	७	बु	३८	४	उ	१४	४१	शो	३९	४०	वि	९	१६	२	७।३१	५।५६	२१	५	१९	१५	कन्या	[illegible]	[illegible]
राक्षस	८	गु	३७	३२	ह	१४	५२	अ	३६	१६	वा	७	४८	३	७।३१	५।५७	२२	६	२०	१६	तु. ४५/५१	[illegible]	[illegible]
मूसल	९	शु	३८	५२	चि	१७	६	सु	३४	१६	तै	८	१२	४	७।३१	५।५८	२३	७	२१	१७	तुला	[illegible]	[illegible]
सिद्धि	१०	श	४१	२६	स्वा	२०	३५	धृ	३३	२३	व	१०	९	५	७।३१	५।५८	२४	८	२२	१८	तुला	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	र	४५	३४	वि	२५	३६	शू	३३	५९	व	१३	३०	७	७।३१	५।५९	२५	९	२३	१९	वृ. २०/१	[illegible]	[illegible]
मानस	१२	चं	५०	३८	अ	३१	३९	गं	३४	४५	को	१८	६	८	७।३३	६।०	२६	१०	२४	२०	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१३	मं	५६	५६	ज्ये	३८	३२	वृ	३६	१८	ग	२३	४७	९	७।३३	६।१	२७	११	२५	२१	ध. ३९/२२	[illegible]	[illegible]
ध्वज	१४	बु	६०	०	मू	४५	४८	ध्रु	३८	१८	वि	२९	४९	१०	७।३३	६।१	२८	१२	२६	२२	धन	[illegible]	[illegible]
प्रजापति	१४	गु	२	४३	पू	५३	२७	व्या	४०	३२	श	२	४३	१२	७।३३	६।२	२९	१३	२७	२३	धन	[illegible]	[illegible]
अमावस	३०	शु	९	२४	उ	६०	०	ह	४२	४९	ना	९	२४	२६/१३	७।३३	६।२	१	१४	२८	२४	म. १०/२०	[illegible]	[illegible]

दिसं.-जन.सन्१९८२-८३शिशिर-ऋतुःरवि-उत्तरा-दक्षिण गोले

बंकलेखाबंदी,पौषकृ.पक्षःपरंतुनित्यमासव्रतादौमाघकृ.प.धर्मशास्त्र†
भ.३३/३३उ.५५/५यां.जनवरीमा.१ता.३१सन्८३ईस्वीनववर्ष
† सम्मतः सर्वा.३४/८यां.मकरेशुक्रः३४/१६ग.२४/४धनिष्ठायांभौमः४१/९१ग.४४/५२
मावीचौथव्रतंचन्द्रो.९घं.११मि.



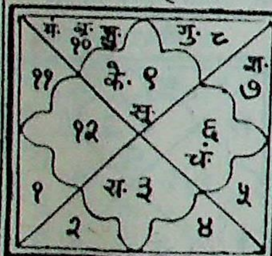
भ.४२/०८उ.
भ.५१/६या. श्रीविवेकानंदज. सवार्थ३४/४१उ.श्रवणेबुधः४१/०ग.३२/४०आर्द्रा £
£ १राहुःमूले.३केतुः१८/४





वक्रीबुधः२४/०१रा.९१/०।२३/२०
भ १०/०उ.४२/१६या सर्वार्थे२३/०५या.श्रवणेशुक्रः३१/२३ग.०२/४७
षट्तिला११व्रतंसर्वे.कुंभेभौमः१५/१६ग.४४/५वक्रीउषायांबुधः२१/१६ग.०४/१०
शीतलनाथज.जैनसर्वा.३३/१२या.उषायांरविः५१/१५स्वाति२शनिः२२/३५ग.३७ ‡
भ.५१/६६उ.प्रदोषव्रतं मेरुत्तेरसआदिनाथज.तथापु.जैन ‡बुधास्तःप.१३/९०
भ.२४/१या. * बंगला माघमा.प्रा.मकरेऽर्कः१३/५२
लोहड़ीपर्वपंजाबपितृकार्येअमावस्याअनुराधायांगुरुः५४/३२ग.१६/१
देवकार्येमौनअमावस्या प्रयागराजस्नान मेला द्वापरयुगादि *

* गोचरग्रहाः *



अ.३९माघकृ.८गु.०।०ग.२६६।

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	९	९	७	९	६	२	८
२१	२७	१०	८	६	९	९	९
३४	२७	३	३१	५१	४४	२७	५७
५०	३३	६	५०	६	४४	३४	५४
६१	४५	१४	११	७४	३	३	३
६	४५	३०	४९	७७	५४	११	११

अथमकरसंक्रान्तिफलम्

माघकृ.३०शुक्रेमकरेऽर्कःप्र.वा.३न.३वार नाम मिश्रा पशुधन विकास,दुग्धप्रदाययोजनागति,नक्षत्रना.नंदा वैज्ञानिक प्रगति चमत्कृति,राष्ट्रीयअवंतंत्र विकाससूत्र रचना,गणिताओं में हर्ष, मध्या.व्या.साहित्यकारविद्वान तथा महापुरुष परप्रमार,दक्षि. गमन.नैऋ.दृ.किस्तु.करणे उतिष्ठा मंदीधारक,वाहन कुक्कुट उपश.वानर प्राकृतिकप्रकोप,जनधनक्षतिहानि,विवादअशांति हिंसा प्रवृत्ति, श्यामवस्त्र,बाणायुध, काष्ठपात्र, शर्कराभक्षण, कपूरलेप.संकरजाति, जपा.पुष्प, स्वर्णभूषण, पाण्डुकंचु,प्रवा. अश.मु.४५पेट्रोल-डीजल,इस्पात-लोहा,मशीनरी व धात्वादिमें गरमी,तैलबानादानाघान्यस्थिर। सितो.प.व.द.रा.पू.मूलसंस्वर्ग

अ.४०माघ.कृ.३०शु.०।०ग.२७४

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	१०	९	७	९	६	२	८
२९	३	४	१०	१६	१०	९	९
४४	४१	२४	१	५०	११	३२	३२
१२	५७	३७	१०	३८	१५	७	७
६१	४५	७१/४०	११	७४	३	३	३
५	३७	+	६	१२	७	११	११

* गोचरग्रहाः *



卐 कार्यसिद्धि का समयमर्यादा— कार्य कब होगा ऐसे प्रश्न में इष्ट दिन की तिथी, वार, नक्षत्र संख्या का योग करें इसमें ३ से गुणा करें तथा ६ और जोड़ें। योगफल में ९ का भाग से १ शेषे पक्ष, २ में मास, ३ में ऋतु, ४ शेष रहते ६ मास, ५ में १ दिन, ६ में १ रात, ७ में ३ घण्टा, ८ में मिनिटों में, और ९ शेष बचते शीघ्र कार्य बने। ★ ★

योगाः	ति १४	माघ शुक्ल पक्षः सं. २०३९ शाकः१९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	सु.	आ.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
राक्षस	१	श	१५	४१	उ	१	१	व	४५	०	व	१५	४१	२६/१४	७।३३	६।३	२	१५	२९	२५	मकर	[illegible]	[illegible]
गद	२	र	२२	१	श्र	८	२५	सि	४६	५३	कौ	२२	१	१६	७।३३	६।३	३	१६	१	२६	कुं. ४१/४७	[illegible]	[illegible]
शुभ	३	चं	२७	४४	ध	१५	९	व्य	४८	४	ग	२७	४४	१८	७।३३	६।४	४	१७	२	२७	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
मृत्यु	४	मं	३२	३८	श	२१	३०	व	४९	१	व	०	११	२०	७।३३	६।५	५	१८	३	२८	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
वसंत	५	बु	३६	४२	पू	२६	५२	प	४८	५८	व	४	४०	२२	७।३३	६।६	६	१९	४	२९	मी. १०/३२	[illegible]	[illegible]
छत्र	६	गु	३९	१३	उ	३१	१	शि	४७	४८	कौ	७	५७	२५	७।३३	६।७	७	२०	५	३०	मीन	[illegible]	[illegible]
श्रीवत्स	७	शु	४०	२३	रे	३३	३८	सि	४५	३८	ग	९	४८	२७	७।३३	६।७	८	२१	६	१	मे. ३३/३८	[illegible]	[illegible]
सौम्य	८	श	३९	५४	अ	३४	४१	सा	४१	५८	वि	१०	८	२९	७।३३	६।८	९	२२	७	२	मेष	[illegible]	[illegible]
कालदं	९	र	३७	४३	भ	३३	५८	शु	३६	४७	बा	८	४९	३१	७।३३	६।९	१०	२३	८	३	वृ. ४८/२०	[illegible]	[illegible]
स्थिर	१०	चं	३३	४७	कृ	३१	३२	शु	३०	१७	तै	५	४५	३४	७।३२	६।१०	११	२४	९	४	वृषभ	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	मं	२७	४६	रो	२७	१३	ब्र	२२	१४	व	०	४६	३७	७।३२	६।११	१२	२५	१०	५	मि. ५४/२६	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१२	बु	२०	२७	मृ	२१	४१	ऐ	१२	२८	वा	२०	२७	४०	७।३१	६।११	१३	२६	११	६	मिथुन	[illegible]	[illegible]
काण	१३	गु	११	५८	आ	१४	४९	वै	[illegible]	[illegible]	तै	११	५८	४३	७।३१	६।१२	१४	२७	१२	७	क. १३/५८	[illegible]	[illegible]
पूर्णिमा	१४	शु	२	३०	पु	[illegible]	[illegible]	प्री	४०	१८	व	२	३०	२३/४६	७।३१	६।१३	१५	२८	१३	८	कर्क	[illegible]	[illegible]
क्षय	१५	शु	५२	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

जनवरी सन् १९८३ शिशिरऋतुः रवि-उत्तरा, दक्षिण-गोले

अहंस्पति संज्ञक- त्रिलुप्तक्षयमासपक्षप्रा.व्रतकर्मादिअतिरिक्तं †
उत्तरभारतेस्प.चन्द्रदर्शनं रविउलआखिरमा.४मुस.पंचक४४/१७उ.
वक्रीधनेबुधः४३/१२ग.७४/१० शतभिषायांभौमः१/८ ४ग.४३/१७ ग्यारवींशरीफमुस.
भ.१०/११उ.३२/२८या † मांगलिककार्यार्थे नेष्टपक्षंदक्षिणभारतेचन्द्रदर्शनं
श्रीसरस्वतीमहोत्सवःवसंतपंचमीवक्रीपूषायांबुधः१४/१५ग.४/४० £
अभि.प्रवृ.रविः४८/२४कुंभेभानुः३२/१२ £ घनिष्ठायांशुक्रः६ग.७४/५
भ.४०/२३उ. श्रीनर्मदाज.रथसप्तमी राष्ट्रीयमाघमा.प्रा.पंचक३३/२८या. ‡
भ.१०/८या.भीष्माष्टमी ‡ अमृतसि.३३/३८या.तदग्रेसर्वा.सि.बुधोदयःपू.२३/४५
नेताजी सुभाषज. A कुंभेःशुक्रः३२/१२ग.७४/५अभि.निर्ग.रविः१७/१६
सर्वा.सिद्धि.३१/२२उ.श्रवणेरविः४८/४७ A
भ.४०/४६उ.२७/४६या. जया११व्रतंसर्वे.
प्रदोषव्रतंकल्पादिसर्वा.२१/४१या.गणतंत्रदिवस३४प्रा.विश्वकर्माज.
रामस्नेहीरामचरणज.जिनेन्द्ररथयात्राजैनसर्वा.सिद्धि.१४/४०उ.
भ.२०/३०उ.२७/३८या.पूर्णिमाव्रतं गुरुरविदासज.माघस्नानपूर्णवाणेश्वर ⊖
⊖ मेलाबांसवाड़ामाघकविज.सर्वा.सि.७/०या.मार्गीबुधः४९/१रा.१८/२।४०/०

❋ गोचरग्रहाः ❋

मं. ११	शु. १० सू.	बु. ९ के.	गु. ८
१२			
१ चं.		श. ७	
२	४		६
रा. ३		५	

अ.४१माघशु.८श.०।०ग.२८२							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	१०	८	७	९	६	२	८
७	९	२४	११	२६	१०	९	९
५३	५७	४३	२४	५२	३२	६	६
१	३०	१०	२२	५	३१	४०	४०
६१	४५	५४/४०	१०	७४	२	३	३
१	३२	+	१६	२	१८	११	११

❋ विविधमास फल श्रुतिः ❋

क्षयमासो भवेद्यस्मिन्तस्मिन्वर्षे ति विग्रहम् । दुर्भिक्षयाथवा पीड़ा क्षत्रा द्वन्दं करोति वा ॥ कार्त्तिकमासे- पक्षस्य मध्ये- त्रितिथि विनष्टे महाहवो रौरवदिग्रहं च । पक्षे विनष्टे यतो विनष्टे मासक्षयश्चेतक्षयती वसुंधरा ॥ अनेकयुगसाहस्त्रयां दैवयोगात्प्रजायते । त्रयोदशदिनैपक्षस्तदा संहरते जगत् ॥ यदा च जायते पक्षस्त्रयोदशदिनात्मकः । भवेल्लोकक्षयो घोरो मुण्डमालायुता मही ॥ एवं कार्त्तिक कृष्णेत्रयोदश दिनात्मक पक्ष फलम् । अधिमासफलं-राजान्यत्वं सुभिक्षं च द्वि फाल्गुने जायते सुखं । सुभिक्षं फाल्गुनयुगे क्षत्रियानां शिवं भवेत् । ग्रन्थान्तरेऽपि- द्विफाल्गुने अग्नि भयं । दो फागुन जा बरस में, मंत्री भाखे मार । कोई खण्ड के मायने, सस्त्रायुन्ध प्रहार ॥ माघ बदी छट को अगर, निर्मल दिशि आकाश । लाभेच्छुक व्यापारियों । संग्रह करो कपास ॥ माघे साते सुदी से,चौदस तक दिन आठ । वर्षा हो तो समझ लो,हैं वर्षा का ठाठ ॥ एकमदोयज तीज कोई,माघ बदी बट जाय । संग्रह करलो अन्न का,लाभी शीघ्र बनाय ॥ दो फाल्गुन मंत्रीवर्ग प्रमारी ।

अ.४२माघशु.१४शु.०।०ग.२८८							
र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	१०	८	७	१०	६	२	८
१३	१४	२२	१२	४	१०	८	८
५९	४१	१३	०१	२१	४४	४७	४७
०	२१	४६	५६	४०	६	३६	३६
६०	४५	४९/१	९	७४	१	३	३
५८	३०	+	३६	०	४४	११	११

❋ गोचरग्रहाः ❋

शु. ११ मं.	१० सू.	बु. ९ के.	गु. ८
१२			
१	चं.	७ श.	
२	४		६
रा. ३		५	

योगाः	ति.	प्र.फाल्गुन कृष्णपक्षः सं.२०३९श.क.१९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.गतिः	
मानस	१	श	४३	२	श्ले	५१	३९	आ	२९	५९	बा	१७	५३	३६ ४६	७।३०	६।१४	१६	२९	१४	९	सि. ५१ ३९	[illegible]	[illegible]
मुद्गर	२	र	३४	११	म	४४	५१	सौ	१९	३८	तै	८	३७	५३	७।३०	६।१५	१७	३०	१५	१०	सिंह	[illegible]	[illegible]
चौथ व्रत	३	चं	२६	४७	पू	३९	२६	शो	१०	६	व	०	२१	५६	७।२९	६।१६	१८	३१	१६	११	क. ५३ ३१	[illegible]	[illegible]
प्रजापति	४	मं	२०	३६	उ	३५	४७	अ	[illegible]	[illegible]	बा	२०	३६	५९	७।२९	६।१७	१९	१	१७	१२	कन्या	[illegible]	[illegible]
आनन्द	५	बु	१६	३१	ह	३४	१३	धृ	५०	१४	तै	१६	३१	२८ ३	७।२८	६।१७	२०	२	१८	१३	कन्या	[illegible]	[illegible]
चर	६	गु	१४	४३	चि	३४	४०	शू	४६	५३	व	१४	४३	६	७।२८	६।१८	२१	३	१९	१४	तु. ४ २६	[illegible]	[illegible]
गद	७	शु	१४	५०	स्वा	३७	११	गं	४५	५	व	१४	५०	९	७।२७	६।१९	२२	४	२०	१५	तुला	[illegible]	[illegible]
शुभ	८	श	१७	१	वि	४१	२३	वृ	४५	१०	कौ	१७	१	१३	७।२६	६।१९	२३	५	२१	१६	वृ. २५ २०	[illegible]	[illegible]
मृत्यु	९	र	२०	५१	अ	४७	१३	ध्रु	४५	३५	ग	२०	५१	१६	७।२६	६।२०	२४	६	२२	१७	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]
पद्म	१०	चं	२६	२	ज्ये	५४	७	व्या	४७	२३	वि	२६	२	१९	७।२५	६।२१	२५	७	२३	१८	ध. १४ ७	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	म	३२	१९	मू	६०	०	ह	४९	२७	बा	३२	१९	२३	७।२४	६।२१	२६	८	२४	१९	धन	[illegible]	[illegible]
ध्वज	१२	बु	३८	३१	मू	१	३४	व	५१	४६	कौ	५	२५	२६	७।२४	६।२२	२७	९	२५	२०	धन	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१३	गु	४५	२३	पू	९	१६	सि	५४	१	ग	११	५७	२९	७।२३	६।२३	२८	१०	२६	२१	म. २५ ५८	[illegible]	[illegible]
महाशिव	१४	शु	५१	२८	उ	१६	४४	व्य	५६	९	वि	१८	२५	३३	७।२३	६।२४	२९	११	२७	२२	मकर	[illegible]	[illegible]
अमावस	३०	श	५७	१९	श्र	२४	६	व	५७	५६	च	२४	२६	३७ ३६	७।२२	६।२४	३०	१२	२८	२३	कुं. ५७ २६	[illegible]	[illegible]

जन.-फर.सन्१९८३शिशिरऋतुः रवि-उत्तरा-द.गो.(अ.माघकृ.)

अहंस्पति संज्ञक-विलुप्तक्षयमासपक्षःव्रतकर्मादि अतिरिक्तं †

गांधीपुण्यः † मांगलिक कार्यार्थेनेष्टपक्षं शतभिषाशुक्रः ५१ २० ग. ७४ ०

भ. २० १ उ. ३६ ४७ या. चतुर्थीव्रतं



फरवरी मा.२ता.२८सन्१९८३ई.

सर्वार्थ सि. ३४ १३ या.

भ. १४ ३ उ. ४४ ४६ या.पूभायांभौमः ४७ ३८ ग ४५ २५ अनुराधा४गुरुः २ ग. ४७ ५

‡ सर्वोदयदिवसकुंभेऽर्कः ४८ २३ वक्रीशनिः ५७ ५१ रा. १६ ० । ५६ २१ सर्वा. २४ ६ या. ⊖

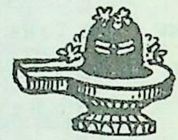
श्रीसीताष्टमी पातस्पर्शः २६ २४ मौक्षः ४५ ५८ उषायांबुधः ५५ ३२ ग. ३६ ३८

भ. ५३ २६ उ. समर्थरामदासनवमी धनिष्ठायांरविः १३ ८ ⊖ पंचक ५७ २६ उ.

भ. २६ २ या.

विजया११व्रतं सर्वे.मकरेबुधः ३७ २५ ग. ६३ १५

पूभायांशुक्रः ३३ ४४ ग. ६३ १५

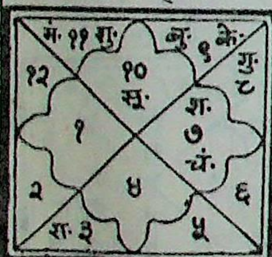


भ. ४५ २३ उ.प्रदोषव्रतं £ वासूपूज्यज. जैन

भ. १६ २५ या.महाशिवरात्रिव्रतंसर्वार्थ १६ ४४ उ.स्वामीदयानंद बोधोत्सवः£

देवपितृकार्येअमास्याशिवखप्परपूजाअहंस्पति-क्षयमासपक्षपूर्ण ‡

❋ गोचरग्रहा ❋



अ.४३प्र.फाल्गु.कृ.८श.०।०ग.२९६

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	१०	८	७	१०	६	२	८
२२	२०	२६	१३	१४	१०	८	८
५	५४	६	३४	१७	५३	२२	२२
५९	४७	४२	२०	४०	३४	९	९
६०	४५	३६ ३८	७	७३	०	३	३
५२	२५	मा	४५	५४	५१	११	११

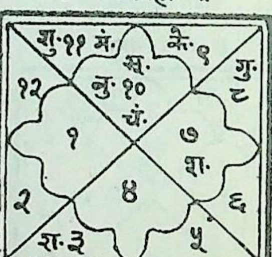
❋ अथ कुम्भ संक्रान्ति फलम् ❋

प्र.फाल्गु.कृ.३०शनौकुंभेऽर्कः प्र.वा.२न.३वारना.राक्षसीदलित वर्ग विकास, अल्पसंख्यकों को लाभ, नक्ष.ना. महोदरी तस्कर व्यापारवृद्धि, अनैतिक कार्यक्रियाओं में वृद्धि रात्रि३या. व्या. संगीतज्ञ,नृत्यकार, चलचित्र सिनेमाव्यवसायी परप्रभार,उत्त. मम.आग्नेद्.नागकरणे सुप्तानेष्टफलं वाहनवृषभ उपवा.व्याघ्र नवमार्गविकास, यातायातगति, यात्रासुविधा, दिगम्बर वस्त्र, खड्गायुध,भूमिपाल,घृत. भक्ष.अगरले. मूद्रजाति, पाटलीपुष्प, दर्पणभू. बल्कनर्कचु.गुप्तवत्य।अव.मु.३० उद्योगधन्धा में करी, बेरोजगारीतेज,व्यापार-व्यवसायमेंसामान्यगति,मूजतयास्थिर भाव, रस द्रव्य पदार्थ तेज। सितो.प.व.प.रा.द. मूल पाताले।

अ.४४प्र.फाल्गु.कृ.३०श.०।०ग.३०३

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	१०	९	७	१०	६	२	८
२९	२६	३	१४	२२	१०	७	७
११	२२	३३	२७	५९	५६	५९	५९
९	२३	५०	४९	३०	१५	५४	५४
६०	४५	६३	७	७३	०	३	३
४३	२०	१५	४०	५०	६	११	११

❋ गोचरग्रहाः ❋



卐 अङ्कशास्त्रीयप्रश्नफलम्– प्रश्नकर्त्ता १०८ अङ्क संख्या में किसी भी अङ्क को लिखें तथा १२ का भाग देवें, शेष १-७-९ बचे तो कार्य देरी से शेष ४-८-१०-५ बचे कार्य बाधा, ११-२ शेष में कार्यसिद्धि, ३-६-० शेष रहते कार्य लाभ। विशेष ज्ञानार्थ 'प्रश्न विचार भाषा, उदाहरणयुक्त मू. ५) का मंगावें। निर्णयसागर पंचाङ्ग कार्यालय, नीमच (म. प्र.)

योगाः	ति.	प्र.फाल्गुन शुक्लपक्षः सं.२०३९ शाकः१९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं.	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
मातंग	१	र	६०	०	ध	३०	४६	घ	५९	४	कि	२९	५३	३७/३९	७।२१	६।२५	१	१३	२९	२४	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
अमृत	१	चं	२	२८	श	३६	२३	शि	५९	२८	ब	२	२८	४३	७।२१	६।२६	२	१४	३०	२५	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
कांण	२	मं	६	५२	पू	४१	३२	सि	५९	११	कौ	६	५२	४६	७।२०	६।२६	३	१५	१	२६	मी. २५/१८	[illegible]	[illegible]
लुंबक	३	बु	१०	१०	उ	४५	२४	सा	५८	३	ग	१०	१०	५०	७।१९	६।२७	४	१६	२	२७	मीन	[illegible]	[illegible]
मित्र	४	गु	१२	२४	रे	४८	२६	शु	५६	९	वि	१२	२४	५३	७।१९	६।२८	५	१७	३	२८	मे. ४८/२६	[illegible]	[illegible]
वज्र	५	शु	१३	२५	अ	५०	८	शु	५३	२०	बा	१३	२५	५७	७।१८	६।२९	६	१८	४	२९	मेष	[illegible]	[illegible]
ध्वांक्ष	६	श	१३	१४	भ	५०	४६	ब	४९	२५	तै	१३	१४	२८/०	७।१७	६।२९	७	१९	५	३०	मेष	[illegible]	[illegible]
धूम्र	७	र	११	५६	कृ	४९	४९	ऐ	४४	२५	व	११	५६	४	७।१६	६।३०	८	२०	६	१	वृ. ५/३१	[illegible]	[illegible]
प्रवर्ध	८	चं	९	१	रो	४७	३७	वै	३८	१०	व	९	१	७	७।१५	६।३०	९	२१	७	२	वृषभ	[illegible]	[illegible]
राक्षस	९	मं	५	१	मृ	४४	२	वि	३१	४	कौ	५	१	११	७।१५	६।३१	१०	२२	८	३	मि. १५/४०	[illegible]	[illegible]
क्षय	१०	मं	५९	३९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ए. व्रत	११	बु	५२	४३	आ	३९	८	प्री	२२	४७	ब	२६	१६	१५	७।१४	६।३२	११	२३	९	४	मिथुन	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	१२	गु	४५	२	पु	३३	१३	आ	१३	४२	ब	१८	५७	१९	७।१३	६।३३	१२	२४	१०	५	क. १९/४२	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१३	शु	३६	३८	पु	२६	४१	सौ	३/४९	५३/२८	कौ	१०	५०	२३	७।१२	६।३३	१३	२५	११	६	कर्क	[illegible]	[illegible]
मानस	१४	श	२७	३१	श्ले	१९	३५	श	४३	१३	ग	२	४	२७	७।११	६।३४	१४	२६	१२	७	सि. १९/३५	[illegible]	[illegible]
पूर्णिमा	१५	र	१८	४८	म	१२	४८	सु	३३	१७	व	१८	४८	३६/३१	७।१०	६।३४	१५	२७	१३	८	सिंह	[illegible]	[illegible]

फरवरी १९८३ शिशिर+वसंतऋतुः रविःउत्तरा-दक्षिण-गोले

पुरुषोत्तमअधिमासप्रा.बंगलाफाल्गुनमा.प्रा.पुरुषोत्तमकथाश्रवणं †,
चन्द्रदर्शनं † स्नानदानव्रतादि दीपस्थापनादिकं व्रतनियमारम्भः
जमादिलअव्वल मा.५मुस.प्रा. सर्वार्थ ४/३ १/२ उ.
भ. ४/१ १/७ उ.मोनेभौमः २/५ ९/५ ग. ४/१ ५/४
भ. १/२ २/४ या.मीनेशुक्रः ३/४ ६/७ ग. ७/३ ३/२ श्रवणेबुधः २/५ ९ ग. ८/४ १/६ पंचक ४/२ ९/६ या. £
सर्वार्थसिद्धियोगः ५/८ ० या. £ सर्वार्थ ६/० ० या.
शतभिषायांरविः ३/४ ४/४ मीनेभानुः ८/२ १ ऋतुराजवसंतप्रारम्भः
भ. १/५ ५/६ उ. ४/२ २/८ या.राष्ट्रीयफाल्गुनमा.प्रा.उफायांभौमः ५/१ ४/२ ग. ४/१ ५/४ ‡
सर्वार्थ ४/३ ९/७ तदग्रेअमृतः ‡ उभायांशुक्रः २/० १ ग. ७/३ ३/५

* घनिष्ठायांबुधः १/७ ग. ९/१ ०
भ. २/१ ६/६ उ. ५/५ ३/२ या. कमला११व्रतं स्मा.भाग.
कमला११व्रतं निम्बा. सर्वार्थ ३/१ ३/३ तदग्रेअमृतसिद्धिः
प्रदोषव्रतम्
भ. २/३ ७/१ उ. ५/९ ३ या.
अधिमासपूर्णिमाव्रतं कांस्यपात्रेअपूपदानस्नानादिकर्म् *

※ गोचरग्रहाः ※

मं. १२ शु.
१० बु.
सू. ११
के. ९
१
चं. २
८ गु.
रा. ३
५
४
७ श.
६

अ.४५प्र.फाल्गु.शु ८चं.०।०ग.३१२ ※पुरुषोत्तमअधिमास नियमविधान※

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	११	९	७	११	६	२	८
८	३	१४	१५	४	१०	७	७
१६	२४	४८	२६	७	५२	३१	३१
३	२२	४६	३०	५०	२८	१७	१७
६०	४५	८१	६	७३	५/०	३	३
२९	१४	४६	२०	३५	+	११	११

अधिमास को मलमास या पुरुषोत्तममास कहाजाता है, मल, मासले निन्दित इसमास को श्रीकृष्णभगवान ने स्वयं अपना नामपदप्रदान कियाहै, तदर्थ इसमासकी पवित्रताधर्मविकृत्य हेतुअन्यमासो की अपेक्षाविशेष है। एक गुणित कियेगये पुण्य कार्यका प्रतिफल शतगुणित समान होजाता है। मानवसेवा, राष्ट्रसेवा,गौआदि पशुधनसेवा, चिकित्सासेवा, शिक्षणसंस्था सेवा विषयक भवननिर्माण औषधफलादि एवं जल-प्याऊ का दान इस अधिमासमें विशेषमहत्वरखता है। पौराणिकमतानुसार निर्धन वा विद्याप्रवासावर्गमें खीर-मालपूवा-अन्नादिक का यथाशक्ति दान करना चाहिये। तथा शहद,मांस,चौलाई, प्याज,राई,चड़व,लहसन,मादकद्रव्य,गोभी,गाजर,मूली,तिलतैल,आदि पदार्थोंका सेवन नहींकरनाचाहिये। भूमिशयन तथा १ ही समय भोजन करने का भी विधान है। अन्य सभी पदार्थ सेवन योग्य हैं, सूर्योदय पूर्व उठकर अपने श्रीइष्टदेव का मानसिक ध्यान करते दैनिक जीवनक्रम को संतुलित रखने तथा काम, क्रोध, मद, लोभ,मोह, मत्सर आदि से पृथक रहे ★

अ.४६प्र.फाल्गु.शु.१५र.०।०ग.३१८

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	११	९	७	११	६	२	८
१४	८	२३	१६	११	१०	७	७
१८	३	१८	०	३२	४४	१२	१२
६	२९	१९	५०	२२	४७	१२	१२
६०	४५	९०	५	७३	१/२०	३	३
१७	४	१०	२३	२५	+	११	११

※ गोचरग्रहाः ※

मं. १२ शु
१० बु.
सू. ११
९ के.
१
२
८ गु.
रा. ३
५ चं.
४
७ श.
६

योगाः	ति.	द्वि.फाल्गुनकृष्णपक्षः सं.२०३९ शाकः १९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.गतिः	
ध्वज	१	च	१०	२०	पू	६	४०	धृ	२४	१६	कौ	१०	२०	[illegible]	७१९	६।३५	१६	२८	१४	९	क. [illegible]	[illegible]	[illegible]
प्रजाप.	२	मं	३	५०	उ	[illegible]	[illegible]	शू	१६	१७	ग	३	५०	४०	७१८	६।३६	१७	१	१५	१०	कन्या	[illegible]	[illegible]
क्षय	३	मं	५८	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
चौथव्रत	४	बु	५५	६	चि	५७	४	गं	९	४१	ब	२६	१८	४४	७१७	६।३७	१८	२	१६	११	तु. [illegible]	[illegible]	[illegible]
स्थिर	५	गु	५३	५८	स्वा	५७	५२	वृ	५	३	कौ	२४	२	४८	७१६	६।३७	१९	३	१७	१२	तुला	[illegible]	[illegible]
मातंग	६	शु	५४	४७	वि	६०	०	ध्रु	१	३८	ग	२५	१६	५२	७१५	६।३८	२०	४	१८	१३	वृ. [illegible]	[illegible]	[illegible]
शुभ	७	श	५७	५१	वि	०	४१	व्या	०	१५	वि	२६	१९	५६	७१४	६।३८	२१	५	१९	१४	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]
मृत्यु	८	र	६०	०	अ	५	२०	ह	०	१०	बा	३०	९	[illegible]	७१३	६।३९	२२	६	२०	१५	वृश्चि.	[illegible]	[illegible]
पद्म	८	चं	२	२७	ज्ये	११	२०	व	१	३	कौ	२	२७	४	७१२	६।३९	२३	७	२१	१६	ध. [illegible]	[illegible]	[illegible]
छत्र	९	मं	८	२३	मू	१८	४३	सि	३	७	ग	८	२३	८	७११	६।४०	२४	८	२२	१७	धन	[illegible]	[illegible]
श्रीवत्स	१०	बु	१४	४४	पू	२६	१३	व्य	५	२६	वि	१४	४४	१२	७१०	६।४१	२५	९	२३	१८	म. [illegible]	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	गु	२१	५	उ	३३	४७	व	७	५१	बा	२१	५	१६	६।५९	६।४१	२६	१०	२४	१९	मकर	[illegible]	[illegible]
धूम्र	१२	शु	२७	२६	श्र	४१	३	प	१०	२	तै	२७	२६	२०	६।५८	६।४१	२७	११	२५	२०	मकर	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१३	श	३३	५	ध	४७	४४	शि	११	४६	ग	०	१५	२४	६।५६	६।४२	२८	१२	२६	२१	कुं. [illegible]	[illegible]	[illegible]
राक्षस	१४	र	३७	३३	श	५३	८	सि	१२	३९	वि	५	१९	२८	६।५५	६।४२	२९	१३	२७	२२	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
सोमवती	३०	चं	४१	४	पू	५७	४०	सा	१२	४९	च	९	१८	[illegible]	६।५४	६।४३	१	१४	२८	२३	मी. [illegible]	[illegible]	[illegible]

फरवरी-मार्चसन् १९८३ वसंतऋतुः रवि-उ.-व.गो .(अ.फाल्गु.कृ.)

भ. उ. या. मार्चमा. ३ता. ३१सन् १९८३ ई.

चतुर्थीव्रतम्

कुम्भेबुधः ग. रेवत्याशुक्रः ग.

भ. उ. पूभायांरविः

भ. या.

शतभिषायांबुधः ग. ज्येष्ठायां १गुरुः ग.

भ. उ.

भ. या. मृगशिरायां ४राहुः मूले २केतुः

कमलाएकादशीव्रतं सर्वे. रेवत्यांभौमः ग.

बुधास्तःपूर्वे सर्वार्थसिद्धियोगः या.

भ. उ. **प्रदोषव्रतं पंचक** उ.

भ या. † अश्विन्यांमेषेशुक्रः ग. **मीनेऽर्कः** **बंगलाचंद्रमा**.प्रा.

देवपितृकार्ये**सोमवतीअमावस्यापुण्यः**अधिकपुरुषोत्तममासपूर्णता †

❋ गोचरग्रहा ❋

मं. १२ बु.	शु. ११ चं.	१०
१		के. ९
२	गु. ८ चं.	
रा. ३	५	श. ७
४		६

अ.४७द्वि.फाल्गु.कृ.८चं.०।०ग.३२६

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	११	१०	७	११	६	२	८
२२	१४	५	१६	२१	१०	६	६
१९	९	५९	३६	२१	२९	४६	४६
७	३३	४७	२५	४	१५	४६	४६
६०	४४	१०१	४	७३	[illegible]	३	३
२	५०	१६	३	१६	+	११	११

❋ अथ मीन संक्रान्ति फलम् ❋

द्वि. फाल्गुन कृष्ण ३० चन्द्रे मीनेऽर्कः प्र.बा. ३न. ३बा.ना.ध्वाक्षी व्यापार विकास, वैश्यलाभद,न.ना.घोरा, हरिजन दलितवर्ग उत्थान, कल्याण योजना लाभ, रा.२ बा.ध्वा. दुष्ट आतङ्क वादियों का नाश, उत्तरेगमनं, ई.दृष्टिः किस्तु.करणे उत्तिष्ठा मंदी उत्प्रेरक, वाहन कुक्कुट उप वा.वानर, प्राकृतिक प्रकोप जनधनहानि,अशांतिकारक, श्यामवस्त्र, बाणायुध,काष्ठपात्र, शर्करा भ.कर्पूर ले.संकर आ.जपा.पुष्प,स्वर्णभू.पाण्डु क.प्रवा. अव.मु,३०लोहामणीनरी,इमारती लकड़ी, चावल,शकर,घी, मैदा,दाणा तथा श्वेतवर्णके वस्तुमात्र उन्नत,धान्य, दालबाना, तिलहन स्थिर मति, सितो.प.व.प.रा.द.मूलं भूमौ ।

अ.४८द्वि.फाल्गु.कृ.३०चं.०।०ग.३३३

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	११	१०	७	११	६	२	८
२९	१९	१७	१६	२९	१०	६	६
१८	३०	५८	५९	५३	११	२४	२४
२३	१४	३०	४४	३७	२०	३०	३०
५९	४४	१०६	२	७३	[illegible]	३	३
४६	४२	५४	४५	०	+	११	११

❋ गोचरग्रहाः ❋

मं. १२ बु.	शु. ११ चं. बु.	१०
१		९ के.
२	८ गु.	
रा. ३	५	७ श.
४		६

卐 होलिका वायुप्रवाहे [illegible] हानिकारक, नैऋत्य का कलत हानिकर्ता,पश्चिमका सामान्य फलद,ऊनमेंतेजी । वायव्यका आंधीकारक उत्तर एवं ईशानदिशा का वर्षायोगद, चारोदिशा कोणों का राष्ट्रसंकट, वायुशांतहोवे तथा झलऊंचे को उत्पात अशांतिकारक समझें ।

योगाः	ति	द्वि.फाल्गुनशुक्लपक्षः सं.२०३९शाकः१९०४										दि.			र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु.	भा.	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
सिद्धि	१	मं	४३	१७	उ	६०	०	शु	१२	१	कि	१२	१०	३६	६।५३	६।४३	२	१५	२९	२४	मीन	[illegible]	[illegible]
फुलेरा	२	बु	४४	२८	उ	०	५८	शु	१०	२४	बा	१३	५३	४०	६।५२	६।४४	३	१६	३०	२५	मीन	[illegible]	[illegible]
मित्र	३	गु	४४	३०	रे	३	८	ब्र	७	५९	तै	१४	२९	४४	६।५१	६।४५	४	१७	१	२६	मे. ३/८	[illegible]	[illegible]
वज्र	४	शु	४३	३१	अ	४	१२	ऐ	४	३५	व	१४	०	४८	६।५०	६।४५	५	१८	२	२७	मेष	[illegible]	[illegible]
ध्वांक्ष	५	श	४१	४३	भ	४	२८	वै	०/३१	५६/३	व	१२	३७	५२	६।४९	६।४६	६	१९	३	२८	वृ. १९/२०	[illegible]	[illegible]
धूम्र	६	र	३८	५६	कृ	३	५४	प्री	५०	२८	कौ	१०	१९	५६	६।४८	६।४६	७	२०	४	२९	वृषभ	[illegible]	[illegible]
प्रवर्ध	७	चं	३५	२४	रो	२	१८	आ	४४	१९	ग	७	१०	३/०	६।४७	६।४७	८	२१	५	३०	मि ३१/११	[illegible]	[illegible]
होलाष्ट.	८	मं	३०	५८	मृ	०/४	१६/१६	सौ	३७	३७	वि	३	१०	५	६।४५	६।४७	९	२२	६	१	मिथुन	[illegible]	[illegible]
गद	९	बु	२५	५३	पु	५३	५	शु	३०	१७	कौ	२५	५३	९	६।४४	६।४८	१०	२३	७	२	क. ३९/३	[illegible]	[illegible]
शुभ	१०	गु	१९	५५	पु	४८	३१	ब्र	२२	१७	ग	१९	५५	१३	६।४३	६।४८	११	२४	८	३	कर्क	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	शु	१३	२०	श्ले	४३	२०	सु	१३	४०	वि	१३	२०	१७	६।४२	६।४९	१२	२५	९	४	सिं ४३/२०	[illegible]	[illegible]
प्र..व्रत	१२	श	६	७	म	३७	५१	धृ	५४/१	१६/६	बा	६	७	२२	६।४१	६।५०	१३	२६	१०	५	सिंह	[illegible]	[illegible]
क्षय	१३	श	५८	५१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
छत्र	१४	र	५१	१६	पू	३२	४०	गं	४७	३५	ग	२५	४	२६	६।४०	६।५०	१४	२७	११	६	क. ४६/२१	[illegible]	[illegible]
होलिका	१५	चं	४५	५	उ	२८	०	वृ	३९	५१	वि	२८	१०	३/३०	६।३९	६।५१	१५	२८	१२	७	कन्या	[illegible]	[illegible]

मार्च १९८३ वसन्त ऋतुः रवि-उत्तरा, दक्षिण-उत्तर-गोले

पूभायां बुधः८ग.१५०४६ सवार्थि६०या.

चन्द्रदर्शनं रामकृष्णपरमहंसजयंती

जमादिलआखिरमा.६मुस.सर्वा.६०या.पंचक३८या.वक्रीस्वाति †

भ.१०४उ.४३३१या.उभायांरविः५२०सर्वार्थ१४२या. † १शनिः१४८६ग.५२१

मीने बुधः३२१८उ.११३३८

भ.३२१४उ.मेषेभानुः४७५१सर्वा.१२८या.रविउत्तरगोले

भ.१३०या.होलाष्टकप्रा.श्रीदाबूदयालपुण्यःराष्ट्रीयचैत्रप्रा.शाके१९०५

£ शाहपुरा भरण्यांशुक्रः१५४ग.७१२६

भ.४३६७उ. सर्वार्थ-अमृतयोग४३८१या.

भ.१२३०या.आमलकी११व्रतंसर्वेरामस्नेहीफूलडोल £

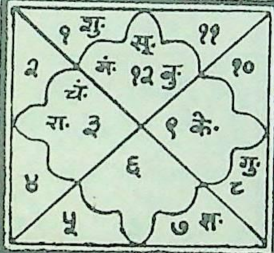
प्रदोषव्रतम्

भ.५११६उ.अश्विन्यांमेषेभौमः५३१३ग.४२४०भौमास्तःपश्चिमे३४४४सर्वा.३४२०उ.

‡ सोनागिरीमेलाजैनरेवत्यांबुधः५११९ग.१२०१वक्रीगुरुः५७राः१७०।२९८

भ.११८०या.पूर्णिमाव्रतं होलिकादीपनंप्रदोषेमन्वादि चैतन्यप्रभुज. ‡

※ गोचरग्रहाः ※



अ.४९द्वि.फाल्गु.शु.८मं.०।०ग.३४१

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	११	११	७	०	६	२	८
७	२५	२	१७	९	९	५	५
१५	३१	५१	१४	३७	४५	५९	५९
४२	४४	४४	२०	१५	४५	४	४
५९	४४	११८	०	७२	३२	३	३
३१	३१	३३	५४	३६	+	११	११

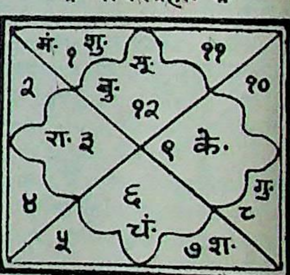
※ मासफल भुक्तिः ※

फाल्गुनवदी द्वितीया दिने बादल होय स बीज । वर्षे श्रावण भादवा,घरघर होवेतीज ॥ फागुन सुदी की सप्तमी वर्षविध जोजाय । पांचेनम आसोजसुदी जल-थल एकाकाय ॥ फागुन सुदी एकादशी,दशमी वेविन । मेघनाद से,आसोज सुदी४-५ को वर्षाहोवे । फागुनपूनम को रहे,बादल वर्षा जाय । लाभ सातवेंमास हो,घूघकरीदो जाव ॥ होलीजलने के समय यदि बादल हो जाय । तो गेहूं रोली लगे, महंगे भाव बिकाय । तृतिया फागुनवदी में,देवोबादल गाज, आश्विन शुक्ला तीज को, वर्षा हो दिनरात ॥ फाल्गुन अथवा चैत्र में मंगल या शनिवक्र । मंदी रह करके चले फिर तेजी का चक्र ॥ शुक्र भौम का साथ जब, मंगल के घर जाय । मुक्ता मोती संख पशु इनका महंगाभाव ॥ शुक्र भौम का योग है, पापक राशि चार । ऋतुकोप नैतिकपतन रमणी त्रास विचार ॥ भौम शुक्रकी युति बनी, औ शनि दृष्टि संयोग । स्त्रीकष्ट सत्ताहनन औ रोग व्यथा का योग ॥ राष्ट्रीय अर्थ-तंत्र में नवीन रीतिनीति । सुदी पक्ष आंधी,वायु, मेघगाज विशेष का कारक ।

अ.५०द्वि.फाल्गु.शु.१५चं.०।०ग.३४७

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	०	११	७	०	६	२	८
१३	०	१४	१७	१६	९	५	५
१२	३	५६	१९	५०	२४	४०	४०
६	१७	३०	२८	३०	५५	०	०
५९	४४	१२१	०	७२	१३	३	३
२०	२०	०	१	१६	+	११	११

※ गोचरग्रहाः ※



योगाः	ति. १६	चैत्र कृष्णपक्षः सं.२०३९ शाकः१९०४												दि.	र.उ.	र.अ.	बं.	इं	मु	भा	चन्द्रः	प्रा.र.स्प.	गतिः
छारंडी	१	मं	३९	४६	ह	२४	१७	ध्रु	३२	४३	बा	१२	२५	३/४	६।३७	६।५१	१६	२९	१३	८	तु. ६	[illegible]	[illegible]
कालदं.	२	बु	३५	५८	चि	२१	५५	व्या	२६	५६	तै	८	१३	३८	६।३६	६।५१	१७	३०	१४	९	तुला	[illegible]	[illegible]
चौथव्रत	३	गु	३४	०	स्वा	२१	३७	ह	२२	५०	व	४	५९	४२	६।३५	६।५२	१८	३१	१५	१०	तुला	[illegible]	[illegible]
मातंग	४	शु	३३	४४	वि	२३	४	व	२०	७	व	३	५२	४६	६।३४	६।५२	१९	१	१६	११	वृ. ४२	[illegible]	[illegible]
अमृत	५	श	३५	४७	अ	२६	५७	सि	१९	२	कौ	४	४५	५०	६।३३	६।५३	२०	२	१७	१२	वृश्चिक	[illegible]	[illegible]
काणं	६	र	३९	२८	ज्ये	३१	२६	व्य	१९	१०	ग	७	३७	५४	६।३२	६।५४	२१	३	१८	१३	ध. ३१/२६	[illegible]	[illegible]
शीतला	७	चं	४४	४८	मू	३८	२	व	२०	३१	वि	१२	८	५८	६।३१	६।५४	२२	४	१९	१४	धन	[illegible]	[illegible]
मित्र	८	मं	५०	३७	पू	४५	११	प	२२	२६	बा	१७	४३	३/१	६।३०	६।५५	२३	५	२०	१५	धन	[illegible]	[illegible]
वज्र	९	बु	५७	७	उ	५२	५५	शि	२४	५२	तै	२३	५२	५	६।२९	६।५५	२४	६	२१	१६	म. ४/३	[illegible]	[illegible]
ध्वज	१०	गु	६०	०	श्र	६०	०	सि	२७	१६	व	३०	९	९	६।२८	६।५६	२५	७	२२	१७	मकर	[illegible]	[illegible]
धूम्र	१०	शु	३	११	श्र	०	१३	सा	२९	१८	वि	३	११	१३	६।२७	६।५६	२६	८	२३	१८	कु. ३/३	[illegible]	[illegible]
ए. व्रत	११	श	८	४१	ध	७	२	शु	३०	३०	बा	८	४१	१७	६।२६	६।५६	२७	९	२४	१९	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
प्र. व्रत	१२	र	१३	२४	श	१२	२९	शु	३०	४०	तै	१३	२४	२१	६।२५	६।५७	२८	१०	२५	२०	कुम्भ	[illegible]	[illegible]
मूसल	१३	चं	१६	११	पू	१६	५०	ब्र	२९	३५	व	१६	११	२४	६।२३	६।५७	२९	११	२६	२१	मी ४०	[illegible]	[illegible]
सिद्धि	१४	मं	१७	५८	उ	१९	३१	ऐ	२७	३५	श	१७	५८	२८	६।२२	६।५८	३०	१२	२७	२२	मीन	[illegible]	[illegible]
अमावस	३०	बु	१७	३९	रे	२०	१८	वै	२४	२२	ना	१७	३९	३/३	६।२१	६।५८	३१	१३	२८	२३	मे. ३०	[illegible]	[illegible]

मार्च-अप्रेल१९८३वसंतऋतुःरविःउत्त.-उ.गो.(अ.द्वि.फाल्गु.कृ.)



छारंडी वसन्तोत्सवः

संततुकारामजयंती

भ.५/४९ उ.३/४० या. कल्पादि चतुर्थीव्रतं रेवत्यां रविः ३/३ ०/३

अप्रेल मा.४ता.३० सर्वार्थयोग २/४ ३ उ.

श्रीरङ्गपंचमी

भ.३/२ ९/८ उ. एकनाथषष्ठी सर्वार्थ ३/२ १/६ उ.

भ.१/८ २ या. शीतलापूजा बासोड़ा अश्विन्यांमेषेबुधः २/३ १/१ ग. १/४ १/५ ८

श्रीऋषभदेवजयंती केसरिया जी मेलामेवाड़ कृतिकायांशुक्रः ०/६ ग. ७/५ १/१

भ.३/० उ. दशामाताव्रतं वृषेशुक्रः ५/१ ६/५ ग. ७/५ १/१ बुधोदयःपश्चिमे ०/१ ०/७

भ.३/१ या. सर्वार्थ ०/१ ३ या.पंचक ३/३ ३/७ उ.

पापमोचिनी११व्रतं सर्वे

प्रदोषव्रतम्



भ.१/१ ६/१ उ.४/५ ६/४ या. श्रीरङ्गतेरस भरण्यांबुधः ३/२ ०/१ ग. १/१ ०/४ १

सर्वार्थ १/३ ९/१ या.

देवपितृकार्ये अमावस्या मन्वादि पंचक ३/५ ९/८ या.श्रीरस्तु

☀ गोचरग्रहाः ☀

मं. बु. शु. १ | सू. १२ | ११ | १० | २ | रा. ३ | ९ चं. के. | ४. | ६ | ८ गु. | ५ | ७ श.

अ.५१चैत्रकृ ८मं.०।०ग.३५५

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	०	०	७	०	६	२	८
२१	५	१	१७	२६	८	५	५
५	५९	१६	११	२९	५१	१४	१४
२९	१६	१०	१३	७	२५	३३	३३
५९	४४	११८	३/३ १	७१	१/५ ४	३	३
६	६	४५	व.	५१	+	११	११

☀ मासफलश्रुति. ☀

चैत्रबदी१का मेघगाजवर्षा श्राव.भादवामें वर्षानहींकरे,तथा दूजको सबओर का पवनप्रवाह तथा मेघहोतोभादवामें बहुत वर्षाहोवे। चैत्रबदी७को आकाश मेघयुक्त हो तो लाल वस्तु मेंमंदीका क्रमबने। चतुर्थ्यांकृष्णपक्षस्य वर्षावृभिक्षकारिणो। चैत बदी पांचे बिना, मेघ झुके आकाश। सभी वस्तु सस्ती बिके,फलजानो वो मास॥ चैत्रबदी में दूज से, छट तक जो वर्षाय। तो आगे बरसात में, वर्षासमझो नांय॥ मावस से अधिके नखत,सस्ताकरेअनाज। हीन नखत मावसअधिक, तो तेजी का राज॥ मं.बु.शु. की युति स्त्रीवर्ग में रोग सूचक।

★सूचना संकेत– शततुल्य वर्षों से "निर्णयसागरपंचाङ्ग".

अ.५२चैत्रकृ.३० बु.०।०ग.३६३

र	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	०	०	७	१	६	२	८
२८	११	१५	१६	५	८	४	४
५६	५५	५१	५४	५९	१७	४९	४९
४६	४०	१३	२८	१५	३९	२४	२४
५८	४३	१०१	३/०	७१	४/३ ५	३	३
४७	४९	१४	+	२५	+	११	११

☀ गोचरग्रहाः ☀

मं. बु. १ | गु. | सू. १२ चं. | ११ | १० | २ | रा. ३ | ९ के. | ४ | ६ | ८ गु. | ५ | ७ श.

नीमच छा का [illegible] [illegible] सूचना के भी छपने लगे हैं। अतः वर्षों से अनुभव में आया शुद्ध अनुभूत नवबर्ष का पंचाङ्ग खरीदते समय ★ पं. भवानीशंकर रविशंकर शर्मा, नीमच ★ के रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क वाला चित्र देखकर ही पंचाङ्ग लेवें यही विनंति।

❊ सक्रान्तिवाहनं कुक्कुटः 卐 संक्रांत्युपवाहनं वानरः ❊



अथमकरसंक्रान्तिफलम्–श्रीमन्नृपतिविक्रमार्क२०३९शाके१९०४प्रवर्त्तमाने श्रीधातासंवत्सरे रविसोम्यायने शिशिरऋतौ माघमासे कृष्णपक्षे ३०पुण्य तिथौ शुक्रवासरे ९।२४, उत्तराषाढनक्षत्रे६०।०, हर्षणयोगे ४२।४९, नागकरणे ९।२४, दिनमानं२६।१३, रजनीमानं ३३।४७ एवं पंचांगशुद्धावत्रदिनेष्ट घटिका १५।३९ समये मकर राशौ सूर्यस्य संक्रमणं स्यात् ।। तदा देवानां दिनोदयः दैत्यानां रात्र्युद्गमः अस्य पुण्यकालः मध्यान्हात् पूर्वे संक्रमणवशात् अद्यैव शुक्रवासरे सूर्योदयवेलातःपुण्यप्रदः वाहनादिप्रकारविषये वारात्३, नक्षत्रात् ३, वारनाम मिश्रा पशुधन सम्पदा विकास, दुग्धप्रदाययोजना, पशुस्वास्थ्यकेन्द्र प्रगति, नक्षत्रनाम नंदा गणितज्ञों में हर्ष, राष्ट्रीयअर्थतंत्र सुधारयोजना, भारतीयविज्ञानप्रगति, अन्तरिक्षयान प्रेक्षण, ऋतु अनुसंधान, अणुशक्तिवृद्धि, मध्यान्ह व्या.साहित्यकार,विद्वान् तथा महापुरुष पर प्रभारक । दक्षिणे गमनं दक्षिण संभागे कुफलं, नैऋत्यकोण दृष्टि, किस्तुघ्नकरणे उत्तिष्ठां मंदीधारक, वाहनकुक्कुटः(मुर्गा), उपवाहन वानर , प्राकृतिकप्रकोप, जनधनक्षति,अशांति,हिंसकवृत्तिः विशेष,श्यामवस्त्र,बाणायुध, काष्ठपात्र,शर्कराभक्षण,कपूरलेपन, वर्णसंकरजाति,जपा.पुष्प, स्वर्णभूषण,पांडुकंचुकी, प्रव्राजाऽवस्था, मुहूर्त्त४५पेट्रोल-डीजल, इस्पात-लोह, लकड़ी, उड़द, अफीम,वाहन, मशीनरी सभी धात्वादि में सुरखी । तिलहन, दालबाना, धान्य स्थिर भाव गति । मकरे शकुनसूत्रं–शुक्रवार के दिन कभी सूर्य संक्रमण होय । हाथी, घोड़ा, ऊँट, गुड़ इनमें महंगा जोय ।। कर्क-मकर दो बहिन हैं, बैठे एक ही वार । कं पिरजा को पति मरे, कं पड़े अचिन्तो कार ।। वर्षा बादल बीजली, जो माघी सकरात । गऊ दुधारी अन्न को, उपज बढ़े बहु भात ।। संक्रान्ति प्रारूप– षष्ठीयोजनविस्तीर्णा लम्बोष्ठी दीर्घनासिका । एकवस्त्रा दश भुजा सक्रान्तिः पुरुषाकृतिः इतीदं संक्रमणं फलाशयम् । शुभं भूयात् सर्वदा

गुरुशनिचारनैसर्गिकफलाशयम् श्रीयुवा+धाता संवत्सर कालांश में शनिदेव कन्या तथा तुला राशि में गतिशील रहेंगे शास्त्रीय भावीफल मेघमहोदय संहितायां– कन्यायां मिथुने मीने वृषे धनुषि वा स्थितः । शनिः करोति दुर्भिक्ष राज्ञां युद्ध परस्परम् । तुलायां प्रतिफलम्–बंगालदेशे विग्रहस्तत्रैव प्रजापीड़ा रोग बहुपीड़ा रोगबहुलता,कार्त्तिके महापुरुषादि पीडाप्रभारः दक्षिणदिशि उपद्रवोऽर्द्धराशिभोगात् परमुत्पातः छत्रभंगः । मेघमाला ग्रंथ तु–कन्याराशि शनिर्गत्वा संग्रामं च धरातले । जयस्तत्रनरेन्द्राणांम्लेच्छहानिर्दिनेदिने ।। तुलाराशि शनिर्गत्वा दुर्भिक्ष-मुत्तरापथे । हाहाभूताभवेत्पृथ्वीमलेच्छघातं वरानने ।। लवणतिलकर्पासतैलादिकानां जायते च महर्घता ।। कादम्बनी ग्रंथमध्येऽपि–शनिर्दुष्टो कन्यातुलावृश्चिकयोरपि, कन्यास्थे मालवे मध्य-प्रदेशे । तुलायांअनावृष्टिदुर्भिक्षं–कन्यायांमुस्लिमदेशेषुपीड़ा,तुलायांउत्तरापथेप्रपीड़ा । सांवत्सरी पद्धतिमध्ये तु–कन्याराशिस्थिते सौरे संग्रामः स्याद्वरानने । जयस्तत्रनरेन्द्राणां मलेच्छहानिर्दिने दिने ।। तुला राशी भानु सुते दुर्भिक्षं चोत्तरायणे । हाहाकारे भवेद्देशे ह्युपद्रवसमाकुलम् ।। भविष्यफल वर्ष प्रबोधेऽपि–कन्यायां शनिःकरोति दुर्भिक्षं राजयुद्धं परस्परम् । तुलायां त्रिभाग-शेषापृथ्वी मांसशोणितकर्दमैः ।। धान्यानां वैमहर्घनरपुरनगरा क्लेशपूर्णाश्चदेशाः । पृथ्व्यांकम्प-माप्ता सकलमुनिवरेदेहपीड़ाविनित्यम् ।। इत्यादि संहिताशास्त्र वचनों का सरलार्थ यह कि विश्वशांति हेतु विबाधक गति, महाराष्ट्रनायकों में भौतिकवादी प्रवृत्ति युद्धोन्माद,अणुशक्ति-बम आदि का उद्गार, परस्पर द्वन्द अशांति-विवाद की अभिवृद्धि । विशेषकर मुस्लिम देशों में हिंसक प्रवृत्ति,राष्ट्रनायक हनन,सत्ता प्रलोभ साथ ही देवदोष प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि । राष्ट्रीय अन्न समस्या तथा नित्यपयोगी खाद्य-पेय पदार्थों के समाधान हेतु शासकीय विशेष नीति-रीति, आपूर्ति हेतु विविध प्रयास । पशुधन की हानि आदि व्याधि वा ऋतुकोप से पशु क्षति । कपास-सूत, नमक, शकर तथा अलसी, मूंगफली सरसों अरण्डा, खोपरा हाथा, सोयाबीन आदि तैल पदार्थों की न्यूनता, भावों में सुरखी । प्रांतीयजन असन्तोष, आन्दोलन, तालाबन्दी में विशेष गति, वर्ष के उत्तरायण कालांश में देवदोष ऋतुकोप, उत्पादन न्यूनता, धान्य गल्ला के भावों में उन्नत गति । सांसर्गिक रोग व्याधि का जन-जन में प्रस्तार, आंधी-तूफान, वायुवेग, समुंद्रीचक्रवात, भूमिकम्पन,खलन, यानखान विस्फोट आदि प्राकृतिक प्रकोप में विशेषता दिखे । बृहत्संहिता मतानुसार "हस्तेनापितचाक्रिकचोरभिषक्मालाकार, चित्रायां रमणी लेखकः चित्रज्ञचित्र दुःखःदः, स्वात्यांनाविकराजदूतजयानेषुप्रभारः । अर्थात् कुम्हार, नाई, चिकित्सक, वैश्या, माली, तैलमिलमालिक. स्त्रीवर्ग, चित्रकार, लेखक, पत्रकार,राजदूत, ड्राईवर, जहाज-कप्तान, नाविक-मल्लाह तथा नर्तक वर्ग पर प्रभार कष्ट पीड़ा बृहस्पति तुला+वृश्चिक राशि से युक्त है "तुलेगुरौसस्यनाशो बहुक्षीरं प्रजायते । अलीजीवे च दुर्भिक्षं राजचौररुजाद्भयम् ।। छत्रभंगस्ततो राजविग्रहःक्वापिमंडलेउत्पातोमरुदेशे स्यान्मार्गे चोरभयं तथा पश्चिमसीमासंभागादौपरचक्रागमोमतः ।। भावार्थ यह कि पश्चिमोत्तर सीमा संभाग पर द्वन्द, शिक्षकवर्ग में असन्तोष व्यापारे रसवर्गीयपदार्थ से लाभ, देश भू-भेद से खंडवर्षा,फसलों का उत्पादन न्यून, सोना, चांदी, कांसी, तांबा, तिल,घी, श्रीफल, कपास-सूत-वस्त्र,नमकआदि का कारोबार लाभद दूध घी तैल के समकल वितरणमें शासकीय अभिनव गति सुयोजना। एवमेव राहु-केतु मिथुन-धन तत्व के हैं, बालक वर्ग शिशु स्वास्थ्य में न्यूनता, प्राकृतिकप्रकोप में विशेष गति, केन्द्रीय वा प्रांतीय मंत्रीमंडल में सुधार अभिनव परिवर्तन रचनात्मक सार्थक गति सूत्र । वस्तुतः यह वर्ष विशेष शुभ फलसूचक नहीं तदर्थ सभी जनसमाज,सेवारतकर्मचारी अधिकारी, विशेषकरमंत्रीगण, राजनैतिकदल, नायक-राजनेताओं हेतु कर्त्तव्यनिष्ठा.अनुशासन राष्ट्रभक्ति की साधना हेतु ज्योतिर्विज्ञान पुनः-पुनः संकेत प्रदान करता है । उपरोक्तफलाशय यह दैवज्ञ का एक मानवीय प्रयास है विशिष्ट प्रतिफल मायावी तंत्र रचनाजगदा धाराधीन है।

卐 ☼ 卐 स्वस्ति विक्रमाब्द २०३९ एवं शाके १९०४ मध्ये परम्परानुगतं गणनासुविधार्थे प्रातःकालिकः रविस्पष्टः 卐 ☼ 卐

ता.	वार	रा.	अं.	क.	वि.
मार्च					
२६	शु	११	११	३४	१४
२७	श	११	१२	३३	३९
२८	र	११	१३	३३	२
२९	चं	११	१४	३२	२२
३०	मं	११	१५	३१	४१
३१	बु	११	१६	३०	५७
अप्रेल १९८१					
१	गु	११	१७	३०	१२
२	शु	११	१८	२९	२३
३	श	११	१९	२८	३२
४	र	११	२०	२७	३९
५	चं	११	२१	२६	४५
६	मं	११	२२	२५	४८
७	बु	११	२३	२४	४९
८	गु	११	२४	२३	४९
९	शु	११	२५	२२	४६
१०	श	११	२६	२१	४१
११	र	११	२७	२०	३५
१२	चं	११	२८	१९	२६
१३	मं	११	२९	१८	११
१४	बु	०	०	१६	५४
१५	गु	०	१	१५	३५
१६	शु	०	२	१४	१४
१७	श	०	३	१२	५२
१८	र	०	४	११	२७
१९	चं	०	५	१०	१
२०	मं	०	६	८	३१
२१	बु	०	७	६	५९
२२	गु	०	८	५	२३
२३	शु	०	९	३	४६
२४	श	०	१०	२	६
२५	र	०	११	०	२५
२६	चं	०	११	५८	४२
२७	मं	०	१२	५६	५८
२८	बु	०	१३	५५	११
२९	गु	०	१४	५३	२२
३०	शु	०	१५	२१	३०
मई					
१	श	०	१६	४९	३७
२	र	०	१७	४७	४१
३	चं	०	१८	४५	४४
४	मं	०	१९	४३	४३
५	बु	०	२०	४१	४०
६	गु	०	२१	३९	३६
७	शु	०	२२	३७	३१
८	श	०	२३	३५	२३
९	र	०	२४	३३	१२
१०	चं	०	२५	३०	५८
११	मं	०	२६	२८	४४
१२	बु	०	२७	२६	२८
१३	गु	०	२८	१४	१२
१४	शु	०	२९	२१	५४
१५	श	१	०	१९	३४
१६	र	१	१	१७	११
१७	चं	१	२	१४	४८
१८	मं	१	३	१२	२३
१९	बु	१	४	९	५५
२०	गु	१	५	७	२७
२१	शु	१	६	४	५८
२२	श	१	७	२	२६
२३	र	१	७	५९	५३
२४	चं	१	८	५७	१८
२५	मं	१	९	५४	४३
२६	बु	१	१०	५२	५
२७	गु	१	११	४९	२६
२८	शु	१	१२	४६	४५
२९	श	१	१३	४४	४
३०	र	१	१४	४१	२०
३१	चं	१	१५	३८	३६
जून					
१	मं	१	१६	३५	५०
२	बु	१	१७	३३	३
३	गु	१	१८	३०	१४
४	शु	१	१९	२७	२५
५	श	१	२०	२४	३५
६	र	१	२१	२१	४३
७	चं	१	२२	१८	५१
८	मं	१	२३	१५	५८
९	बु	१	२४	१३	३
१०	गु	१	२५	१०	८
११	शु	१	२६	७	११
१२	श	१	२७	४	१४
१३	र	१	२८	१	१५
१४	चं	१	२८	५८	१६
१५	मं	१	२९	५५	१६
१६	बु	२	०	५२	१५
१७	गु	२	१	४९	१४
१८	शु	२	२	४६	१२
१९	श	२	३	४३	११
२०	र	२	४	४०	८
२१	चं	२	५	३७	४
२२	मं	२	६	३४	१
२३	बु	२	७	३०	५७
२४	गु	२	८	२७	५३
२५	शु	२	९	२४	४८
२६	श	२	१०	२१	४३
२७	र	२	११	१८	३७
२८	चं	२	१२	१५	३२
२९	मं	२	१३	१२	२६
३०	बु	२	१४	९	२०
जुलाई					
१	गु	२	१५	६	१४
२	शु	२	१६	३	९
३	श	२	१७	०	३
४	र	२	१७	५६	५८
५	चं	२	१८	५३	५२
६	मं	२	१९	५०	४६
७	बु	२	२०	४७	४१
८	गु	२	२१	४४	३५
९	शु	२	२२	४१	२९
१०	श	२	२३	३८	२५
११	र	२	२४	३५	२०
१२	चं	२	२५	३२	१६
१३	मं	२	२६	२९	१२
१४	बु	२	२७	३६	९
१५	गु	२	२८	२३	५
१६	शु	२	२९	२०	२
१७	श	३	०	१७	०
१८	र	३	१	१३	५७
१९	चं	३	२	१०	५४
२०	मं	३	३	७	५३
२१	बु	३	४	४	५१
२२	गु	३	५	१	५०
२३	शु	३	५	५८	५०
२४	श	३	६	५५	५१
२५	र	३	७	५२	५३
२६	चं	३	८	४९	५७
२७	मं	३	९	४७	१
२८	बु	३	१०	४४	६
२९	गु	३	११	४१	१२
३०	शु	३	१२	३८	२१
३१	श	३	१३	३५	३
अगस्त					
१	र	३	१४	३२	४०
२	चं	३	१५	२९	५२
३	मं	३	१६	२७	४
४	बु	३	१७	१४	१७
५	गु	३	१८	२१	३१
६	शु	३	१९	१८	४७
७	श	३	२०	१६	३
८	र	३	२१	१३	२०
९	चं	३	२२	१०	३९
१०	मं	३	२३	८	०
११	बु	३	२४	५	२१
१२	गु	३	२५	२	४४
१३	शु	३	२६	०	१०
१४	श	३	२६	५७	३६
१५	र	३	७	५५	३
१६	चं	३	२८	५२	३२
१७	मं	३	२९	५०	२
१८	बु	४	०	४७	३३
१९	गु	४	१	४५	६
२०	शु	४	२	४२	४१
२१	श	४	३	४०	१९
२२	र	४	४	३७	५७
२३	चं	४	५	३५	३८
२४	मं	४	६	३३	२०
२५	बु	४	७	३१	५
२६	गु	४	८	२८	५१
२७	शु	४	९	२६	४०
२८	श	४	१०	२४	३०
२९	र	४	११	२२	२२
३०	चं	४	१२	२०	१४
३१	मं	४	१३	१८	८
सितम्बर					
१	बु	४	१४	१६	६
२	गु	४	१५	१४	४
३	शु	४	१६	१२	३
४	श	४	१७	१०	६
५	र	४	१८	८	१०
६	चं	४	१९	६	१६
७	मं	४	२०	४	२५
८	बु	४	२१	२	३५
९	गु	४	२२	०	४९
१०	शु	४	२२	५९	४
११	श	४	२३	५७	२१
१२	र	४	२४	५५	४१
१३	चं	४	२५	५४	३
१४	मं	४	२६	५२	२७
१५	बु	४	२७	५०	५४
१६	गु	४	२८	४९	२२
१७	शु	४	२९	४७	५२
१८	श	५	०	४६	२४
१९	र	५	१	४४	५८
२०	चं	५	२	४३	३३
२१	मं	५	३	४२	११
२२	बु	५	४	४०	५०
२३	गु	५	५	३९	३०
२४	शु	५	६	३८	१४
२५	श	५	७	३७	०
२६	र	५	८	३५	५०
२७	चं	५	९	३४	४२
२८	मं	५	१०	३३	३८
२९	बु	५	११	३२	३६
३०	गु	५	१२	३१	३७
अक्टूबर					
१	शु	५	१३	३०	४०
२	श	५	१४	२९	४५
३	र	५	१५	२८	५४
४	चं	५	१६	[illegible]	[illegible]
५	मं	५	१७	२७	१७
६	बु	५	१८	२६	३१
७	गु	५	१९	२५	४९
८	शु	५	२०	२५	९
९	श	५	२१	२४	३०
१०	र	५	२२	२३	५०
११	चं	५	२३	२३	२२
१२	मं	५	२४	२२	५०
१३	बु	५	२५	२२	२२
१४	गु	५	२६	२१	५६
१५	शु	५	२७	२१	३२
१६	श	५	२८	२१	८
१७	र	५	२९	२०	४७
१८	चं	६	०	२०	२७
१९	मं	६	१	२०	१०
२०	बु	६	२	१९	५६
२१	गु	६	३	१९	४५
२२	शु	६	४	१९	३७
२३	श	६	५	१९	३०
२४	र	६	६	१९	२५
२५	चं	६	७	१९	२२
२६	मं	६	८	१९	२१
२७	बु	६	९	१९	२३
२८	गु	६	१०	१९	२६
२९	शु	६	११	१९	३३
३०	श	६	१२	१९	४१
३१	र	६	१३	१९	५२
नवम्बर					
१	चं	६	१४	२०	४
२	मं	६	१५	२०	१८
३	बु	६	१६	२०	३५
४	गु	६	१७	२०	५४
५	शु	६	१८	२१	१४
६	श	६	१९	२१	३७
७	र	६	२०	२२	२
८	चं	६	२१	२२	२९
९	मं	६	२२	२२	५७
१०	बु	६	२३	२३	२८
११	गु	६	२४	२३	५९
१२	शु	६	२५	२४	३२
१३	श	६	२६	२५	६
१४	र	६	२७	२५	४४
१५	चं	६	२८	२६	२३
१६	मं	६	२९	२७	२
१७	बु	७	०	२७	४३
१८	गु	७	१	२८	२६
१९	शु	७	२	२९	१२
२०	श	७	३	२९	५९
२१	र	७	४	३०	४८
२२	चं	७	५	३१	४०
२३	मं	७	६	३२	३२
२४	बु	७	७	३३	२७
२५	गु	७	८	३४	२३
२६	शु	७	९	३५	२१
२७	श	७	१०	३६	१८
२८	र	७	११	३७	१९
२९	चं	७	१२	३८	२०
३०	मं	७	१३	३९	२३
दिसम्बर					
१	बु	७	१४	४०	२७
२	गु	७	१५	४१	३३
३	शु	७	१६	४२	३९
४	श	७	१७	४३	४७
५	र	७	१८	४४	५५
६	चं	७	१९	४६	५
७	मं	७	२०	४७	१५
८	बु	७	२१	४८	२६
९	गु	७	२२	४९	३९
१०	शु	७	२३	५०	५२
११	श	७	२४	५२	७

अवशेष भाग प्रातः रविस्पष्टः गणनासुविधार्थे

दिसंबर

ता.	वार	रा.	अं.	क.	वि.
१२	र	७	२५	५३	२२
१३	चं	७	२६	५४	३९
१४	मं	७	२७	५५	५६
१५	बु	७	२८	५७	१४
१६	गु	७	२९	५८	२२
१७	शु	८	०	५९	४१
१८	श	८	२	१	१
१९	र	८	३	२	२३
२०	चं	८	४	३	४४
२१	मं	८	५	५	५
२२	बु	८	६	६	२८
२३	गु	८	७	७	५०
२४	शु	८	८	९	१२
२५	श	८	९	१०	३५
२६	र	८	१०	११	५७
२७	चं	८	११	१३	१९
२८	मं	८	१२	१४	४३
२९	बु	८	१३	१६	६
३०	गु	८	१४	१७	२९
३१	शु	८	१५	१८	५३

जनवरी १९८३

ता.	वार	रा.	अं.	क.	वि.
१	श	८	१६	२०	१७
२	र	८	१७	२१	४१
३	चं	८	१८	२३	५
४	मं	८	१९	२४	३०
५	बु	८	२०	२५	५४
६	गु	८	२१	२७	१८
७	शु	८	२२	२८	४२
८	श	८	२३	३०	७
९	र	८	२४	३१	३०
१०	चं	८	२५	३२	५३
११	मं	८	२६	३४	१६
१२	बु	८	२७	३५	३८
१३	गु	८	२८	२७	१
१४	शु	८	२९	३८	२२
१५	श	९	०	३९	४४
१६	र	९	१	४१	३
१७	चं	९	२	४२	२२
१८	मं	९	३	४३	४१
१९	बु	९	४	४४	५९
२०	गु	९	५	४६	१६
२१	शु	९	६	४७	३३
२२	श	९	७	४८	५०
२३	र	९	८	५०	७
२४	चं	९	९	५१	२३
२५	मं	९	१०	५२	३९
२६	बु	९	११	५३	५२
२७	गु	९	१२	५५	४
२८	शु	९	१३	५६	१५
२९	श	९	१४	५७	२५
३०	र	९	१५	५८	३४
३१	चं	९	१६	५९	४३

फरवरी १९८३

ता.	वा.	रा.	अं.	क.	वि.
१	मं	९	१८	०	५०
२	बु	९	१९	१	५६
३	गु	९	२०	३	१
४	शु	९	२१	४	५
५	श	९	२२	५	८
६	र	९	२३	६	७
७	चं	९	२४	७	५
८	मं	९	२५	८	१
९	बु	९	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	गु	९	२७	९	४७
११	शु	९	२८	१०	३७
१२	श	९	२९	११	२५
१३	र	१०	०	१२	१६
१४	चं	१०	१	१३	६
१५	मं	१०	२	१३	५५
१६	बु	१०	३	१४	४२
१७	गु	१०	४	१५	२७
१८	शु	१०	५	१६	१०
१९	श	१०	६	१३	५२
२०	र	१०	७	१७	३२
२१	चं	१०	८	१८	१०
२२	मं	१०	९	१८	४६
२३	बु	१०	१०	१९	२०
२४	बु	१०	११	१९	५२
२५	शु	१०	१२	२०	२२
२६	श	१०	१३	२०	५०
२७	र	१०	१४	२१	६
२८	चं	१०	१५	२१	४०

मार्च १९८३

ता.	वा.	रा.	अं.	क.	वि.
१	मं	१०	१६	२२	२
२	बु	१०	१७	२२	२२
३	गु	१०	१८	२०	४०
४	शु	१०	१९	२२	५६
५	श	१०	२०	२३	१०
६	र	१०	२१	२३	२२
७	चं	१०	२२	२३	३१
८	मं	१०	२३	२३	३७
९	बु	१०	२४	२३	४०
१०	गु	१०	२५	२३	४०
११	शु	१०	२६	२३	३८
१२	श	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१३	र	१०	२८	२३	३०
१४	चं	१०	२९	२३	१९
१५	मं	११	०	२३	१०
१६	बु	११	१	२२	५८
१७	गु	११	२	२२	४४
१८	शु	११	३	२२	२८
१९	श	११	४	२२	१०
२०	र	११	५	२१	५१
२१	चं	११	६	२१	२७
२२	मं	११	७	२१	१
२३	बु	११	८	२०	३२
२४	गु	११	९	२०	१
२५	शु	११	१०	१९	२८
२६	श	११	११	१८	५४
२७	र	११	१२	१८	१९
२८	चं	११	१३	१७	४३
२९	मं	११	१४	१७	४
३०	बु	११	१५	१६	२३
३१	गु	११	१६	१५	४०

अप्रैल १९८३

ता.	वा.	रा.	अं.	क.	वि.
१	शु	११	१७	१४	५५
२	श	११	१८	१४	७
३	र	११	१९	१३	१७
४	चं	११	२०	१२	२५
५	मं	११	२१	११	३१
६	बु	११	२२	१०	३५
७	गु	११	२३	९	३७
८	शु	११	२४	८	३७
९	श	११	२५	७	३५
१०	र	११	२६	६	३१
११	चं	११	२७	५	२५
१२	मं	११	[illegible]	४	१४
१३	बु	११	२९	२	५९

नवीन वर्ष प्रवेश सारिणी परम्परानुगतम्

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	४	२	१	६	५	४	२
घटि	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	१०	४५	२१	५६	३१	६	४२
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०

अभिनव वर्ष प्रवेश सारिणी वेधसिद्ध वर्षमानानुगतं

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	४	२	१	६	५	३	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	७	४१	१५	४९	२२	५६	३०
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	३९	२८	१८	७	५७	४६	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

अभिनव वर्षफल साधना तंत्र– सम्प्रति नवीन वर्षफल प्रसाधन गणना हेतु भारतीय दैवज्ञों द्वारा दो प्रकार के वर्षमान से गणितागत साधना की जा रही है। हमारे पास बहुधा पत्र आते रहते हैं कि दोनों प्रकार के वर्षमान कौष्ठ की रचना करते पंचांग प्रकाशन करावें, ताकि उभयविध विद्वानों को सुविधा सन्मार्ग प्राप्त होवे। तदर्थ परम्परानुगत ३६५।१५।३१।३० वर्षमान तथानवीनवेधसिद्ध वर्षमान ३६५।१५।२२।५७आदिप्रामाणिक नवीन वर्षाऽनयन कोष्टरचना प्रस्तुत है गणितज्ञजन निज-निज सुविधा अनुभव अनुसार प्रयोग में लेवें। दक्षिण भारत-कर्नाटक-केरल-मद्रास-महाराष्ट्र-गुजरात में प्रायः नवीन वर्षमानानुगत गणना प्रचलित है तथा मध्यभारत से उत्तरोत्तर संभागों में प्राचीनवर्षमानानुगत गणना चरितार्थ है एतदर्थ उभयविध प्रातः कालिक दैनिक रवि स्पष्ट की गणना भी इस वर्ष से विद्वानों की मन्तव्यतानुसार प्रस्तुत की है प्रतिमास पृष्ठों पर नवीनरविः तथा परम्परानुगत रविस्पष्ट अंग्रेजी तारीखों के क्रम से पृथक २ पेजों पर प्रकाशित किये हैं। **नवीनवर्ष प्रवेश पद्धति–** गतवर्षों के वार, घटि पल, विपल अपने जन्मकालिक वार तथा इष्ट घटि पल में जोड़ने से नवीन वर्ष के वार एवं वर्षकालिक इष्ट घटिपल प्राप्त होंगे। कौष्ट रचना में १ वर्ष से १० वर्ष तक तथा बाद में १०-१०वर्षान्तर से ध्रुवांक दिये हैं। यथा १६वां वर्ष प्रवेश लाना है तो ५ तथा १० का गताब्द ध्रुवांक वार, घटि, पल विपल जोड़ने से १५वें वर्ष का गताब्द वारादि प्राप्त होंगे। एवमेव योग क्रिया से किसी भी वर्ष के गताब्द वारादिक प्राप्त होंगे **वर्षाऽनयनसूत्र–** **गत वर्ष के वारादि सब जन्म इष्ट में जोड़। सम सूरज अग्रिम घरो वार सात से तोड़।** **गताब्दज्ञान–** जन्म संवत् को वर्तमान संवत् में घटाने से गताब्द प्राप्त होंगे।

卐 दिन का चोघड़िया 卐

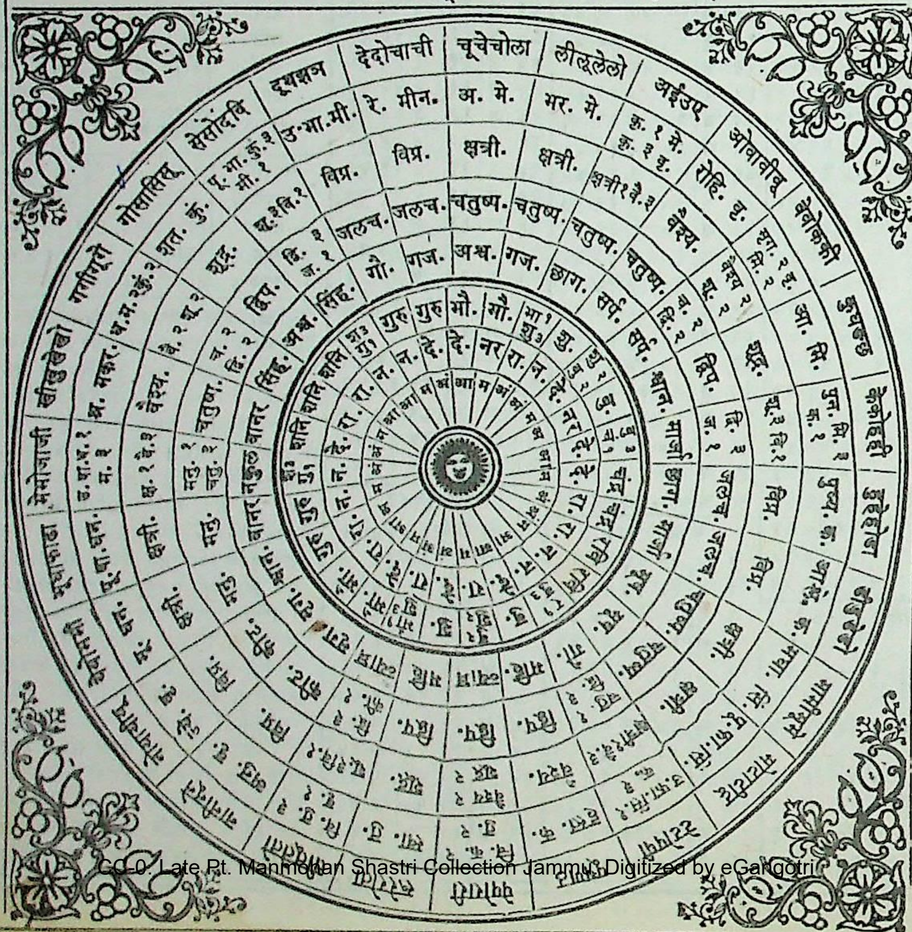
र	चं	मं	बु	गु	शु	श
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
अ	रो	ला	शु	चं	का	उ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का

卐 रात्रि का चोघड़िया 卐

र	चं	मं	बु	गु	शु	श
शु	च	का	उ	अ	रो	ला
अ	रो	ला	शु	चं	का	उ
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला

卐 चोघड़िया मुहूर्त— ८ दिन के तथा ८ रात के होते हैं । उ से उत्पात, चं. से चंचल, ला. से लाभ, अ. से अमृत, का. से काल, शु. से शुभ, रो. से रोग का बोध समझें । मध्यममानतः १॥ घण्टे का मान ❀ गणितागत–दिनमान में ८ का भाग देने से १ का मान आवेगा । सूर्योदय वा सूर्यास्त में योग करने से गणना होती है ❀

अवकहडाचक्रसहितवरवधूमेलापकोपयोगिशतपदचक्रम् ।



अथ खातचक्रम् ।

	विवाहे	देवालये	गेहारंभे	जलाशये	
सूर्य	२।३।४	१२।१।२	५।६।७	१०।११।१२	अग्नि. खातं
सूर्य	११।१२।१	९।१०।११	२।३।४	७।८।९	नैर्ऋते खातं
सूर्य	८।९।१०	६।७।८	११।१२।१	४।५।६	वाय. खातं
सूर्य	५।६।७	३।४।५	८।९।१०	१।२।३	ईशा. खातं

गेहारंभमुहूर्तः ।

सौरमास.	१।२।४।५।७।८।१०।११
पक्ष.	शुक्ला सर्वा प्रशस्ता कृष्णा १२ यावत्.
तिथि.	२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५
वार.	चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि.
नक्षत्र.	ध्रुवः मृदुः पुष्य. ह. स्वा. ध. शत.
लग्न.	२।३।५।६।८।९।११।१२
लग्नशुद्धि.	व्यष्टांत्यस्थैः शुभैर्गेहारंभस्त्र्यायारिगैः खलैः



अथ वरकन्ययोर्नक्षत्रमेलापके वर्णादिनाड्यन्तानामष्टकूटानां गुणस्य संख्या.



१ वर्णगुणज्ञानचक्र. वर.

(कन्या)

वर.	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्रा.	१	०	०	०
क्ष.	१	१	०	०
वै.	१	१	१	०
शू.	१	१	१	१

६ गणमैत्रीगुणज्ञानचक्र. वर.

(कन्या)

गण.	देव.	नर	रा.
देव.	६	५	१
नर.	६	६	०
राक्षस.	०	०	६

२ वश्यगुणज्ञानचक्र. वर.

(कन्या)

वश्य	च.	नर	ज.	वन	की.
चतु.	२	१	१	॥	२
नर	१	२	१	०	०
जल	१	॥	२	१	२
वन	०	०	२	२	०
की.	१	०	१	०	२

८ नाड़ीगुणज्ञानचक्र.

(कन्या)

वर– नाड़ी	आ.	म.	अं.
आदि	०	८	८
मध्य.	८	०	८
अंत्य	८	८	०

३ तारागुणबोधकचक्र. वर.

(कन्या)

तारा.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	[illegible]	[illegible]

७ योनिगुणज्ञानचक्र. वर.

(कन्या)

योनि.	अश्व.	गज.	मेष.	सर्प.	श्वान.	मार्जार.	मूषक.	गो.	महिष.	व्याघ्र.	मृग.	वानर.	नकुल.	सिंह.
अश्व.	४	२	३	२	२	२	२	३	१	१	३	२	२	१
गज.	२	४	३	२	२	२	२	२	३	२	२	३	२	०
मेष.	३	३	४	३	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
सर्प.	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान.	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार.	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक.	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गो.	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
महिष.	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र.	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग.	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर.	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल.	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	२
सिंह.	१	०	१	२	१	२	१	१	१	३	२	३	२	४

* अष्टगुणानयन उदाहरण

वर का नाम चन्द्रचूड कन्या का नाम भवानी वर का जन्म-नक्षत्र रेवती कन्या का जन्म नक्षत्र मूल इनके गुण २७ हुवे अतएव विवाह शुभ है। गण नहीं मिला उसके परिहार में एकाधिपत्यता है १८ गुण मिलने से कोई दोष रहे तो उसका परिहार भी उसी में रहता है।

वर्णादि	वर.	गुण.	कन्या.
वर्ण.	विप्र.	१	क्षत्री.
वश्य.	जल.	१	मनुष्य.
तारा.	शेष २	३	शेष ९
योनि:	गज	२	श्वान.
ग्रहमै.	गुरु	५	गुरु.
गणमै.	देव	०	राक्षस
भकूट.	चार	७	दश
नाड़ी	अन्त्य	८	आदि
		२७	योग.

५ ग्रहमैत्रीगुणचक्र वर.

(कन्या.)

ग्र	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
सू	५	५	५	४	५	०	०
चं	५	५	४	१	४	॥	॥
मं	५	४	५	॥	५	३	॥
बु	४	१	॥	५	॥	५	४
बृ	५	४	५	॥	५	॥	३
शु	०	॥	३	५	॥	५	५
श	०	॥	॥	४	३	५	५

★ मंगल विवेक

जन्म + चन्द्र लग्नतः (सूत्र– लग्नेन्दुभ्यां विचारणीयम्) मंगल १, ४, ७, ८, १२ स्थान में रहते कुंडली मंगलीक कहलाती है। मंगल होवे या सूर्य, शनि, राहु केतु पापक ग्रह हों तुल्य फल होता है। पाप-क्रान्त शुक्र, सप्तमपति की नेष्ट स्थिति भी मंगलीककारक।

७. राशिकूटगुणज्ञानचक्र. वर.

(कन्या)

से.	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मे.	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृ.	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मि.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
क.	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सि.	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
क.	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तु.	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
ध.	०	०	०	०	०	७	७	०	७	०	७	७
म.	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुं.	७	७	०	०	[illegible]	०	०	७	७	०	७	०
मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम् ॥ संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत् ॥ १ ॥

		वर.	रा.	मे.	मे.	मे.	वृ.	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि.	क.	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	म.	कुं.	कुं.	कुं.	मी.	मी.	मी.	रा.
			भा.	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	भा.
वधू.	रा.	भा.	न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु	पु.	आ	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.
१	मे.	१	अ.	२८ ३	३३ ०	२७॥	१८॥ ४	२३॥ ४-	२२॥ ४-	२५॥	१६॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० ५+	२४ ५+	१४॥ ३५	९॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ ६-	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ +५	२५	२६	२०	१९॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२६ ४+	अ.
२	मे.	१	भ.	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ ४-	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ १-	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ -१६	१९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १३२	९॥ १३२	१९॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+	भ.
३	मे.	।	कृ.	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० १३४०	१६॥ ४	१९॥	१९॥ १	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	१९ ३	१६॥ ३६	१९॥ ६-	२५॥ -६	२५ ५+	१९॥ १२५	११॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ १	१७॥ १४	१९॥ १४	१०॥ ३४	कृ.
४	वृ.	॥।	कृ.	१९ ४	१९ १४	१९ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२२ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ ६-	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ ५+	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३	कृ.
५	वृ.	१	रो.	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१३॥ १	१९॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२४॥ -१	२४ -१	२९	२६	२७	१९ ३	रो.
६	वृ.	॥	मृ.	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३१	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ +	२६	१९ ३	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ ६-	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३६	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७	मृ.
७	मि.	॥	मृ.	२६॥	१७॥ ३	३१॥	१९ +४	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	११॥ ४	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२०॥	३१॥	३४	२० ०३	१३ ३५	२७ +५	१९॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१९ ३	२५ २+	१९॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२६	मृ.
८	मि.	१	आ.	१८॥ ३	२६॥	२१॥ १	१९ १+	२४ ४+	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ ४-	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२१ १	२० -१५	२७ ५+	२० +१५	१३॥ १६	१९ २६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -३६	१९ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२६	आ.
९	मि.	॥।	पु.	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ५०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ २+	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१९॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ ६	६ ३६	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२०॥ ६	१६॥ -६	१८॥ ५+	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६	पु.
१०	क.	।	पु.	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ ४	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	१९॥	१९	२६॥	२०॥	१९ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -६	२०॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	९॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ ५+	पु.
११	क.	१	पु.	२९॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२९ ०	१८॥ ४+	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१९ -५	१७ ३५	२० -५	१७॥	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+	पु.
१२	क.	१	आ.	२५	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	११ ३१	१९	११॥ ४	११॥ १४	१६ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०३४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१९॥ १	१९॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१९ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	२० १५	१२ ३५	आ.
१३	सिं.	१	म.	१९ +५	१९ ११	१५॥ ३५	१६॥ ३	९॥ ३१	१०॥	२०॥	२०॥ १	१९॥ -२	१६॥ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१६॥ १४	१४॥ ४+	१९॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१०॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१७॥ -१६	१८॥ १६	१२ ३६	म.
१४	सिं.	१	पू.	२५ ५+	१७ ३५	१९ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ +४	१६॥ ३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३४	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२२॥ ३	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१८॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ ६-	पू.
१५	सिं.	।	उ.	१५॥ ३५	२५ ५+	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१७॥ ३	१४॥ ३४	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-	उ.
१६	क.	॥।	उ.	११ २३६	२१ ६	१६ १६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२१॥ ३	२३॥ ३	१७॥ ३	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+	१६॥ -१२४	२५॥ ४+	१६॥ -१२४	१८ १२	२६	१२ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४ ५+	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	९॥ ३१६	१४॥ ३६	१७ ३	२८	२६	उ.
१७	क.	१	ह.	११ ३६	१८॥ ६	१६ ६	२०॥ ५+	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३२	१८॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२१॥	१६ +४	२०॥ ४+	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२६	१३॥ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३ ५+	२४ ५+	१८ ५+	१९ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६	ह.
१८	क.	॥	चि.	१२॥ ६	४॥ १३६	१८॥ ६	२३ ५+	१८॥ ११	१०॥ ३५	१८ ३	२६ १	२४॥	१९॥	११॥ ३	२५॥	२०॥ +४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	१९ ३४	१९ ०३	२५॥ ४+	२७	११ ३	२५	२७	१३ १३	२१ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९ १	१० १३२	१९	चि.
	रा.	भा.	न.	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ	पु.	पु.	पु.	आ	म.	पू.	उ	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.

इनमें मेलापक (वर्ण वश्य आदि)की गुणसारिणी हैं. ऊपरकी पंक्तिमें वरके नक्षत्र, तिरछी पंक्तिमें कन्याके नक्षत्र लिखे हैं, उपरी भागमें गुण नीचेके महादोषोंके चिन्ह दिये हैं. चिन्होंका काम यह है एक नाडीके दोषकी जगह (३) गणमहादोष (मनुष्यराक्षस)के स्थानमें १ भकूट महादोष (षडाष्टक)में (६) (नवपंचम)में (५) (द्विर्द्वादश)में (४) वैरयोनिमें (२) लिखे हैं. और जहां थोडा दोष समझा गया वहां (–) चिन्ह हैं. जहां (स्वामी मैत्री आदिके) दोषका पूरा निर्वाह है वहां (+) ऐसा चिन्ह बतादिया है, और जिस जगह भर्ताके नक्षत्रसे पूर्व वधूका नक्षत्र है (एककामी महादोष) है वहां ० शून्यका चिन्ह हैं, और जहां कोईभी महादोष नहीं मिलता वहां केवलगुण ही लिखे हैं.

			रा.	मे.	मे.	मे.	वृ	वृ.	वृ.	मि.	मि.	मि	क.	क.	क.	सिं.	सिं.	सिं.	क.	क.	क.	तु.	तु.	तु.	वृ.	वृ.	वृ.	ध.	ध.	ध.	म.	म.	म.	कुं.	कुं.	कुं.	मी	मी	मी	रा.
			भा.	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	भा.
	रा.	भा.	न.	अ.	भ	कृ.	कृ.	रो	मृ	मृ.	आ	पु	पु.	पु	आ	म.	पू.	उ.	उ.	ह.	चि	चि	स्वा	वि.	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.
१९	तु.	॥	चि.	२२	१४ १३	२८	२३ ६+	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१९	११ ३	२५	२४॥	१०॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ ०१	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १३६२	१२ ६	चि.
२०	तु.	१	स्वा.	२९ २+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ ३६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२६	१३ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ +४	२७॥ ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० २०	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१९ ६	११ ३६	स्वा.
२१	तु.	॥।	वि.	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४+	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ १	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६	वि.
२२	वृ.	।	वि.	१६॥ ६+	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१३॥ १३	२१॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ ५-	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६	२३॥ ४	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५	वि.
२३	वृ.	१	अ.	२३॥ -६	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१९॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥	२८॥	२४	२५	११ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	१७ ३५	२६ ५+	अ.
२४	वृ.	१	ज्ये.	१० ३६	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२९॥	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	९॥ ५३	१९ ५+	२५ ५-	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१९॥ ४	१४॥	२१ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९॥ १३५	२० १५	२० ५+	ज्ये.
२५	ध.	१	मू.	१९॥ ३५	१९ १५	२५ ५+	१९॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९॥ १४३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१९॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२६	मू.
२६	ध.	१	पू.	२५॥ ५+	१७॥ ३५	१९॥ -१२५	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१९ ३	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६.	१९ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥	पू.
२७	ध.	।	उ.	२४ ५+	२५॥ ५+	११॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ ११३	२४ ५+	२५ ५+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१९ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ३४०	१३॥ १४	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ ३	उ.
२८	म.	॥।	उ.	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ १३५	२२॥ २५+	१९॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४ ५+	२४ ११	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२५॥ १+	१५॥ १४+	१६॥ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३१॥	२२॥ ३	उ.
२९	म.	१	श्र.	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१९॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७- ०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२२॥	२३॥ ३	श्र.
३०	म.	॥	ध.	२०	११ १३२	२६	२३॥ ५+	१९ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२१	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	२९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ४०	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२२॥ २+	ध.
३१	कुं.	॥	ध.	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५	१७ ५+	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ ४+	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२	ध.
३२	कुं.	१	श.	१४॥ ३	२०॥ १	२६॥	३१	२५ १	२६॥	२० ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	१९ ६	२५॥	१९॥ १	११॥ १३	१०॥ १३६	१०॥ २३६	२५ ६	२६ ५+	२१ ५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३	२९ १३ ०	८ १३४ ०	१४॥ १४	१५॥ ४	श.
३३	कुं.	॥।	पू.	१७॥ ३	२४॥ २+	१९॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१९॥ ६	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ -१५	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	११ १३	२९॥	२९॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ -१४	२७ -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१९॥ ४२	पू.
३४	मी.	।	पू.	१४॥ ३४	२१॥ ४२+	१६॥ -१४	१९ १	२५	२५	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	१२॥ १६	१९ -१५	२५ ५+	९॥ १३५	१४ १३	२८॥	२८॥	२८॥	२२॥	२४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ २+	पू.
३५	मी.	१	उ.	२३॥ ८+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६॥	२६ ५	१९ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३६	२१॥ ६+	२७	२६	९ १३२	२ १३६२	१९ ६	११॥ १६२	१८ ११२	१८ ३५	२० -१५	२३॥ -१	२१॥ ३	२९॥	२९॥	२९॥	१४॥ १३	५॥ १३४	१४॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३४ ०	उ.
३६	मी.	१	रे.	२५ ४+	२३॥ ४+	१०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२४	२५	१९	१२ ६	१० ३६	४ ३६	१०॥ ३५	२६ ५+	२१ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	२३॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२९॥ २+	३३	२८ ३	रे.
			न.	अ.	भ.																								पू.	उ.	उ.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.	पू.	उ.	रे.	न.

❀❀ क्रमांक १ चन्द्र स्पष्ट सारिणी ❀❀

सर्वांक	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४
	०	६	९	१३	१६	२०	२३	२७	३०	३४	३८	४१	४५	४८	५२	५६	५९	३	७	१०
गति	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
सर्वांक	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	१४	१८	२१	२५	२९	३२	३७	४०	४४	४८	५१	५५	५९	३	६	११	१४	१७	२१	२५
गति	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
सर्वांक	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६
	२९	३३	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४
गति	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६
सर्वांक	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८
	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४१	४५	५०	५४	५८	२	६
गति	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
सर्वांक	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	११	१५	१९	२३	२८	३२	३६	४०	४५	४९	५४	५८	३	७	११	१६	२०	२४	२९	३३
गति	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
सर्वांक	५९	५९	५९	५९	५९	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६१
	३८	४२	४७	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३१	३६	४१	४६	५०	५५	५९	४
गति	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६
सर्वांक	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२
	८	१३	१७	२२	२७	३२	३७	४१	४६	५१	५६	१	६	१०	१५	२०	२५	३०	३५	३९
गति	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
सर्वांक	६२	६२	६२	६२	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६४	६४	६४	६४	६४
	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	०	५	१०	१५	२०
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
सर्वांक	६४	६४	६४	६४	६४	६४	६४	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६६	६६
	२६	३१	३६	४१	४६	५२	५७	३	८	१३	१८	२४	२९	३४	४०	४५	५२	५६	१	७
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६
सर्वांक	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६८	+
	१२	१८	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५९	५	११	१८	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	+
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	११	११	११	११	११	११	११	११	१५	११	२१	११	११	+
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	+

❀❀ क्रमांक २ चन्द्र स्पष्ट साधक सारिणी ❀❀

अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	श्र	ध	श	पू	उ	रे
०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	०
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०	१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र स्पष्ट सारणी विधि भयात भभोगकर्तव्यता– ६०।० में से गत नक्षत्र के घटीपल घटा देवें तथा वर्त्तमान नक्षत्र के घटी पल जोड़ देवें, यह भभोग होगा, तथा ६०।० में से घटाये अंकों के घटीपलों में इष्ट घटिका जोड़ें तो भयात होगा । भभोग के घटीपल अंकों को चन्द्र स्पष्ट सारिणी क्रम १ में देखें, उसमें भभोग घटी पल अङ्क तुल्य या समकक्ष अङ्क के नीचे जो गति है, उससे भयात घटीपलों में गुणा करें, ६० के भाग से अंशात्मक ३ अङ्क लेवें, इनको गत नक्षत्र सारणी (चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम २) के अङ्कों में जोड़ देवें तो स्पष्ट चन्द्रमा होगा । **गति स्पष्ट विधि–** चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ से प्राप्त जो गति है उसकी केवल कला को ६० से गुणा कर गुणनफल में गति के विकलाङ्क जोड़ देवें, यह चन्द्र स्पष्ट गति मध्यम मानेन स्पष्ट रहेगी । **उदाहरण यथा–** भयात १९।३ भभोग ६५।५२ समीपस्थ कोष्टाङ्क ६५।५२ के नीचे गति १२।९ को और भयात को गुणा किया गुणनफल ६० से भाग देकर ३।४८।२७ मिले, इनको गत नक्षत्र विशाखा के कोष्ठाङ्क में जोड़ा ७।३।२०।० में युक्त किया तो ७।७।८।२७ स्पष्ट चन्द्र आया । गति १२–९ केवल कला १२ को ६० से गुणित कर ७२० हुआ विकला ९ युक्त किया तो ७२९।० हेतु गति आ गई । गणितागत एवं सारणी सिद्ध में विशेष अन्तरांश नहीं होने से जन्मपत्रादि हेतु यह सामग्री बहुत उपयुक्त तथा शीघ्र ही कार्य करने में सक्षम है, अब चन्द्र स्पष्टता हेतु श्रम विशेष की आवश्यकता नहीं । हमारे निर्णयसागरीय पंचांग अनुग्राहकों हेतु यह सुलभ गणित चमत्कार प्रस्तुत है, समय-समय पर अन्य न्यास भी उपस्थित होंगे ।

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरीमहादशा एवं अन्तर्दशा ज्ञानार्थचक्रम्

सूर्यदशावर्ष ६ — कृ.उ.फा.उ.षा. — अन्तर्दशादि. १८

ग्र.	व.	मा.	दि
सू.	०	३	१८
चं.	०	६	०
मं.	०	४	६
रा.	०	१०	२४
बृ.	०	९	१८
श.	०	११	१२
बु.	०	१०	६
के.	०	४	६
शु.	१	०	०

चन्द्रदशावर्ष १० — रोहि.ह.श्रवण — अन्तर्दशादि. ३०

ग्र.	व.	मा.	दि.
चं.	०	१०	०
मं.	०	७	०
रा.	१	६	०
बृ.	१	४	०
श.	१	७	०
बु.	१	५	०
के.	०	७	०
शू.	१	८	०
सू.	०	६	०

भौमदशावर्ष ७ — मृ. चि. ध. — अन्तर्दशादि. २१

ग्र.	व.	मा.	दि.
मं.	०	४	२७
रा.	१	०	१८
बृ.	०	११	६
श.	१	१	९
बु.	०	११	२७
के.	०	४	२७
शु.	१	२	०
सू.	०	४	६
चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८ — आर्द्रा स्वा.श. — अन्तर्दशादि. ५४

ग्र.	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२
बृ.	२	४	२४
श.	२	१०	६
बु.	२	६	१८
के	१	०	१८
शु.	३	०	०
सू.	०	१०	२४
चं.	१	६	०
मं.	१	०	१८

गुरुदशावर्ष १६ — पुन वि पू.भा. — अन्तर्दशादि. ४८

ग्र.	व.	मा.	दि.
बृ.	२	१	१८
श.	२	६	१२
बु.	२	३	६
के.	०	११	६
शु.	२	८	०
सू.	०	९	१८
चं.	१	४	०
मं.	०	११	६
रा.	२	४	२४

शनिदशावर्ष १९ — पुष्य.अनु.उ.भा. — अन्तर्दशादि. ५७

ग्र.	व.	मा.	दि.
श	३	०	३
बु.	२	८	९
के.	१	१	९
शु	३	२	०
सू.	०	११	१२
चं.	१	७	०
मं.	१	१	९
रा.	२	१०	६
बृ	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७ — आश्ले. ज्ये.रे. — अन्तर्दशादि. ५१

ग्र.	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७
के.	०	११	२७
शु.	२	१०	०
सू.	०	१०	६
चं.	१	५	०
मं.	०	११	२७
रा.	२	६	१८
बृ.	२	३	६
श.	२	८	९

केतुदशावर्ष ७ — मघा. मू. अश्वि. — अन्तर्दशादि. २१

ग्र.	व.	मा.	दि.
के.	०	४	२७
शु	१	२	०
सू.	०	४	६
चं.	०	७	०
मं.	०	४	२७
रा.	१	०	१८
बृ.	०	११	६
श.	१	१	९
बु.	०	११	२७

शुक्रदशावर्ष २० — पू फा पू षा.भर. — अन्तर्दशादि. ६०

ग्र.	व.	म.	०
शु.	३	४	०
सू.	१	०	०
चं.	१	८	०
मं.	१	२	०
रा.	३	०	०
बृ.	२	८	०
श.	३	२	०
बु.	२	१०	०
के.	१	२	०

जन्मनाम राशितः गोचर फल शुभाऽशुभ ज्ञानविधि

राशि	मे. १	वृ. २	मि. ३	क. ४	सि. ५	क. ६	तु. ७	वृ. ८	ध. ९	म. १०	कु. ११	मी. १२
रवि	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	रिपुनाश	गमन	पीड़ा	कांतिक्षय	कार्यसिद्धि	वित्तलाभ	हानि
चन्द्र	लाभहर्ष	वित्तनाश	श्रीलाभ	कुक्षिरोग	कार्यनाश	वित्तलाभ	धनस्त्रीलाभ	कष्टभय	राजभय	महासौख्य	विविधलाभ	रोगधननाश
मंगल	शत्रुभय	धनव्यय	श्रीलाभ	शत्रुभय	धनक्षय	द्रव्यलाभ	शोक	शत्रुभय	कार्यनाश	शोक	वस्त्रलाभ	रोगधननाश
बुध	बन्धुलाभ	धनलाभ	क्लेशकर	अर्थलाभ	शत्रुभय	श्रीविजय	शरीरपीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्य	धनलाभ	वित्तनाश
गुरु	भय	धनलाभ	परिवर्त्तन	द्रव्यनाश	सौख्य	शोक	राजमान	शोकभय	सौख्य	परिवर्त्तन	द्रव्यलाभ	पीड़ा
शुक्र	सुखलाभ	द्रव्यलाभ	वित्तनाश	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	अन्नलाभ	वस्त्रलाभ	सौख्य	धनलाभ	द्रव्यलाभ
शनि	धननाश	धनहर	धनलाभ	शत्रुभय	अर्थलाभ	अन्नलाभ	दोषसंग्रह	शरीरपीड़ा	चिन्ताभय	कर्मलाभ	द्रव्यलाभ	अनर्थ
राहु	हानि	वित्तनाश	द्रव्यलाभ	वैर	शोक	वित्तलाभ	कलि	अशुभ	पाप	वैर	नवयोजना	हानि
केतु	हानि	वित्तनाश	द्रव्यलाभ	वैर	शोक	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	हानि

★ महादशा एवं भुक्तभोग्य कर्त्तव्यता ★

गत नक्षत्र की घटि ६० में से घटा इष्ट घटी में जोड़ें उसे भयात कहते हैं तथा ६० में से घटाया उसी में प्रवेश नक्षत्र की घटी जोड़ें उसे भभोग कहते हैं। भयात के पलात्मक मान में जो दशा हो उसके वर्ष संख्या से गुणा करें, भभोग के पलात्मक मान से भाग देवें लब्धांक वर्ष होंगे फिर शेषांक को १२ से गुणा कर भभोग की पलों का भाग देवें लब्धांक मास होंगे। फिर ३० से गुणा कर दिन लेवें तथा ६० से गुणा कर घटी तथा पल प्राप्त करें। इस प्रकार यह महादशा का भुक्तकाल आवेगा इसे अभीष्ट दशा के वर्षों में स घटाने पर दशा के भोग्य वर्ष सिद्ध होंगे। इस प्रकार दशानयन सुगम स्पष्ट है।

ग्रहाणां दोषोपशान्त्यर्थं

स्नान विधान– 'यथा सिद्धोषधं रोगाश्रश्येयुर्मन्त्रतो। तथा स्नान विधानेन ग्रहदोष: प्रणश्यति ॥' कूट, खिली, माल कागना, लाजवती, जव, सरसूं, देवदारु, हल्दी, सर्वोषधि, लोध इनके मिश्रित जल स्नान से ग्रह पीड़ा, शरीर कष्ट दूर होवे ❖ शांति सूत्र विधान ❖ ग्रहों के जो दान हों सत्य वार्त्ता मानना, ज्ञानी व्यक्तियों की सलाह, अनुचरण जप, दान, मंत्रस्मरण, यज्ञ होम, नियमित दिनचर्या, मन की शुद्धता, उत्तम ज्योतिषी की सलाह, रत्न-नगों का धारण, ये कार्य स्वतः ग्रहशमन शांतिकारक है। यथा:धर्मेण हन्यते व्याधिर्धर्मेण हन्यते ग्रहः। धर्मेणहन्यते शत्रुर्यतोधर्मस्ततो जयः ॥ धर्मिष्ठा ये सदाचारा देवब्राह्मण-पूजकाः। ये पथ्यभोजनरतास्ते सर्वे दीर्घ-जीविनः। विशेष ज्ञानार्थ अपना जन्म संवत मास दिन जन्म समयादि लिख पंचांगकर्त्ता मु. पो. नीमच पते पर पत्र व्यवहार करें।

होरा.

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.
५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	१५
४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	३०

द्रेष्काण.

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मी.	अं.
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	२०
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	३०

विषमे त्रिंशांशकाः समे त्रिंशांशकाः

अं.	मे.	मि.	सिं	तु.	ध.	कुं.	वृ.	क.	क.	वृ.	म.	मी.	अं.
५	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	५
१०	११	११	११	११	११	११	६	६	६	६	६	६	१२
१८	९	९	९	९	९	९	१२	१२	१२	१२	१२	१२	२०
२५	३	३	३	३	३	३	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२५
३०	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	३०

सप्तांशक ४।१७।८ ३४.

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.	
१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	०	०
२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	८	३४
३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	१२	५१
४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	१७	८
५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	२१	२५
६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	२५	४२
७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	३०	०

नवमांशक.

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.	
१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	३	२०
२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	६	४०
३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	१०	०
४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	१३	२०
५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	१६	४०
६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	२०	०
७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	२३	२०
८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	२६	४०
९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	३०	०

द्वादशांशक.

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	२	३०
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	५	०
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	७	३०
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	१०	०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	१२	३०
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	१५	०
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	१७	३०
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	२०	०
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	२२	३०
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	२५	०
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२७	३०
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	३०	०

विंशोत्तरीदशाकी गणना.

सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	ऽश्ले.	म.	पू.
उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	पू.
उ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	अ.	भ.

योगिनीदशाकी गणना.

मं.	पिं.	ध.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
आ.	पु.	पु.	ऽश्ले.	म.	पू.	उ.	ह.
चि.	स्वा.	वि.	अ.	ज्ये.	म.	पू.	उ.
अ.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	०	०
०	०	०	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.
१	२	३	४	५	६	७	८

दशाभुक्त भोग्यकी कर्त्तव्यता–गतनक्षत्रकी घटी ६० मेसें घटा इष्ट घटी जोडे उसे भयात और ६० में घटाया उसीमें प्रवेश नक्षत्रकी घटी जोडे उसे भभोग कहते है भयातकी पलोंको दशाका वर्षोसे गुणके भभोगकी पलोंसे भागले लब्ध अंक वर्ष फिर शेषांकको १२ गुणके भभोगकी पलोंका भाग दे लब्ध मास फिर ३० गुणाकर दिन ६० गुणाकर घटी और पल ले फिर दशाका भुक्त यह है इसे दशाके वर्षामें घटा दे तो भोग्यवर्ष होय.

रविरेखा ४८ दि. ३ घ. ४५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

चंद्ररेख ४९ दि ६।५.११

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३	४	४	५	६
७	६	५	४	७	५	६	१०
८	७	६	५	८	७	११	११
१०	१०	९	७	१०	९		
११	११	१०	८	११	१०		
		११	१०	१२	११		
			११				

भौमरे. ३९ दि. ५।३।३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

बुधरेखा ५४ दि. ३।१७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

गुरुरे. ५६ मा. १।१८।५४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	२	१	१	१	२	३	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

भृगु. ५२ दि. ३।५२।५१

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	१०				११		११
	११				१२		

शनि. ३९ मा. ।२२।२२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

लग्नरेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	६	४	४	३	४	१०
१०	१२	१०	६	५	४	६	११
११		११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०			
				११			

अवस्थाच.

विषमे.		समे.
मृता.	३०	बाल.
वृद्धा	२४	कुमार.
युवा.	१८	युवा.
कुमा.	१२	वृद्धा.
बाल.	६	मृता.

अवस्थाजाग्र.

सुप्त.	३०	जा.
सुप्त.	२०	सु.
जाग्र	१०	सु.
[illegible]	[illegible]	[illegible]

निसर्गमैत्री.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्र.
चं. मं. गु.	सू. बु.	सू. चं. वृ.	सू. शु.	सू. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.	मित्राणि
बु.	शु. गु. मं. श.	शु. श.	मं. वृ. श.	श.	मं. वृ.	वृ.	समाः
शु. श.	०	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.	शत्रवः

तात्कालमैत्री

मित्राणिच्चग्रत:

२	१
३	५
४	७
१०	८
११	९
१२	

कष्टः स्यादेकरेखायां द्वाभ्यामर्थक्षयो भवेत् । त्रिभिः क्लेशं विजानीयाच्चतुर्भिः समतां वदेत् ॥ १ ॥ पंचभिश्च वदेत्सौख्यं षड्भिश्चैव धनागम । सप्तभिः परमानंदमष्टभिस्सर्वसंपदाम् ॥ २ ॥ टी० जिस ग्रहका बल देखनाहो उसकी रेखा जन्मकुंडली लिखके लगानी फिर विचारणीय राशिमें कितने रेखा पाया है यदि १ से ३ तक पाय तो निर्बली ग्रह हुवा ४ पाया तो सम ५ से ८ पायातो ली ऐसेही विचार विवाह जनेऊ आदिकमें करना सब ग्रहोंकी रेखा एक जगह करनेसे आयुका निर्णयभी ठीक हो जाता है । और देखो जातकमें.

पंचधामैत्रीसप्तकवर्गीफलम् ।

१ सप्तकवर्ग स्वगृहीका.	३०	०	०
२ मित्रमित्रकोअतिमित्रताको	२२	३०	०
३ मित्रसमको मित्रहोयताको	१५	०	०
४ मित्रशत्रुको सम होयताको	७	३०	०
५ समशत्रुका शत्रु होयताको	३	४५	०
६ शत्रुशत्रुको अतिशत्रुहो.	१	५२	३०

वर्षसारणी–गतसमके वारादि सब जन्म इष्टमें जोड.													समसूरज अभिमधरो वारसातसे तोड.					
०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	४	२	१	६	५	४	२	१
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	१०	४५	२१	५६	३१	६	४२	१७
पळ	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५
विप	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
तिथि	११	२२	३	१४	२५	६	१७	२८	९	२०	१०	०	०	०	०	०	०	०

स्वभात् मैत्र चक्रं.		
मित्र	समा	शत्रु
३	२	१
५	६	४
९	८	७
११	१२	१०
०	०	०

हद्दाचक्रम्.

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
वृ. ६	शु. ८	बु. ६	मं. ७	वृ. ६	बु. ७	श. ६	मं. ७	वृ. १२	बु. ७	शु. ७	शु. १२
शु. ६	बु. ६	शु. ६	शु. ६	शु. ५	शु. १०	बु. ८	शु. ४	शु. ५	वृ. ७	बु. ६	वृ. ४
बु. ८	वृ. ८	वृ. ५	बु. ६	श. ७	वृ. ४	वृ. ७	बु. ८	बु. ४	शु. ८	वृ. ७	बु. ३
मं. ५	श. ५	मं. ७	वृ. ७	बु. ६	मं. ७	शु. ७	वृ. ५	मं. ५	श. ४	मं. ५	मं. ९
श. ५	मं. ३	श. ६	श. ४	मं. ६	श. २	मं. २	श. ६	श. ४	मं. ४	श. ५	श. २

दिनके सहम ऊपरसे और रात्रिके सहम नीचेसे करो.

सहमा	एतऊ.	एतेभ्य	एतयुक्त	सहमा.	एहीनक	इनमेक.	एतेयु
पुण्यं	सूर्य	चंद्रात्	तनु	प्रसूति	बुधं	गुरुतः	तनु
गुरुः	चंद्र	सूर्यात्	तनु	जाड्य	शनिं	भौमात्	बुध
यश.	पुण्यं	जीवात्	तनु	जलप	चंद्रं	शनेः	लग्न
मित्र	पुण्यं	गरुस.	शुक्र	शत्रु	शनिं	भौमात्	लग्न
महा.	भौम	पुण्या	तनु	दरिद्र	बुधं	पुण्यात्	बुध
आशा	शुक्रं	शनितः	तनु	शास्त्र	शनिं	गुरुतः	बुध
राज	सूर्यं	शनेः	तनु	बंदक	बुधं	चन्द्रात्	तनु
माता	शुक्रं	चंद्रात्	तनु	बंधन	शनिं	पुण्यात्	तनु
उपाय	गुरुं	शनेः	तनु	अश्व	सूर्य	पुण्यात्	लाभ
कर्म	बुधं	भौम	तनु	अन्यक.	शनिं	चंद्रात्	तनु
कली	भौम	गुरुतः	तनु	बुद्धि	सूर्यं	जीवात्	तनु
चतुष्प.	६ भाव	१२भा.	तनु	अंग	शनिं	भौमात्	तनु
रात्रौ	शोधक	शोध्य	विमे	रात्रिमे	शोधक	शोध्य	

गुरुसहमके समानहीं ज्ञान–विद्याज्ञाती होते हैं ऐसेही यशःके समान बल देह और महात्मके सम शौर्य धैर्य माताके समान अंबू जीवितके समान उपाय विवाह समझो.कलीसोही क्षमायात्राके समान परदेशमार्ग होते हैं और शोध्यसे शोधकतक लग्न बीचमें नहीं आवे तो सहममें १ राशि और जोडदेनी अन्यथा नहीं ॥

दिनरात्रिमे इकसार सहम.

सहमा.	एहीनक	इनमे	एयुक्त.
भ्रातृ	शनिं	गुरुतः	लग्न
पुत्र	चंद्रं	गुरुतः	लग्न
रोग	चन्द्रं	तनुतः	तनु
बंधु	चन्द्रं	बुधात्	तनु
मृत्यु	चन्द्रं	८भावा	शनि
यात्रा	धर्मेशं	धर्मात्	तनु
धन	धनेशं	धनात्	तनु
ऽन्यस्त्री	सूर्य्यं	शुक्रात्	तनु
वणिक्	बुधं	चन्द्रात्	तनु
विवाह	शनिं	शुक्रात्	तनु
श्रद्धा	भौमं	शुक्रात्	तनु
प्रीति	पुण्यं	ज्ञानतः	तनु
व्यापार	बुधं	भौमात्	तनु
कन्या	चन्द्रं	शुक्रात्	तनु
संताप	चन्द्रं	शनितः	६ भा.
जलपा	शनिं	कर्कार्द्धः	तनु
गज	गुरुः	चंद्रतः	तनु
घातक	पुण्यं	गुरुतः	तनु

दृष्टिचक्रं ताजकोक्तम्.

शेषरा.	स्पष्टद.	ल. गु.	भागां.	दृष्टिम.
१	०	४	३	ध.
२	४०	५	६	ऋ.
३	१५	१	१	ध.
४	४५	३	२	ऋ.
५	०	४	२	ध.
६	६०	२	१	ऋ.
७	०	३	२	ध.
८	४५	१	१	ऋ.
९	१५	१	६	ऋ.
१०	१०	१	३	ध.
११	०	२	१	ध.
०	६०	२	१	ऋ.

जिस ग्रह या भाव ऊपर दृष्टि करणी होय उसमेंसे जिसग्रहकी दृष्टि करणी होय उसकूं घटावें. शेषराशितुल्य कोष्टका उक्त कर्मकरे कलादि दृष्टि स्पष्ट होय येदृष्टि १-४-७-१० भावोंपर या इनस्थानोंमें बैठे ग्रहोंपर शत्रुदृष्टि होती है. फल नेष्ट और ३-५-९-११ भावोंपर या ग्रहों ऊपर मित्र दृष्टि है. फल श्रेष्ठ ये स्थानग्रह बैठेसे है.

द्रेष्काणचक्रम्.

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	रा
मं	बु	शु	शु	श	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श	१०
र	चं	मं	बु	वृ	शु	श	र	चं	मं	बु	वृ	२०
शु	श	र	चं	मं	बु	वृ	शु	श	र	चं	मं	३०

	स्व	मि	स	श
स्व.	३०/०	२२/३०	१५/०	७/३०
हद्दा	१५/०	११/१५	७/३०	३/४५
द्रेष्क	१०/०	७/३०	५/०	२/३०
नव	५/०	३/४५	२/३०	१/१५

त्रिराशिपतिचक्रम्.

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	रा
सू	शु	श	शु	वृ	चं	बु	मं	श	मं	वृ	चं	दि.
वृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	वृ	चं	रा

नवमांशाद्यगण.

मे	म	तु	क	आ
१	२	३	४	रा.
५	६	७	८	रा.
९	१०	११	१२	रा.

श्लो०. नंदत्रिपद्लग्नभवर्क्षपुत्रव्यया इनाद्धर्पदं सभोचम्। त्रिभंत्रिभं लग्नभतः क्रमेण क्षीणां नृणां रात्रिदिने च तेषां ॥१॥ गतसम जन्मभ एककर युगमहीन नवदंश बाकी सू. चं. मं. रा. गु. श. बु. के. शु. त्रिघ्न सम अंश ॥१॥ टी०. गतवर्षोंमें जन्मनक्षत्र संख्या जोड २ हीन ९ को भागदे बाकी जो रहे सो सूर्यादिकोंकी दशाविंशोत्तरीका वर्षोंको तिगुनाकर अंश लिखें १ वर्षका सूर्यमें १ राशि जोडके अवधिका सूर्यके और महीनाका सूर्यके अंतरकी पलके गतिकी पलाको भागदे लब्ध दिनादि लेके पंक्तीका इष्टमें धन या ऋण करदे तो महीना स्पष्ट हो जाय ॥ २ ॥ दो० तृतामें धर वर्ष तनु नभग जन्मके देष। चन्द्र चला नव वर्षसें ग्यार ग्यारसें शेष ३.

अथ विविधविषयसम्पन्न बृहवनवग्रहगुणधर्मविवेचन चक्रम्

रविः	चंद्र.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	केतु.	ग्रह
आफताब	माहताब.	मिरीख	उता. रुद	मुस्तरी	झाहार	झाहल	रास	जनब.	सितारा
सन्	मून	मार्स.	मर्क्यू.	जुपिट.	वेनस	सेटर्न	ड्रगोन्स	ड्रगोन्स	प्लेनेट
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां १पादहृष्टि
५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपादहृष्टि.
४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपादहृष्टि.
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७		७	७	सम्पूर्णहृष्टि.
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणां वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप.	रुद्रीज.	कांस्य दान.	अमा-वस्या	गोरक्षा	मृत्युंज यजप	भुजंग दान	ध्वजा दान	नेष्टग्रहस्यवर्षे दानोपायसाधनं
मास. १	दिन २।	मास १।।	मास १	मास १३	मास १	मास ३०	मास १८	मास १८	ग्रहाणांएकराशि भुक्तप्रमाणम्.
माणक	मोती	प्रवाल	पन्ना	पुष्परा.	हीरा	नीलम	पिरो	लसणि	ग्रहाणां रत्नानि
चं. मृ. बृ.	र. बृ.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्रग्रहाः
बु.	मं. शु. गु. श.	शु. श. रा.	मं. श. गु.	श. रा	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष. १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या. १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन -१५	धन १५	ग्रहाणां उच्चराश्यं
तुला १०	वृश्चि. ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धन १५	मिथुन १५	नीचग्रहानेष्ट अ.

रवि.	चंद्र.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	केतु.	ग्रह
सिंह	कर्क	मे. वृ.	क. मि.	ध. मी.	वृ. तु.	म. कुं	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुंभ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्री	वैश्य	क्षत्री	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निखाद	निखाद	निखाद	वर्ण
पुरु.	स्त्री	पुरु	स्त्री	पुरु.	स्त्री	स्त्री	पुरु.	पुरु	पु. स्त्री.
चतुरस्र	वस्थूल	चतु.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्या.	अपरा.	मध्या.	प्रभात	प्रभात	अपरा.	अपरा.	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षि	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चि.	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	हीरसु.	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्प.	बहुपद	चतुष्प.	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजग अपद	अपद	अपद	पाद
उग्र.	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व.	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व	स्थिर	चर	पक्षी स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु प्राय	जलभू	दुग्ध	श्मशा.	वाणी सुराल.	जलभू	उत्कर	उषर	उषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	सम धातु	सम धातु	कफ शुक्र	वायु	वायु	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिव.	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वे	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	संधि	विवर	विवर	स्थान

हवनादिकृत्ये अग्निवासः

अभीष्ट तिथि में १ जोड़े, उसमें अभीष्ट वार संख्या जोड़े तथा ४ का भाग देवें, शेष ३ या शून्य हो तो अग्निवास पृथ्वी पर, उस दिन होम करने से सफलता प्राप्त होती है। शेष १ तथा २ रहें तो स्वर्ग एवं पाताल में अग्निवास रहेगा, यह शुभप्रद नहीं है। तिथि-गणना शुक्लादि अमान्त मासानुसार

हवनादिकृत्ये आहुतिशुद्धिः

सूर्य जिस नक्षत्र पर रहता है उससे ३ नक्षत्रों की अग्रिम गणना से दी हुई आहुति सूर्य को मिलती है। तदुपरान्त आगे के ३ नक्षत्रों में बुध को, फिर ३ में शुक्र को, फिर ३ में शनि को, फिर ३ में चंद्र को, फिर ३ में मंगल को, फिर ३ नक्षत्र गुरु,तथा ३ राहुकेतु को आहुति मिलती है। पाप ग्रह वाले नक्षत्रों में होम की आहुति शुभ नहीं होती है, अतः शुभ ग्रह वाले नक्षत्रों में ही हवनादि कृत्य शुभद एवं सन्मान्य रहते हैं। सूर्य नक्षत्र से अभीष्ट नक्षत्र तक की गणना करके आहुति क्रिया का ज्ञान होता है।



अथ बृहद् द्वादश राशि गुणधर्म विवेचन चक्रम्

संज्ञा	पु. स्त्री	चरादि	तत्त्व	पुष्टकृश	पाद	वर्ण	गुण	धातु	शब्द	स्थान	क्रूरादि	बलस	समवि.	दिशा	स्त्रीसंग	कांति	जाति	समादि	उदय	ऋतु	बुरज	साइन
मेष	पुरुष	चर	अग्नि	दृढ़	चतुष्प.	पाटलरक्त	तप्तदेह	पित्त	अतिरव	पर्वत	उग्र	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्री	सम	पृष्ठोदय	वसन्त	हमल	एरिस
वृषभ	स्त्री	स्थिर	पृथ्वी	दृढ़	चतुष्प.	श्वेत	शीत	वायु	अतिरव	समभू.	सौम्य	रात्रि	सम	दक्षिण	मध्य	रूक्ष	वैश्य	विषम	पृष्ठोदय	ग्रीष्म	सूर	टारस
मिथुन	पुरुष	द्विस्व.	वायु	मृदु	द्विपद	हरित	तप्त	समधा	दीर्घशब्द	वनचर	उग्र	दिवा	विषम	पश्चिम	मध्य	स्निग्ध	शूद्र	विषम	शीर्षोदय	ग्रीष्म	जोझा	जिमिना
कर्क	स्त्री	चर	जल	मृदु	अपद	पाटल	शीत	कफ	शब्दहीन	जलचर	सौम्य	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	सम	पृष्ठोदय	वर्षा	मर्तान्	केन्सर
सिंह	पुरुष	स्थिर	अग्नि	दृढ़	चतुष्प.	धूम्र	उष्ण	पित्त	दीर्घशब्द	पर्वत	उग्र	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्री	सम	शीर्षोदय	वर्षा	असद	लिओ
कन्या	स्त्री	द्विस्व.	पृथ्वी	कृश	द्विपद	पांडुरंग	शीत	वायु	अर्धशब्द	समभू.	सौम्य	रात्रि	सम	दक्षिण	अल्प	रूक्ष	वैश्य	सम	शीर्षोदय	शरत्	सवुला	वर्गो
तुला	पुरुष	चर	वायु	दृढ़	द्विपद	विचित्र	उष्ण	समधा	शब्दहीन	वनचर	उग्र	दिवा	विषम	पश्चिम	अल्प	स्निग्ध	शूद्र	सम	शीर्षोदय	शरत्	मीझान	लाइब्रा
वृश्चि.	स्त्री	स्थिर	जल	कृश	बहुपद	श्वेत	शीत	कफ	शब्दहीन	जलचर	सौम्य	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	सम	शीर्षोदय	हेमत	अक्रव	स्कोर्पिओ
धन	पुरुष	द्विस्व.	अग्नि	दृढ़	द्विपद	सुवर्ण	उष्ण	पित्त	अतिशब्द	पर्वत	उग्र	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्री	सम	पृष्ठोदय	हेमत	कांस	सेगीटेरी
मकर	स्त्री	चर	पृथ्वी	दृढ़	चतुष्प.	पीत	शीत	वायु	अतिशब्द	वनचर	सौम्य	रात्रि	सम	दक्षिण	अल्प	रूक्ष	वैश्य	विषम	पृष्ठोदय	शिशिर	जदी	केप. फा.
कुंभ	पुरुष	स्थिर	वायु	दृढ़	अपद	कर्बुर	उष्ण	समधा	खडशब्द	भूमि	उग्र	दिवा	विषम	पश्चिम	मध्य	स्निग्ध	शूद्र	विषम	शीर्षोदय	शिशिर	दलु	एक्वारीस
मीन	स्त्री	द्विस्व.	जल	दृढ़	अपद	धूम्र	शीत	कफ	हीनशब्द	जलचर	सौम्य	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	विषम	उभयोदय	वसन्त	हूत	पिसेस

लग्नेविश्वादाग्रहाः

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३	२	३	१	१	१	३	३
६	३	६	२	२	२	६	६
११	११	११	३	३	३	११	११
			४	४	४		
			५	५	५		
			६	६	९		
			९	९	१०		
			१०	१०	११		
			११	११			

लग्नभंगदाग्रहाः

१	६	७	८	केन्द्र	१२	९	५
सू.	चं.	सू.	चं.	रा.	गु.	मं.	श.
चं.	शु.	मं.	मं.	मं.	मं.	श	
मं.	लग्न पति	बु.	बु.	श.			
श.		शु.	गु.				
रा.		श.	शु.				
			लग्न पति				

विवाहे शुद्धिचक्रं तथा गोचर ग्रहफल शुभाऽशुभ ज्ञानचक्रम्

याद्दशेन शशांकेनग्रहः संचरते नृणाम् । ताद्दशं फलमाप्नोति शुभं वा यदि वाऽशुभम् ॥
शोभन से ठीक, पूज्य से सामान्य, निन्द्य से अशुभ समझें ।

सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	श.रा.के.	ग्रहाः
३।६ १०।११	१।२।३।५ ६।७।९।१० ११	३।६ १०।११	२।६ १०।११	२।५।७ ९।११	१।२।३ ९।११	३।६ १०।११	शोभन
१।२।५ ७।९	०	१।२।५ ७।९	१।३।५ ७।९	१।३।६ १०	५।६ ७।१०	१।२।५ ७।९	पूज्य
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निन्द्य

राशिनिर्णय

जन्मराशिविचार– विवाहे मन्त्रं मांगल्ये यात्रादौ ग्रह गोचरे । जन्मराशेः प्रधानत्व नामराशि न चिंतयेत् ॥ **नामराशिविचार**– देशे ग्रामे गृहेयुद्धे सेवायां व्यवहार के नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशि न चिनयेत् ॥ राशि परिहार– विवाहे घटनं चैव लग्नजं ग्रहणं बलम् । नाम भा चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥

" भारतवर्षीय प्रसिद्ध नगरों का समयान्तर-समीकरण " रेल्वे स्टैण्डर्ड समय से मध्यमान्तर मिनिट

शहर	मि.	शहर	मि.	शहर	मि.	शहर	मि.	शहर	मि.	शहर	मि.	शहर	मि.	शहर	मि.	शहर	मि.
अमृतसर	३१	औरंगाबाद	२८	गढी	३३	जालोन	१२	नाभा	२६	बहराइच	३	भींडर	३३	रंगून	×५५	सागवाड़ा	३४
अम्बाला	२३	ओंकारेश्वर	२६	गनोरा	३२	जावरा	३०	नीमच	३१	बरेली	१२	भीलवाड़ा	३१	लखनऊ	६	सांभर	२९
अल्मोड़ा	११	औरंगाबाद	×८	गरोठ	२६	जैसलमेर	४६	नागौर	३५	बागलकोट	२८	महू	३२	ललितपुर	१६	साचोर	४३
अयोध्या	१	कपूरथला	२८	गया	×१०	जालोर	३८	नारनोल	२५	बांदा	९	मावली	३५	लाहोर	२	सीहोर	२२
अजमेर	३१	कलकत्ता	×२४	ग्वालियर	१७	झाबुआ	३१	नेनीताल	१२	बकीपुर	×११	मेहसाना	४०	लुधियाना	२६	हमीरपुर	१०
अलवर	२३	कन्नौज	१०	गाजीपुर	×४	झालरापाट.	२५	नान्देड	१६	बांसबाड़ा	३२	मनमाड़	३२	विदिशा	१८	हरदा	२१
अखनूर	३२	कटक	×१४	गुजरावाला	३३	झांसी	१६	पटना	×११	बिलासपुर	१	मन्डला	९	विजयनगर	३१	हरिद्वार	१७
अनूपशहर	१७	कच्छभुज	५१	गुरदासपुर	२८	टूंडला	१७	पठानकोट	२७	बीकानेर	३७	महोबा	११	शाजापुर	२५	हरदोई	९
अलीगंज	१३	कराची	३२	गोरखपुर	×४	टोंक	२७	प्रतापगढ़	३१	बीजापुर	२७	मेड़ता	३२	शाहजहांपुर	१०	हजारीबा.	×१२
अमरावती	१९	कांगड़ा	२५	गोवा	३४	डिब्रूगढ़	×५०	पटियाला	२४	बूंदी	२७	मन्दसौर	३०	शिकोहाबाद	१५	हाथरस	१८
अहमदपुर	४४	कांकरोली	३४	गोन्डा	२	डेरागाजी	४६	प्रयाग	३	बुलन्दशहर	१८	मुरेना	१८	शिलांग	×३८	हिसार	२७
अलीगढ़	१८	कानपुर	८	गोहाटी	×३७	डीसा	४१	पांडेचेरी	१०	बगलोर	१९	मथुरा	१९	शिमला	२१	हैदराबाद द.	१६
अहमदाबाद	३९	काठमांडू	×११	चमन	२४	डीडवाना	३२	पानीपत	२१	बड़नगर	२८	मद्रास	९	शिकारपुर	२५	हैदराबा.सि.	२५
अमेठी	३	काबुल	५३	चित्तौडगढ़	३१	डूंगरपुर	३५	पीलीभीत	११	ब्यावर	३२	मिर्जापुर	×०	श्यामगढ़	२६	होशंगाबाद	१९
अगरतला	×३५	काशी	२	चित्रकूट	८	ढाका	×३२	पूरणिया	×२०	बाली	३७	मुलतान	४४	श्रीनगर	३१	होशियारपुर	२६
अहमदनगर	३१	कालपी	११	चेरापूंजी	×३७	त्रिवेन्द्रम्	२२	पूलिया	×१६	बालाघाट	९	मुरादाबाद	१५	श्री माधोपुर	२९		
अमरोहा	१६	कायमगंज	१२	चन्डीगढ़	२२	दरभंगा	×१४	पूना	३४	बेलगांव	३२	मुजफ्फर	×१२	सम्बलपुर	×६		
आसाम	×३२	काश्मीर	३१	चान्दा	१२	द्वारका	५४	पेशावर	४५	बेतूल	१८	मुंगेर	×१६	सहारनपुर	२०		
आगरा	१८	कालीकट	२७	छतरपुर	११	दार्जिलिंग	×२३	पोरबंदर	५१	बीना	१७	मेरठ	१९	सतारा	३४		
आकोला	२२	किशनगढ़	३१	छपरा	×९	दिल्ली	२१	पाली	३७	बदायूं	१४	मैसूर	२३	स्यालकोट	३२		
आसनसो.	×१९	कुरुक्षेत्र	२३	छोटीसादड़ी	३१	देहरादून	१८	फिरोजाबाद	१७	बसरा	१३८	मैनपुरी	१४	सागर	१५		
आबू	३९	कुम्भकोणम्	१२	जगन्नाथ	×१३	दाहोद	३३	फुलेरा	२९	बाली	३२	यवतमाल	१७	सांगली	३२		
आजमगढ़	×३	कोटा	२७	जबलपुर	१०	धौलपुर	१८	फतेहपुर	६	भडोच	३८	रतलाम	३०	सिकंदराबाद	१६		
इन्दौर	२७	कोल्हापुर	३३	जयपुर	२७	धांगध्रा	४४	फतेह(गज.)	३०	भटिंडा	३०	रावलपिंडी	३८	सिरोही	३८		
इटावा	१४	कोलम्बो	१०	जमशेदपुर	×१५	धार	२९	फरुखाबाद	१२	भरतपुर	२९	राजकोट	४६	सरदारशहर	३१		
ईडर	३८	कोचीन	२५	जम्मू	३०	धारवाड	३०	फरीदकोट	३०	भागलपुर	×१८	रांची	×१२	सीतापुर	८		
उज्जैन	२७	कयाम	३२	जलपाई	×२५	धूलिया	३१	फाजिल्का	३४	भावनगर	४१	रामपुर	१४	सीतामढ़ी	×१२		
उन्नाव	७	खैरपुर सिंध	२५	जालंधर	२९	धमतरी	४	फिरोजपुर	३१	भुवनेश्वर	×१४	रायगढ़	×४	सूरत	३९		
उदयपुर	३५	खंभात	४०	जामनगर	५०	नसीराबाद	३१	फैजाबाद	१	भूटान	×३०	रामेश्वर	१३	शोलापुर	२७		
उटकमंड	२३	खण्डवा	२५	जूनागढ़	४८	नडियाद	३८	बड़ोदा	३७	भोपाल	२०	रायपुर	३	सोमनाथ	४८		
ऊधमपुर	३१	खरगोन	२७	जैसलमेर	४६	नाथद्वारा	३५	बम्बई	३९	भीनमाल	४१	रायबरेली	५	सोजत	३५		
एलिचपुर	२०	खाचरोद	२९	जोधपुर	३८	नागपुर	१३	बर्दवान	×२०	भिन्ड	१५	रीवां	५	सक्खर सि.	२४		
एटाकासगंज	१५	गलियाकोट	३४	जौनपुर	×१	नासिक	३५	बद्रीनाथ	१२	भुसावल	२७	रोहतक	२३	सीतामऊ	२८		

स्टैण्डर्ड लोकल समय का भेद

जिस नगर के आगे कोई चिन्ह नहीं होवे उस नगर के मध्यमान्तर मिनिट को रेल्वे स्टैण्डर्ड समय में घटा देवें। तथा जिस नगर के आगे × ऐसा चिन्ह होवे उस नगर के मध्यमान्तर मिनिट को स्टैण्डर्ड समय में जोड़ने से वहां का मध्यम समय (लोकल टाईम) होगा। उस मध्यम समय में मास तारीख के सामने जो अंक होवे उसको ऋण – होवे तो जोड़ देवें तथा धन होवे तो घटा देवें। इस क्रिया से उस नगर का उस दिन का स्पष्ट लोकल समय सिद्ध होगा। ५-५ दिन के अन्तर से वेलान्तर फल मिनिट लिखे हैं, इष्ट तारीख हेतु अनुपात करना और भी ठीक है। इस प्रकार पंचांग में दिये गये लोकल समय में संस्कार करने से स्टैण्डर्ड समय होगा।

वेलान्तर संस्कार

तारीख मासोपरि स्पष्टमिनिट फलांक

तारीख	५	१०	१५	२०	२५	३०
जनवरी	५ध.	८ध.	१०ध.	११ध.	१२ध.	१४ध.
फरवरी	१४ध.	१४ध.	१४ध.	१३ध.	१३ध.	१३ध.
मार्च	१२ध.	१०ध	९ध.	८ध.	६ध.	५ध
अप्रेल	३ध.	१ध.	०	१ऋ.	२ऋ.	३ऋ.
मई	ऋ३.	३ऋ.	३ऋ.	३ऋ.	२ऋ.	२ऋ.
जून	२ऋ.	१ऋ.	०	१ध.	२ध	३ध.
जुलई	४ध.	५ध	५ध.	६ध	६ध.	६ध.
अगस्त	५ध.	५ध.	४ध.	३ध.	२ध.	० ०
सितम्बर	१ऋ.	३ऋ.	५ऋ.	७ऋ.	८ऋ.	१०ऋ.
अक्टूबर	११ऋ.	१३ऋ.	१४ऋ.	१५ऋ.	१६ऋ.	१६ऋ.
नवम्बर	१६ऋ.	१५ऋ.	१५ऋ.	१४ऋ	१३ऋ.	११ऋ.
दिसम्बर	९ऋ.	७ऋ.	४ऋ.	२ऋ.	०	२ध.

अथ पुरुषजन्म कुण्डल्यां तन्वादि भावस्य ग्रहफलम्

ग्रहा:	तनु: १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु: ६	स्त्री ७	मृत्यु: ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य:	शूर:	धनी	सुखी	दु:खी	अपुत्र:	बली	स्त्रीजित्	अल्पायु:	सुखी	शूर:	धनी	पतित:
चन्द्र:	जड़:	कुटुम्बी	क्रूर	सुशील	पुत्रवान्	अल्पायु:	ईर्ष्यालु:	रोगी	सुभग:	धीर:	ख्यात:	हीनांग:
भौम:	व्रणी:	कुटिल	विक्रमी	पीड़ित	अपुत्र	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्य:	पतित:
बुध:	विद्वान्	धनी	दुर्जन	सुखी	मन्त्री	दुशील.	धर्मज्ञ:	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़
गुरु:	चिरायु:	धनी	कृपण:	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्ध:	अल्पायु	पुत्रवान्	सुकृति:	धनी	दरिद्र:
शुक्र:	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीच.	प्रतापी	सुमति	धनाढ्य:	खल:
शनि:	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दु:खी	दरिद्र:	सुखी	दु:खी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दु:खी
राहु:	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दु:खी	दुर्भग:	बली	अशुचि:	गतायु:	दैन्यं	मानी	ख्यात:	पतित:
केतु:	अल्पायु:	धर्महा.	शूर:	दु:खी	अपुत्र:	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जन:

अथ स्त्री जन्म कुण्डल्यां तन्वादि भावस्य ग्रहफलम्

ग्रहा:	तनु: १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र: ५	शत्रु ६	पति: ७	मृत्यु: ८	धर्म: ९	कर्म १०	लाभ ११	१२ व्यय
सूर्य:	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दु:खार्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्र:	अल्पायु:	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पतिप्रि.	दु:खार्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगा
भौम:	दु:खार्ता	बन्ध्या	अभ्रातृका	दु:खिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुखिनी	कुपुत्रा	सधर्मा	दुष्टा
बुध:	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुवु द्ध:	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरु:	सती	सधना	भ्रातृमती	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्र:	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनि:	बन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दु:खार्ता	बन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहु:	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दु:खार्ता	क्लेशिनी	बन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	[illegible]
केतु:	दु:खार्ता	शोकार्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदु:खा	शोकार्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

अथ सूर्यादिग्रहाणां जन्मराशित: गणना एवं गोचरभाव स्थान फलम्

ग्रहा:	भाव १	भाव २	भाव ३	भाव ४	भाव ५	भाव ६	भाव ७	भाव ८	भाव ९	भाव १०	भाव ११	भाव १२
सूर्य	स्थानना.	भय	श्री	मानभंग	दैन्य	विजय	मार्गभ्रम	पीड़ा	सुकृतना.	सिद्धि	धनला.	धनना.
चन्द्र	धनलाभ	सन्तोष	सुख	रोग	ज्ञानवृद्धि	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सौख्य	धनला.	धनना.
भौम	शत्रुनाश	धनना.	धनला.	शत्रुमी.	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुमी.	शत्रुपीड़ा	शोक	धनला.	धनना.
बुध	सुख	धनला.	शत्रुमी.	पशुलाभ	सुख	स्थानला.	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्य	धनला.	धनना.
गुरु	भय	धनला.	क्लेश	धनलाभ	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनला.	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनला.	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुमी.	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दु:ख	धनला.	धनला.
शनि	भय	धनना.	ऐश्वर्यं	शत्रुमी.	पुत्रकष्ट	धननाश	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन.	धनला.	धनला.
राहु	हानि	धनना.	धनला.	वैर	शोक	श्री	कलह	मृत्यु	दु:ख	वैरं	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रु

अथ वर्षकुण्ल्यां तन्वादि स्थान भावस्य ग्रहफलम्

ग्रहा:	भाव १	भाव २	भाव ३	भाव ४	भाव ५	भाव ६	भाव ७	भाव ८	भाव ९	भाव १०	भाव ११	भाव १२
सूर्य	चिन्ता	राजभय	धनलाभ	हानि	कष्टम्	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाश	सुख	धनला.	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योद	विजय	धनला.	व्यय.
भौम	वृणा:	धनलाभ	जय	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यला	धनला.	विरोध
बुध	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	रोग
गुरु	सुखम्	धनलाभ	जय	वाहनला	पुत्र प्रा.	कष्टम्	सुखम	रोग	धर्मलाभ	राज्यला	धनला.	शोक
शुक्र	मानप्रा.	धनलाभ	कीर्तिला	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभय	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	क्षेमला.	व्यय
शनि	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दु:खम्	पुत्रपीड़ा	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहा.	धनहानि	धनला.	चिन्ता
राहु	शिरोर्ति	राजभय	सुखम्	दु:खम्	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगी	कष्टम्	धर्महानि	विजय	सुलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश	पीड़ा	भाग्यना.	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुखम्	यशोऽर्थ	पुष्टि	दु:खम्	सुखाप्ति	कष्टम्	व्यसनं	दु:खम्	भाग्योदय	राज्यप्रो.	लाभ	कष्टम्

कोष्टक साधना ▶ इन चारों कोष्टकों में क्रमश: पुरुष+स्त्री तथा गोचर+वर्षफल आदि में ग्रहों का भाव स्थान अनुसार फलादेश लिखा है। यथा सूर्य १ तनु (लग्न) स्थान में शूरता प्रदायक, स्त्री हेतु १ भाव का सूर्य क्रोधी प्रकृति, गोचरानुसार स्थाननाशक, वर्षफले चिन्ताप्रद इत्यादि। विशेष ज्ञानार्थ बृहद् ज्योतिष सार मूल्य २०) रु. तथा प्राथमिक ज्योतिष ज्ञान हेतु "चन्द्रिका पुस्तक" मंगावें। मूल्य ५) रु.

⊛ जनवरीमासे दैनिकलग्नप्रवेशसारिणी [स्टे. टाइम घंटा मिनट] ⊛

ता. ◇	मेष दिवा	वृषभ दिवा	मिथुन दिवा	कर्क सायं	सिंह रात्रि	कन्या रात्रि	तुला रात्रि	वृश्चिक रात्रि	धनु रात्रि	मकर प्रातः	कुम्भ दिवा	मीन दिवा
१	१ ८	२ ४५	४ ४१	६ ५४	९ १३	११ ३०	१ ४५	४ ०३	६ २०	८ २५	१० १०	११ ४१
२	१ ४	२ ४१	४ ३७	६ ५०	९ ०९	११ २६	१ ४१	३ ५९	६ १६	८ २१	१० ०६	११ ३७
३	१ ०	२ ३७	४ ३३	६ ४६	९ ०५	११ २२	१ ३७	३ ५५	६ १२	८ १७	१० ०२	११ ३३
४	१२ ५६	२ ३३	४ २९	६ ४२	९ ०१	११ १८	१ ३३	३ ५१	६ ०८	८ १३	९ ५८	११ २९
५	१२ ५२	२ २९	४ २५	६ ३८	८ ५७	११ १४	१ २९	३ ४७	६ ०४	८ ०९	९ ५४	११ २५
६	१२ ४८	२ २५	४ २१	६ ३४	८ ५३	११ १०	१ २५	३ ४३	६ ००	८ ०५	९ ५०	११ २१
७	१२ ४४	२ २१	४ १७	६ ३०	८ ४९	११ ०६	१ २१	३ ३९	५ ५६	८ ०१	९ ४६	११ १७
८	१२ ४०	२ १७	४ १३	६ २६	८ ४५	११ ०२	१ १७	३ ३५	५ ५२	७ ५७	९ ४२	११ १३
९	१२ ३६	२ १३	४ ०९	६ २२	८ ४१	१० ५८	१ १३	३ ३१	५ ४८	७ ५३	९ ३८	११ ९
१०	१२ ३२	२ ०९	४ ०५	६ १८	८ ३७	१० ५४	१ ०९	३ २७	५ ४४	७ ४९	९ ३४	११ ५
११	१२ २८	२ ०५	४ ०१	६ १४	८ ३३	१० ५०	१ ०५	३ २३	५ ४०	७ ४५	९ ३०	११ १
१२	१२ २४	२ ०१	३ ५७	६ १०	८ २९	१० ४६	१ ०१	३ १९	५ ३६	७ ४१	९ २६	१० ५७
१३	१२ २०	१ ५७	३ ५३	६ ०६	८ २५	१० ४२	१२ ५७	३ १५	५ ३२	७ ३७	९ २२	१० ५३
१४	१२ १७	१ ५४	३ ५०	६ ०३	८ २२	१० ३९	१२ ५४	३ १२	५ २९	७ ३४	९ १९	१० ५०
१५	१२ १३	१ ५०	३ ४६	५ ५९	८ १८	१० ३५	१२ ५०	३ ०८	५ २५	७ ३०	९ १५	१० ४६
१६	१२ ९	१ ४६	३ ४२	५ ५५	८ १४	१० ३१	१२ ४६	३ ०४	५ २१	७ २६	९ ११	१० ४२
१७	१२ ५	१ ४२	३ ३८	५ ५१	८ १०	१० २७	१२ ४२	३ ००	५ १७	७ २२	९ ०७	१० ३८
१८	१२ १	१ ३८	३ ३४	५ ४७	८ ०६	१० २३	१२ ३८	२ ५६	५ १३	७ १८	९ ०३	१० ३४
१९	११ ५७	१ ३४	३ ३०	५ ४३	८ ०२	१० १९	१२ ३४	२ ५२	५ ०९	७ १४	८ ५९	१० ३०
२०	११ ५३	१ ३०	३ २६	५ ३९	७ ५८	१० १५	१२ ३०	२ ४८	५ ०५	७ १०	८ ५५	१० २६
२१	११ ४९	१ २६	३ २२	५ ३५	७ ५४	१० ११	१२ २६	२ ४४	५ ०१	७ ०६	८ ५१	१० २२
२२	११ ४५	१ २२	३ १८	५ ३१	७ ५०	१० ०७	१२ २२	२ ४०	४ ५७	७ ०२	८ ४७	१० १८
२३	११ ४१	१ १८	३ १४	५ २७	७ ४६	१० ०३	१२ १८	२ ३६	४ ५३	६ ५८	८ ४३	१० १४
२४	११ ३७	१ १४	३ १०	५ २३	७ ४२	९ ५९	१२ १४	२ ३२	४ ४९	६ ५४	८ ३९	१० १०
२५	११ ३३	१ १०	३ ०६	५ १९	७ ३८	९ ५५	१२ १०	२ २८	४ ४५	६ ५०	८ ३५	१० ०६
२६	११ २९	१ ०६	३ ०२	५ १५	७ ३४	९ ५१	१२ ०६	२ २४	४ ४१	६ ४६	८ ३१	१० ०२
२७	११ २५	१ ०२	२ ५८	५ ११	७ ३०	९ ४७	१२ ०२	२ २०	४ ३७	६ ४२	८ २७	९ ५८
२८	११ २१	१२ ५८	२ ५४	५ ०७	७ २६	९ ४३	११ ५८	२ १६	४ ३३	६ ३८	८ २३	९ ५४
२९	११ १७	१२ ५४	२ ५०	५ ०३	७ २२	९ ३९	११ ५४	२ १२	४ २९	६ ३४	८ १९	९ ५०
३०	११ १४	१२ ५१	२ ४७	५ ००	७ १९	९ ३६	११ ५१	२ ०९	४ २६	६ ३१	८ १६	९ ४७
३१	११ १०	१२ ४७	२ ४३	४ ५६	७ १५	९ ३२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

⊛ फरवरीमासे दैनिकलग्नप्रवेशसारिणी [स्टे. टाइम घंटा मिनट] ⊛

ता. ◇	मेष दिवा	वृषभ दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह सायं	कन्या रात्रि	तुला रात्रि	वृश्चिक रात्रि	धनु रात्रि	मकर रात्रि	कुम्भ प्रातः	मीन दिवा
१	११ ६	१२ ४३	२ ३९	४ ५२	७ ११	९ २८	११ ४३	२ ०१	४ १८	६ २३	८ ०८	९ ३९
२	११ २	१२ ३९	२ ३५	४ ४८	७ ०७	९ २४	११ ३९	१ ५७	४ १४	६ १९	८ ०४	९ ३५
३	१० ५८	१२ ३५	२ ३१	४ ४४	७ ०३	९ २०	११ ३५	१ ५३	४ १०	६ १५	८ ००	९ ३१
४	१० ५४	१२ ३१	२ २७	४ ४०	६ ५९	९ १६	११ ३१	१ ४९	४ ०६	६ ११	७ ५६	९ २७
५	१० ५०	१२ २७	२ २३	४ ३६	६ ५५	९ १२	११ २७	१ ४५	४ ०२	६ ०७	७ ५२	९ २३
६	१० ४६	१२ २३	२ १९	४ ३२	६ ५१	९ ०८	११ २३	१ ४१	३ ५८	६ ०३	७ ४८	९ १९
७	१० ४२	१२ १९	२ १५	४ २८	६ ४७	९ ०४	११ १९	१ ३७	३ ५४	५ ५९	७ ४४	९ १५
८	१० ३८	१२ १५	२ ११	४ २४	६ ४३	९ ००	११ १५	१ ३३	३ ५०	५ ५५	७ ४०	९ ११
९	१० ३४	१२ ११	२ ०७	४ २०	६ ३९	८ ५६	११ ११	१ २९	३ ४६	५ ५१	७ ३६	९ ०७
१०	१० ३०	१२ ०७	२ ०३	४ १६	६ ३५	८ ५२	११ ०७	१ २५	३ ४२	५ ४७	७ ३२	९ ०३
११	१० २६	१२ ०३	१ ५९	४ १२	६ ३१	८ ४८	११ ०३	१ २१	३ ३८	५ ४३	७ २८	८ ५९
१२	१० २२	११ ५९	१ ५५	४ ०८	६ २७	८ ४४	१० ५९	१ १७	३ ३४	५ ३९	७ २४	८ ५५
१३	१० १८	११ ५५	१ ५१	४ ०४	६ २३	८ ४०	१० ५५	१ १३	३ ३०	५ ३५	७ २०	८ ५१
१४	१० १४	११ ५१	१ ४७	४ ००	६ १९	८ ३६	१० ५१	१ ०९	३ २६	५ ३१	७ १६	८ ४७
१५	१० १०	११ ४७	१ ४३	३ ५६	६ १५	८ ३२	१० ४७	१ ०५	३ २२	५ २७	७ १२	८ ४३
१६	१० ६	११ ४३	१ ३९	३ ५२	६ ११	८ २८	१० ४३	१ ०१	३ १८	५ २३	७ ०८	८ ३९
१७	१० २	११ ३९	१ ३५	३ ४८	६ ०७	८ २४	१० ३९	१२ ५७	३ १४	५ १९	७ ०४	८ ३५
१८	९ ५८	११ ३५	१ ३१	३ ४४	६ ०३	८ २०	१० ३५	१२ ५३	३ १०	५ १५	७ ००	८ ३१
१९	९ ५४	११ ३१	१ २७	३ ४०	५ ५९	८ १६	१० ३१	१२ ४९	३ ०६	५ ११	६ ५६	८ २७
२०	९ ५०	११ २७	१ २३	३ ३६	५ ५५	८ १२	१० २७	१२ ४५	३ ०२	५ ०७	६ ५२	८ २३
२१	९ ४६	११ २३	१ १९	३ ३२	५ ५१	८ ०८	१० २३	१२ ४१	२ ५८	५ ०३	६ ४८	८ १९
२२	९ ४२	११ १९	१ १५	३ २८	५ ४७	८ ०४	१० १९	१२ ३७	२ ५४	४ ५९	६ ४४	८ १५
२३	९ ३८	११ १५	१ ११	३ २४	५ ४३	८ ००	१० १५	१२ ३३	२ ५०	४ ५५	६ ४०	८ ११
२४	९ ३५	११ १२	१ ०८	३ २१	५ ४०	७ ५७	१० १२	१२ ३०	२ ४७	४ ५२	६ ३७	८ ०८
२५	९ ३१	११ ०८	१ ०४	३ १७	५ ३६	७ ५३	१० ०८	१२ २६	२ ४३	४ ४८	६ ३३	८ ०४
२६	९ २७	११ ०४	१ ००	३ १३	५ ३२	७ ४९	१० ०४	१२ २२	२ ३९	४ ४४	६ २९	८ ००
२७	९ २३	११ ००	१२ ५६	३ ०९	५ २८	७ ४५	१० ००	१२ १८	२ ३५	४ ४०	६ २५	७ ५६
२८	९ १९	१० ५६	१२ ५२	३ ०५	५ २४	७ ४१	९ ५६	१२ १४	२ ३१	४ ३६	६ २१	७ ५२

⊛ **दैनिकलग्नसारिणी स्पष्टता–** प्रत्येक अंग्रेजी माह क्रम से प्रस्तुत हैं तथा प्रत्येक तारीख को मेषादि क्रम से लग्नों का प्रवेशकाल दिया है ◇ **यथा–** १ जनवरी को स्टेण्डर्ड समय दिन के १।८ से मेष लग्न प्रारम्भ तथा २।४५ तक यहां से वृषभ लग्न प्रा. एवं सभी हेतु यही क्रम समझें ◇

मार्चमासे दैनिकलग्नप्रवेशसारिणी [स्टे. टाइम घंटा मिनट]

ता.	मेष दिवा	वृषभ दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या सायं	तुला रात्रि	वृश्चिक रात्रि	धनु रात्रि	मकर रात्रि	कुम्भ रात्रि	मीन प्रातः
१	९ १५	१० ५२	१२ ४८	३ ०१	५ २०	७ ३७	९ ५२	१२ १०	२ २७	४ ३२	६ १७	७ ४८
२	९ ११	१० ४८	१२ ४४	२ ५७	५ १६	७ ३३	९ ४८	१२ ०६	२ २३	४ २८	६ १३	७ ४४
३	९ ७	१० ४४	१२ ४०	२ ५३	५ १२	७ २९	९ ४४	१२ ०२	२ १९	४ २४	६ ०९	७ ४०
४	९ ३	१० ४०	१२ ३६	२ ४९	५ ०८	७ २५	९ ४०	११ ५८	२ १५	४ २०	६ ०५	७ ३६
५	८ ५९	१० ३६	१२ ३२	२ ४५	५ ०४	७ २१	९ ३६	११ ५४	२ ११	४ १६	६ ०१	७ ३२
६	८ ५५	१० ३२	१२ २८	२ ४१	५ ००	७ १७	९ ३२	११ ५०	२ ०७	४ १२	५ ५७	७ २८
७	८ ५१	१० २८	१२ २४	२ ३७	४ ५६	७ १३	९ २८	११ ४६	२ ०३	४ ०८	५ ५३	७ २४
८	८ ४७	१० २४	१२ २०	२ ३३	४ ५२	७ ०९	९ २४	११ ४२	१ ५९	४ ०४	५ ४९	७ २०
९	८ ४३	१० २०	१२ १६	२ २९	४ ४८	७ ०५	९ २०	११ ३८	१ ५५	४ ००	५ ४५	७ १६
१०	८ ३९	१० १६	१२ १२	२ २५	४ ४४	७ ०१	९ १६	११ ३४	१ ५१	३ ५६	५ ४१	७ १२
११	८ ३५	१० १२	१२ ०८	२ २१	४ ४०	६ ५७	९ १२	११ ३०	१ ४७	३ ५२	५ ३७	७ ०८
१२	८ ३१	१० ८	१२ ०४	२ १७	४ ३६	६ ५३	९ ०८	११ २६	१ ४३	३ ४८	५ ३३	७ ०४
१३	८ २७	१० ०४	१२ ००	२ १३	४ ३२	६ ४९	९ ०४	११ २२	१ ३९	३ ४४	५ २९	७ ००
१४	८ २३	१० ००	११ ५६	२ ०९	४ २८	६ ४५	९ ००	११ १८	१ ३५	३ ४०	५ २५	६ ५६
१५	८ १९	९ ५६	११ ५२	२ ०५	४ २४	६ ४१	८ ५६	११ १४	१ ३१	३ ३६	५ २१	६ ५२
१६	८ १५	९ ५२	११ ४८	२ ०१	४ २०	६ ३७	८ ५२	११ १०	१ २७	३ ३२	५ १७	६ ४८
१७	८ ११	९ ४८	११ ४४	१ ५७	४ १६	६ ३३	८ ४८	११ ०६	१ २३	३ २८	५ १३	६ ४४
१८	८ ७	९ ४४	११ ४०	१ ५३	४ १२	६ २९	८ ४४	११ ०२	१ १९	३ २४	५ ०९	६ ४०
१९	८ ३	९ ४०	११ ३६	१ ४९	४ ०८	६ २५	८ ४०	१० ५८	१ १५	३ २०	५ ०५	६ ३६
२०	७ ५९	९ ३६	११ ३२	१ ४५	४ ०४	६ २१	८ ३६	१० ५४	१ ११	३ १६	५ ०१	६ ३२
२१	७ ५५	९ ३२	११ २८	१ ४१	४ ००	६ १७	८ ३२	१० ५०	१ ०७	३ १२	४ ५७	६ २८
२२	७ ५१	९ २८	११ २४	१ ३७	३ ५६	६ १३	८ २८	१० ४६	१ ०३	३ ०८	४ ५३	६ २४
२३	७ ४७	९ २४	११ २०	१ ३३	३ ५२	६ ०९	८ २४	१० ४२	१२ ५९	३ ०४	४ ४९	६ २०
२४	७ ४३	९ २०	११ १६	१ २९	३ ४८	६ ०५	८ २०	१० ३८	१२ ५५	३ ००	४ ४५	६ १६
२५	७ ३९	९ १६	११ १२	१ २५	३ ४४	६ ०१	८ १६	१० ३४	१२ ५१	२ ५६	४ ४१	६ १२
२६	७ ३५	९ १२	११ ०८	१ २१	३ ४०	५ ५७	८ १२	१० ३०	१२ ४७	२ ५२	४ ३७	६ ०८
२७	७ ३१	९ ०८	११ ०४	१ १७	३ ३६	५ ५३	८ ०८	१० २६	१२ ४३	२ ४८	४ ३३	६ ०४
२८	७ २७	९ ०४	११ ००	१ १३	३ ३२	५ ४९	८ ०४	१० २२	१२ ३९	२ ४४	४ २९	६ ००
२९	७ २३	९ ००	१० ५६	१ ०९	३ २८	५ ४५	८ ००	१० १८	१२ ३५	२ ४०	४ २५	५ ५६
३०	७ १९	८ ५६	१० ५२	१ ०५	३ २४	५ ४१	७ ५६	१० १४	१२ ३१	२ ३६	४ २१	५ ५२
३१	७ १५	८ ५२	१० ४८	१ ०१	३ २०	५ ३७	७ ५२	१० १०	१२ २७	२ ३२	४ १७	५ ४८

अप्रेलमासे दैनिकलग्नप्रवेशसारिणी [स्टे. टाइम घंटा मिनट]

ता.	मेष प्रातः	वृष दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला सायं	वृश्चिक रात्रि	धनु रात्रि	मकर रात्रि	कुम्भ रात्रि	मीन रात्रि
१	७ ११	८ ४८	१० ४४	१२ ५७	३ १६	५ ३३	७ ४८	१० ०६	१२ २३	२ २८	४ १३	५ ४४
२	७ ७	८ ४४	१० ४०	१२ ५३	३ १२	५ २९	७ ४४	१० ०२	१२ १९	२ २४	४ ०९	५ ४०
३	७ ३	८ ४०	१० ३६	१२ ४९	३ ०८	५ २५	७ ४०	९ ५८	१२ १५	२ २०	४ ०५	५ ३६
४	६ ५९	८ ३६	१० ३२	१२ ४५	३ ०४	५ २१	७ ३६	९ ५४	१२ ११	२ १६	४ ०१	५ ३२
५	६ ५५	८ ३२	१० २८	१२ ४१	३ ००	५ १६	७ ३२	९ ५०	१२ ०६	२ १२	३ ५६	५ २८
६	६ ५१	८ २८	१० २४	१२ ३६	२ ५६	५ १३	७ २८	९ ४६	१२ ०३	२ ०८	३ ५३	५ २४
७	६ ४७	८ २४	१० २०	१२ ३३	२ ५२	५ ०९	७ २४	९ ४२	११ ५९	२ ०४	३ ४९	५ २०
८	६ ४३	८ २०	१० १६	१२ २९	२ ४८	५ ०५	७ २०	९ ३८	११ ५५	२ ००	३ ४५	५ १६
९	६ ३९	८ १६	१० १२	१२ २५	२ ४४	५ ०१	७ १६	९ ३४	११ ५१	१ ५६	३ ४१	५ १२
१०	६ ३६	८ १३	१० ०९	१२ २२	२ ४१	४ ५८	७ १३	९ ३१	११ ४८	१ ५३	३ ३८	५ ०९
११	६ ३२	८ ०९	१० ०५	१२ १८	२ ३६	४ ५४	७ ०९	९ २६	११ ४४	१ ४९	३ ३४	५ ०५
१२	६ २८	८ ०५	१० ०१	१२ १४	२ ३३	४ ५०	७ ०५	९ २३	११ ४०	१ ४५	३ ३०	५ ०१
१३	६ २४	८ ०१	९ ५७	१२ १०	२ २९	४ ४६	७ ०१	९ १९	११ ३६	१ ४१	३ २६	४ ५६
१४	६ २०	७ ५७	९ ५३	१२ ०६	२ २५	४ ४२	६ ५६	९ १५	११ ३२	१ ३६	३ २२	४ ५३
१५	६ १७	७ ५४	९ ५०	१२ ०३	२ २२	४ ३९	६ ५४	९ १२	११ २९	१ ३४	३ १९	४ ५०
१६	६ १३	७ ५०	९ ४६	११ ५९	२ १८	४ ३५	६ ५०	९ ०८	११ २५	१ ३०	३ १५	४ ४६
१७	६ ९	७ ४६	९ ४२	११ ५५	२ १४	४ ३१	६ ४६	९ ०४	११ २१	१ २६	३ ११	४ ४२
१८	६ ५	७ ४२	९ ३८	११ ५१	२ १०	४ २७	६ ४२	९ ००	११ १६	१ २२	३ ०७	४ ३८
१९	६ १	७ ३८	९ ३४	११ ४७	२ ०६	४ २३	६ ३८	८ ५६	११ १३	१ १८	३ ०३	४ ३४
२०	५ ५७	७ ३४	९ ३०	११ ४३	२ ०२	४ १९	६ ३४	८ ५२	११ ०९	१ १४	२ ५९	४ ३०
२१	५ ५३	७ ३०	९ २६	११ ३९	१ ५८	४ १५	६ ३०	८ ४८	११ ०५	१ १०	२ ५५	४ २६
२२	५ ४९	७ २६	९ २२	११ ३५	१ ५४	४ ११	६ २६	८ ४४	११ ०१	१ ०६	२ ५१	४ २२
२३	५ ४५	७ २२	९ १८	११ ३१	१ ५०	४ ०७	६ २२	८ ४०	१० ५६	१ ०२	२ ४६	४ १८
२४	५ ४१	७ १८	९ १४	११ २६	१ ४६	४ ०३	६ १८	८ ३६	१० ५३	१२ ५८	२ ४३	४ १४
२५	५ ३७	७ १४	९ १०	११ २३	१ ४२	३ ५९	६ १४	८ ३२	१० ४९	१२ ५४	२ ३९	४ १०
२६	५ ३३	७ १०	९ ०६	११ १९	१ ३८	३ ५५	६ १०	८ २८	१० ४५	१२ ५०	२ ३५	४ ०६
२७	५ २९	७ ०६	९ ०२	११ १५	१ ३४	३ ५१	६ ०६	८ २४	१० ४१	१२ ४६	२ ३१	४ ०२
२८	५ २५	७ ०२	८ ५८	११ ११	१ ३०	३ ४७	६ ०२	८ २०	१० ३६	१२ ४२	२ २७	३ ५८
२९	५ २१	६ ५८	८ ५४	११ ०६	१ २६	३ ४३	५ ५८	८ १६	१० ३३	१२ ३८	२ २३	३ ५४
३०	५ १७	६ ५४	८ ५०	११ ०३	१ २२	३ ३९	५ ५४	८ १२	१० २९	१२ ३४	२ १९	३ ५०

मईमासे दैनिकलग्नप्रवेशसारिणी [स्टे. टाइम घंटा मिनट]

ता.	मेष रात्रि	वृषभ प्रातः	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चिक सायं	धनु रात्रि	मकर रात्रि	कुम्भ रात्रि	मीन रात्रि
१	५ १३	६ ५०	८ ४६	१० ५९	१ १८	३ ३५	५ ५०	८ ०८	१० २५	१२ ३०	२ १५	३ ४६
२	५ ९	६ ४६	८ ४२	१० ५५	१ १४	३ ३१	५ ४६	८ ०४	१० २१	१२ २६	२ ११	३ ४२
३	५ ५	६ ४२	८ ३८	१० ५१	१ १०	३ २७	५ ४२	८ ००	१० १७	१२ २२	२ ०७	३ ३८
४	५ १	६ ३८	८ ३४	१० ४७	१ ६	३ २३	५ ३८	७ ५६	१० १३	१२ १८	२ ०३	३ ३४
५	४ ५७	६ ३४	८ ३०	१० ४३	१ २	३ १९	५ ३४	७ ५२	१० ०९	१२ १४	१ ५९	३ ३०
६	४ ५३	६ ३०	८ २६	१० ३९	१२ ५८	३ १५	५ ३०	७ ४८	१० ०५	१२ १०	१ ५५	३ २६
७	४ ४९	६ २६	८ २२	१० ३५	१२ ५४	३ ११	५ २६	७ ४४	१० ०१	१२ ०६	१ ५१	३ २२
८	४ ४५	६ २२	८ १८	१० ३१	१२ ५०	३ ७	५ २२	७ ४०	९ ५७	१२ ०२	१ ४७	३ १८
९	४ ४१	६ १८	८ १४	१० २७	१२ ४६	३ ३	५ १८	७ ३६	९ ५३	११ ५८	१ ४३	३ १४
१०	४ ३७	६ १४	८ १०	१० २३	१२ ४२	२ ५९	५ १४	७ ३२	९ ४९	११ ५४	१ ३९	३ १०
११	४ ३३	६ १०	८ ०६	१० १९	१२ ३८	२ ५५	५ १०	७ २८	९ ४५	११ ५०	१ ३५	३ ०६
१२	४ ३०	६ ०७	८ ०३	१० १६	१२ ३५	२ ५२	५ ०७	७ २५	९ ४२	११ ४७	१ ३२	३ ०३
१३	४ २६	६ ०३	७ ५९	१० १२	१२ ३१	२ ४८	५ ०३	७ २१	९ ३८	११ ४३	१ २८	२ ५९
१४	४ २२	५ ५९	७ ५५	१० ०८	१२ २७	२ ४४	४ ५९	७ १७	९ ३४	११ ३९	१ २४	२ ५५
१५	४ १८	५ ५५	७ ५१	१० ०४	१२ २३	२ ४०	४ ५५	७ १३	९ ३०	११ ३५	१ २०	२ ५१
१६	४ १४	५ ५१	७ ४७	१० ००	१२ १९	२ ३६	४ ५१	७ ०९	९ २६	११ ३१	१ १६	२ ४७
१७	४ १०	५ ४७	७ ४३	९ ५६	१२ १५	२ ३२	४ ४७	७ ०५	९ २२	११ २७	१ १२	२ ४३
१८	४ ६	५ ४३	७ ३९	९ ५२	१२ ११	२ २८	४ ४३	७ ०१	९ १८	११ २३	१ ०८	२ ३९
१९	४ ३	५ ४०	७ ३६	९ ४९	१२ ०८	२ २५	४ ४०	६ ५८	९ १५	११ २०	१ ०५	२ ३६
२०	३ ५९	५ ३६	७ ३२	९ ४५	१२ ०४	२ २१	४ ३६	६ ५४	९ ११	११ १६	१ ०१	२ ३२
२१	३ ५५	५ ३२	७ २८	९ ४१	१२ ००	२ १७	४ ३२	६ ५०	९ ०७	११ १२	१२ ५७	२ २८
२२	३ ५१	५ २८	७ २४	९ ३७	११ ५६	२ १३	४ २८	६ ४६	९ ०३	११ ०८	१२ ५३	२ २४
२३	३ ४७	५ २४	७ २०	९ ३३	११ ५२	२ ०९	४ २४	६ ४२	८ ५९	११ ०४	१२ ४९	२ २०
२४	३ ४३	५ २०	७ १६	९ २९	११ ४८	२ ०५	४ २०	६ ३८	८ ५५	११ ००	१२ ४५	२ १६
२५	३ ३९	५ १६	७ १२	९ २५	११ ४४	२ ०१	४ १६	६ ३४	८ ५१	१० ५६	१२ ४१	२ १२
२६	३ ३५	५ १२	७ ०८	९ २१	११ ४०	१ ५७	४ १२	६ ३०	८ ४७	१० ५२	१२ ३७	२ ०८
२७	३ ३१	५ ०८	७ ०४	९ १७	११ ३६	१ ५३	४ ०८	६ २६	८ ४३	१० ४८	१२ ३३	२ ०४
२८	३ २७	५ ०४	७ ००	९ १३	११ ३२	१ ४९	४ ०४	६ २२	८ ३९	१० ४४	१२ २९	२ ००
२९	३ २३	५ ००	६ ५६	९ ०९	११ २८	१ ४५	४ ००	६ १८	८ ३५	१० ४०	१२ २५	१ ५६
३०	३ १९	४ ५६	६ ५२	९ ०५	११ २४	१ ४१	३ ५६	६ १४	८ ३१	१० ३६	१२ २१	१ ५२
३१	३ १५	४ ५२	६ ४८	९ ०१	११ २०	१ ३७	३ ५२	६ १०	८ २७	१० ३२	१२ १७	१ ४८

जूनमासे दैनिकलग्नप्रवेशसारिणी [स्टे. टाइम घंटा मिनट]

ता.	मेष रात्रि	वृषभ रात्रि	मिथुन प्रातः	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चिक दिवा	धनु सायं	मकर रात्रि	कुम्भ रात्रि	मीन रात्रि
१	३ ११	४ ४८	६ ४४	८ ५७	११ १६	१ ३३	३ ४८	६ ६	८ २३	१० २८	१२ १३	१ ४४
२	३ ७	४ ४४	६ ४०	८ ५३	११ १२	१ २९	३ ४४	६ २	८ १९	१० २४	१२ ०९	१ ४०
३	३ ४	४ ४१	६ ३७	८ ५०	११ ०९	१ २६	३ ४१	५ ५९	८ १६	१० २१	१२ ०६	१ ३७
४	३ ०	४ ३७	६ ३३	८ ४६	११ ०५	१ २२	३ ३७	५ ५५	८ १२	१० १७	१२ ०२	१ ३३
५	२ ५६	४ ३३	६ २९	८ ४२	११ ०१	१ १८	३ ३३	५ ५१	८ ०८	१० १३	११ ५८	१ २९
६	२ ५२	४ २९	६ २५	८ ३८	१० ५७	१ १४	३ २९	५ ४७	८ ०४	१० ०९	११ ५४	१ २५
७	२ ४८	४ २५	६ २१	८ ३४	१० ५३	१ १०	३ २५	५ ४३	८ ००	१० ०५	११ ५०	१ २१
८	२ ४४	४ २१	६ १७	८ ३०	१० ४९	१ ०६	३ २१	५ ३९	७ ५६	१० ०१	११ ४६	१ १७
९	२ ४०	४ १७	६ १३	८ २६	१० ४५	१ ०२	३ १७	५ ३५	७ ५२	९ ५७	११ ४२	१ १३
१०	२ ३६	४ १३	६ ०९	८ २२	१० ४१	१२ ५८	३ १३	५ ३१	७ ४८	९ ५३	११ ३८	१ ०९
११	२ ३२	४ ०९	६ ०५	८ १८	१० ३७	१२ ५४	३ ०९	५ २७	७ ४४	९ ४९	११ ३४	१ ०५
१२	२ २८	४ ०५	६ ०१	८ १४	१० ३३	१२ ५०	३ ०५	५ २३	७ ४०	९ ४५	११ ३०	१ ०१
१३	२ २४	४ ०१	५ ५७	८ १०	१० २९	१२ ४६	३ ०१	५ १९	७ ३६	९ ४१	११ २६	१२ ५७
१४	२ २०	३ ५७	५ ५३	८ ०६	१० २५	१२ ४२	२ ५७	५ १५	७ ३२	९ ३७	११ २२	१२ ५३
१५	२ १६	३ ५३	५ ४९	८ ०२	१० २१	१२ ३८	२ ५३	५ ११	७ २८	९ ३३	११ १८	१२ ४९
१६	२ १२	३ ४९	५ ४५	७ ५८	१० १७	१२ ३४	२ ४९	५ ०७	७ २४	९ २९	११ १५	१२ ४५
१७	२ ८	३ ४५	५ ४१	७ ५४	१० १३	१२ ३०	२ ४५	५ ०३	७ २०	९ २५	११ १०	१२ ४१
१८	२ ५	३ ४२	५ ३८	७ ५१	१० १०	१२ २७	२ ४२	५ ००	७ १७	९ २२	११ ०७	१२ ३८
१९	२ १	३ ३८	५ ३४	७ ४७	१० ०६	१२ २३	२ ३८	४ ५६	७ १३	९ १८	११ ०३	१२ ३४
२०	१ ५७	३ ३४	५ ३०	७ ४३	१० ०२	१२ १९	२ ३४	४ ५२	७ ०९	९ १४	१० ५९	१२ ३०
२१	१ ५३	३ ३०	५ २६	७ ३९	९ ५८	१२ १५	२ ३०	४ ४८	७ ०५	९ १०	१० ५५	१२ २६
२२	१ ४९	३ २६	५ २२	७ ३५	९ ५४	१२ ११	२ २६	४ ४४	७ ०१	९ ०६	१० ५१	१२ २२
२३	१ ४५	३ २२	५ १८	७ ३१	९ ५०	१२ ०७	२ २२	४ ४०	६ ५७	९ ०२	१० ४७	१२ १८
२४	१ ४१	३ १८	५ १४	७ २७	९ ४६	१२ ०३	२ १८	४ ३६	६ ५३	८ ५८	१० ४३	१२ १४
२५	१ ३७	३ १४	५ १०	७ २३	९ ४२	११ ५९	२ १४	४ ३२	६ ४९	८ ५४	१० ३९	१२ १०
२६	१ ३३	३ १०	५ ०६	७ १९	९ ३८	११ ५५	२ १०	४ २८	६ ४५	८ ५०	१० ३५	१२ ०६
२७	१ २९	३ ०६	५ ०२	७ १५	९ ३४	११ ५१	२ ०६	४ २४	६ ४१	८ ४६	१० ३१	१२ ०२
२८	१ २५	३ ०२	४ ५८	७ ११	९ ३०	११ ४७	२ ०२	४ २०	६ ३७	८ ४२	१० २७	११ ५८
२९	१ २२	२ ५९	४ ५५	७ ०८	९ २७	११ ४४	१ ५९	४ १७	६ ३४	८ ३९	१० २४	११ ५५
३०	१ १८	२ ५५	४ ५१	७ ०४	९ २३	११ ४०	१ ५५	४ १३	६ ३०	८ ३५	१० २०	११ ५१

जुलाईमासे दैनिकलग्नप्रवेशसारिणी [स्टे. टाइम घंटा मिनट]

ता.	मेष रात्रि	वृषभ रात्रि	मिथुन रात्रि	कर्क प्रातः	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चिक दिवा	धनु सायं	मकर रात्रि	कुम्भ रात्रि	मीन रात्रि
१	१ १४	२ ५१	४ ४७	७ ००	९ १९	११ ३६	१ ५१	४ ०९	६ २६	८ ३१	१० १६	११ ४७
२	१ १०	२ ४७	४ ४३	६ ५६	९ १५	११ ३२	१ ४७	४ ०५	६ २२	८ २७	१० १२	११ ४३
३	१ ६	२ ४३	४ ३९	६ ५२	९ ११	११ २८	१ ४३	४ ०१	६ १८	८ २३	१० ०८	११ ३९
४	१ २	२ ३९	४ ३५	६ ४८	९ ०७	११ २४	१ ३९	३ ५७	६ १४	८ १९	१० ०४	११ ३५
५	१२ ५८	२ ३५	४ ३१	६ ४४	९ ०३	११ २०	१ ३५	३ ५३	६ १०	८ १५	१० ००	११ ३१
६	१२ ५४	२ ३१	४ २७	६ ४०	८ ५९	११ १६	१ ३१	३ ४९	६ ६	८ ११	९ ५६	११ २७
७	१२ ५०	२ २७	४ २३	६ ३६	८ ५५	११ १२	१ २७	३ ४५	६ २	८ ०७	९ ५२	११ २३
८	१२ ४६	२ २३	४ १९	६ ३२	८ ५१	११ ८	१ २३	३ ४१	५ ५८	८ ०३	९ ४८	११ १९
९	१२ ४२	२ १९	४ १५	६ २८	८ ४७	११ ४	१ १९	३ ३७	५ ५४	७ ५९	९ ४४	११ १५
१०	१२ ३८	२ १५	४ ११	६ २४	८ ४३	११ ०	१ १५	३ ३३	५ ५०	७ ५५	९ ४०	११ ११
११	१२ ३४	२ ११	४ ०७	६ २०	८ ३९	१० ५६	१ ११	३ २९	५ ४६	७ ५१	९ ३६	११ ०७
१२	१२ ३०	२ ०७	४ ०३	६ १६	८ ३५	१० ५२	१ ०७	३ २५	५ ४२	७ ४७	९ ३२	११ ०३
१३	१२ २६	२ ०३	३ ५९	६ १२	८ ३१	१० ४८	१ ०३	३ २१	५ ३८	७ ४३	९ २८	१० ५९
१४	१२ २३	२ ००	३ ५६	६ ०९	८ २८	१० ४५	१ ००	३ १८	५ ३५	७ ४०	९ २५	१० ५६
१५	१२ १९	१ ५६	३ ५२	६ ०५	८ २४	१० ४१	१२ ५६	३ १४	५ ३१	७ ३६	९ २१	१० ५२
१६	१२ १५	१ ५२	३ ४८	६ ०१	८ २०	१० ३७	१२ ५२	३ १०	५ २७	७ ३२	९ १७	१० ४८
१७	१२ ११	१ ४८	३ ४४	५ ५७	८ १६	१० ३३	१२ ४८	३ ०६	५ २३	७ २८	९ १३	१० ४४
१८	१२ ७	१ ४४	३ ४०	५ ५३	८ १२	१० २९	१२ ४४	३ ०२	५ १९	७ २४	९ ०९	१० ४०
१९	१२ ३	१ ४०	३ ३६	५ ४९	८ ०८	१० २५	१२ ४०	२ ५८	५ १५	७ २०	९ ०५	१० ३६
२०	११ ५९	१ ३६	३ ३२	५ ४५	८ ०४	१० २१	१२ ३६	२ ५४	५ ११	७ १६	९ ०१	१० ३२
२१	११ ५५	१ ३२	३ २८	५ ४१	८ ००	१० १७	१२ ३२	२ ५०	५ ०७	७ १२	८ ५७	१० २८
२२	११ ५१	१ २८	३ २४	५ ३७	७ ५६	१० १३	१२ २८	२ ४६	५ ०३	७ ०८	८ ५३	१० २४
२३	११ ४७	१ २४	३ २०	५ ३३	७ ५२	१० ०९	१२ २४	२ ४२	४ ५९	७ ०४	८ ४९	१० २०
२४	११ ४३	१ २०	३ १६	५ २९	७ ४८	१० ०५	१२ २०	२ ३८	४ ५५	७ ००	८ ४५	१० १६
२५	११ ३९	१ १६	३ १२	५ २५	७ ४४	१० ०१	१२ १६	२ ३४	४ ५१	६ ५६	८ ४१	१० १२
२६	११ ३५	१ १२	३ ०८	५ २१	७ ४०	९ ५७	१२ १२	२ ३०	४ ४७	६ ५२	८ ३७	१० ०८
२७	११ ३१	१ ०८	३ ०४	५ १७	७ ३६	९ ५३	१२ ०८	२ २६	४ ४३	६ ४८	८ ३३	१० ०४
२८	११ २७	१ ०४	३ ००	५ १३	७ ३२	९ ४९	१२ ०४	२ २२	४ ३९	६ ४४	८ २९	१० ००
२९	११ २३	१ ००	२ ५६	५ ०९	७ २८	९ ४५	१२ ००	२ १८	४ ३५	६ ४०	८ २५	९ ५६
३०	११ १९	१२ ५६	२ ५२	५ ०५	७ २४	९ ४१	११ ५६	२ १४	४ ३१	६ ३६	८ २१	९ ५२
३१	११ १५	१२ ५२	२ ४८	५ ०१	७ २०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अगस्तमासे दैनिकलग्नप्रवेशसारिणी [स्टे. टाइम घंटा मिनट]

ता.	मेष रात्रि	वृषभ रात्रि	मिथुन रात्रि	कर्क रात्रि	सिंह प्रातः	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चिक दिवा	धनु दिवा	मकर सायं	कुम्भ रात्रि	मीन रात्रि
१	११ १२	१२ ४९	२ ४५	४ ५८	७ १७	९ ३४	११ ४९	२ ०७	४ २४	६ २९	८ १४	९ ४५
२	११ ८	१२ ४५	२ ४१	४ ५४	७ १३	९ ३०	११ ४५	२ ०३	४ २०	६ २५	८ १०	९ ४१
३	११ ४	१२ ४१	२ ३७	४ ५०	७ ०९	९ २६	११ ४१	१ ५९	४ १६	६ २१	८ ०६	९ ३७
४	११ ०	१२ ३७	२ ३३	४ ४६	७ ०५	९ २२	११ ३७	१ ५५	४ १२	६ १७	८ ०२	९ ३३
५	१० ५६	१२ ३३	२ २९	४ ४२	७ ०१	९ १८	११ ३३	१ ५१	४ ०८	६ १३	७ ५८	९ २९
६	१० ५२	१२ २९	२ २५	४ ३८	६ ५७	९ १४	११ २९	१ ४७	४ ०४	६ ०९	७ ५४	९ २५
७	१० ४८	१२ २५	२ २१	४ ३४	६ ५३	९ १०	११ २५	१ ४३	४ ००	६ ०५	७ ५०	९ २१
८	१० ४४	१२ २१	२ १७	४ ३०	६ ४९	९ ०६	११ २१	१ ३९	३ ५६	६ ०१	७ ४६	९ १७
९	१० ४०	१२ १७	२ १३	४ २६	६ ४५	९ ०२	११ १७	१ ३५	३ ५२	५ ५७	७ ४२	९ १३
१०	१० ३६	१२ १३	२ ०९	४ २२	६ ४१	८ ५८	११ १३	१ ३१	३ ४८	५ ५३	७ ३८	९ ०९
११	१० ३२	१२ ०९	२ ०५	४ १८	६ ३७	८ ५४	११ ०९	१ २७	३ ४४	५ ४९	७ ३४	९ ०५
१२	१० २८	१२ ०५	२ ०१	४ १४	६ ३३	८ ५०	११ ०५	१ २३	३ ४०	५ ४५	७ ३०	९ ०१
१३	१० २४	१२ ०१	१ ५७	४ १०	६ २९	८ ४६	११ ०१	१ १९	३ ३६	५ ४१	७ २६	८ ५७
१४	१० २०	११ ५७	१ ५३	४ ०६	६ २५	८ ४२	१० ५७	१ १५	३ ३२	५ ३७	७ २२	८ ५३
१५	१० १६	११ ५३	१ ४९	४ ०२	६ २१	८ ३८	१० ५३	१ ११	३ २८	५ ३३	७ १८	८ ४९
१६	१० १२	११ ४९	१ ४५	३ ५८	६ १७	८ ३४	१० ४९	१ ०७	३ २४	५ २९	७ १४	८ ४५
१७	१० ८	११ ४५	१ ४१	३ ५४	६ १३	८ ३०	१० ४५	१ ०३	३ २०	५ २५	७ १०	८ ४१
१८	१० ४	११ ४१	१ ३७	३ ५०	६ ०९	८ २६	१० ४१	१२ ५९	३ १६	५ २१	७ ०६	८ ३७
१९	१० ०	११ ३७	१ ३३	३ ४६	६ ०५	८ २२	१० ३७	१२ ५५	३ १२	५ १७	७ ०२	८ ३३
२०	९ ५७	११ ३४	१ ३०	३ ४३	६ ०२	८ १९	१० ३४	१२ ५२	३ ०९	५ १४	६ ५९	८ ३०
२१	९ ५३	११ ३०	१ २६	३ ३९	५ ५८	८ १५	१० ३०	१२ ४८	३ ०५	५ १०	६ ५५	८ २६
२२	९ ४९	११ २६	१ २२	३ ३५	५ ५४	८ ११	१० २६	१२ ४४	३ ०१	५ ०६	६ ५१	८ २२
२३	९ ४५	११ २२	१ १८	३ ३१	५ ५०	८ ०७	१० २२	१२ ४०	२ ५७	५ ०२	६ ४७	८ १८
२४	९ ४१	११ १८	१ १४	३ २७	५ ४६	८ ०३	१० १८	१२ ३६	२ ५३	४ ५८	६ ४३	८ १४
२५	९ ३७	११ १४	१ १०	३ २३	५ ४२	७ ५९	१० १४	१२ ३२	२ ४९	४ ५४	६ ३९	८ १०
२६	९ ३३	११ १०	१ ०६	३ १९	५ ३८	७ ५५	१० १०	१२ २८	२ ४५	४ ५०	६ ३५	८ ०६
२७	९ २९	११ ०६	१ ०२	३ १५	५ ३४	७ ५१	१० ०६	१२ २४	२ ४१	४ ४६	६ ३१	८ ०२
२८	९ २५	११ ०२	१२ ५८	३ ११	५ ३०	७ ४७	१० ०२	१२ २०	२ ३७	४ ४२	६ २७	७ ५८
२९	९ २१	१० ५८	१२ ५४	३ ०७	५ २६	७ ४३	९ ५८	१२ १६	२ ३३	४ ३८	६ २३	७ ५४
३०	९ १७	१० ५४	१२ ५०	३ ०३	५ २२	७ ३९	९ ५४	१२ १२	२ २९	४ ३४	६ १९	७ ५०
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७ ३५	९ ५०	१२ ०८	२ २५	४ ३०	६ १५	७ ४६

सितम्बरमासे दैनिकलग्नप्रवेशसारिणी [स्टे. टाइम घंटा मिनट]

ता.	मेष रात्रि	वृषभ रात्रि	मिथुन रात्रि	कर्क रात्रि	सिंह रात्रि	कन्या प्रातः	तुला दिवा	वृश्चिक दिवा	धनु दिवा	मकर दिवा	कुम्भ सायं	मीन रात्रि
१	९ १०	१० ४७	१२ ४३	२ ५६	५ १५	७ ३२	९ ४७	१२ ०५	२ २२	४ २७	६ १२	७ ४३
२	९ ६	१० ४३	१२ ३९	२ ५२	५ ११	७ २८	९ ४३	१२ ०१	२ १८	४ २३	६ ०८	७ ३९
३	९ २	१० ३९	१२ ३५	२ ४८	५ ०७	७ २४	९ ३९	११ ५७	२ १४	४ १९	६ ०४	७ ३५
४	८ ५८	१० ३५	१२ ३१	२ ४४	५ ०३	७ २०	९ ३५	११ ५३	२ १०	४ १५	६ ००	७ ३१
५	८ ५४	१० ३१	१२ २७	२ ४०	४ ५९	७ १६	९ ३१	११ ४९	२ ६	४ ११	५ ५६	७ २७
६	८ ५०	१० २७	१२ २३	२ ३६	४ ५५	७ १२	९ २७	११ ४५	२ २	४ ०७	५ ५२	७ २३
७	८ ४६	१० २३	१२ १९	२ ३२	४ ५१	७ ०८	९ २३	११ ४१	१ ५८	४ ०३	५ ४८	७ १९
८	८ ४२	१० १९	१२ १५	२ २८	४ ४७	७ ०४	९ १९	११ ३७	१ ५४	३ ५९	५ ४४	७ १५
९	८ ३८	१० १५	१२ ११	२ २४	४ ४३	७ ००	९ १५	११ ३३	१ ५०	३ ५५	५ ४०	७ ११
१०	८ ३४	१० ११	१२ ०७	२ २०	४ ३९	६ ५६	९ ११	११ २९	१ ४६	३ ५१	५ ३६	७ ७
११	८ ३०	१० ०७	१२ ०३	२ १६	४ ३५	६ ५२	९ ०७	११ २५	१ ४२	३ ४७	५ ३२	७ ३
१२	८ २६	१० ०३	११ ५९	२ १२	४ ३१	६ ४८	९ ०३	११ २१	१ ३८	३ ४३	५ २८	६ ५९
१३	८ २२	९ ५९	११ ५५	२ ८	४ २७	६ ४४	८ ५९	११ १७	१ ३४	३ ३९	५ २४	६ ५५
१४	८ १८	९ ५५	११ ५१	२ ४	४ २३	६ ४०	८ ५५	११ १३	१ ३०	३ ३५	५ २०	६ ५१
१५	८ १४	९ ५१	११ ४७	२ ०	४ १९	६ ३६	८ ५१	११ ०९	१ २६	३ ३१	५ १६	६ ४७
१६	८ १०	९ ४७	११ ४३	१ ५६	४ १५	६ ३२	८ ४७	११ ०५	१ २२	३ २७	५ १२	६ ४३
१७	८ ६	९ ४३	११ ३९	१ ५२	४ ११	६ २८	८ ४३	११ ०१	१ १८	३ २३	५ ०८	६ ३९
१८	८ २	९ ३९	११ ३५	१ ४८	४ ०७	६ २४	८ ३९	१० ५७	१ १४	३ १९	५ ०४	६ ३५
१९	७ ५८	९ ३५	११ ३१	१ ४४	४ ०३	६ २०	८ ३५	१० ५३	१ १०	३ १५	५ ००	६ ३१
२०	७ ५४	९ ३१	११ २७	१ ४०	३ ५९	६ १६	८ ३१	१० ४९	१ ६	३ ११	४ ५६	६ २७
२१	७ ५०	९ २७	११ २३	१ ३६	३ ५५	६ १२	८ २७	१० ४५	१ २	३ ०७	४ ५२	६ २३
२२	७ ४६	९ २३	११ १९	१ ३२	३ ५१	६ ०८	८ २३	१० ४१	१२ ५८	३ ०३	४ ४८	६ १९
२३	७ ४२	९ १९	११ १५	१ २८	३ ४७	६ ०४	८ १९	१० ३७	१२ ५४	२ ५९	४ ४४	६ १५
२४	७ ३८	९ १५	११ ११	१ २४	३ ४३	६ ००	८ १५	१० ३३	१२ ५०	२ ५५	४ ४०	६ ११
२५	७ ३४	९ ११	११ ०७	१ २०	३ ३९	५ ५६	८ ११	१० २९	१२ ४६	२ ५१	४ ३६	६ ०७
२६	७ ३०	९ ०७	११ ०३	१ १६	३ ३५	५ ५२	८ ०७	१० २५	१२ ४२	२ ४७	४ ३२	६ ०३
२७	७ २६	९ ०३	१० ५९	१ १२	३ ३१	५ ४८	८ ०३	१० २१	१२ ३८	२ ४३	४ २८	५ ५९
२८	७ २२	८ ५९	१० ५५	१ ०८	३ २७	५ ४४	७ ५९	१० १७	१२ ३४	२ ३९	४ २४	५ ५५
२९	७ १८	८ ५५	१० ५१	१ ०४	३ २३	५ ४०	७ ५५	१० १३	१२ ३०	२ ३५	४ २०	५ ५१
३०	७ १४	८ ५१	१० ४७	१ ००	३ १९	५ ३६	७ ५१	१० ०९	१२ २६	२ ३१	४ १६	५ ४७

अक्टूबरमासे दैनिकलग्नप्रवेशसारिणी [स्टे. टाइम घंटा मिनट]

ता.	मेष सायं	वृषभ रात्रि	मिथुन रात्रि	कर्क रात्रि	सिंह रात्रि	कन्या रात्रि	तुला प्रातः	वृश्चिक दिवा	धनु दिवा	मकर दिवा	कुम्भ दिवा	मीन दिवा
१	७ ११	८ ४८	१० ४४	१२ ५७	३ १६	५ ३३	७ ४८	१० ०६	१२ २३	२ २८	४ १३	५ ४४
२	७ ७	८ ४४	१० ४०	१२ ५३	३ १२	५ २९	७ ४४	१० ०२	१२ १९	२ २४	४ ०९	५ ४०
३	७ ३	८ ४०	१० ३६	१२ ४९	३ ०८	५ २५	७ ४०	९ ५८	१२ १५	२ २०	४ ०५	५ ३६
४	६ ५९	८ ३६	१० ३२	१२ ४५	३ ०४	५ २१	७ ३६	९ ५४	१२ ११	२ १६	४ ०१	५ ३२
५	६ ५५	८ ३२	१० २८	१२ ४१	३ ००	५ १७	७ ३२	९ ५०	१२ ०७	२ १२	३ ५७	५ २८
६	६ ५१	८ २८	१० २४	१२ ३७	२ ५६	५ १३	७ २८	९ ४६	१२ ०३	२ ०८	३ ५३	५ २४
७	६ ४७	८ २४	१० २०	१२ ३३	२ ५२	५ ०९	७ २४	९ ४२	११ ५९	२ ०४	३ ४९	५ २०
८	६ ४३	८ २०	१० १६	१२ २९	२ ४८	५ ०५	७ २०	९ ३८	११ ५५	२ ००	३ ४५	५ १६
९	६ ३९	८ १६	१० १२	१२ २५	२ ४४	५ ०१	७ १६	९ ३४	११ ५१	१ ५६	३ ४१	५ १२
१०	६ ३५	८ १२	१० ०८	१२ २१	२ ४०	४ ५७	७ १२	९ ३०	११ ४७	१ ५२	३ ३७	५ ०८
११	६ ३१	८ ०८	१० ०४	१२ १७	२ ३६	४ ५३	७ ०८	९ २६	११ ४३	१ ४८	३ ३३	५ ०४
१२	६ २७	८ ०४	१० ००	१२ १३	२ ३२	४ ४९	७ ०४	९ २२	११ ३९	१ ४४	३ २९	५ ००
१३	६ २३	८ ००	९ ५६	१२ ९	२ २८	४ ४५	७ ००	९ १८	११ ३५	१ ४०	३ २५	४ ५६
१४	६ १९	७ ५६	९ ५२	१२ ५	२ २४	४ ४१	६ ५६	९ १४	११ ३१	१ ३६	३ २१	४ ५२
१५	६ १५	७ ५२	९ ४८	१२ १	२ २०	४ ३७	६ ५२	९ १०	११ २७	१ ३२	३ १७	४ ४८
१६	६ ११	७ ४८	९ ४४	११ ५७	२ १६	४ ३३	६ ४८	९ ०६	११ २३	१ २८	३ १३	४ ४४
१७	६ ७	७ ४४	९ ४०	११ ५३	२ १२	४ २९	६ ४४	९ ०२	११ १९	१ २४	३ ०९	४ ४०
१८	६ ३	७ ४०	९ ३६	११ ४९	२ ०८	४ २५	६ ४०	८ ५८	११ १५	१ २०	३ ०५	४ ३६
१९	५ ५९	७ ३६	९ ३२	११ ४५	२ ०४	४ २१	६ ३६	८ ५४	११ ११	१ १६	३ ०१	४ ३२
२०	५ ५५	७ ३२	९ २८	११ ४१	२ ००	४ १७	६ ३२	८ ५०	११ ०७	१ १२	२ ५७	४ २८
२१	५ ५१	७ २८	९ २४	११ ३७	१ ५६	४ १३	६ २८	८ ४६	११ ०३	१ ८	२ ५३	४ २४
२२	५ ४७	७ २४	९ २०	११ ३३	१ ५२	४ ०९	६ २४	८ ४२	१० ५९	१ ४	२ ४९	४ २०
२३	५ ४३	७ २०	९ १६	११ २९	१ ४८	४ ०५	६ २०	८ ३८	१० ५५	१ ०	२ ४५	४ १६
२४	५ ३९	७ १६	९ १२	११ २५	१ ४४	४ ०१	६ १६	८ ३४	१० ५१	१२ ५६	२ ४१	४ १२
२५	५ ३५	७ १२	९ ०८	११ २१	१ ४०	३ ५७	६ १२	८ ३०	१० ४७	१२ ५२	२ ३७	४ ०८
२६	५ ३१	७ ०८	९ ०४	११ १७	१ ३६	३ ५३	६ ०८	८ २६	१० ४३	१२ ४८	२ ३३	४ ०४
२७	५ २७	७ ०४	९ ००	११ १३	१ ३२	३ ४९	६ ०४	८ २२	१० ३९	१२ ४४	२ २९	४ ००
२८	५ २३	७ ००	८ ५६	११ ९	१ २८	३ ४५	६ ००	८ १८	१० ३५	१२ ४०	२ २५	३ ५६
२९	५ १९	६ ५६	८ ५२	११ ५	१ २४	३ ४१	५ ५६	८ १४	१० ३१	१२ ३६	२ २१	३ ५२
३०	५ १६	६ ५३	८ ४९	११ २	१ २१	३ ३८	५ ५३	८ ११	१० २८	१२ ३३	२ १८	३ ४९
३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३ ३४	५ ४९	८ ०७	१० २४	१२ २९	२ १४	३ ४५

नवम्बरमासे दैनिकलग्नप्रवेशसारिणी [स्टे. टाइम घंटा मिनट]

ता.	मेष दिवा	वृषभ सायं	मिथुन रात्रि	कर्क रात्रि	सिंह रात्रि	कन्या रात्रि	तुला रात्रि	वृश्चिक प्रातः	धनु दिवा	मकर दिवा	कुम्भ दिवा	मीन दिवा
१	५ ८	६ ४५	८ ४१	१० ५४	१ १३	३ ३०	५ ४५	८ ०३	१० २०	१२ २५	२ १०	३ ४१
२	५ ४	६ ४१	८ ३७	१० ५०	१ ०९	३ २६	५ ४१	७ ५९	१० १६	१२ २१	२ ६	३ ३७
३	५ ०	६ ३७	८ ३३	१० ४६	१ ०५	३ २२	५ ३७	७ ५५	१० १२	१२ १७	२ २	३ ३३
४	४ ५६	६ ३३	८ २९	१० ४२	१ ००	३ १८	५ ३३	७ ५१	१० ०८	१२ १३	१ ५८	३ २९
५	४ ५२	६ २९	८ २५	१० ३८	१२ ५७	३ १४	५ २९	७ ४७	१० ०४	१२ ०९	१ ५४	३ २५
६	४ ४८	६ २५	८ २१	१० ३४	१२ ५३	३ १०	५ २५	७ ४३	१० ००	१२ ०५	१ ५०	३ २१
७	४ ४४	६ २१	८ १७	१० ३०	१२ ४९	३ ०६	५ २१	७ ३९	९ ५६	१२ ०१	१ ४६	३ १७
८	४ ४०	६ १७	८ १३	१० २६	१२ ४५	३ ०२	५ १७	७ ३५	९ ५२	११ ५७	१ ४२	३ १३
९	४ ३६	६ १३	८ ०९	१० २२	१२ ४१	२ ५८	५ १३	७ ३१	९ ४८	११ ५३	१ ३८	३ ०९
१०	४ ३२	६ ०९	८ ०५	१० १८	१२ ३७	२ ५४	५ ०९	७ २७	९ ४४	११ ४९	१ ३४	३ ०५
११	४ २८	६ ०५	८ ०१	१० १४	१२ ३३	२ ५०	५ ०५	७ २३	९ ४०	११ ४५	१ ३०	३ ०१
१२	४ २४	६ ०१	७ ५७	१० १०	१२ २९	२ ४६	५ ०१	७ १९	९ ३६	११ ४१	१ २६	२ ५७
१३	४ २०	५ ५७	७ ५३	१० ०६	१२ २५	२ ४२	४ ५७	७ १५	९ ३२	११ ३७	१ २२	२ ५३
१४	४ १७	५ ५४	७ ५०	१० ०३	१२ २२	२ ३९	४ ५४	७ १२	९ २९	११ ३४	१ १९	२ ५०
१५	४ १३	५ ५०	७ ४६	९ ५९	१२ १८	२ ३५	४ ५०	७ ०८	९ २५	११ ३०	१ १५	२ ४६
१६	४ ९	५ ४६	७ ४२	९ ५५	१२ १४	२ ३१	४ ४६	७ ०४	९ २१	११ २६	१ ११	२ ४२
१७	४ ५	५ ४२	७ ३८	९ ५१	१२ १०	२ २७	४ ४२	७ ००	९ १७	११ २२	१ ०७	२ ३८
१८	४ १	५ ३८	७ ३४	९ ४७	१२ ०६	२ २३	४ ३८	६ ५६	९ १३	११ १८	१ ०३	२ ३४
१९	३ ५७	५ ३४	७ ३०	९ ४३	१२ ०२	२ १९	४ ३४	६ ५२	९ ०९	११ १४	१२ ५९	२ ३०
२०	३ ५३	५ ३०	७ २६	९ ३९	११ ५८	२ १५	४ ३०	६ ४८	९ ०५	११ १०	१२ ५५	२ २६
२१	३ ४९	५ २६	७ २२	९ ३५	११ ५४	२ ११	४ २६	६ ४४	९ ०१	११ ०६	१२ ५१	२ २२
२२	३ ४५	५ २२	७ १८	९ ३१	११ ५०	२ ०७	४ २२	६ ४०	८ ५७	११ ०२	१२ ४७	२ १८
२३	३ ४१	५ १८	७ १४	९ २७	११ ४६	२ ०३	४ १८	६ ३६	८ ५३	१० ५८	१२ ४३	२ १४
२४	३ ३७	५ १४	७ १०	९ २३	११ ४२	१ ५९	४ १४	६ ३२	८ ४९	१० ५४	१२ ३९	२ १०
२५	३ ३३	५ १०	७ ०६	९ १९	११ ३८	१ ५५	४ १०	६ २८	८ ४५	१० ५०	१२ ३५	२ ०६
२६	३ २८	५ ०६	७ ०२	९ १५	११ ३४	१ ५१	४ ०६	६ २४	८ ४१	१० ४६	१२ ३१	२ ०२
२७	३ २५	५ ०२	६ ५८	९ ११	११ ३०	१ ४७	४ ०२	६ २०	८ ३७	१० ४२	१२ २७	१ ५८
२८	३ २१	४ ५८	६ ५४	९ ०७	११ २६	१ ४३	३ ५८	६ १६	८ ३३	१० ३८	१२ २३	१ ५४
२९	३ १७	४ ५४	६ ५०	९ ०३	११ २२	१ ३९	३ ५४	६ १२	८ २९	१० ३४	१२ १९	१ ५०
३०	३ १३	४ ५०	६ ४६	८ ५९	११ १८	१ ३५	३ ५०	६ ८	८ २५	१० ३०	१२ १५	१ ४६

दिसम्बरमासे दैनिकलग्नप्रवेशसारिणी [स्टे. टाइम घंटा मिनट]

ता.	मेष दिवा	वृषभ दिवा	मिथुन सायं	कर्क रात्रि	सिंह रात्रि	कन्या रात्रि	तुला रात्रि	वृश्चिक रात्रि	धनु प्रातः	मकर दिवा	कुम्भ दिवा	मीन दिवा
१	३ १०	४ ४७	६ ४३	८ ५६	११ १५	१ ३२	३ ४७	६ ०५	८ २२	१० २७	१२ १२	१ ४३
२	३ ६	४ ४३	६ ३९	८ ५२	११ ११	१ २८	३ ४३	६ ०१	८ १८	१० २३	१२ ८	१ ३९
३	३ २	४ ३९	६ ३५	८ ४८	११ ७	१ २४	३ ३९	५ ५७	८ १४	१० १९	१२ ४	१ ३५
४	२ ५८	४ ३५	६ ३१	८ ४४	११ ३	१ २०	३ ३५	५ ५३	८ १०	१० १५	१२ ०	१ ३१
५	२ ५४	४ ३१	६ २७	८ ४०	१० ५९	१ १६	३ ३१	५ ४९	८ ०६	१० ११	११ ५६	१ २७
६	२ ५०	४ २७	६ २३	८ ३६	१० ५५	१ १२	३ २७	५ ४५	८ ०२	१० ७	११ ५२	१ २३
७	२ ४६	४ २३	६ १९	८ ३२	१० ५१	१ ०८	३ २३	५ ४१	७ ५८	१० ३	११ ४८	१ १९
८	२ ४२	४ १९	६ १५	८ २८	१० ४७	१ ०४	३ १९	५ ३७	७ ५४	९ ५९	११ ४४	१ १५
९	२ ३८	४ १५	६ ११	८ २४	१० ४३	१ ००	३ १५	५ ३३	७ ५०	९ ५५	११ ४०	१ ११
१०	२ ३४	४ ११	६ ०७	८ २०	१० ३९	१२ ५६	३ ११	५ २९	७ ४६	९ ५१	११ ३६	१ ७
११	२ ३०	४ ०७	६ ०३	८ १६	१० ३५	१२ ५२	३ ७	५ २५	७ ४२	९ ४७	११ ३२	१ ३
१२	२ २६	४ ०३	५ ५९	८ १२	१० ३१	१२ ४८	३ ३	५ २१	७ ३८	९ ४३	११ २८	१२ ५९
१३	२ २२	३ ५९	५ ५५	८ ८	१० २७	१२ ४४	२ ५९	५ १७	७ ३४	९ ३९	११ २४	१२ ५५
१४	२ १८	३ ५५	५ ५१	८ ४	१० २३	१२ ४०	२ ५५	५ १३	७ ३०	९ ३५	११ २०	१२ ५१
१५	२ १४	३ ५१	५ ४७	८ ०	१० १९	१२ ३६	२ ५१	५ ०९	७ २६	९ ३१	११ १६	१२ ४७
१६	२ ११	३ ४८	५ ४४	७ ५७	१० १६	१२ ३३	२ ४८	५ ०६	७ २३	९ २८	११ १३	१२ ४४
१७	२ ७	३ ४४	५ ४०	७ ५३	१० १२	१२ २९	२ ४४	५ ०२	७ १९	९ २४	११ ०९	१२ ४०
१८	२ ३	३ ४०	५ ३६	७ ४९	१० ०८	१२ २५	२ ४०	४ ५८	७ १५	९ २०	११ ०५	१२ ३६
१९	१ ५९	३ ३६	५ ३२	७ ४५	१० ०४	१२ २१	२ ३६	४ ५४	७ ११	९ १६	११ ०१	१२ ३२
२०	१ ५५	३ ३२	५ २८	७ ४१	१० ००	१२ १७	२ ३२	४ ५०	७ ०७	९ १२	१० ५७	१२ २८
२१	१ ५१	३ २८	५ २४	७ ३७	९ ५६	१२ १३	२ २८	४ ४६	७ ०३	९ ०८	१० ५३	१२ २४
२२	१ ४७	३ २४	५ २०	७ ३३	९ ५२	१२ ०९	२ २४	४ ४२	६ ५९	९ ०४	१० ४९	१२ २०
२३	१ ४३	३ २०	५ १६	७ २९	९ ४८	१२ ०५	२ २०	४ ३८	६ ५५	९ ००	१० ४५	१२ १६
२४	१ ३९	३ १६	५ १२	७ २५	९ ४४	१२ ०१	२ १६	४ ३४	६ ५१	८ ५६	१० ४१	१२ १२
२५	१ ३५	३ १२	५ ०८	७ २१	९ ४०	११ ५७	२ १२	४ ३०	६ ४७	८ ५२	१० ३७	१२ ०८
२६	१ ३१	३ ०८	५ ०४	७ १७	९ ३६	११ ५३	२ ८	४ २६	६ ४३	८ ४८	१० ३३	१२ ०४
२७	१ २७	३ ०४	५ ००	७ १३	९ ३२	११ ४९	२ ४	४ २२	६ ३९	८ ४४	१० २९	१२ ००
२८	१ २३	३ ००	४ ५६	७ ९	९ २८	११ ४५	२ ०	४ १८	६ ३५	८ ४०	१० २५	११ ५६
२९	१ १९	२ ५६	४ ५२	७ ५	९ २४	११ ४१	१ ५६	४ १४	६ ३१	८ ३६	१० २१	११ ५२
३०	१ १५	२ ५२	४ ४८	७ १	९ २०	११ ३७	१ ५२	४ १०	६ २७	८ ३२	१० १७	११ ४८
३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११ ३४	१ ४९	४ ०७	६ २४	८ २९	१० १४	११ ४५

ता री ख	जनवरी दक्षिण		फरवरी दक्षिण		मार्च दक्षिण		अप्रेल उत्तर		मई उत्तर		जून उत्तर		जुलाई उत्तर		अगस्त उत्तर		सितम्बर उत्तर		अक्टूबर दक्षिण		नवम्बर दक्षिण		दिसम्बर दक्षिण	
	अं.	क.	अं.	क.	अं	क.	अं.	क	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१	२३	४	१७	१८	७	५२	४	१४	१४	५६	२१	५९	२३	९	१८	९	८	२८	२	५९	१४	१६	२१	४३
२	२२	५९	१७	१	७	२९	४	३८	१५	१४	२२	७	२३	५	१७	५४	८	७	३	२२	१४	३५	२१	५२
३	२२	५४	१६	४४	७	६	५	१	१५	३२	२२	१५	२३	१	१७	३९	७	४५	३	४६	१४	५४	२२	१
४	२२	४८	१६	२७	६	४३	५	२५	१५	४९	२२	२२	२२	५६	१७	२३	७	२३	४	९	१५	१३	२२	१०
५	२२	४२	१६	९	६	२०	५	४९	१६	७	२२	२९	२२	५१	१७	७	७	१	४	३२	१५	३२	२२	१८
६	२२	३५	१५	५१	५	५७	६	१२	१६	२४	२२	३६	२२	४५	१६	५१	६	३९	४	५५	१५	५०	२२	२६
७	२२	२८	१५	३२	५	३५	६	३५	१६	४१	२२	४२	२२	३९	१६	३५	६	१६	५	१८	१६	८	२२	३३
८	२२	२१	१५	१३	५	१२	६	५८	१६	५७	२२	४८	२२	३३	१६	१८	५	५४	५	४१	१६	२६	२२	४०
९	२२	१३	१४	५४	४	४९	७	२१	१७	१३	२२	५३	२२	२६	१६	१	५	३१	६	४	१६	४४	२२	४६
१०	२२	५	१४	३५	४	२६	७	४३	१७	२९	२२	५८	२२	१९	१५	४३	५	९	६	२७	१७	१	२२	५२
११	२१	५६	१४	१५	४	३	८	६	१७	४५	२३	३	२२	११	१५	२६	४	४६	६	५०	१७	१८	२२	५८
१२	२१	४७	१३	५६	३	४०	८	२९	१८	१	२३	७	२२	३	१५	८	४	२४	७	१२	१७	३४	२३	३
१३	२१	३७	१३	३६	३	१७	८	५१	१८	१६	२३	११	२१	५५	१४	५०	४	१	७	३५	१७	५०	२३	८
१४	२१	२७	१३	१६	२	५४	९	१४	१८	३०	२३	१४	२१	४६	१४	३२	३	३८	७	५७	१८	६	२३	१२
१५	२१	१६	१२	५६	२	३१	९	३६	१८	४४	२३	१७	२१	३७	१४	१३	३	१५	८	२०	१८	२२	२३	१५
१६	२१	५	१२	३५	२	७	९	५७	१८	५८	२३	२०	२१	२८	१३	५४	२	५२	८	४२	१८	३७	२३	१८
१७	२०	५४	१२	१४	१	४४	१०	१८	१९	१२	२३	२२	२१	१८	१३	३५	२	२९	९	४	१८	५२	२३	२१
१८	२०	४२	११	५३	१	२१	१०	३९	१९	२६	२३	२४	२१	८	१३	१६	२	६	९	२५	१९	७	२३	२३
१९	२०	३०	११	३२	०	५७	११	०	१९	३९	२३	२५	२०	५८	१२	५७	१	४२	९	४७	१९	२१	२३	२४
२०	२०	१८	११	११	०	३४	११	२१	१९	५२	२३	२६	२०	४७	१२	३७	१	१९	१०	९	१९	३५	२३	२५
२१	२०	५	१०	४९	*०	१०	११	४१	२०	४	२३	२७	२०	३६	१२	१८	०	५६	१०	३०	१९	४८	२३	२६
२२	१९	५२	१०	२८	उ०	१४	१२	२	२०	१७	२३	२७	२०	२४	११	५८	०	३२	१०	५२	२०	१	२३	२७
२३	१९	३८	१०	६	*०	३८	१२	२२	२०	२९	२३	२७	२०	१२	११	३८	▲०	९	११	१३	२०	१४	२३	२७
२४	१९	२४	९	४४	१	२	१२	४२	२०	४०	२३	२६	२०	०	११	१८	द०	१५	११	३५	२०	२७	२३	२६
२५	१९	९	९	२२	१	२६	१३	२	२०	५१	२३	२५	१९	४७	१०	५७	▼०	३९	११	५६	२०	३९	२३	२५
२६	१८	५४	९	०	१	५०	१३	२१	२१	२	२३	२३	१९	३४	१०	३६	१	२	१२	१७	२०	५१	२३	२३
२७	१८	३९	८	३८	२	१४	१३	४१	२१	१२	२३	२१	१९	२०	१०	१५	१	२६	१२	३८	२१	२	२३	२१
२८	१८	२३	८	१६	२	३८	१४	०	२१	२२	२३	१९	१९	६	९	५४	१	४९	१२	५८	२१	१३	२३	१९
२९	१८	७	८	४	३	२	१४	१९	२१	३२	२३	१६	१८	५२	९	३३	२	१२	१३	१८	२१	२४	२३	१६
३०	१७	५१	०	०	३	२६	१४	३७	२१	४१	२३	१३	१८	३८	९	१२	२	३६	१३	३८	२१	३४	२३	१३
३१	१७	३५	०	०	३	५०	०	०	२१	५०	०	०	१८	२४	८	०५	०	०	१३	५७	०	०	२३	९

सुगम सूर्यक्रान्ति सारिणी

प्रत्येक अंग्रेजी मास तारीख अनुसार सारिणी की स्पष्टता की गई है। प्रति मासों के नीचे रवि क्रान्ति दक्षिण या उत्तर का उल्लेख है, तथा अंश कला संकेत भी दिये गये हैं। **२२ मार्च से उत्तर क्रान्ति** प्रारम्भ एवं **२४ सितम्बर से दक्षिण क्रान्ति** का निर्देश भी है।

देशांतर संस्कार एवं पंचांग विभेद विधि

जोधपुर से अन्यत्र नगरों का देशान्तर जानने हेतु सुगम विधि यह है कि **जोधपुर के रेखांश ७३-४** में से अपने इष्ट स्थान के **रेखांश** घटा देवें, शेष अंश-कला संख्या के प्राप्त होंगे। इस शेष में ४ से गुणा करें, जो गुणनफल आवेगा वह '**देशान्तर संस्कार**" मिनिट सेकंड में आवेगा। इसके घटि पल बना लेवें। इस हेतु नियम २॥ गुणा करने से पलात्मक "**देशान्तर**" प्राप्त होगा। इसे जोधपुर से **पूर्व देशों में धन** तथा **पश्चिम देशों में ऋण** करें एव मध्यम इष्ट नगरीय पंचांग बन जावेगा। यथा देहली रेखांश ७७।१२ जोधपुर रेखांश ७३।४ के अन्तर से शेष ४ अंश ८ कला आया इसमें ४ से गुणित फल १६।३२ आया इसे २॥ से गुणन करने पर ४०।८० आया विपल में ६० से संशोधन करने पर ४२ पल "**देशान्तर**" फलाशय आया।

चरान्तर संस्कार मध्यम इष्ट नगरीय पंचांग में चर संस्कार करने से स्पष्ट पंचांग इष्टनगरीय बनता है। यथा-इष्ट दिन तारीख की "**सूर्य क्रान्ति**" **क्रान्तिसारिणी** से लेवें, तथा इष्ट नगर के **अक्षांश** लेवें, इनका परस्पर गुणन करें, गुणनफल में ५ का भाग देने से "**चरपल**" प्राप्त होंगे। सूर्य क्रांति **उत्तर** हो तो तिथ्यादि में जोड़ें तथा **दक्षिण** हो तो घटावें।

इष्टनगरीय दिनमान चरपल को २ से गुणा करें, सूर्य **उत्तर गोल** में हो तो ३० घटी में जोड़ें तथा **दक्षिण गोल** में हो तो ३० घटी में घटावें एवं उस दिन का इष्ट नगर का दिनमान होगा। 卐 **विशेष ज्ञानार्थ कुण्डली विज्ञान १५) का मंगा लेवें। पंचांगकर्ता, नीमच (म.प्र.)**

सप्तवार कार्याऽकार्य विवेचना

१. **रविवार**– संगीत वाद्यादि शिक्षा, स्वास्थ्य विचार औषध-सेवन, मोटर, यान, सवारी, नौकरी, पशु खरीदी, हवन मंत्र, उपदेश, शिक्षा, दीक्षा, अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र धातु की खरीद, व बेचान, वाद-विवाद, न्याय विषयक सलाह कार्य, नवीन कार्य पद ग्रहण शुभ।

२. **सोमवार**– कृषि खेती यंत्र खरीदी, बीज बोना, बगीचा, फल, वृक्ष लगाना, वस्त्र तथा रत्न धारण, औषध क्रय-विक्रय, भ्रमण-यात्रा, कला-कार्य, स्त्री-प्रसंग, नवीन कार्य, अलंकार धारण पशु पालन, वस्त्र भूषण क्रय-विक्रय हेतु शुभ।

३. **मंगलवार**– जासूसी कार्य, भेद लेना, ऋण देना, गवाही, चोरी, विष कार्य, असद् कार्य, अग्नि विषयक कार्य, सेना-संग्राम युद्ध नीति-रीति, वाद-विवाद निर्णय, साहस कृत्य आदि कार्य शुभ, पर मंगल को ऋण लेना अशुभ है।

४. **बुधवार**– ऋण देना अहितकर तथा शिक्षा-दीक्षा विषयक कार्य, विद्यारम्भ, अध्ययन, चातुर्यकार्य, सेवावृत्ति, बही-खाता, हिसाब विचार, शिल्प कार्य, निर्माण कार्य, नोटिस देना, गृह प्रवेश, राजनीति विचार, शालागमन शुभ है।

५. **गुरुवार**– ज्ञान विज्ञान की शिक्षा, धर्म न्याय विषयक कार्य, अनुष्ठान, साइंस, कानूनी व कला संकाय शिक्षा आरम्भ, ग्रह शान्ति, मांगलिक कार्य, नवीन पद ग्रहण, वस्त्र आभूषण धारण, यात्रा, ट्रक-ट्रेक्टर, इंजन, मोटर, यान, चालन, औषध सेवन व निर्माण शुभ साथ ही शपथग्रहण शुभद।

६. **शुक्रवार**– सांसर्गिक काम, गुप्त विचार गोष्ठी, प्रेम-व्यवहार, मित्रता, वस्त्र, मणिरत्न धारण तथा निर्माण, अर्क, इत्र, नाटक, छाया-चित्र, फिल्म, संगीत आदि कार्य शुभ। भंडार भरना, खेती करना, हल प्रवाह, धान्यरोपण, आयु, ज्ञान, शिक्षा, शुभ।

७. **शनिवार**– गृह प्रवेश व निर्माण, नौकर-चाकर रखना, धातु लोह, मशीनरी, कलपुर्जों के कार्य, गवाही, व्यापार विचार, वादविवादादि दुष्टकार्य, वाहन खरीदना, सेवा विषयक कार्य करना शुभ। परन्तु बीज बोना, कृषि खेती कार्य शुभ नहीं।

संकेत– इन सभी विचारों के अलावा 'समयशुद्धि' तथा अपनी जन्मराशि अनुसार ग्रह पथ चलन कलन भी विचारें।

नक्षत्रसंज्ञा फलविवेक

१. **ध्रुव स्थिर नक्षत्र**– तीनों उत्तरा, रोहिणी, तथा रविवार ध्रुव स्थिर संज्ञा के हैं। इनमें स्थिर कार्य, बीज बोना, गृहारम्भ, शान्तिकर्म, बाग बगीचा, वृक्षारोपण, गायन, वादन शिक्षा, मैत्री, संधिविचार, वस्त्राभूषण निर्माण व धारण करना शुभ, खेल-खिलाड़ी हेतु शुभद। मंत्री पदीय व अन्य शपथग्रहण, स्थान ग्रहण शुभ।

२. **चर चल नक्षत्र**– स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तथा सोमवार। इनमें मोटर, ट्रक, साईकल आदि विविध यानों का चलाना, यात्रा, क्रय-विक्रय, दूकान खोलना, चित्रकारी, विद्या ज्ञान शुभ।

३. **उग्र क्रूर नक्षत्र**– तीनों पूर्वा, भरणी, मघा तथा मंगलवार इनमें दुष्ट कार्य, तस्करी धन्धा, विष व शस्त्रकर्म शुद्ध हैं।

४. **मिश्र+साधारण नक्षत्र**– विशा, कृत्तिका, नक्षत्र तथा बुधवार, इनमें मांगलिक कार्य, व्यापार, उद्योग शुभ तथा उग्र नक्षत्र कार्य भी कर सकते हैं।

५. **क्षिप्रलघु नक्षत्र**– हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभि. तथा गुरुवार इनमें 'चर+चल' नक्षत्र में कहे कार्य शुभ।

६. **मृदु मैत्र नक्षत्र**– मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा तथा शुक्रवार इनमें "ध्रुव+स्थिर" नक्षत्र में कहे कार्य भी शुभ होते हैं।

७. **तीक्ष्ण दारुण नक्षत्र**– मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा तथा शनिवार इनमें "उग्र+क्रूर" नक्षत्र विचार में बताये गये कार्य शुभ होते हैं।

त्रयोदश कुयोगपरिहार– त्रयोदश योग जो कथित हैं, उनके स्थान, राशि, दिशा, दिक् भेद से परिहार वचन शास्त्रों में वर्णित है उन्हें भी विचार लेना उचित है। क्योंकि मुहूर्त्त वेला शोधन में परिहार शास्त्र वचनों पर ध्यान देना युक्तियुक्त है। 'मध्याह्नात् परतः शुभम्' वचन विशेष से भद्रा, व्यतिपात वैधृति, जन्म नक्षत्रादि विविध दोष दोपहर बाद न्यून होते हैं। परिहार में रवियोग→

तिथिवारनक्षत्रादिषु त्रयोदशयोगकोष्टकं

योग	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
चर.	पू. भा.	भर	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.	ज्येष्ठा.	अभि.	१
क्रकच.	१२ति.	११	१०	९	८	७	६	२
दग्ध.	१२ति.	११	५	३	६	८	९	३
मृत्युदा.	१ ६ ११	२ ७ १२	१ ६ ११	३ ८ १३	४ ९ १४	२ ७ १२	५ १० १५	४
सिद्धि	०	०	३ ८ १३	२ ७ १२	५ १० १५	१ ६ ११	४ ९ १४	५
उत्पात	विशा.	पू. षा.	धनि.	रेव.	रोहि.	पुष्य.	उ. फा	६
मृत्यु.	अनु.	उत्त. षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	अश्ले.	हस्त.	७
काण.	ज्ये.	अभि.	पू. भा.	भर.	आर्द्रा.	म.	चित्रा.	८
सिद्धि.	मूल.	श्रव	उ. भा	कृत्ति.	पुन.	पू. फा	स्वाति.	९
यमदंष्ट्र.	मघा. धनि.	मूल. विशा.	कृत्ति. रोहि.	पू. षा. पुन.	उत्तरा. अश्वि.	रोहि. अनु.	श्रव. शत.	१०
यमघ.	मघा.	विशा.	आर्द्रा.	मूल.	कृत्ति.	रोहि.	हस्त.	११
मूसल.	अभि.	पू. भा.	भर.	आर्द्रा.	मघा	चित्रा.	ज्येष्ठा.	१२
अ. सि.	हस्त.	मृग.	अश्वि.	अनु.	पुष्य.	रेव.	रोहि.	१३

रवियोग– सूर्य के नक्षत्र से इष्ट दिन नक्षत्र ४, ९, ६, १०, १३, २०वां हो तो ये रवियोग त्रयोदश कुयोगनाशक हैं।

नववर्षीय विक्रमाब्दशाके मध्ये ईस्वीमासदिनांकोपरिदिनदशा ज्ञानार्थं सुगमसारिणी

मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१३ अप्रेल से शु.द.उ.सू.द. दि. २० प्रवे	१४ मई से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे	३ अप्रलसे रा.द.उ.शु.द. दिन ७० पवे	२२ मार्च से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२१ अप्रैल से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२४ मार्च से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	१८ मार्च से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	१७ अप्रेल से बु.द.उ.रा.द. दिन ३६ प्रवे.	२२ मार्च से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२४ मार्च से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	२४ अप्रैल से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	३ अप्रेल से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.
४ मई से सू.द.उ.चं.द. दि. ५० प्रवे	४ जून से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	१५ जून से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	४ मई से रा.द.उ.सू.द. दिन ७० प्रवे.	४ जून से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	२२ मई से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२३ अप्रैल से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	२४ मई से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	१८ मई से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२१ अप्रैल से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२२ मई से भौ.द.उ.श.. दिन ५६ प्रवे.	२४ मई से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.
२५ जून से चं.द.उ.भौ.द. दि. २८ प्रवे.	२७ जौलाईसे चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	६ जौलाईसे सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	१६ जौलाई से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	१६ अगस्त से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	६ जौलाई से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	२४ जून से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२४ जौलाई से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२५ जून से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	१९ जून से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२० जौलाई से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२३ जून से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.
२५ जौलाईसे भौ.द.उ.बु.द. दि. ५६ प्रवे	२५ अगस्त से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२७ अगस्तसे चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	[illegible] अगस्त से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	६ सित से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	१७ सित. से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे	६ अगस्त से रा.द.उ.शु.द. दिन ४२ प्रवे.	६ सितम्बर से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	२५ अगस्त से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२६ जौलाई से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	२७ अगस्तसे श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	२१ अगस्त से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.
२१ सित से बु.द.उ.शु.द. दिन ३६ प्रवे.	२२ अक्टू. से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२५ सित. से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२७ सित. से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	२७ अक्टू. से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	७ अक्टूबर से सू.द.उ.च.द. दिन ५० प्रवे.	१७ अक्टू. से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	१६ नवंबर से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	७ अक्टू. से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	२५ सित. से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२५ अक्टू. से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२७ सित. से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.
२० अक्टू. से श.द.उ.गु.द. दि॰ ५८ प्रवे.	२६ नवम्बरसे श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	२० नवम्बरसे बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२५ अक्टू. से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२४ नवम्बर से. भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२६ नवम्ब. से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	६ नवम्बर से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	६ दिस. से सू.द.उ.च.द. दिन ५० प्रवे.	१५ दिस से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	६ नवम्बर से रा.द.उ.शु.द दिन ७० प्रवे.	६ दिसम्बर से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	२४ नवम्बर से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.
२५ दिस. से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२२ जनवरी से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२५ दिस. से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	१६ दिस. से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	१८ जनवरी से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२३ दिस. से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२५ दिस. से चं.द.उ.भौ.द. दिन. २८ प्रवे.	२४ जनव. से चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	४ जनवरी से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	१४ जून से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	१२ फरवरी से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.	४ जनवरी से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.
३ फरवरी से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे.	४ मार्च से रा.द.उ.शु.द. दिन ७० प्रवे	२० फरवरी से गु.द.उ.रा.द. दिन ४२ प्रवे.	२४ जन. से श.द.उ.गु.द. दिन २८ प्रवे.	२२ फरवरी से श.द.उ.गु.द. दिन ५८ प्रवे.	१७ फरवरी से बु.द.उ.श.द. दिन ३६ प्रवे.	२२ जन. से भौ.द.उ.बु.द. दिन. ५६ प्रवे.	२० फरवरी से भौ.द.उ.बु.द. दिन ५६ प्रवे.	२२ फरवरीसे चं.द.उ.भौ.द. दिन २८ प्रवे.	२ फरवरी से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	४ मार्च से सू.द.उ.चं.द. दिन ५० प्रवे.	१४ मार्च से शु.द.उ.सू.द. दिन २० प्रवे.

ऋण धन विचार पुरुष की प्रचलित नाम राशि से जिस ग्राम नगर की राशि २।६।५।११।१० होवे वह शहर-ग्राम फलद होता है । यथा **शिवशंकर:** की राशि कुम्भ तथा **ग्राम हरिपुर** की राशि मिथुन तो कुम्भ से मिथुन तक ५ गणना से ग्रामवास शुभ । ◈ इसमें भी **ऋण धन-विचार** का फलाशय पृथक है । पुरुष अपने नाम के वर्ग को दुगना करें उसमें ग्राम का वर्ग जोड़कर ८ का भाग देवें, यह **पुरुष काकिणी** होगी । तथा ग्राम के वर्ग को दुगुना करके उसमें पुरुष वर्ग जोड़कर ८ का भाग देने से उस **ग्राम की काकिणी** होगी । उदाहरण **कमलापति** पुरुष का विचार **परमानन्दपुर** में निवास का है । **निर्णयसागर पंचांग** के मुखपृष्ठ पर वर्ग वैर कोष्ठ देखा । कमलापति का वर्ग मार्जार संख्या २ और परमानन्दपुर का वर्ग मूषक संख्या ६ । **गणनाक्रम** (अ इ उ ए गरुड़ सर्प वैर) **कोष्ठ से क्रमशः** करें । पुरुष वर्ग मार्जार संख्या २ को २ गुणन से ४ इसमें ग्राम वर्ग मूषक संख्या ६ जोड़े. योगफल में ८ के भाग से २ भागावशेष **पुरुष काकिणी** । एवं ग्राम वर्ग ६×२=१२+पुरुष वर्ग संख्या २=१४ इसमें ८ का भाग से शेष ६ बचे यह **ग्राम काकिणी** बनी । यहां पुरुष वर्ग से ग्राम का वर्ग विशेष है सो पुरुष ऋणी तथा ग्राम धनी. अतः ग्राम फलद नहीं । जन्मज ग्रहों का संतुल भी योग्य है ।◈

श्री गोकुलनाथजीके वचनामृत याने गोरक्षनाथके आंकडे और प्रवास प्रयाणके मुहूर्त—

परदेश गमन करने के लिए गोरक्षनाथजीके मत मुजब नीचेके मुहूर्त लिखाए है, बांए तरफके पहले बाराकोठोंमे मासके नाम लिखे है तत्पश्चात फलश्रुति लिखी गई है और तदनंतर चार कोठोंमें चार प्रहरकी फलश्रुति अलग अलग लिखी है और आगेके चार कोष्टकोंमे दिशा और उनकी फलश्रुति दी है ! कोठोंमें बताएहुए अंकोका तृतीया और तेरस, चतुर्थी और चौदश,

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	अ.	का.	मा.	फलश्रुति.	प्रहर १	प्रहर. २	प्रहर. ३	प्रहर. ४	पुर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सुख, क्लेशका अभाव क्लेश नही होंगे.	अर्थसिद्धी	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भय	द्रव्य
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभय, पश्चात्ताप, जीवहानी.	महाभय	क्लेश	सुख	कुशल	शून्य	नाश	दरिद्र	चिंता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कार्यसिद्धी, अर्थलाभ.	अर्थलाभ	राजपद	सुख	विनाश	द्रव्य	दुःख	इष्टप्राप्ति	धनप्राप्ति
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश परंतु वस्तुलाभ होगा.	क्लेश	कल्याण	क्लेश	अहित	क्लेश	अहीत	धन	सुख
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु लाभ, संकटकी निवृत्ति मित्रलाभ कार्यसिद्धी.	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	धन	धन	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	चिंता, क्लेश, मित्र संकट उपजे, वियोग हो.	संकट	क्लेश	मित्र	अप्राप्ति	भय	लाभ	मृत्यु	धनलाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्रलाभ हो और साधन प्राप्ति हो.	चिलेश	अर्थप्राप्ति	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहोत खराब, लेना देना करना नहीं.	०	०	०	०	०	सुख	०	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	अर्थसिद्धी, भाग्योदय, आशा पूर्ण हो.	अर्थ	बहुभय	मित्र	सुख	सुख	लाभ	कार्यसिद्धी	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य होगा परंच दिवस बहोत लगेगे.	शीघ्रलाभ	संपूर्ण	मरण	मरण	क्लेश	कष्ट	धन	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश बहोत दिवस होंगे परंच नाश नहीं होगा.	मरण	अर्थ	कुशल	मृत्यु	लाभ	धननाश	०	मित्र
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	अर्थ सिद्धी, मित्रलाभ, भाग्योदय.	मरण	अर्थ	सुख	कुशल	०	सुख	मृत्यु	कष्ट

पंचमी और पौर्णिमा इनका फल एक है ! बदी चतुर्दशी तथा अमास्य वर्ज करना ! इस मुहूर्तपर गमन करनेवालों को. चंद्रका दोष विष्टी (भद्रा), भरणी, दिशाशूळ, योगिनी, काळ घातवार आदिका दोष लगता नहीं ! गोरखनाथने पुंछनेपर मत्स्येंद्र नाथने कहा ! यह एक सर्वोत्तम मुहूर्तराज है ! उदाहरणार्थ—फाल्गुन सुदी तथा बदी के मुहूर्तपर गमन करनेवालोंका कार्य सिद्ध हो जाय ! पहले प्रहरमें जानेसे अर्थ लाभ हो, दूसरे प्रहरमें राज्य सुख मिले, तिसरे मे सुख हो, चौथेमें विनाश हो जावे. ऐसाही दिशाओंका समजना, जो इस प्रमाण चले वो कुशल हो.

श्रीवल्लभसांप्रदायके वैष्णव इस मुहुर्तो को श्री गोकुलनाथजीके वचनामृत कहते है !

रोगीके मरणजीवनका विचार

उरगशतभिषार्द्रा स्वातिमूले त्रिपूर्वा भरणिरविजवारे भानुभौमार्कियुक्ताः। प्रथमदिन चतुर्थी द्वादशी षष्ठिभूता हरिहर विधिरक्षो रोगिणां मृत्युकालः ॥ १ ॥

ऽश्लेषा, शतभिषक्, आर्द्रा, स्वाती, पूर्वा ३ भरणी ये नक्षत्र शनि भौम रवी ये वार.४।१२।६।१४ये तिथि इनमें बीमार पुरुषकी ब्रह्मा विष्णु रुद्र रक्षा करे तबभी मृत्यु हो और इन तीनमें एकभी कम हो तो चिन्ता नहीं करना.

अथ कूपारंभमुहूर्त.

हस्तात्त्रिशोवासवंवारुणंचशे-वं पित्र्यं त्रीणि चैवोत्तराणि । प्राजापत्यंचापिनक्षत्रमाहुः कूपारंभेश्रेष्ठमाद्यामुनींद्राः।१ अर्थः—ह. चि. स्वा. श. ध. आ. स. उत्तरा ३ रोहिणी ये. कूपारंभमें शुभ होय.

अथावश्यवर्ज्यदिनानि.

परिघयोगआधा. शूलकी ५ घ. आद्यकी गंड अतिगं-डकी ६।६ घ. व्याघातकी ९ घ. विष्कंभ वज्रकी आद्यकी ३ घ.एते शुभकार्यमें अवश्य वर्जित है.

चौलच्यूडाकर्ममु० चक्रम्

नक्षत्राणि	पुन	प्य	ज्ये	मृ	श्र	ध	ह	चि	स्वा	रे अ
लग्न	२	६	९	१०	११	३	वार	सो सं	गुरु	भृगु बुध
वर्ज्यंनि त्यादि	४	९	१४	८ १२	३० ६	१५ १	वा	श	सं	रवि

कर्णवेधमु० चक्रम्.

नक्षत्र	रे अश्वि	पुष्य	पुन	अनु
श्र	धनि	चि	मू	हस्त
शुभ तिथि	१ २	३ ५	७ १०	११ १३
वार	सोम	गुरु	बुध	शुक्र

विविध ग्रहसंज्ञा विवेक

नवग्रहों का भाग्योदयकालांश– रवि का २२ से २४ वर्ष तक। चंद्र का २४ से २५ वर्ष तक। मगल का २८ से ३२ वर्ष तक। बुध का ३२ से ३६ वर्ष तक। गुरु का १६ से २२ वर्ष तक। शुक्र का २५ से २८ वर्ष तक। शनि का ३६ से ४२ वर्ष तक तथा राहु ४२ से ४८ वर्ष तक और केतु ४८ से ५४ वर्ष तक प्रारब्ध विकासक।

★ **ग्रहाणां धात्वादि–**
सूर्य–अस्थि, चन्द्र–रुधिर, भौम–मज्जा, बुध– चमड़ी, गुरु– चर्बी, शुक्र– वीर्य, शनि + राहु + केतु– नसों के अधिपति है। इनकी विषम नेष्ट स्थिति में इन धातुओं की कमी एवं रोग तथा शुभ सबल स्थिति में इन धातुओं का सौख्य।

★ **ग्रहाणां नैसर्गिक प्रतिफलं–**
सूर्य– पिता, आत्मा, प्रताप, आरोग्य, शक्ति, लक्ष्मी। चन्द्र– मन, बुद्धि, उत्तम सोसायटी, माता, धन का कारक। मंगल– पराक्रम, रोग, गुण, भाई, भूमि, जाति, शत्रु, शासक। बुध– विद्या, बंधु, विवेक, मामा, मित्र, बचन,। गुरु–बुद्धि, शरीर पुष्टि, पुत्र और ज्ञान का प्रदायक है। शुक्र– स्त्री सुख, वाहन, भूषण, काम, शृंगार, व्यापार, सुख। शनि– आयु, जीवन, मृत्यु, सुख दुःख कारक।

★ **ग्रहाणां मौलिकतत्त्व–**
रवि, मंगल– तेजतत्त्व। चन्द्र, शुक्र– जलतत्त्व। बुध– पृथ्वी तत्त्व। गुरु– आकाशतत्त्व। शनि– वायुतत्त्व। राहु– जल, वायुतत्त्व। केतु– आकाश तेजतत्त्व के गुणधर्म से योग- वाही है।

अथ द्वादश भाव फल विबोधक यंत्रम्

फलित अन्वेषण के समय किस भाव से क्या-क्या विचार होना चाहिये इस हेतु सुलभ कोष्ठ प्रस्तुत है। साथ ही ग्रह + राशि + कारक + नेष्ट ग्रहों के स्थान व नाम भी स्थापित किये गये हैं।

प्रथम भाव– शरीर, वर्ण, आकृति, बुद्धि लक्षण, यश-मान, गुणत्व, विवेकशक्ति, सुख-दुःख, प्रवास, तेज, जन जीवनीय विवेक, प्रारब्ध योग, जिजामा, मस्तिष्क, स्वभाव, प्रतिष्ठा, आयु, शरीर चिन्ह, व्रणादि, निद्रा, दादी, स्त्री का दादा। **सूर्यकारक** मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ बलवान राशि।

द्वितीय भाव– धन विवेक, दाहिना नेत्र, परिवार, कुटुम्ब सुख, स्वर विचार, गुणज्ञता, बचन, विद्या, भोजन, सौन्दर्य, यात्रा, सुवर्णरत्नादि कोष, लक्षाधिपति योग। **गुरुकारक** मंगल नेष्ट।

तृतीय भाव– बहन भाई, पराक्रम, साहस, हाथ, कान, महत्त्वाकांक्षा, नौकर, सुख दुःख, हस्ताक्षर, मित्रता, रहन सहन, वृत्ति, धैर्य, दत्तक, उद्योग, यश, अपयश, माता पिता मरण, खांसी, दमा, औषध ज्ञान। **मंगलकारक** पाप ग्रह बली।

चतुर्थ भाव– विद्या विचार, मातृ सुख दुःख, सुख, पशु पालन, कृषि कर्म, जमीन, जायदाद, नव-निर्माण, मनोवृत्ति, मानसिक सुख दुःख, गृह सुख, उपभोग, रहन-सहन, हृदय का साहस, जीवनीय उन्नति, कार्य प्रसाधन क्षमता, पूर्वार्जित विविध सुख, ऐश्वर्य, कीर्ति, वाहन सवारी योग। **चन्द्र + बुधकारक** बुध नेष्ट।

पंचम भाव– बुद्धि, सन्तान, विवेक, देव भक्ति, विद्या-योग, यांत्रिकविद्या, शास्त्रनिपुणता, सट्टा, लाटरी, राजनीति, प्रतिभा, वाक्पटुता, साहित्य योग, लेखन कुशलता, मंत्र यंत्र शक्ति, सन्तान सुख दुःख, गर्भ। **गुरुकारक** गुरु एक मात्र विफल।

षष्ठ भाव– रोग, शत्रु, व्यसन, चोट, घाव, सांसारिक रोग, मामा का पक्ष, नुकसानी, चोरी भय, हानि, स्वजन-विरोध, काका, मामा, कारागार, कमर, पैर, धोखा, मनस्ताप। **शनि + मंगलकारक** शुक्र नेष्ट।

सप्तम भाव– पत्नी का रूप रंग, गुण, स्वभाव, स्त्री-सुखादि, लाभ-हानि, व्यापार-व्यवसाय, सुरत काम-कला व्यभिचार, विवाह, न्यायालय विवेक, व्यापार, क्रिया + लाभ, मूत्राशयस्थान, अण्डकोष, साभेदारी, लिंग, योनि, भतीजा पक्ष, गुमा हुआ धन लाभ, मुकदमे, स्वतंत्र कार्य, अर्शरोग। **शुक्रकारक** शनि नेष्ट।

अष्टम भाव– रिश्वत, भूगत द्रव्य, लाटरी आदि से आकस्मिक धन लाभ, जलयात्रा, ससुराल से लाभ, चिन्ता, शत्रु, गुप्त रोग विकार, स्त्री लाभ, सर्प दंश, आयुष्य, आत्मघात, व्यसन, ऋणत्व, संकट, **शनिकारक**

नवम भाव– जल यात्रा, वायु यात्रा, धर्म, पाप, पुण्य आदि का विवेक। उदारता, दान, दैविक शक्ति, यंत्र, मंत्र साधना, पर्यटन, पौत्र सुख, शील संतोष, संपन्नता योग, भाग्य विकास, अधिकार मान। **सूर्य + गुरु-कारक**। त्रिकोण का सर्व क्षेत्रीय विचार।

दशम भाव– पिता का रूप रंग वृत्ति एवं पात्रता, गुण, स्वभाव, आयु, उत्कर्ष, मान-सम्मान, उच्चपद, राज-योग, सत्ता अधिकार, नौकरी, व्यापार धन्धा, पिता का सुख, कर्म सिद्धि, मान हानि, जन-जीवनीय स्तर, अनुशासन, पद लाभ। राजमान्यता, परीक्षोत्तीर्ण, वैभव उपजीविका। **मंगल योगद गुरु, सूर्य, बुध, शनि कारक।**

एकादश भाव– सम्पूर्ण धनागमन लाभ आदि का विचार, मित्र सुख, भाई जवांई, समाज में श्रेष्ठता, वाहन, सवारी का लाभ, सुख, प्रापर्टी योग, मगल कृत्य, मशीनरी कार्य, मेलमिलाप क्रिया कुशलता। आकस्मिक लाभ, आभूषण योग **गुरुकारक**।

द्वादश भाव– वाम नेत्र, दूर यात्रा का विचार, व्यसन, दुराचरण, कारावास, दण्ड, गुप्त शत्रु, अपव्यय, ऋण, अपघात, कलह, अच्छा-बुरा व्यय विचार, मुकदमा, शत्रुत्व, द्रव्य हानि, अपयश। **शनिकारक**।

ग्रह परिहार विवेक

★ **ग्रहों के दोष शामक ग्रह–** राहु का दोषनाशक बुध, राहु व बुध का दोषनाशक शनि और राहु बुध, शनि इन तीनों का दोषनाशक मंगल। राहु, बुध, शनि, मंगल इन चारों का नाशक शुक्र है। शु. रा. बु. श. म. शु. इन पाचों का दोषनाशक गुरु है। रा. मं. बु. गु. श. शु. इन ६ के दोष निवारण में चन्द्र तथा सभी ग्रहों का दोषनाश सूर्य के बलवान होने पर समझें।

★ **ग्रहाणां विफलत्वयोग–** सूर्य के साथ चन्द्र, लग्न से चतुर्थ बुध, पांचवे भाव में गुरु, दूसरे मंगल, छठे शुक्र, सातवे शनि हो तो विफल योग, अर्थात् मौलिक फल के नाशक हैं।

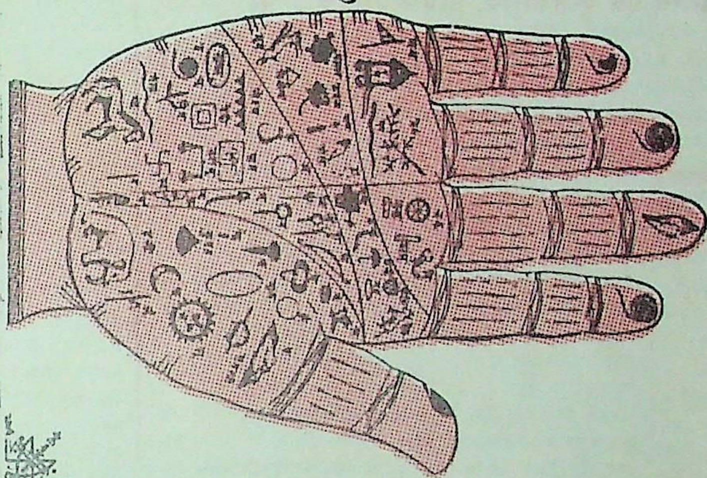
★ **ग्रहाणां फलकालः–** सूर्य + मंगल आदि में, शनि तथा चन्द्र मध्य में, गुरु तथा शुक्र अन्त्य में तथा बुध सर्वदा शुभाऽशुभ फल के प्रतिकारक हैं।

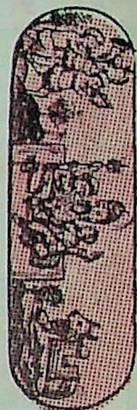
★ **ग्रहों के अस्तकालांश–**
(उपकरण–सूर्य + चन्द्रान्तरम्)
चन्द्र २, मंगल १७, बुध १३, गुरु ११, शुक्र ९, शनि १५ अंशान्तर कालांश से अस्तगत समझना चाहिये।

ग्रहाणां भोग राशि– सूर्य बुध शुक्र १ मास, मंगल १॥ मास, शनि २॥ वर्ष, गुरु १ वर्ष, राहु १॥ वर्ष १ राशि में मौलिक स्थूल नियम से गतिशील है।

शिवपार्वती संवादे सामुद्रिके हस्तरेखाशुभाशुभफलं लिख्यते.

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि हस्तरेखाविचारणम् ॥ दक्षिणे पुरुषं ज्ञेयं वामे वामकरं शुभम् ॥ १ ॥ शिवोक्तं तत्र सामुद्रं हस्तरेखाशुभाशुभम् ॥ यस्य विज्ञानमात्रेण पुरुषो नहि शोचति ॥ २ ॥ यस्य मीनसमा रेखा कर्मसिद्धिश्च जायते ॥ धनाढ्यस्तु स विज्ञेयो बहुपुत्रो न संशयः ॥ ३ ॥ तुला ग्रामं तथा वज्रं करमध्ये च दृश्यते ॥ तस्य वाणिज्यसिद्धिः स्यात्पुरुषस्य न संशयः ॥ ४ ॥ पद्मचापादि-खड्गं च अष्टकोणानि दृश्यते ॥ [illegible] पुरुषस्यापि धनवान्स सुखी नरः ॥ ५ ॥ त्रिशूलं करमध्ये तु तेन [illegible] प्रवर्तते । यज्ञे धर्मे च दाने च देवद्विजप्रपूजकः ॥ ६ ॥ शक्तितोमरबाणश्च करमध्ये च दृश्यते ॥ रथचक्रध्वजाकारः स च राज्यं लभेन्नरः ॥ ७ ॥ अंकुशं कुंडलं चक्रं यस्य पाणितले भवेत् ॥ तस्य राज्यं महाश्रेष्ठं सामुद्रवचनं यथा ॥ ८ ॥ गिरिकंकणयोनीनां नरमुंडघटादिकम् । करे वं यस्य चिह्नानि राजमन्त्री भवेन्नरः ॥ ९ ॥ रविचन्द्रलतानेत्रमष्टकोणत्रिकोणकम् ॥ मन्दिरस्य गजाश्वानां चिह्नं धनसुखी नरः ॥ १० ॥ अंगुष्ठोदरमध्यस्थो यवो यस्य विराजते ॥ [illegible] भोगी स्यात्स नरः सुखमेधते ॥ १० ॥ मध्यमातर्जनीमध्ये यवो यस्य प्रदृश्यते ॥ धनवान्सुखभोगी स्यात्स [illegible] ॥ १२ ॥ ॥ इति सामुद्रिकम् ॥





अथ [illegible] वर्जितकर्म ॥ [illegible] क्षौरं प्रभृत्य ततो विद्यामंदिरकर्णवेधनमहादानं गुरोः सेवनं । तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनं मंत्रोपदेशं शुभं दूरेणैव जिजीविषुः परिहरेदस्तं गुरोर्भार्गवम् ॥ १ ॥

अथ पंचकविचारः ॥ धनिष्ठाके उत्तरदल शततारका पूर्वा-उत्तर भाद्रपदा रेवती इन नक्षत्रोंमें दक्षिण गमन गृह छावणी माचा उणाना तृण काष्ठादि संग्रह करना नही ॥ २ ॥

अथ संमुखचंद्रादेशप्रति.

मेषे च सिंहे धनुपूर्वभागे वृषे च कन्या मकरे च याम्ये ॥ युग्मे तुलाकुंभमु पश्चिमयां कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्या ॥ १ ॥ फल-संमुखो त्वर्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपदे । पृष्ठतः प्राणनाशाय वामे चंद्र धनक्षयः ॥ २ ॥ अर्थ-मेष सिं. ध. पूर्वे वृष. कन्या म. दक्षिणे, मि.तु.कुं. पश्चिमे, कर्क. मीन. वृश्चिक उत्तरे.

अथ योगिनीचक्रम्.

ईशान. पूर्व. आग्ने

३०।८ ११९ ३।११

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी ॥ दक्षिणे धनहंत्री च सन्मुखे मरण-प्रदा ॥ १ ॥

अथ कालराहूचक्रम्.

ईशान पूर्व आग्ने

शनि शुक्र

अर्कोत्तरे वायुदिशां च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधनैर्ऋते च याम्ये गुरौ वह्निदिशां च शुक्रे मंदे च पूर्वे प्रवदंति कालः

अथ दिशाशूलचक्रम्.

पूर्व

चंद्र शनि

दिशाशूल लेजावो वामेराहू योगिनी पूठ ॥ सन्मुख लेव चन्द्रमा ल्यावे लक्ष्मी लूट ॥ १ ॥

अथ दत्तपुत्र तथा खोले लेणो.

हस्तादिपंच [illegible] वसुपुष्यभेषु सूर्यक्षमाजगुरुभार्गववासरेषु । रिक्ता विवर्जिततिथिष्वलिकुंभलग्ने सिंहे वृषे भवति दत्तपरिग्रहोऽप्ययेः ॥ १ ॥

ह. चि. स्वा. वि. ऽनु श्वि. ध. पु. र. मं. गु. शु. सिंह वृष लग्न शुभ और रिक्ता वृ. कुं. ऽशुभ.



निर्णयसागर पंचांग



कार्यालय एवं पुस्तकालय, नीमच (म. प्र.)

ज्योतिष गणितफलित, कर्मकाण्ड-पूजा, संस्कृत साहित्य, वैद्यक चिकित्सा तथा वेद पुराण, धार्मिक ग्रन्थ शुद्ध, स्वच्छ मुद्रित रामायण-महाभारत, सुखसागर, गीता आदि विविध तंत्र, मंत्र, यंत्र, देवी-देवता उपासना, साधना आदि के ग्रन्थ सभी सरल भाषा टीका हिन्दी अनुवाद के प्राप्त हैं। अच्छे प्रकाशन-प्रकाशकों के ग्रन्थ भेजने की व्यवस्था है। आर्डर पत्र के साथ ५) रु. पेशगी भेजना जरूरी है, पूरा पुस्तक मूल्य भेज देंगे तो डाकखर्च आधा ही लगेगा।

प्रारंभिक ज्योतिषग्रन्थ

- ज्योतिष चन्द्रिका ६)
- सरल ज्योतिष सार ६)
- पंचांग ज्ञान ज्यो. बोध ६)
- प्रारंभ ज्योतिष विज्ञान ८)
- ग्रहफल दर्पण ५)
- जातकालंकार फलितज्यो. ७)
- हनुमान प्रश्न ज्योतिष ४)
- मुहूर्त ज्योतिष प्रवेशिका २०)
- मुहूर्त ज्योतिष विज्ञान ५)
- स्त्रीजातक फल प्रकाश ४)
- ज्योतिष जगत फल ६)
- बृहद ज्योतिष सार १५)
- आप-आपकी राशि ६)

फलित बोध्य पुस्तकें

- मानसागरी फलादेश २६)
- जातकाभरण फलित १८)
- भृगुसंहिता ज्यो.विज्ञान ३२)
- बृहत्पाराशरहोराशास्त्र ४८)
- कर्मविपाकपूर्वजन्मफल १२)
- लग्नचन्द्रिकाबृहद १४)
- लग्नचन्द्रिका लघु आकार ८)
- द्वादश भावफल कुतुहल १४)
- ताजिक नीलकण्ठी १८)
- बृहज्जातकफलित २६)
- गृहरत्न वास्तु प्रबोध ८)
- मेघमाला वायु शकुन ३)
- वर्षप्रबोध वर्षाशास्त्र ६)
- संहिताखंड-वर्षावायुफल २५)
- बृहतसंहिता वायुशकुन ३०)
- सारावली फलित विशेष ३०)
- फलदीपिका भावीफल २२)
- चमत्कार चिंता.फलादेश ३५)
- ज्योतिषतत्वप्रकाश ३०)
- त्रिफला ज्योतिष ८)
- जातक मार्ग चन्द्रिका १०)
- जन्मनामनिर्णयकल्पलता ६)
- होरारत्न बृहद २भाग ५०)
- पाराशरी सिद्धांतफल ४०)
- सचित्र ज्योतिष शिक्षा– इसमें मूलज्ञानखंड, फलितखंड, गणित-खंड आदि ६ भाग हैं। पठन-मनन योग्य। मूल्य १२८)
- रमल दिवाकर २भाग २६)
- मुहूर्त पारिजात कल्प. २०)
- मुहूर्त चिंता पीयूषधारा ४०)
- मुहूर्त गणपति पूर्ण २०)
- मुहूर्त मार्तण्ड भा टी. ६)
- मुहूर्त चिंतामणि विशेष १४)
- मुहूर्त चिंतामणि लघु १०)
- शिवस्वरो.संहिताशास्त्र १०)
- शकुन स्वप्न ज्यो.विज्ञान ८)
- भाग्यआकृतिराशिफल ८)
- अंकविद्या ज्योतिषबोध ८)
- रत्नपरिचय नगविज्ञान १६)
- आकस्मिक धनलाभ२भाग ६)
- महादशाविज्ञान२भाग १०)
- ज्योतिष और रोग-मृत्यु १३)
- पंचवर्षीय भविष्य सूत्र ५)
- प्रश्न ज्योतिष विज्ञान ६)
- मूक प्रश्न विचार ८)
- प्रश्नफल दर्पण ८)
- प्रश्न भुवन दीपक ८)
- फलित सूत्र १०)
- व्यवसायका चुनाव ज्यो. १०)
- अनिष्टग्रह कारण ज्ञान १०)
- ग्रहपीडानिवारण सूत्र ८)
- द्वादश भावार्थ रत्नाकर १०)
- चुने हुए ज्योतिष योग ८)
- महिला ज्योतिष फल १०)
- गोचरग्रहफल विचार ८)
- दशाफल रहस्य १२)
- केरलीय ज्योतिष ८)
- चन्द्रकला नाड़ीफल १०)
- पाश्चात्य ज्योतिष ८)
- उत्तरकालामृतफलित २०)
- भारतीयज्योतिष बृहद– इसमें जन्मपत्र-वर्ष पत्र गणितफलित प्रश्नोत्तर तथा अन्य विविध विषयोंका संग्रह है ३४)
- द्वादशग्रहफलादेश भाषा– इससेआप अपने स्वयं की तथा सम्पूर्ण परिवार की जन्म ग्रह स्थिति का फल जान लेवें।
- ज्योतिष बोध सह मूल्य १४)
- ज्योतिष एवं व्यवसायज्ञान ५)
- हस्त भाग्यरेखा२भाग ७)
- हस्तरेखा महा विज्ञान २०)
- हस्त सामुद्रिक रहस्य १०)
- सचित्र हस्त सामुद्रिक १५)

यंत्र + मंत्र + तंत्र

- यंत्र शक्ति २ भाग १६)
- मंत्र शक्ति शास्त्र ८)
- तंत्र शक्ति शास्त्र १०)
- मंत्र,तंत्र,यंत्र फलसिद्धि १८)
- शावर,उड्डीश,दत्तात्रय मंत्र ये ३भाग हैं,रावणकृत विशेष ९)
- हनुमान गणेश सिद्धि १४)
- काली एवं दुर्गा सिद्धि १२)
- औंकारसिद्धि स्वर्ग द्वार ११
- रामायणबगलामुखीसिद्धि ११)
- गायत्री साधना हवनसह ९)
- गायत्री तंत्र एवं सिद्धि १२)
- बृहद स्तोत्र रत्नाकर ११)
- संकटनाशक स्तोत्र ५)
- योग महाविज्ञान १२)
- योग सिद्धि, स्त्री-पुरुष १२
- योगासन से रोगनिवारण६॥)
- सूर्यनमस्कारयोगएवंयौवन१०
- भक्ति तथा कर्मयोग १०।)
- महामृत्युंजय जप साधना ३)
- तंत्र महा साधना ११)
- मंत्रशक्तिसे रोगदु.खनाश१२)

कर्म-कांडपूजाशास्त्र

- यजुर्वेद संपूर्ण भाषाटीका११)
- सामवेद संपूर्ण भाषाटीका१०)
- ऋगवेद ४ खंड पूर्ण ४२)
- अथर्ववेद २ खंड पूर्ण २२)
- ज्ञानेश्वरी भगवद् गीता १४)
- भागवत सप्ता.कथाभाषा १८)
- श्रीमद्भागवत द्वादशस्कंधपूर्ण भाषाटीकादृष्टांतसह मू.२००)
- महाभारत लघु भाषा ११)
- महाभारत मध्यम ३०)
- महाभारत उत्तम ५०)
- शिवपुराण २ भाग २३)
- शिवपुराण भाषा संपूर्ण ५२)
- रुद्री अष्टा.भाषाटीका ६)
- रुद्री अष्टा. मू. विशेषतंत्र ८)
- सुखसागर संपूर्ण असली ६०)
- रामायण विशेष टीका ६०)
- रामायण मध्यम टीका ३०)
- मनुस्मृति भाषाटीका ११)
- चाणक्य-भर्तृहरि-नीति ८)
- दुर्गासप्तशति-शतचण्डी १०)
- सरल विवाह पद्धति ६)
- सरहस्य विवाह पद्धति ७)
- यज्ञोपवीत पद्धति ४)
- ग्रहशांति पद्धति ५)
- वसिष्ठ हवनप.पूजासह ५)
- सरलमूलशांति हवनपूजा ४)
- सर्वदेवप्रतिष्ठाविष्णुयाग १२)
- सर्वदेवप्रतिष्ठाहवनसह ५)
- अन्त्येष्टि कर्मविधान ५)
- द्वादशानारायणबलीकर्म ५)
- शवयात्रा पद्धति २)
- श्राद्ध-सर्पण पद्धति ५)
- गरुड़ पुराण भाषा टीका ८)
- एकादशी महात्म्य भा.टी. १०)
- कार्तिक महात्म्य भा.टी. ८)
- गृहप्रवेश वास्तु शांतिपद्धति ८)
- षोडश संस्कार विधी ९)
- बृहद कर्मकाण्ड प, सम्पूर्ण २०)
- नीवशिलान्यास पूजा ३)
- भारतीय व्रतोत्सव विज्ञान ७)
- सर्वव्रत त्यौहार विधी ७)
- नित्यकर्म प्रयोग संग्रह– प्रत्येक गृहस्थ्य को रखने योग्य नित्य के पाठ-स्तोत्र सचित्र संध्या सर्वदेव पूजा विधान नियम सहित मू.७)

विविध विषयक ग्रन्थ

- सुगम गृह चिकित्सा२भाग २०)
- आरोग्य-प्रकाश सर्वोत्तम ११)
- सरल प्राकृतिक चिकित्सा ५॥)
- स्त्री मार्गसुबोधिनी५वर्ग ३०)
- फल उपवास चिकित्सा ६)
- घरेलूचिकि.भोजनस्वास्थ्य ११)
- मधुमेह हृदयरोग चिकित्सा १०)
- ब्लडप्रेशर दर्द चिकित्सा ८)
- प्रदर स्वप्नदोष चिकित्सा ६)
- विटामिन केशगंज सुरक्षा ६॥)
- चर्मरोग दमा चिकित्सा ९)
- कायाकल्प गुप्तरोगचिकित्सा ११)
- सुंदर एवं धनवान कैसेबनें९)
- कदकैसे बढ़े भोजनस्वास्थ्य ९)
- शक्तिसम्राट चिंता कैसे दूर ९)
- पति-पत्नी कैसे रहें ११॥)
- सरल अंग्रेजी शिक्षक १०)
- सरल संस्कृत शिक्षक १०)

पता– निर्णयसागर पुस्तकालय, मुकाम-पोस्ट, नीमच (मध्यप्रदेश)

भारत में सर्वाधिक प्रामाणिक बिक्री वाले इस पंचांग को लेते समय "निर्णयसागर पंचांग कार्यालय, नीमच" नाम अवश्य देखें

पंचांग कार्यालय, नीमच छावनी













यह जोधपुर का "चण्डमार्त्तण्ड" विशुद्धपंचांग नीमचनगरस्थ सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विद् पंडित श्री भवानीशंकर रविशंकर जोशी ने सूक्ष्म ब्रम्हतुल्य सुसंस्कारित गणितानुसार ग्रहगणितसहित शुद्धकर, विविध विषयों से अलंकृत, धर्मकृत्योपयोगी, सर्वजनहितार्थ अपने निर्णयसागर पंचांग कार्यालय, नीमच छावनी (म. प्र.) से प्रकाशित किया।

"इस पंचांग के पुनर्मुद्रणादिक सर्वाधिकार, पंचांगकार के आधीन है"

सोल एजेन्ट— मेसर्स गर्ग एण्ड कं., खारी बावली, देहली-६













मानसागरी
जातकाभरण
भृगुसंहिता ज्यो
बृहत्पाराशर
कर्मविपाकपूर्व
लग्नचन्द्रिकाबृह
लग्नचन्द्रिका
द्वादश भावफल
ताजिक नीलकण्ठी
बृहज्जातकफलित
गृहरत्न वास्तु प्रयोग

...y Pandit Ravi Shankar Sharma & Son Anand Swaroop Shastri *for* NIRNAYA SAGAR PANCHANG KARYALAYA, ...uch Cantt [M. P.] *and Printed by* Mahendrapratap Garg, Pratap Printing Press, Lahori Gate, Delhi-6